आधुनिक राजस्थान के स्वप्नद्रष्टा
श्री मोहनलाल सुखाड़िया

कृतित्व

सुखाड़िया शासन में राजस्थान

विपिन जारोली
जवाहर विद्यापीठ, कानोड़–313604
जिला उदयपुर

जहाँ शिक्षा प्रसार अपराध था !

कल की सामन्ती धरती राजपूताना, आज की प्रजा-भूमि राजस्थान आज़ादी के पूर्व 22 रजवाड़ों में विभक्त था। रियासतों का शासन राजे, महाराजे और नवाबों के हाथ में था और इन रियासतों के अधीन कस्बों तथा गाँवों का शासन छोटे-बड़े अमीर, उमराव, माफ़ीदार, ठाकुर आदि सम्भालते थे। रियासतों के शासक अंग्रेजों के अधीन थे। इस प्रकार रियासती जनता तीहरी गुलामी से आक्रान्त थी। सर्वत्र सामन्ती शासन था। उस समय जनता की भलाई और विकास की बातें स्वप्न मात्र थीं। शहरों में कहीं-कहीं साधन सम्पन्न तथा अमीर लोगों के बालकों के लिए बहुत कम अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रबन्ध था, किन्तु गाँवों में अमीर, उमराव, नवाब, ठाकुर अपने ही लिए सोचते थे और जनता से टैक्स तथा लगान के रूप में जो धनराशि एकत्रित की जाती थी, उसे वे अपने ही ऐश और आराम के लिए खर्च करते थे। कुल मिलाकर राजस्थान एक अविकसित और अज्ञानांधकार में डूबा हर क्षेत्र में शोषित, पीड़ित एवं विभक्त प्रान्त था। करंजिया के शब्दों में – **"उन देशी रियासतों में जो आज का राजस्थान है, किसी अखबार का छापना तो बहुत बड़ी बात है, उसे पढ़ना या पढ़ने के लिए देना एक ऐसा अपराध था जिसमें मौत की सजा दी जा सकती थी और इतना ही बड़ा अपराध किसी स्कूल को चलाना या जनता में शिक्षा का प्रसार करना था।"** (ब्लिट्ज : हिन्दी संस्करण : 3 फरवरी, 1968)

गौरवशाली अतीत

इतना सब कुछ होते हुए भी भारत ही नहीं विश्व के इतिहास में राजस्थान का अतीत बड़ा ही गौरवपूर्ण रहा है। यहाँ के वीरों ने स्वतंत्रता के लिए सदैव बलिदान किये हैं और ललनाओं ने आग में कूद कर जौहर रचे हैं। पाश्चात्य लेखक प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड के शब्दों में — **"राजस्थान में ऐसा कोई स्थान नहीं जिसकी अपनी थर्मोपल्ली (प्रसिद्ध रणभूमि) न हो और जिसने अपने लिए लिओनिडास (वीर) को जन्म न दिया हो।"** अपने दीर्घकालीन इतिहास में यहाँ के राजवंशों में ऐसे अनेक राजपूतों ने जन्म लिया, जिनके नाम राष्ट्र के क्षितिज पर आज भी चमक रहे हैं। महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा और स्वातंत्र्य वीर महाराणा प्रताप तथा राठौड़ वीर दुर्गादास ने राजस्थान को वह गौरव और गरिमा प्रदान की है, जिसके उदाहरण विश्व के इतिहास में मिलने दुर्लभ हैं। पन्नाधाय और भामाशाह की स्वामिभक्ति और अपूर्व त्याग देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रेरित करते हैं। महारानी पद्मिनी और कर्मवती की जौहर ज्वालायें आज भी सम्मानवर्द्धक बनी रही हैं। आज भी चूड़ावत सरदार और हाड़ीरानी का अपूर्व बलिदान इतिहास की एक महान और अद्भुत घटना बनी हुई है।

सांस्कृतिक उत्थान

यहाँ शौर्य, बलिदान और त्याग की परम्परा ही सब कुछ नहीं रही है। साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति का भी यहाँ पर अन्य प्रान्तों की अपेक्षा विकास कम नहीं हुआ। शौर्य में जहाँ हल्दीघाटी का स्वाधीनता संग्राम बेजोड़ है, वहाँ कला के क्षेत्र में यहाँ के दुर्ग, देवालय (मंदिर) और स्तम्भ विश्व में अद्वितीय हैं। साहित्य में 'बेलि क्रिसन रुकमणी री' 'शिशुपाल वधम्' आदि काव्य कृतियों के अलावा भक्तिकाव्य की साध्वी मीरां, संत दादूदयाल और सुन्दरदास के मानवमात्र में एकता स्थापित करनेवाले पद इसी धरती की महत्वपूर्ण देन है। जयपुर के दरबारी कवि बिहारी, नागरीदास, पद्माकर और बून्दी के मतिराम और सूर्यमल्ल — कुछ नाम हैं, जो हिन्दी साहित्य में अमर हैं। संगीत क्षेत्र में महाराणा कुम्भकर्ण के 'संगीत राज' और 'रसराज' यहीं की देन है। कला के क्षेत्र में मुगल सत्ता के छिन्न-भिन्न होने के साथ राजस्थान में विभिन्न इकाइयों में विविध चित्र शैलियों का विकास भी कम नहीं हुआ है। जयपुर, किशनगढ़, बूँदी और मेवाड़ के चित्रों ने विश्वव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त की है। राधाकृष्ण लीला से सम्बन्धित चित्रों के उत्कृष्ट आदर्श आज भी जयपुर घरानों में दृष्टिगोचर होते हैं। जयपुर की वेधशाला ज्योतिष विद्या का एक अलौकिक केन्द्र है। दस्तकारियों में पीतल की नक्काशी, सोने-चाँदी के आभूषण, कपड़ों की रंगाई-छपाई तथा बंधेज, संगमरमर की मूर्तियाँ, हाथीदाँत तथा चन्दन का काम, लाख की चूड़ियाँ, लकड़ी के खिलौने, जवाहरात तथा सुनहरी कशीदाकारी तथा कालीन बुनाई आदि कलाएँ यहाँ के रजवाड़ों में संरक्षित हुईं, पनपीं और फूली-फली हैं।

वर्तमान राजस्थान का निर्माण

वर्तमान राजस्थान की सीमा जो आज हमें दृष्टिगोचर हो रही है, उसकी प्रक्रिया का क्रम स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1948 से प्रारम्भ होकर सन् 1957 तक चलता है। सर्वप्रथम मार्च 1948 में अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली की रियासतों के विलय से 'मत्स्य संघ' बना। कुछ दिनों बाद कोटा, बून्दी, झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, किशनगढ़, शाहपुरा और टोंक रियासतों के एकीकरण के फलस्वरूप 'राजस्थान राज्य' का निर्माण हुआ। इसके एक माह बाद इस संघ में उदयपुर रियासत सम्मिलित हो गई तो राज्य को 'संयुक्त राजस्थान' राज्य की संज्ञा दी गई। मार्च 1949 में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर की रियासतें इस राज्य में सम्मिलित हुईं तो इस प्रान्त का नाम 'वृहद् राजस्थान' रखा गया और मई 1949 में मत्स्य संघ भी वृहद् राजस्थान में सम्मिलित हो गया, तब इस प्रान्त को 'राजस्थान' नाम दिया गया। सन् 1957 में राज्यों के पुनर्गठन के समय आबू तहसील — जो पहले बम्बई राज्य में मिला दी गई थी, अजमेर राज्य और मध्य भारत की सुनेलटप्पा तहसील इस राज्य में और सम्मिलित की गई। इस प्रकार भारत के मानचित्र में वर्तमान राजस्थान देश के अन्य प्रान्तों के समकक्ष 'क' श्रेणी का राज्य किन्तु अनेकों प्रकार की भौगोलिक विभिन्नताएँ लिए एक संगठित इकाई के रूप में अंकित है। वर्तमान राजस्थान राज्य का क्षेत्रफल 3,42,272 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 3,41,08,292 है।

अरुणोदय की ओर

सौभाग्य से अनेक जटिलताओं और विविधताओं वाले विशालकाय राजस्थान प्रान्त को एक अति उत्साही,

गौरवशाली अतीत

इतना सब कुछ होते हुए भी भारत ही नहीं विश्व के इतिहास में राजस्थान का अतीत बड़ा ही गौरवपूर्ण रहा है। यहाँ के वीरों ने स्वतंत्रता के लिए सदैव बलिदान किये हैं और ललनाओं ने आग में कूद कर जौहर ठाने हैं। पाश्चात्य लेखक प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड के शब्दों में – **"राजस्थान में ऐसा कोई स्थान नहीं जिसकी अपनी थर्मोपली (प्रसिद्ध रणभूमि) न हो और जिसने अपने लिए लिओनिडस (वीर) को जन्म न दिया हो।"** अपने दीर्घकालीन इतिहास में यहाँ के राजवंशों में ऐसे अनेक राजपुत्रों ने जन्म लिया, जिनके नाम राष्ट्र के क्षितिज पर आज भी चमक रहे हैं। महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा और स्वातंत्र्य वीर महाराणा प्रताप तथा राठौड़ वीर दुर्गादास ने राजस्थान को वह गौरव और गरिमा प्रदान की है, जिसके उदाहरण विश्व के इतिहास में मिलने दुर्लभ हैं। पन्नाधाय और भामाशाह की स्वामीभक्ति और अपूर्व त्याग देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रेरित करते हैं। महारानी पद्मिनी और कर्मवती की जौहर ज्वालायें आज भी मरणवेदी सजा रही हैं। आज भी चूंडावत सरदार और हाड़ीरानी का अपूर्व बलिदान इतिहास की एक महान् और अद्भुत घटना बनी हुई है।

सांस्कृतिक उत्थान

यहाँ शौर्य, बलिदान और त्याग की परम्परा ही सब कुछ नहीं रही है। साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति का भी यहाँ पर अन्य प्रान्तों की अपेक्षा विकास कम नहीं हुआ। शौर्य में जहाँ हल्दीघाटी का स्वाधीनता संग्राम बेजोड़ है, वहाँ कला के क्षेत्र में यहाँ के दुर्ग, देवालय (मंदिर) और स्तम्भ विश्व में अद्वितीय हैं। साहित्य में 'वेली क्रिसन रुकमणी री' शिशुपाल वधम् आदि काव्य कृतियों के अलावा गीतिकाव्य की साम्राज्ञी मीरां, संत दादूदयाल और सूरजदास के मानवमात्र में एकता स्थापित करनेवाले पद इसी धरती की महत्वपूर्ण देन हैं। जयपुर के दरबारी कवि बिहारी, नागरीदास, पद्माकर और बून्दी के मतिराम और सूर्यमल्ल – कुछ नाम हैं, जो हिन्दी साहित्य में अमर हैं। संगीत क्षेत्र में महाराणा कुम्भकर्ण के 'संगीत राज' और 'रसराज' यहीं की देन है। कला के क्षेत्र में मुगल सत्ता के छिन्न-भिन्न होने के साथ राजस्थान में विभिन्न इकाइयों में विविध चित्र शैलियों का विकास भी कम नहीं हुआ है। जयपुर, किशनगढ़, बूँदी और मेवाड़ के चित्रों ने विश्वव्यापी प्रसिद्ध प्राप्त की है। राधाकृष्ण लीला से सम्बन्धित-चित्रों के उत्कृष्ट आदर्श आज भी जयपुर घरानों में दृष्टिगोचर होते हैं। जयपुर की वेधशाला ज्योतिष विद्या का एक अलौकिक केन्द्र है। दस्तकारियों में पीतल की नक्काशी, सोने-चाँदी के आभूषण, कपड़ों की रंगाई-छपाई तथा बंधेज, संगमरमर की मूर्तियाँ, हाथीदाँत तथा चन्दन का काम, लाख की चूड़ियाँ, लकड़ी के खिलौने, जवाहरात तथा सुनहरी कसीदाकारी तथा कालीन बुनाई आदि कलाएँ यहाँ के रजवाड़ों में संरक्षित हुई, पनपी और फूली-फली हैं।

वर्तमान राजस्थान का निर्माण

वर्तमान राजस्थान की सीमा जो आज हमें दृष्टिगोचर हो रही है, उसकी प्रक्रिया का क्रम स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1948 से प्रारम्भ होकर सन् 1957 तक चलता है। सर्वप्रथम मार्च 1948 में अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली की रियासतों के विलय से 'मत्स्य संघ' बना। कुछ दिनों बाद कोटा, बून्दी, झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, किशनगढ़, शाहपुरा और टोंक रियासतों के एकीकरण के फलस्वरूप 'राजस्थान राज्य' का निर्माण हुआ। इसके एक माह बाद इस संघ में उदयपुर रियासत सम्मिलित हो गई तो राज्य को 'संयुक्त राजस्थान' राज्य की संज्ञा दी गई। मार्च 1949 में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर की रियासतें इस राज्य में सम्मिलित हुई तो इस प्रान्त का नाम 'बृहद् राजस्थान' रखा गया और मई 1949 में मत्स्य संघ भी बृहद् राजस्थान में सम्मिलित हो गया, तब इस प्रान्त को 'राजस्थान' नाम दिया गया। सन् 1957 में राज्यों के पुनर्गठन के समय आबू तहसील – जो पहले बम्बई राज्य में मिला दी गई थी, अजमेर राज्य और मध्य भारत की सुनेलटप्पा तहसील इस राज्य में और सम्मिलित की गई। इस प्रकार भारत के मानचित्र में वर्तमान राजस्थान देश के अन्य प्रान्तों के समकक्ष 'क' श्रेणी का सक्षम किन्तु अनेकों प्रकार की भौगोलिक विभिन्नताएँ लिए एक संगठित इकाई के रूप में अंकित है। वर्तमान राजस्थान राज्य का क्षेत्रफल 3,42,272 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 3,41,08,292 है।

अरुणोदय की ओर

सौभाग्य से अनेक जटिलताओं और विविधताओं वाले विशालकाय राजस्थान प्रान्त को एक अति उत्साही,

कर्मशील और दूरदर्शी जननेता श्री मोहनलाल सुखाड़िया का नेतृत्व मिला, जिसने अपनी सूझ-बूझ और लगन से राजस्थान के विकास और निर्माण की ऐसी आधारशिला रखी कि देखते ही देखते राजस्थान की काया पलटने लगी। जिस समय श्री सुखाड़ियाजी इस प्रान्त के मुख्यमंत्री बने, उस समय की स्थिति कैसी थी ? उन्हीं के शब्दों में – "पुराने आतंक और अंधविश्वासों से डरे हुए लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने में अब भी डरते थे, वे शिक्षा को अब भी अपराध समझते थे। साथ ही जनता को यह समझाने में भी कई साल लग गये कि अब महाराणाओं और सामन्तों का जमाना लद चुका है और अब लोग एक स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक हैं।" (ब्लिट्ज : हिन्दी संस्करण : 3 फरवरी, 1968) इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान निर्माण की प्रक्रिया से लेकर आज तक की कहानी सामन्तवादी स्वेच्छाचारिता और एकतन्त्रीय सत्ता को एक लोकतांत्रिक समाजवादी समाज रचना के कल्याण राज्य के रूप में परिवर्तित करने की कहानी है। ऐसी सामन्ती परिस्थितियों में योजना के कार्यों का शुभारम्भ हुआ और देखते ही देखते सामन्तवाद के खण्डहर ढहने लगे। प्रजातंत्र का स्वरूप निखरने लगा और आज हम देख रहे हैं कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग तथा अन्य सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में जो सामन्ती हुकूमत में नगण्य थी, अभूतपूर्व प्रगति कर राजस्थान न केवल अन्य विकासमान प्रान्तों के समकक्ष आया है अपितु देश का सर्वाधिक भविष्यदर्शी प्रान्त बन गया है। गुलामी की युगों प्राचीन भावनाओं यहाँ अब स्वप्न रह गई हैं।

उपलब्धियाँ और कायाकल्प

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है मुख्यमंत्री बनने के बाद सुखाड़ियाजी ने अपनी सूझ-बूझ और लगन से राजस्थान के विकास की जो आधारशिला रखी उससे प्रान्त का बहुमुखी विकास तो हुआ ही, साथ ही ऐसी विकास की योजनायें भी लागू कीं, जिनसे यह प्रान्त देश में पहल करने वाला सक्षम प्रान्त भी बन गया। यहाँ पर देश में सर्वप्रथम बलवन्तराय मेहता कमेटी की सिफारिशों के आधार पर की गई लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण (पंचायतीराज) योजना का शुभारम्भ अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण एवं साहसिक कदम है। पंचायतराज की स्थापना के द्वारा यहाँ के निवासी अपने भविष्य को अपने अतीत से भी अधिक गौरवशाली बनाने में व्यस्त हैं। आज हम देख रहे हैं कि इस योजना के माध्यम से गाँवों और कस्बों का पूरा का पूरा कायाकल्प हो रहा है। यही कारण है कि देश के अन्य प्रान्त राजस्थान में विगत युग का अवसान और नये युग के अरुणोदय का सम्मिलित रूप एक साथ देख रहे हैं। निश्चय ही प्रान्त का जन-जीवन विकास की किरणों के नये प्रभात की आभा से आलोकित हो रहा है।

समाजवादी समाज रचना की दिशा में राजस्थान का काश्तकारी अधिनियम भारत के समस्त काश्तकारी अधिनियमों में सर्वाधिक क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील कहा जा सकता है। इस अधिनियम के अन्तर्गत काश्तकारी सम्बन्धी सुरक्षा और लगान की गारन्टी प्रदान की गई है। जहाँ पहले अनेक प्रकार की काश्तकारी प्रणालियाँ और काश्तकार प्रचलित थे, वहाँ अब केवल चार प्रकार के काश्तकार ही रहे हैं। लगान की दरें निश्चित कर दी गई हैं और बेगार प्रथा उठा दी गई है। भूमि की वर्तमान जोत और भविष्य में ली जाने वाली भूमि के क्षेत्र की अधिकतम सीमा भी निर्धारित कर दी गई है। भूमि का छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजन भी बन्द कर दिया गया है।

योजनाबद्ध बहुमुखी प्रगति

श्री सुखाड़िया शासन में प्रारम्भ की गई योजनाबद्ध विकास की प्रक्रिया से राजस्थान की बहुमुखी प्रगति हुई है। राजस्थान अपनी पंचसाला योजनाओं में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति का संकल्प लेकर सदा ही आगे बढ़ता रहा है। यही कारण है कि आज राजस्थान का जनजीवन, प्रकृति, इतिहास, भूगोल आदि सब कुछ बदल रहे हैं। शिक्षा की दिशा में राजस्थान ने आशातीत प्रगति की है। जहाँ निपट देहातों में लोगों के लिए 'काला अक्षर भैंस बराबर' वाली कहावत चरितार्थ होती थी, वहाँ अब सर्वत्र विद्यालयों की स्थापना की जा चुकी है। यह हर्ष का विषय है कि वर्तमान में राज्य में 3 विश्वविद्यालय, 3 तकनीकी महाविद्यालय, 7 पोलोटेकनीक महाविद्यालय और 3 आयुर्विज्ञान महाविद्यालय खुल चुके हैं। स्वास्थ्य रक्षा के क्षेत्र में मलेरिया और प्लेग जैसे रोगों पर पूर्ण नियंत्रण पा लिया गया है। सारे राज्य में पंचायत समिति क्षेत्र पर एक-एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र और उसके अन्तर्गत आवश्यकतानुसार उपकेन्द्रों की स्थापनाएँ करदी गई हैं। बड़े-बड़े शहरों में

पुराने चिकित्सालयों का काफी विस्तार किया जा चुका है। कृषि क्षेत्र में राज्य के गठन के समय जहाँ खाद्यान्न की बड़ी भारी कमी थी वहां अब अन्य राज्यों को यहाँ से अनाज भेजा जाने लगा है। सिंचाई की दिशा में भी आवश्यक कदम उठाये गये हैं। राजस्थान नहर, चम्बल परियोजना, भाखरा आदि योजनाओं से इस दिशा में पहल की गई है। जाखम परियोजना का शुभारम्भ भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। औद्योगिक प्रगति का जहाँ तक सम्बन्ध है, स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं थी कि जस्ता और ताम्बा शोधने तथा पिघलाने के भारत के प्रथम संयन्त्र राजस्थान की धरती पर ही लगेंगे। चम्बल नदी के सुदूर पथरीले तट पर राणा प्रताप सागर बांध से कुछ ऊपर भारत के अणु वैज्ञानिक और विशेषज्ञों द्वारा आणविक बिजलीघर का निर्माण किया जा चुका है। जहाँ राजस्थान में इस प्रकार के संयन्त्र लगाये जा रहे हैं, वहीं सुदूर वन्य प्रान्त भी नई-नई इमारतों और सड़कों द्वारा सजाये और संवारे जा रहे हैं। औद्योगिक दृष्टि से कोटा नगर को एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा चुका है। साथ ही चूरू, लाडनू, उदयपुर, बांसवाड़ा में स्पिनिंग मिलों की स्थापना के बाद बीकानेर में ऊनी मिल ने उत्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया है। डीडवाना में सोडियम सल्फेट के कारखाने का भी विस्तार किया गया है। सहकारी क्षेत्र में भी एक सूती मिल भीलवाड़ा जिले के गुलाबपुरा कस्बे में सफलतापूर्वक चल रहा है। करोड़ों की लागत से टोंक में निर्मित चमड़े के कारखाने में कार्य प्रारम्भ हो चुका है। उदयपुर के पास देबारी के समीप तथा निम्बाहेड़ा में सीमेन्ट के कारखाने लग चुके हैं। विद्युतिकरण की दिशा में अधिक से अधिक बस्तियों में बिजली पहुँचा दी गई है तथा कृषि कार्य हेतु विद्युत वितरण पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। विराट विद्युत परियोजनाओं में राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, सतपुड़ा थर्मल विद्युतगृह, भाखड़ा राइट बैंक बिजलीघर आदि परियोजनाएँ प्रमुख हैं। सहकारिता के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियों का जाल-सा बिछा दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य में सहयोग की दृष्टि से ग्राम सेवा सहकारी समितियों का प्रत्येक पंचायत-स्तर पर गठन किया जा चुका है।

प्रान्त के विकास की दिशा में राजस्थान में पंचायतीराज की स्थापना एक महत्वपूर्ण साहसिक कदम है। देश में सर्वप्रथम इस योजना का प्रारम्भ कर श्री सुखाड़िया ने एक महान ऐतिहासिक कार्य किया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने नागौर के दौरे पर उद्घाटित कर इस योजना का 2 अक्टूबर, 1959 को उद्घाटन करते हुए कहा था – "राजस्थान में, जो कि भारत का एक कोने में हृदय है, भारत का नक्शा भी देखें तो वह भी एक टुकड़ा दिल-सा है, लोकतंत्र फैल रहा है। पंचायतीराज इसके देश का भविष्य है तथा यह व्यवस्था प्रान्त तथा देश की प्रतिष्ठा है। इस कदम में राजस्थान की साख होगा। यह कहें कि यह एक ऐतिहासिक कदम है।" इस योजना के अन्तर्गत ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायतें, तहसील व ब्लाक स्तर पर पंचायत समितियाँ और जिला स्तर पर जिला परिषदों का गठन है। प्राथमिक शिक्षा, कृषि सुधार, सहकारिता, ग्राम सुधार, छोटे सिंचाई कार्य, प्रौढ़ शिक्षा आदि क्षेत्रों में जन-सहयोग से पंचायत समितियों के माध्यम से उल्लेखनीय कार्य हुए हैं।

राजस्थान में पंचायतीराज योजना के सूत्रधार श्री मोहनलाल सुखाड़िया वास्तव में साधुवाद के पात्र हैं। इस योजना के श्रीगणेश के प्रणेता के रूप में, इतिहास में सदा ही वे राजस्थान में 2 अक्टूबर की रक्तहीन क्रांति के सृष्टा के रूप में स्मरण किये जाते रहेंगे। राजस्थान में पंचायतीराज योजना के संस्थापक श्री सुखाड़िया पंचायतीराज का सदैव ही पक्ष प्रबल करते रहे और संयोग की ही बात है कि उनका अन्तिम समय भी पंचायतीराज सम्मेलन में पंचायतराज का दर्शन जनता को समझाते हुए ही आया।

राजस्थान में श्री सुखाड़िया द्वारा रखी गई विकास की आधारशिला के अनुसार निःसन्देह वह दिन दूर नहीं जबकि इस प्रान्त में सैकड़ों मीलों तक फैला थार का रेगिस्तान लहलहाते सुरम्य कृषि क्षेत्रों में परिवर्तित होकर देश के लिए एक वरदान सिद्ध होगा। यह सौभाग्य का ही विषय है कि सदियों पुराने, सामन्ती प्रथा से ग्रसित इस पिछड़े प्रान्त को विकास की दिशा में अपने लक्ष्य की पूर्ति तक पहुँचाने के भागीरथ प्रयत्न में एक बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न, उदार, कर्मठ और स्मित मुस्कान का धनी, दूरदर्शी व्यक्तित्व श्री मोहनलाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री के रूप में मिला था।

आज का आधुनिक राजस्थान श्री सुखाड़ियाजी की ही देन है। आधुनिक राजस्थान के निर्माताओं की श्रेणी में श्री सुखाड़ियाजी का नाम शीर्ष पर है। o

30 मार्च, 1950 को भारत के
गृहमंत्री पं० गोविन्दबल्लभ पंत द्वारा
राजस्थान नहर (इन्दिरा गाँधी नहर) के
श्रीगणेश के अवसर पर श्री मोहनलाल
सुखाड़िया शिल्प संरचना में संलग्न

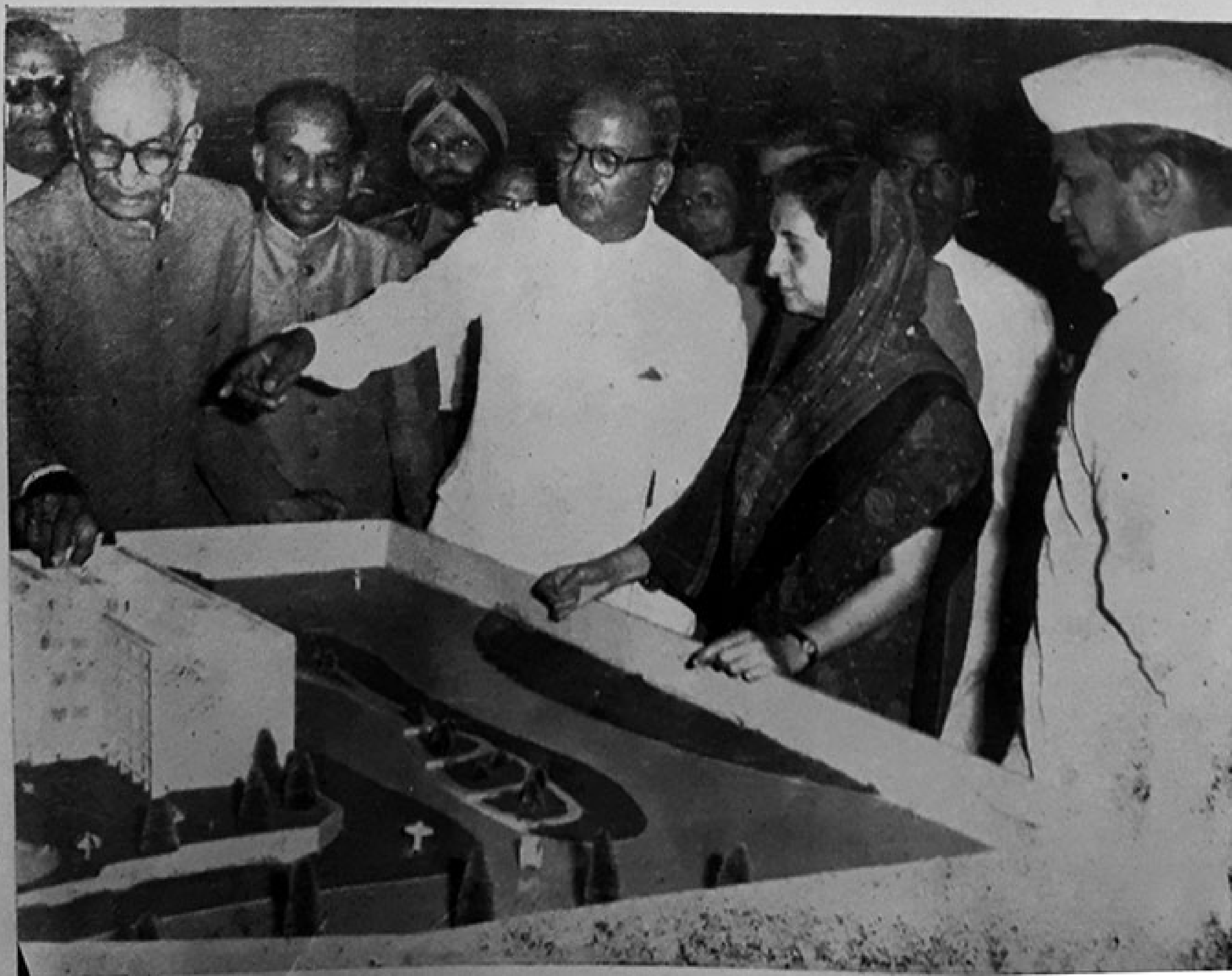

उदयपुर में
कृषि विश्वविद्यालय के
शिलान्यास के अवसर पर
प्रधानमंत्री
श्रीमती इन्दिरा गाँधी और
श्री मोहनलाल सुखाड़िया

सोवियत रूस की सहायता से निर्मित सूरतगढ़ कृषि फार्म में प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू
और श्री मोहनलाल सुखाड़िया

भारत-पाक सीमा पर सुरक्षा प्रबन्धों का निरीक्षण करते हुए श्री मोहनलाल सुखाड़िया

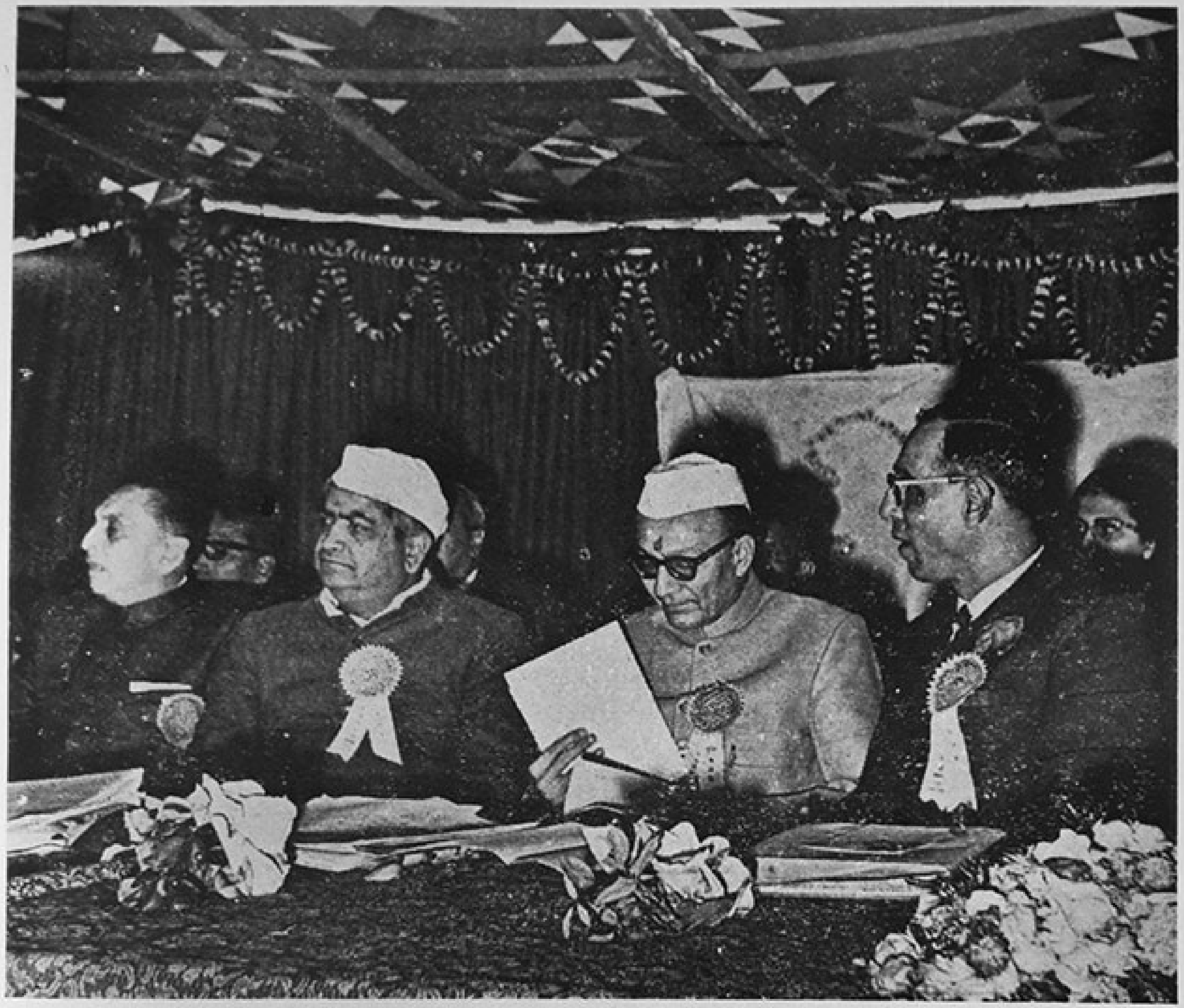

राजस्थान
चैम्बर ऑफ कॉमर्स
के जयपुर में आयोजित
13वें अधिवेशन के
अवसर पर
श्री मोहनलाल
सुखाड़िया एवं गुजरात
के मुख्य मंत्री
श्री हितेन्द्रभाई देसाई

राजस्थान
संस्कृत साहित्य सम्मेलन
कार्य समिति की बैठक
में संस्कृत शिक्षा के
विकास हेतु विमर्श करते
हुए सम्मेलन-अध्यक्ष
श्री मोहनलाल
सुखाड़िया, कार्याध्यक्ष
श्री लक्ष्मीलाल जोशी
एवं महामंत्री
श्री मोतीलाल जोशी

स्टेट बेंक ऑफ़ बीकानेर एण्ड जयपुर की दूदू शाखा का उद्घाटन करते हुए श्री मोहनलाल सुखाड़िया

राजस्थान
ललित कला अकादमी
की वार्षिक प्रदर्शनी
का दीप प्रज्वलित कर
उद्घाटन करते हुए
श्री मोहनलाल सुखाड़िया
एवं अकादमी अध्यक्ष,
श्री रामनिवास मिर्धा

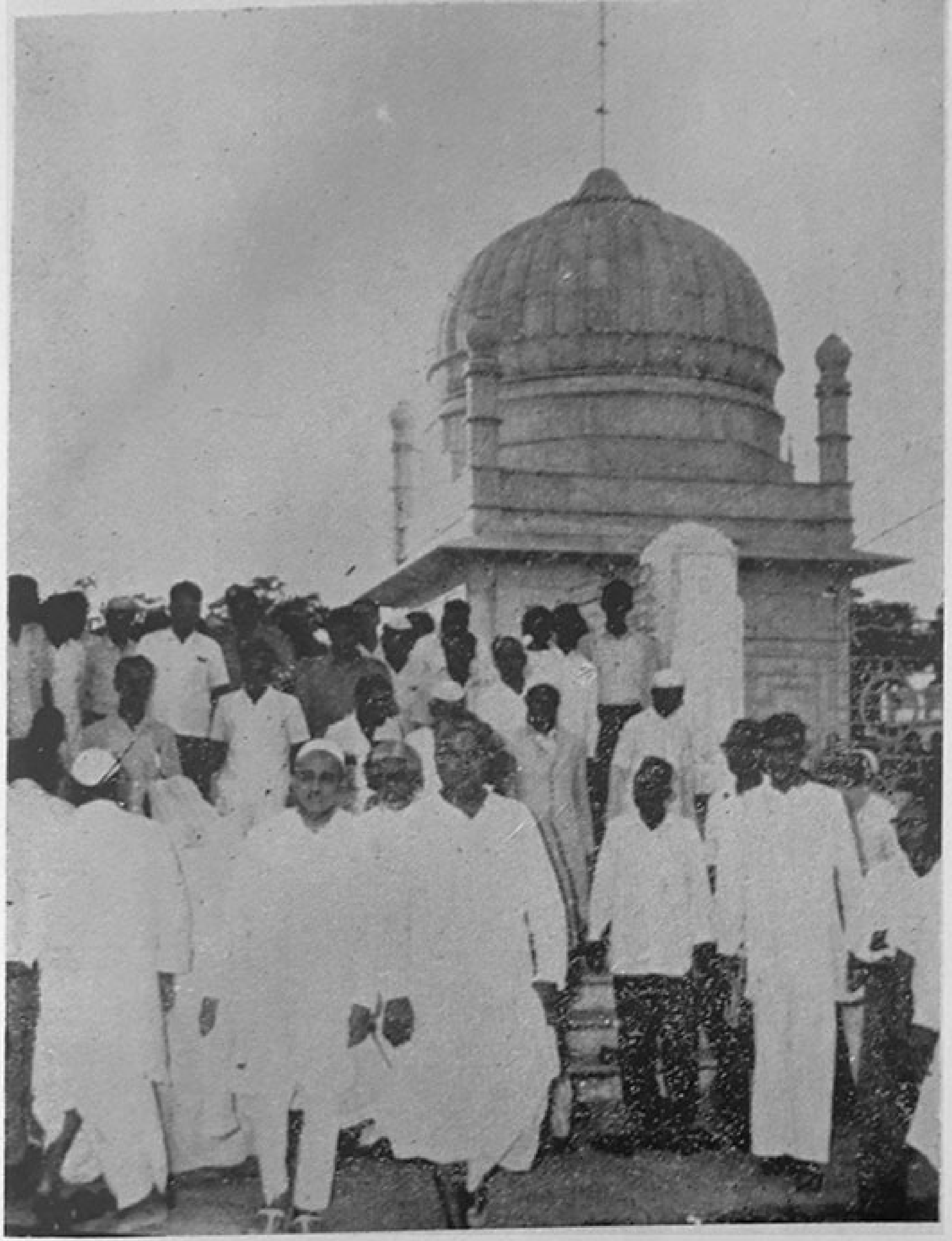

ईद पर मुस्लिम समुदाय के साथ
श्री मोहनलाल सुखाड़िया

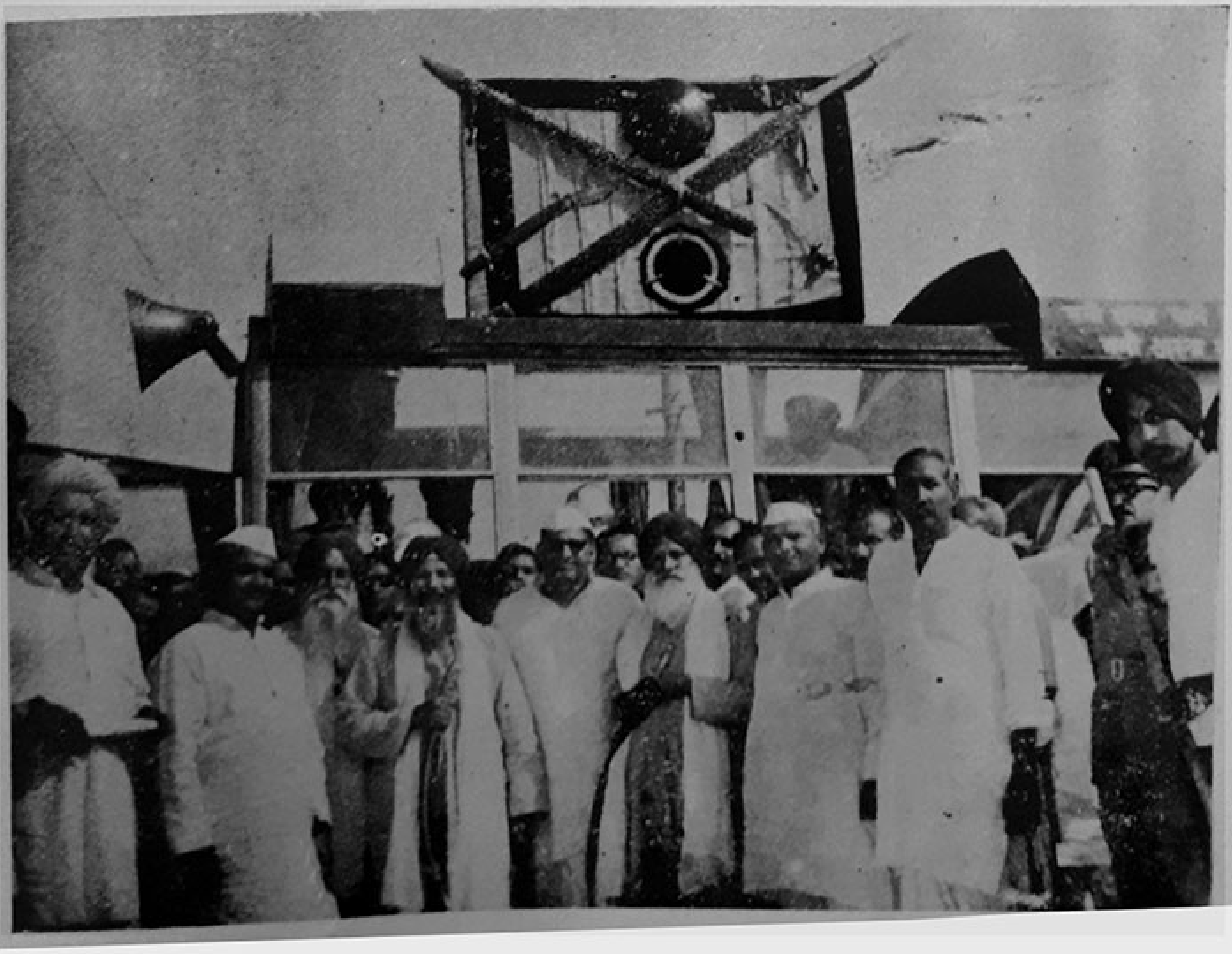

गुरुद्वारे में सिख
समुदाय के साथ
श्री मोहनलाल
सुखाड़िया

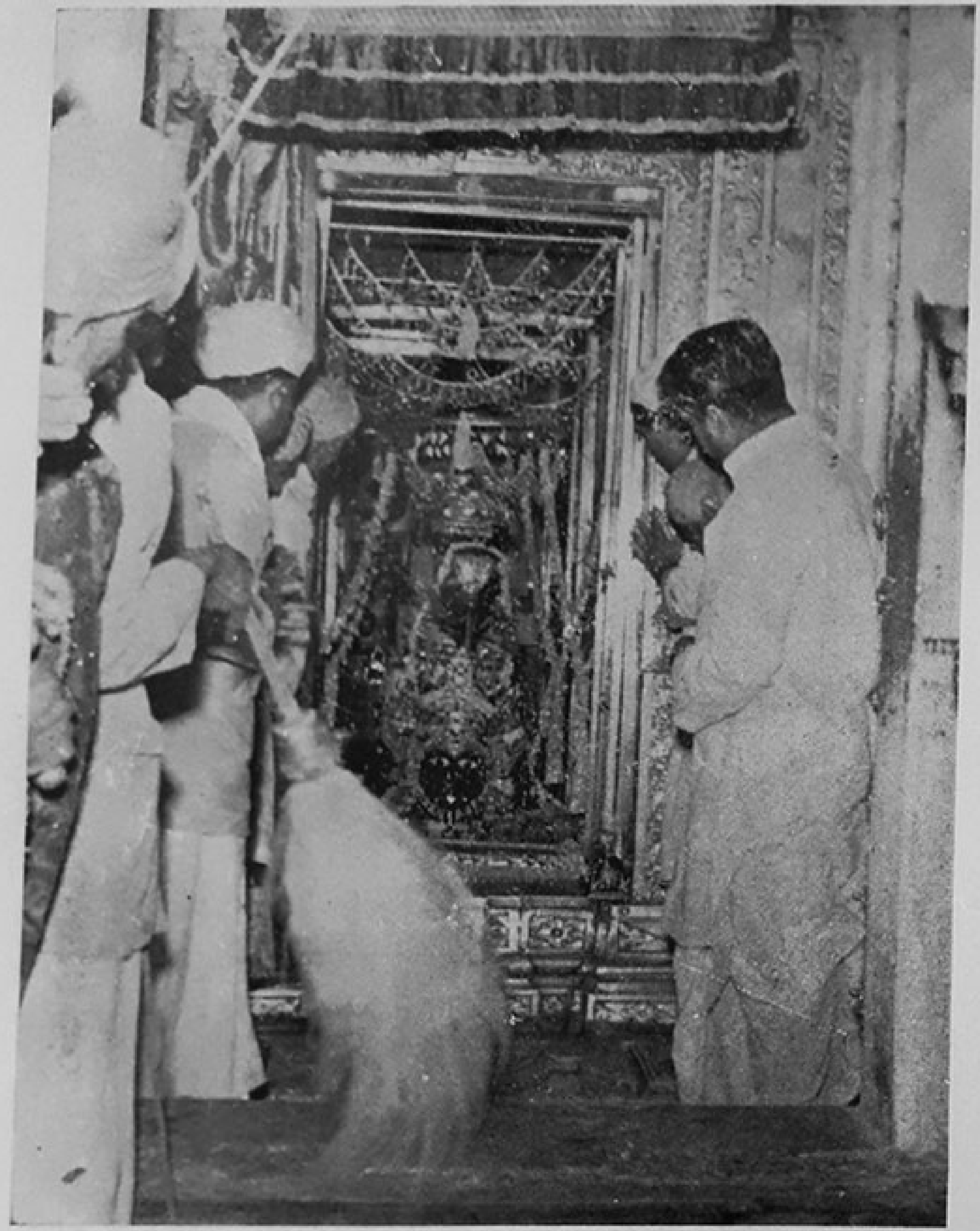

कैलाशपुरी, उदयपुर स्थित मेवाड़ के इष्टदेव एकलिंगजी महाराज के दर्शन करते हुए श्री मोहनलाल सुखाड़िया

लोकगीतों का आनन्द लेते हुए श्री मोहनलाल सुखाड़िया

गंभीर चिन्तन :
राजस्थान विकास
की भावी योजनाएँ

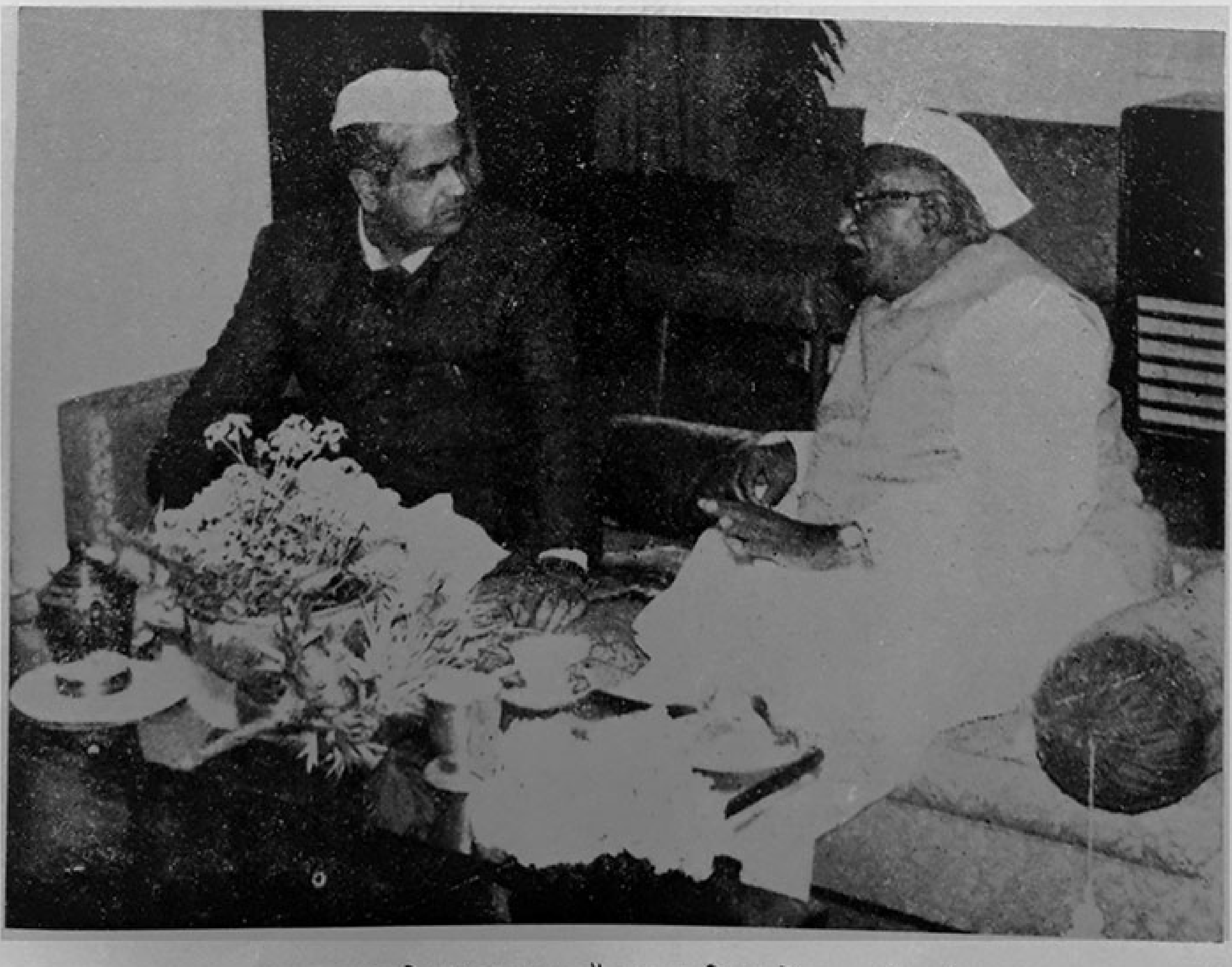

राजस्थान के राज्यपाल डॉ. सम्पूर्णानन्द के साथ विमर्श

विकास का निरन्तर क्रम :

शिलान्यास और उद्घाटन

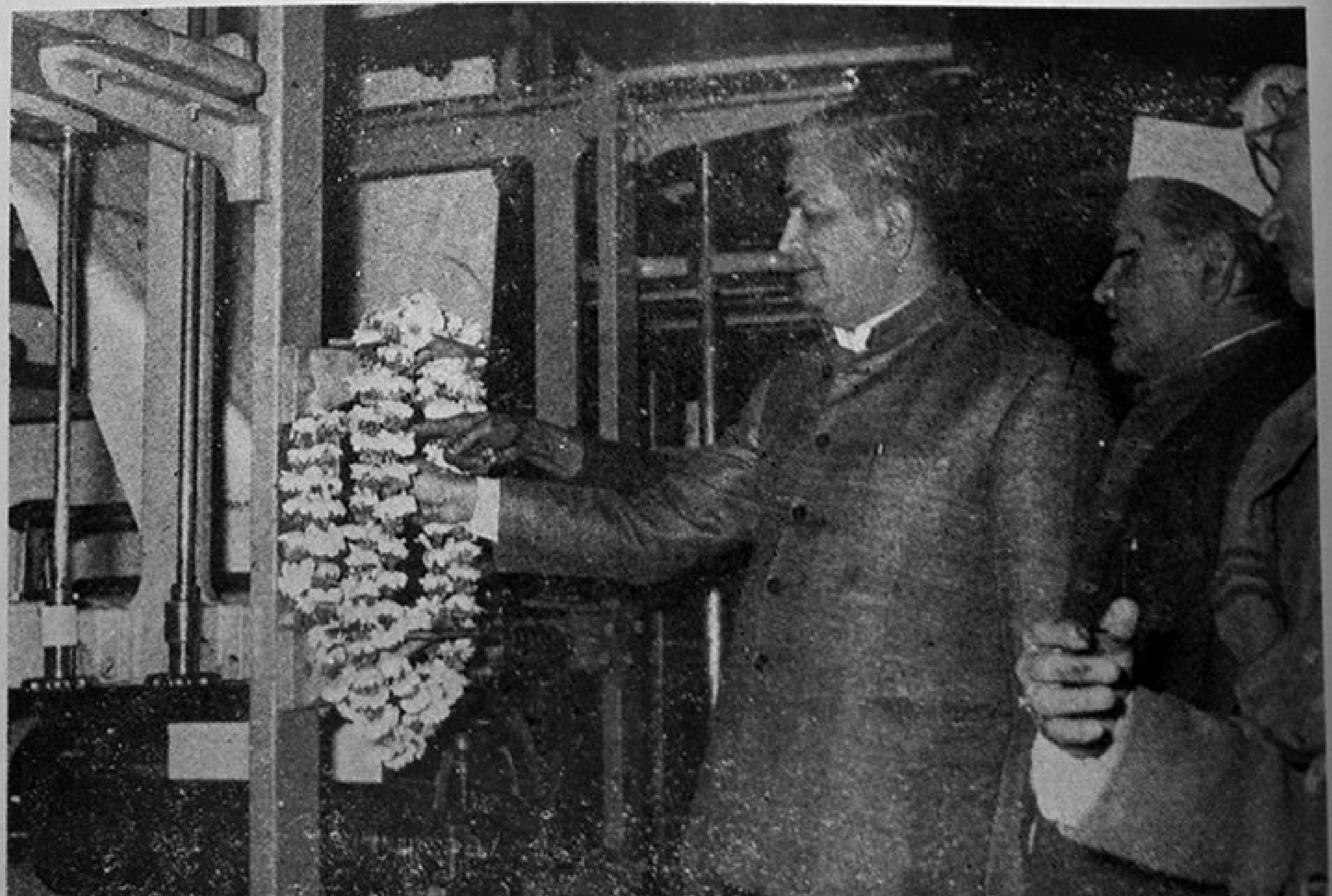

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को देश की राजनीति के एक अहम मुद्दे पर भविष्यवाणी करते हुये श्री मोहनलाल सुखाड़िया

8 जुलाई, 1971 को अपने अन्तिम मंत्रीमण्डल सहयोगियों के मध्य मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया

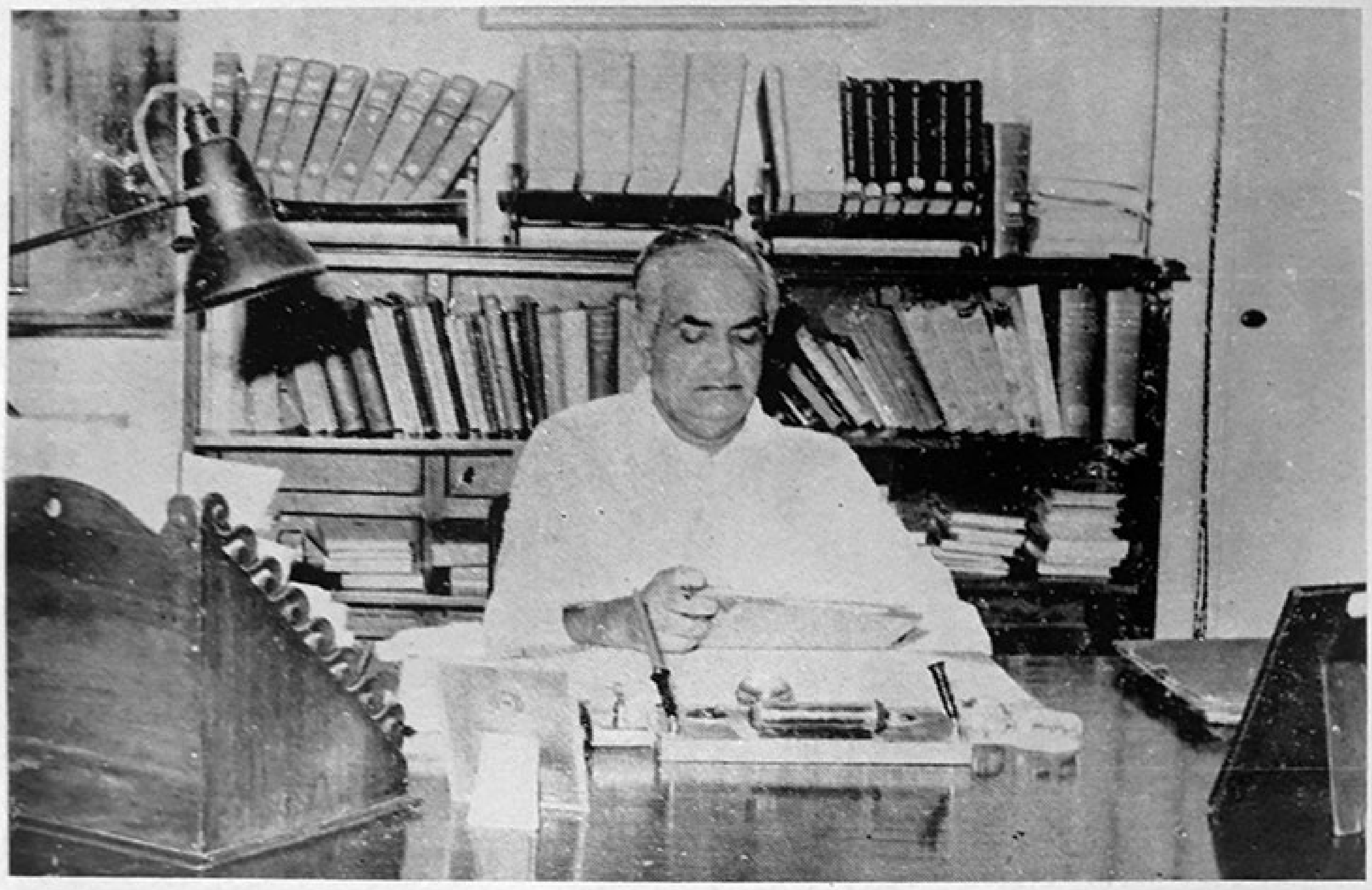

अहर्निश राष्ट्र की सेवा में समर्पित श्री मोहनलाल सुखाड़िया

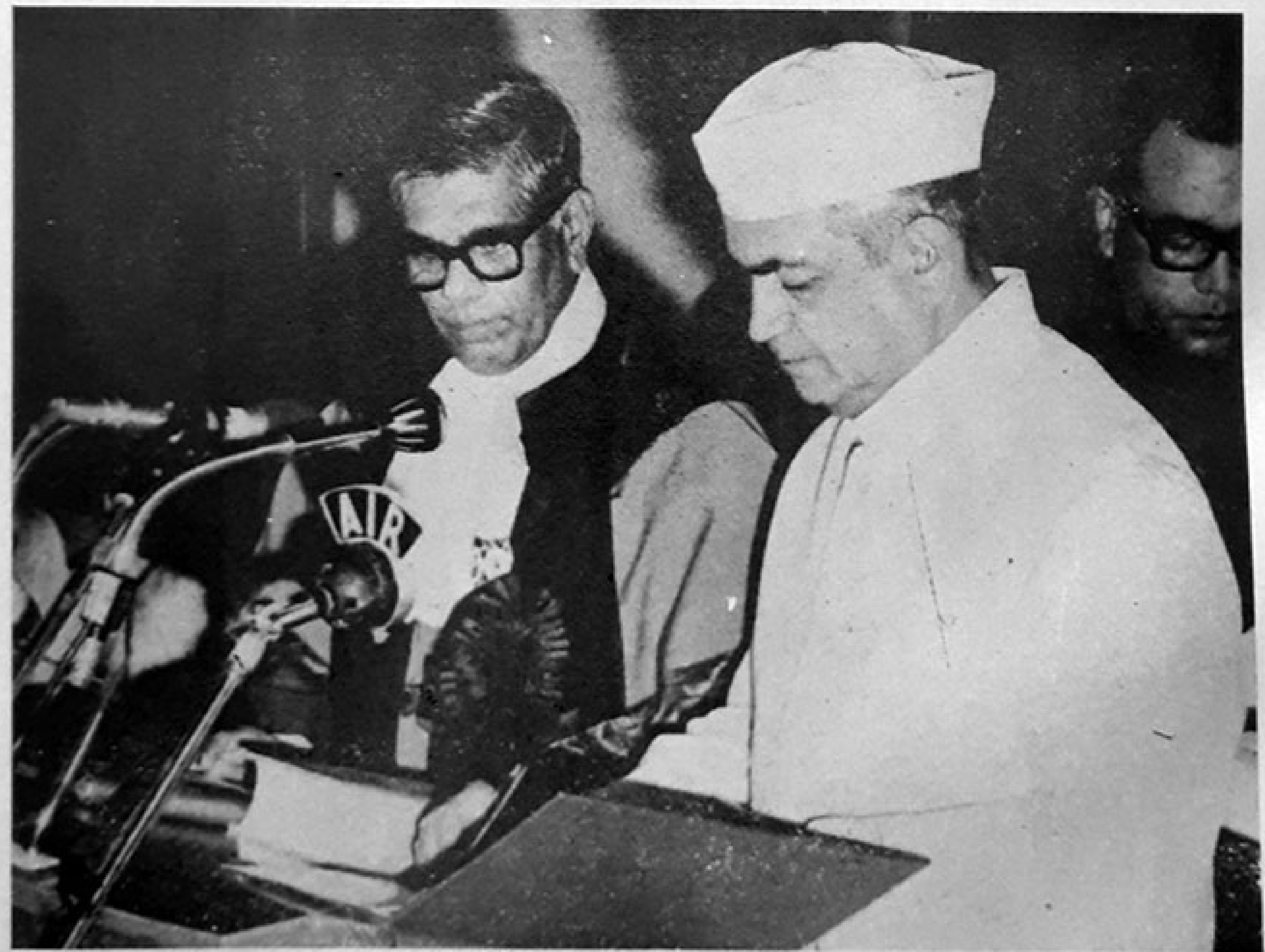

16 जून, 1976 को तमिलनाडु प्रदेश के राज्यपाल पद की
शपथ लेते हुये श्री मोहनलाल सुखाड़िया

दोहित्र के विवाहोत्सव पर श्री सुखाड़िया परिजनों के साथ

पौत्री की वर्षगांठ : पारिवारिक समारोह में श्री सुखाड़िया

सुखाड़िया दम्पति

फागोत्सव पर
श्री मोहनलाल सुखाड़िया
श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया
के साथ होली खेलते हुए

राजस्थान-निर्माता और राज्य के भावी कर्णधार

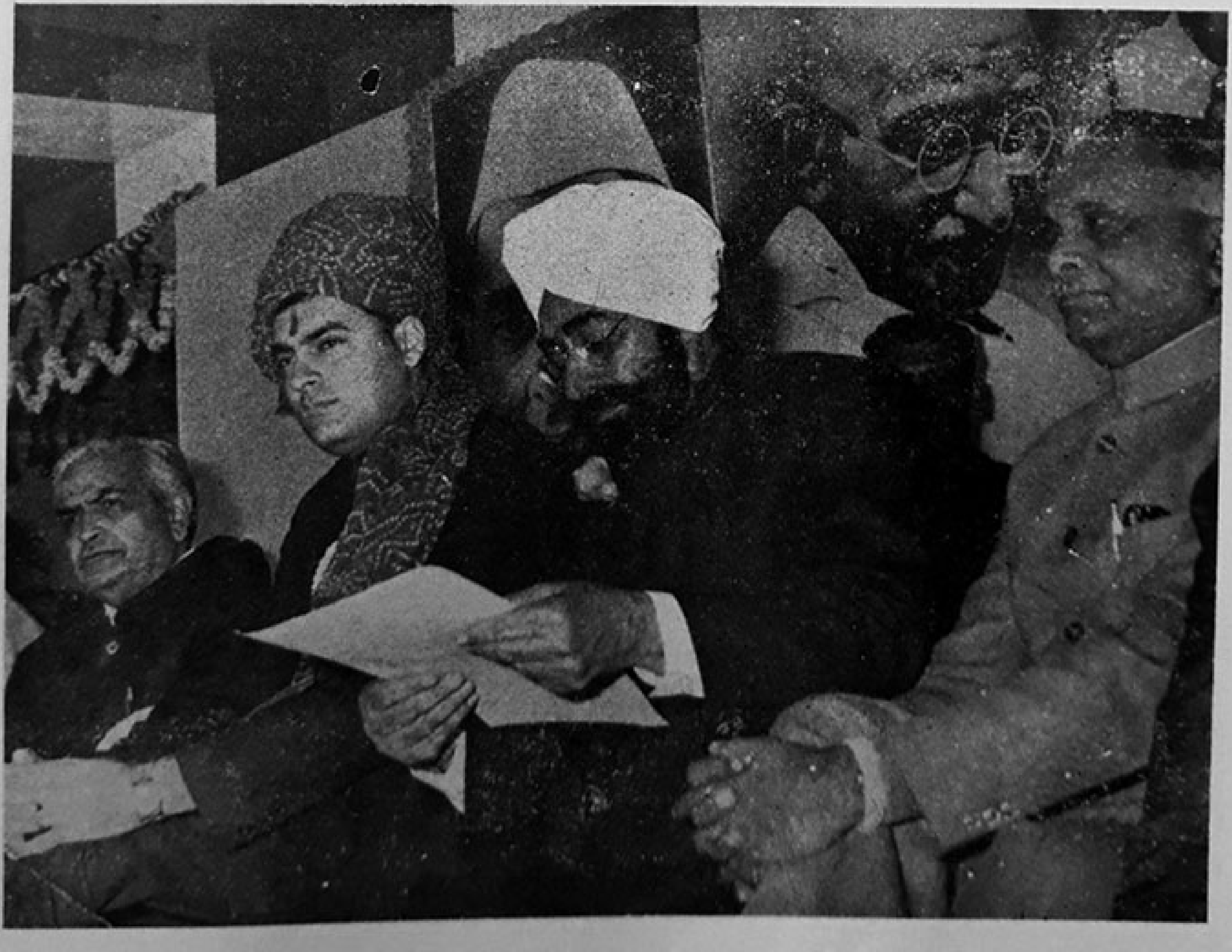

30 जनवरी, '82 को बीकानेर में आयोजित पंचायतीराज सम्मेलन :
मंचस्थ, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, सांसद; श्री राजीव गांधी, महामंत्री, ज्ञानी जैलसिंह, गृहमन्त्री एवं शिवचरण माथुर, मुख्यमंत्री, राजस्थान

पंचायतराज के प्रवर्तक श्री मोहनलाल सुखाड़िया का अंतिम उद्‌बोधन

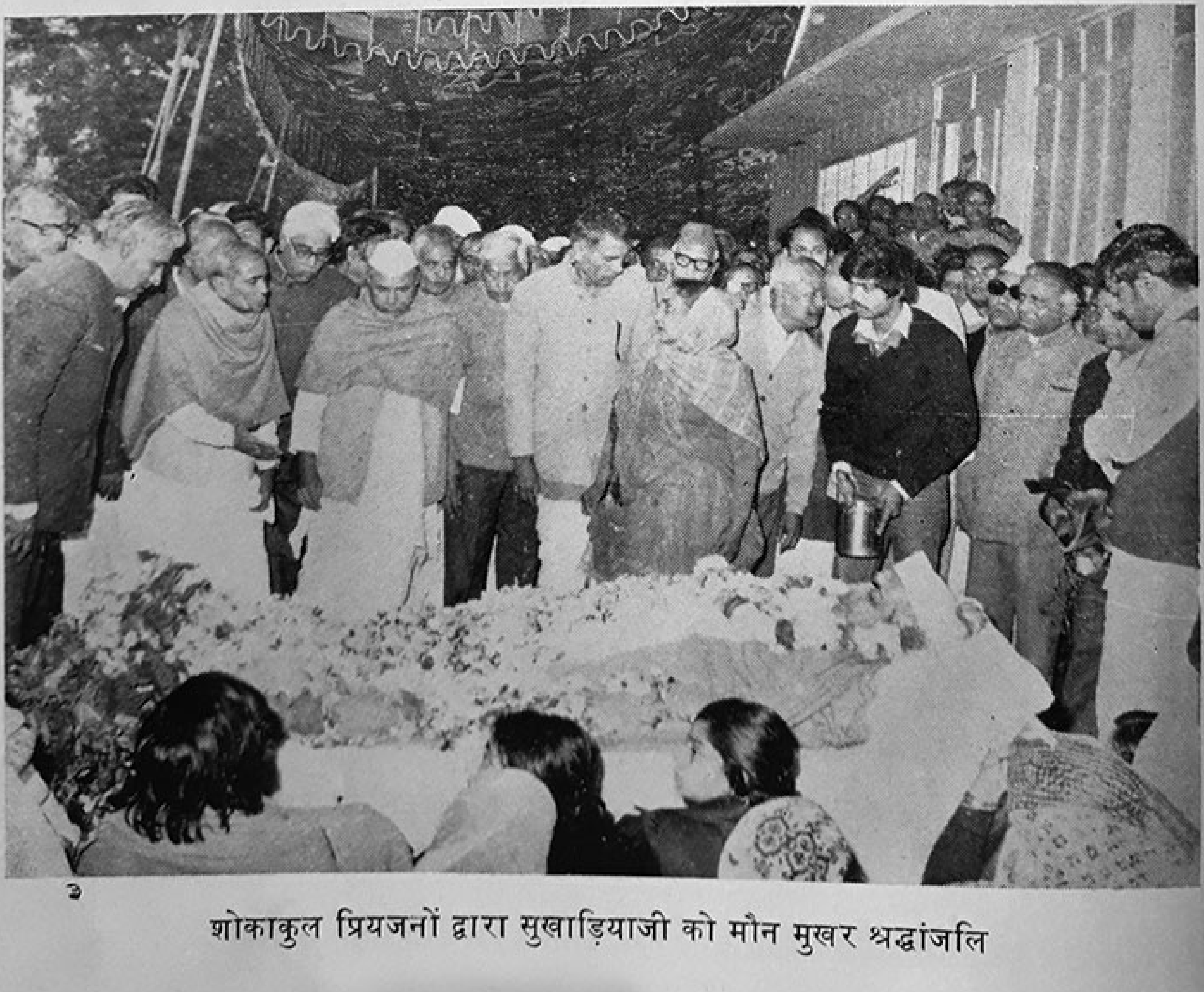

शोकाकुल प्रियजनों द्वारा सुखाड़ियाजी को मौन मुखर श्रद्धांजलि

भारत के तत्कालीन गृहमंत्री एवं वर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह सुखाड़ियाजी के पार्थिव शरीर को पुष्पांजलि अर्पित करते हुये। समीपस्थ हैं पुत्र दिलीप सुखाड़िया एवं अरुण सुखाड़िया

जीवनसंगिनी, दामाद, दोहित्र और परिजनों द्वारा सुखाड़ियाजी के पार्थिव शरीर को अश्रुपूरित नमन

स्व० मोहनलाल सुखाड़िया के अस्थिकलश को राजस्थान हाउस, देहली में पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी शोकसंतप्त परिजनों के साथ – समीपस्थ हैं श्री मुन्नालाल गोयल

कथाकार बन गया कहानी

आधुनिक राजस्थान के स्वप्नद्रष्टा

सुखाड़ियाजी के मुख्यमन्त्रित्व-काल में पशुपालन विकास

श्रीराम गोटेवाला
शिवमार्ग, बनीपार्क
जयपुर

राजस्थान निर्माण पूर्व

राजस्थान निर्माण से पूर्व यह प्रदेश अनेक देशी रजवाड़ों में विभक्त था। इन रजवाड़ों के साधन सीमित थे और पशु संवर्धन की ओर वैज्ञानिक आधार पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। यहाँ तक कि रॉयल कमीशन ऑफ़ एग्रीकल्चर ने पशुपालन के संदर्भ में जो सिफ़ारिशें दीं उनकी ओर भी ध्यान नहीं दिया जा सका। अलबत्ता बीकानेर एक ऐसा रजवाड़ा था, जहाँ कि उनके वर्गीकरण का कार्य हाथ में लिया गया। संभवत: जैसलमेर और बीकानेर राज्यों में प्रस्थापित ऊँट केवेलरी देश की प्रथम ऊँट सेनायें रही होंगी।

अर्थव्यवस्था का आधार

इसमें कोई संशय नहीं कि राजस्थान गाँवों का प्रदेश है और इसके 33 हजार से ऊपर गाँवों की आर्थिक व्यवस्था का आधार कृषि और पशुपालन है। रेगिस्तानी क्षेत्रों में मुख्य व्यवसाय पशुपालन ही कहा जा सकता है। राज्य के आर्थिक क्षेत्र में पशुपालन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। राज्य के राजस्व में इसका 15 प्रतिशत अंशदान है देश की 45 प्रतिशत ऊन का उत्पादन केवल हमारे राज्य में ही होता है। यही नहीं करीबन 33 लाख टन दूध का जहाँ वार्षिक उत्पादन होता है, वहाँ 14 करोड़ के लगभग वार्षिक रूप से अण्डे उत्पादित होते हैं। धोरों की धरती – राजस्थान में मत्स्य उत्पादन की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी लेकिन हमने इस दिशा में जो प्रयास किये उसके परिणाम अभिनव रूप से सामने आये और अब मत्स्य से होने वाली आय एक करोड़ से भी ऊपर पहुँच गयी है। इसमें संशय नहीं कि राज्य के पशुधन में प्रतिकारिता शक्ति होने के कारण

अकाल के थपेड़े खाते हुए एवं विषम परिस्थितियों में विचरण करते हुये यहाँ के गौवंश में निरंतर वृद्धि हुयी है। 1951 में जहाँ 108 लाख गौवंश था, वहाँ 1972 में बढ़कर 125 लाख गौवंश हो गया। यही स्थिति अन्य पशुधन की है।

राजस्थान निर्माण के समय

राजस्थान के निर्माण के समय पशुपालन विकास के कार्य का उत्तरदायित्व कृषि विभाग में निहित था। उस समय राज्यों में कुल 133 औषधालय/अस्पताल थे, 3 पशु प्रजनन केन्द्र, अलवर, बस्सी और नागौर में चलते थे और करीब वर्षभर में केवल 10 लाख जानवर इन स्वास्थ्य सेवाओं का फ़ायदा उठा पाते थे। मोहनलालजी सुखाड़िया के मुख्यमंत्रित्व काल में प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान 50 नये औषधालय खोले गये, 6 चल पशु चिकित्सालय इकाइयाँ आरम्भ की गयीं तथा थोड़ा-सा ध्यान मुर्गी पालन की ओर भी दिया गया। मुख्य बाधा उस समय प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी थी। यही कारण था कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में ही बीकानेर में पशु चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना की गई, जहाँ डिग्री कोर्स के साथ-साथ दो वर्षीय डिप्लोमा की कक्षायें भी शुरू की गयीं। कुल व्यय इस योजना काल में 24.81 लाख रुपये का हुआ।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में

सुखाड़ियाजी के मुख्यमंत्रित्व काल में दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान पशुपालन विभाग की स्थापना स्वतंत्र रूप से की गयी। इस अवधि में ग्राम आधार योजना, गौशाला विकास, गौसदनों की स्थापना, बछड़े-बछड़ियों का क्रय, अनुदान दुग्ध विकास, कुक्कुट विकास, ऊँट सुधार, शूकर विकास आदि कार्य हाथ में लिये गये। इस योजना के अन्त में चिकित्सालय/औषधालयों की संख्या बढ़कर 268 हो गयी थी। राज्य सरकार ने कुल योजना का 1.30 प्रतिशत पशुपालन के विकास पर व्यय किया। इसके अलावा घुमक्कड़ पशुपालकों का पुनर्वास, गिर पशुप्रजनन केन्द्र की स्थापना, चरम रोग की समन्वय योजना आदि उल्लेखनीय कार्य भी हुये।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में

तृतीय पंचवर्षीय योजना काल में पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान की समुचित व्यवस्था की गयी और गौसंवर्धन शालाओं की संख्या भी 6 तक पहुँच गई। चारा विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत 37 चरागाहों की स्थापना की गयी। इस योजना काल में 75 पशु औषधालयों की स्थापना की गयी तथा 6 चल पशु औषधालय और स्थापित किये गये। इस प्रकार कुल औषधालयों की संख्या 350 हो गयी। रिण्डर पेस्ट उन्मूलन के लिये तृतीय योजना में प्रतिवर्ष टीके लगाने की संख्या भी बढ़ाई गई और वर्ष 1965-66 में 25 लाख 76 हजार जानवरों के टीके लगाये गये।

तृतीय योजना काल के वर्षों में पशु चिकित्सा महाविद्यालय से जहाँ 321 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया वहाँ जयपुर स्थित पशुपालन विद्यालय से 293 स्कन्ध पालकों एवं कम्पाउण्डरों को प्रशिक्षण दिया गया। इस योजना काल में भेड़ व ऊन विभाग के द्वारा ऊन कतरण वर्गीकरण एवं वितरण की समुचित व्यवस्था की गयी और योजना के अन्त तक राज्य में 156 भेड़ व ऊन विस्तार केन्द्र कार्यरत थे। भेड़ों की सुविधा हेतु 16.63 लाख भेड़ों को नियंत्रित प्रजनन के अन्तर्गत लिया गया।

द्वितीय योजना काल में स्थापित जयपुर दुग्ध वितरण योजना को पूरा किया गया और प्रतिदिन लगभग 30 क्विंटल दूध का वितरण जयपुर नगर में किया जाने लगा। मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी 83 लाख मत्स्य बीजों का वितरण किया गया। पशुपालन के क्षेत्र में इन सभी कार्यक्रमों पर तृतीय योजना काल में 332.76 लाख रुपये का व्यय हुआ।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में ग्राम आधार योजना के लिये 30 लाख, पशुप्रजनन के लिये 16 लाख, पशुमेला सुधार के लिये 5 लाख, कृत्रिम गर्भाधान के लिये 9 लाख, सांड परिपालन के लिये 50 लाख, शूकर विकास के लिये 10 लाख, नये पशुचिकित्सालय एवं औषधालयों का चिकित्सालयों में क्रमोन्नत के लिये 32.50 लाख, कुक्कुट विकास के लिये 32 लाख, भ्रमणशील पशु औषधालयों के लिये 10 लाख, जैविक उत्पादन प्रयोगशाला के विस्तार के लिये 12 लाख, क्षेत्रीय पशुधन केन्द्र के विस्तार के लिये 7.50 लाख, परिवेक्षण कर्मचारियों के लिये 6 लाख, उदयपुर विश्वविद्यालय को आर्थिक अनुदान 2 लाख रुपये की राशि का प्रावधान था। इस प्रकार कुल 170.08 लाख रु० की राशि का व्यय किया गया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

इस समय पशुपालन की जो मुख्य प्रवृत्तियाँ संचालित हैं, उनका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार से किया जा सकता है :-

वर्तमान में इस राज्य में 693 पशुचिकित्सा संस्थाएँ हैं, इसके अतिरिक्त 55 चल पशु चिकित्सा इकाई, 9 सतर्कता इकाई, 9 सुरक्षा चौकी, 3 आरक्षण दल व एक पशुमाता सर्विस यूनिट कार्यरत हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में राज्य में इस संबंध में एक खुर्रा व मुँह पका रोग अनुसंधान इकाई, जैविक उत्पादन प्रयोगशाला, पशु रोग अनुसंधान प्रयोगशाला, कुक्कुट रोग अनुसंधान प्रयोगशाला, सर्रा रोग अनुसंधान प्रयोगशाला, क्षेत्रीय पशुधन अनुसंधान केन्द्र कार्यरत हैं। इनके अतिरिक्त 11 पशु स्वास्थ्य एवं रोग निदान केन्द्र एवं 4 कुक्कुट रोग निदान एवं आहार विश्लेषण प्रयोगशालायें कार्यरत हैं।

कृत्रिम गर्भाधान के लिये राज्य में 23 ग्राम आधार खण्ड हैं और इनसे सम्बन्धित 171 उपखण्ड हैं। विभिन्न नस्लों के सांड तैयार करने के लिये 4 पशुप्रजनन फ़ार्म और बकरियों में नस्ल सुधार के लिये उन्नत नस्ल के पशु उपलब्ध कराने के लिये एक बकरी प्रजनन फार्म व सूअरों में प्रजनन के लिये शूकर प्रजनन फ़ार्म कार्यरत हैं।

कुक्कुट विकास के लिये दो राज्यस्तरीय कुक्कुट शालाओं के अतिरिक्त चार जिला स्तरीय ब्रायलर/लेयार फॉर्म, दो चूजा पालन केन्द्र, 10 सघन कुक्कुट विकास खण्ड कार्यरत हैं।

लोगों को पशुपालन में प्रशिक्षण देने के लिये 4 प्रशिक्षण केन्द्र भी चल रहे हैं। इसके साथ ही 7 पशुपालन विस्तार इकाइयाँ पशुपालकों को पशुपालन में नयी जानकारी देने के लिये कार्यरत हैं।

अज संवर्धन

राज्य में राज्यस्तरीय 11 पशु मेलों का भी आयोजन किया जा रहा है।

राज्य में प्रथम "अज संवर्धन शाला" (गोट ब्रीडिंग फार्म) की, रामसर में प्रस्थापना की गई। यह फ़ार्म स्विस सरकार के सहयोग से खोला गया है, जिसका मुख्य ध्येय प्राविधिक तरीकों से बकरे-बकरियों की नस्ल सुधार कर, उनके दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करना है। राजस्थान बकरी-बहुल क्षेत्र है। गरीब की गाय "बकरी" के भावी संवर्धन से निस्संदेह गरीब लोगों को काफ़ी राहत मिलेगी। प्रथम चरण में प्रारम्भ किये जाने वाले इस फ़ार्म पर 28 लाख रुपये की धनराशि व्यय की जा रही है, जिसमें 14 लाख रुपये का सहयोग अंशदान स्विटज़रलेंड का है।

पशुनिरोगता की दिशा में, रेगिस्तानी क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है। यद्यपि अब तक 120 पशु स्वास्थ्य केन्द्र खोले जा चुके हैं लेकिन इन केन्द्रों को गत डेढ़ वर्ष से व्यवस्थित कर, इनमें नवीन कार्यक्रम अपनाये गये हैं। पशुओं की नस्ल सुधार के लिये इन केन्द्रों में "फ्रोज़न सीमन" की व्यवस्था करना अपने आप में एक अभिनव उपलब्धि है। रेगिस्तानी क्षेत्र में पशुपालन विकास के लिये 1981-82 में जहाँ एक करोड़ से ऊपर धनराशि निर्धारित की गयी थी, वहाँ 1984-85 में 185.60 लाख रुपये का प्रावधान इस बात का द्योतक है कि सरकार रेगिस्तानी क्षेत्रों में पशु विकास की ओर कितनी क्रियाशील है।

बी० पी० लैब

जयपुर बस्सी मार्ग पर लगभग 45 लाख रुपये की लागत से नवनिर्मित भवन में प्रादेशिक जैविक उत्पादन प्रयोगशाला (बी.पी. लैब) को स्थानान्तरित कर दिया गया है। इस प्रयोगशाला ने गत डेढ़ वर्ष में विभिन्न सांसर्गित रोगों के रेकार्ड वैक्सीन उत्पादित किये हैं। देश की यह एक अद्वितीय प्रयोगशाला है। इस पर प्रतिवर्ष 29 लाख रुपये को धनराशि व्यय की जा रही है। विशिष्ट पशुपालन उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत 517 कुक्कुट इकाइयों और 37 शूकर इकाइयाँ खोली गयी हैं। इस कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिये 1984-85 में कुक्कुट पालन की 790 तथा शूकर पालन की 150 इकाइयाँ खोलने का लक्ष्य रखा गया है।

पशु आयुर्विज्ञान में प्रगति

गत वर्षों में पशु रोग नियंत्रण पर जो प्रगति हुई है, वह पशु आयुर्विज्ञान में अद्वितीय कही जा सकती है। अनेक पशु-जन्य रोग ऐसे हैं जिसका प्रभाव मनुष्यों पर पड़ता है। सरकार ने इस तथ्य का अहसास करते हुये, प्राणिरूजा (जनोसिस) पर जन-जागरण पैदा करने के लिये एक राज्य-स्तरीय प्राणिरूजा समिति (स्टेट जनोसिस कमेटी) का गठन किया है, जो कि राज्य के बड़े नगरों में जनोसिस के प्रति जन-जागरण का व्यापक कार्यक्रम भविष्य में संधारित करने जा रहा है।

सत्ता के विकेन्द्रीकरण की दिशा में पशुपालन के 5 क्षेत्रीय कार्यालय यथा – बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर में शीघ्र ही स्थापित किये जा रहे हैं, जिनका कि कार्य प्रभार उपनिदेशक स्तरीय अधिकारी को प्रदत्त किया गया है। ○

Growth of College Education in Rajasthan

(1954 – 71)

SHIVNATH SINGH
Former Director of Education, Rajasthan
Jaipur

The State of Rajasthan, as it exists today was formed through the process of unification or integration of twenty-two separate princedoms which functioned as quasi-independent states under the British rule. On November 1, 1956 the territory of Ajmer-Merwara was merged into erst-while Greater Rajasthan, as the last phase of integration and for brevity's sake the founding fathers of Rajputana preferred to call it Rajasthan. Spread over an area of 3,42,214 sq. kms. with a population of over 3 crores (2.58 crores as per 1971 census) the State of Rajasthan is the second biggest in size of all the States of Indian Union.

During pre-independence era the growth of education in general and that of higher education in particular in the erst-while princedoms was very low. The main reason for this was the fear that spread of education may prove to be inimical to their vested interests and traditionally established authority. This made these princely states indifferent towards investment in higher education. Such an investment was considered to be unproductive. This is why the State was most backward educationally and compared very unfavourably with other states as far as literacy, per capita investment in education and number of students in higher education are concerned.

The desirability of producing through higher education more trained and efficient manpower of a high order from the point of view of development needs of the State and growing aspirations of the people for and expectations from higher education were very well realised by the then Government which expanded the facilities for higher education in the State, though it was confronted with a difficult situation. On the one hand financial resources for higher education were limited and, on the other, demand for more colleges and universities was continuously growing. In the interest of higher education and without much bothering for financial difficulties the State Government during 1962 founded two new universities namely;

(1) The University of Jodhpur, Jodhpur for the advancement of general and technical education, and

(2) The Rajasthan Agricultural University at Udaipur for the promotion and advancement of agriculture and veterinary sciences.

In 1962, four Government Colleges at Jaipur were handed over to the University of Rajasthan. They were Maharaja's, Maharani's, Commerce and Rajasthan Colleges. The Government Law College had been transferred earlier. Just as the Government colleges at Jaipur, the three Government colleges at Jodhpur— Jaswant College, SMK College and Kamala Gate College were transferred to University of Jodhpur in

1962, later on MBM Engineering College was also transferred.

In 1964, the Rajasthan Agriculture University was converted into a multi-faculty centre of learning and M B College, Udaipur, was handed over to the University which was also renamed as the Udaipur University, Udaipur. In the same year colleges located at Pilani—one of the premier centres of learning—were converted into Birla Institute of Technology and Science (registered under the Societies Registration Act, 1956). In 1964, Ministry of Education and Social Welfare, Government of India, declared this Institute of higher learning as a "Deemed to be University".

Sixth decade of the present century saw a tremendous growth of institutions of higher learnings faculties, enrolment therein and the number of universities in the State of Rajasthan. The following table explains this :

	ENROLMENT	
	1963-64	1970-71
1. Government Colleges	14479	28612
2. Aided Colleges	4073	13494
3. Un-Aided Colleges	969	1898
4. Constituted Colleges	4422	5663
5. Jodhpur University	4849	8210
6. Rajasthan University	1264	4913
7. Udaipur University	5630	8222
8. BITS	NA	1970
	35686	72982

	TEACHERS		COLLEGES	
	1963-64	1970-71	1963-64	1970-71
1.	1018	1554	32	47
2.	554	445	16	26
3.	59	141	4	7
4.	129	395	4	6
5.	350	463	1	1
6.	134	529	1	1
7.	NA	103	1	1
8.	NA	203	NA	1
	2244	3833	59	90

The above table clearly explains the fact that during the Sukhadia regime there was 300 per cent increase in the number of universities in the State, more than 200 per cent increase in the enrolment of students, 150 per cent increase in the number of institutions of higher learning and more than 150 per cent increase in the number of teachers. The teachers were well paid as compared to the teachers of many of the States in the Country. The following table brings out the fact that the distribution of colleges and enrolment therein is very rational and has a positive correlation with the distribution of population as well as with the needs of higher education :

Districtwise Institution & Enrolment of Higher Education in Rajasthan

S.No.	DISTRICT	INSTITUTION		ENROLMENT	
		1962	1970	1962	1970
1.	Ajmer	6	8	4208	7241
2.	Alwar	1	3	1213	2996
3.	Banswara	1	1	133	280
4.	Barmer	—	1	—	168
5.	Bikaner	3	5	1402	3155
6.	Bharatpur	2	3	879	2350
7.	Bhilwara	1	2	583	1395
8.	Bundi	1	2	227	580
9.	Chittorgarh	1	1	135	663
10.	Churu	2	2	612	1764
11.	Dungarpur	1	1	73	259
12.	Jaipur	9	15	5707	15445
13.	Jaisalmer	—	1	—	20
14.	Jalore	—	2	—	139
15.	Jhalawar	1	1	235	453
16.	Jodhpur	—	2	—	8724
17.	Jhunjhunu	6	6	2284	4933
18.	Kota	2	8	1377	2887
19.	Nagaur	1	3	312	847
20.	Pali	2	2	201	608
21.	Sawaimadhopur	1	1	111	549
22.	Sikar	3	5	538	2287
23.	Sirohi	1	1	274	370
24.	Sriganganagar	3	7	830	3183
25.	Tonk	2	2	220	1186
26.	Udaipur	6	9	2312	5712

O

संस्कृत के महान् उन्नायक

डॉ० मण्डन मिश्र
निदेशक,
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
नई दिल्ली

साधुओं से मार्गदर्शन

स्वर्गीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया साहब से मेरा सम्पर्क अखिल भारतीय साधु सम्मेलन, राजस्थान भारत सेवक समाज, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन और राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के माध्यम से हुआ। सन् 1955 में इन्होंने नाथद्वारा में श्री गुलजारीलाल नन्दा की प्रेरणा से प्रथम बार अखिल भारतीय साधु सम्मेलन आयोजित किया था। इस आयोजन के मूल स्रोत सुखाड़िया साहब थे। नन्दाजी की यह कल्पना थी कि राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रमों में देश के प्रतिष्ठित साधुओं से मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त किया जाये। इस दृष्टि से भारत सेवक समाज के तत्वावधान में साधुओं के संगठन का यह प्रथम प्रयास हुआ। राजस्थान को इस शुभारम्भ का गौरव तीन मुख्य कारणों से मिला, वे थे—(1) राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (2) उसकी सांस्कृतिक महत्ता (3) श्री सुखाड़िया साहब का नेतृत्व।

धर्म और विकास का समन्वय

इस आयोजन में प्रथम बार दो हजार से अधिक चुने हुए प्रतिष्ठित साधुओं ने भाग लिया—जिनमें एक-एक व्यक्ति लाखों शिष्यों का प्रतिनिधि था। यह कार्यक्रम धर्म और विकास का अद्भुत समन्वय था, जिसके मूल में सुखाड़िया साहब का नेतृत्व ही काम कर रहा था। इस महान् समारोह की स्वागत व्यवस्था उन्हीं के नेतृत्व में तथा आदरणीय श्री माणिक्यलाल वर्मा के मार्गदर्शन में हम लोग कर रहे थे और मैं उसका प्रबन्धमन्त्री था।

भारत साधु समाज

नाथद्वारा में "मीरा नगर" नाम से एक नया नगर बसाया गया था। मुख्यमन्त्री होते हुए भी वे प्रतिदिन रात को स्वागत समिति के कार्यालय में आते और अपने मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं का कार्यभार अपने सामने निश्चित करवाते थे। विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों को एक मंच पर एकत्रित करना और उनसे राष्ट्र निर्माण के कार्य में सहयोग आमन्त्रित करना एक महान् कार्य था, जो नाथद्वारा में सम्पन्न हुआ, जिसका सबसे अधिक श्रेय सुखाड़िया साहब को जाता है। उसी के परिणामस्वरूप भारत साधु समाज के नाम से एक महान् संस्था का जन्म हुआ, जिसका प्रधान कार्यालय आजकल चाणक्यपुरी, नई दिल्ली के एक विशाल भवन में स्थित है।

मूल प्रेरणा स्रोत

साधु सम्मेलन के साथ अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के आयोजन की भी मूल प्रेरणा सुखाड़िया साहब ने दी और सम्माननीय डॉ० कैलासनाथ काटजू की अध्यक्षता में विशाल पैमाने पर संस्कृत सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। संस्कृत सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महामहोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी थे। उन दिनों सम्मेलन बहुत आर्थिक संकट में था और उस पर लगभग 7-8 हजार रुपये का कर्जा था। आपने उदारतापूर्वक स्वागत समिति को यह सहायता दिलाने की स्वीकृति दे दी, जिसका परिणाम यह हुआ कि अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन एक महान् संकट से बच गया। सम्मेलन का यह पहला अधिवेशन था, जिसमें 2 हजार महात्मा, 500 के लगभग विद्वान् और 20-30 हजार से अधिक दर्शक एक विशाल भव्य पण्डाल में उपस्थित थे।

कार्यकर्त्ता निर्माण की प्रवृत्ति

मैं एक नया कार्यकर्त्ता था और इतने बड़े आयोजन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर थी। लेकिन सुखाड़िया साहब ने यह स्नेह और सम्मान मुझे प्रदान किया था कि सब लोग मुझे उनका आदमी समझ कर सहायता देते थे। यहां तक कि जब हम लोग सारा काम पूरा कर नाथद्वारा से आने लगे तो कम से कम बीस-तीस स्थानों पर हम लोगों के लिए सम्मान समारोह आयोजित किये गये। यह सब कार्यकर्त्ताओं के निर्माण की सुखाड़िया साहब की प्रवृत्ति का एक छोटा-सा उदाहरण है।

ग्रामवासियों के साथ सत्ता का तादात्म्य

इसके अतिरिक्त उन्हीं के शासनकाल में यह सौभाग्य हमको देखने को मिला कि राजस्थान भारत सेवक समाज

और राजस्थान जन बोर्ड जैसी रचनात्मक संस्थाओं की समस्याओं के समाधान के लिए श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में हमारी उन्हीं संस्थाओं के कार्यालय में बैठकें होती थीं और उनमें सम्बद्ध मंत्रियों और उच्चस्तरीय अधिकारियों के साथ स्वयं सुखाड़िया साहब उपस्थित रहते थे। इस प्रकार उन्होंने रचनात्मक कार्य की महत्ता की नींव डाली और शासनतन्त्र को उसकी सहायता के लिए तत्पर रहने का निर्देश दिया। उन्होंने सुदूर कोनों और जंगलों के आदिवासी क्षेत्रों में मन्त्रिमण्डल की बैठकें कर ग्रामवासियों के साथ सत्ता का तादात्म्य स्थापित किया।

लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती गई

हम सब रचनात्मक क्षेत्र के कार्यकर्त्ता उनके नेतृत्व में अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते थे, क्योंकि वे कार्यकर्त्ताओं की बात सुनते और उनका सम्मान करते थे। सन् 1959 में भीलवाड़ा में उन्हीं के अनुरोध पर पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय सेवक समाज का अधिवेशन हुआ। श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में गठित स्वागत समिति के मन्त्री श्री रामप्रसाद लड्ढा और मैं था। मुझे इसके लिए महाराजा संस्कृत कॉलेज, जयपुर से अवकाश देकर सुखाड़िया साहब ने भीलवाड़ा भेजा और इस महान् कार्य का दायित्व मुझे संभलाया। मेरे लिए भीलवाड़ा नया स्थान था। पाँच हजार अतिथियों के स्वागत और आवास की व्यवस्था तथा पण्डित जवाहरलाल नेहरू के कार्यक्रमों का प्रबन्ध कोई साधारण काम नहीं था। लेकिन हर काम में सुखाड़िया साहब हम सबसे आगे रहते थे और आधी रात को भी उनका मार्गदर्शन और परामर्श प्राप्त करने के लिए हम स्वतन्त्र थे। एक महान् निर्माण का नेतृत्व वह कर रहे थे, लेकिन उसमें छोटे-छोटे साथी और कार्यकर्त्ताओं को आगे रखने में वह अपनी शान समझते थे। राजस्थान के गाँव-गाँव के एक-एक कार्यकर्त्ता से उनका व्यक्तिगत परिचय था। वे उनकी समस्याओं और परिस्थितियों से परिचित थे और उनकी सहायता करते थे। हम लोग उनको इन्द्र के रूप में देखते थे; क्योंकि जो भी उनके पास गया, कभी निराश नहीं लौटा। प्रत्येक परिस्थिति में वे गरीब और दीन की सहायता करते थे और बड़े से बड़े मन्त्री और अधिकारी के सामने कार्यकर्त्ता का सर ऊँचा रखते थे। यही कारण है कि राजस्थान का गाँव-गाँव और उसका एक-एक कार्यकर्त्ता उनकी स्मृति में श्रद्धावनत है। मुख्यमन्त्री पद छोड़ने के बाद भी उनकी लोकप्रियता में कभी कोई कमी नहीं आई, वह दिन-दिन बढ़ती ही चली गई।

संस्कृत जगत ऋणी

इतिहास में मुख्यमंत्री और प्रशासक तो आते-जाते रहेंगे, लेकिन रचनात्मक कार्यों और इसके कार्यकर्त्ताओं को इतना संरक्षण देने वाला शायद ही कोई हो। सन् 1961 में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन का कलकत्ते में अधिवेशन करने का निमन्त्रण कलकत्ते के विशिष्ट व्यक्ति ने दिया था। उसके आधार पर परम पूजनीय राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने उसके उद्घाटन की स्वीकृति दी, लेकिन उसके बाद निमन्त्रण देने वाले व्यक्ति ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। मैं उन दिनों महामन्त्री था। श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू का कार्यक्रम निश्चित हो गया था और इतनी बड़ी व्यवस्था के लिए मेरे पास कोई सहारा नहीं था। मैं इस अवस्था में दिल्ली से कलकत्ता चल पड़ा। सौभाग्य से उसी गाड़ी में दुर्गापुर कांग्रेस अधिवेशन के लिए श्री सुखाड़िया साहब भी जा रहे थे। रास्ते में कानपुर स्टेशन पर मुझे उन्होंने देखा – चलाकर कंधे पर हाथ रखकर पूछा कि कहाँ जा रहे हो। मैंने कहा कि एक गम्भीर समस्या में फँस गया हूँ। जिस व्यक्ति के विश्वास पर राजेन्द्र बाबू को निमन्त्रण दिया वह फ़िसल गये और अब इतनी बड़ी व्यवस्था कलकत्ते में कैसे हो सकती है? वे मुझे अपने कम्पार्टमेंट में ले गये। सम्मेलन की सारी आवश्यकताओं की जानकारी ली और उसके बाद कहा कि मैं तीसरे दिन साहू शांतिप्रसाद जैन के यहाँ ठहरूँगा। मैं वहाँ उनसे मिल लूँ। मैं तीसरे दिन माननीय श्री शांतिप्रसाद जैन के यहाँ गया। वहाँ सुखाड़िया साहब ने साहू साहब से मेरा परिचय कराया कि यह मेरे परखे हुए कार्यकर्त्ता हैं। आप सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष बन जायें और पैसे की सहायता करा दें। श्री सुखाड़ियाजी ने साहू साहब से जो परिचय कराया, उसके कारण ही बहुत धूमधाम के साथ साहू साहब की स्वागताध्यक्षता में अखिल भारतीय साहित्य संस्कृत सम्मेलन का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ। उसी अधिवेशन में दिल्ली विद्यापीठ की स्थापना की अपील डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने की और उसी शृंखला में अनेक विद्यापीठों और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की स्थापना हुई। वहां से लगभग 75 हजार रुपये की निधि सम्मेलन के काम के लिए लाये – जिसका उपयोग विद्यापीठ की स्थापना में किया गया। इन सबका श्रेय कलकत्ता अधिवेशन और डॉ० राजेन्द्र बाबू को है और उसकी सफलता के मूल में सुखाड़िया साहब का योगदान आधारशिला के रूप में विद्यमान है। इस देन को संस्कृत जगत् कभी नहीं भुला सकता। इस प्रकार के महामना की स्मृति में रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं और भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत जगत् की ओर से शत्-शत् प्रणाम अर्पित करता हूँ। ○

सहकारी आन्दोलन को नवजीवन

भगवतीलाल भट्ट
संचालक, राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ
नई दिल्ली

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सुखाड़ियाजी एक कुशल प्रशासक के रूप में जाने जाते हैं। राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक और समाजवादी गाँधीवाद के दार्शनिक के रूप में भी वे उतने ही कुशल माने जाते हैं।

किसी भी एक विषय पर उनके बारे में लिखते समय बड़ा कठिन है कि किसी एक दायरे में ही उन्हें सीमित रख-कर लिखा जाय। किसी भी विषय पर उनके विचार सदैव ही सुलझे हुए मिलते थे।

चीन के आक्रमण के बाद

मैं केवल सहकारिता के साथ उनके सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूँ –

जब उन्होंने मुख्यमन्त्री के रूप में अपना कार्यभार सम्भाला तब राजस्थान अत्यन्त ही पिछड़ा हुआ था। राजाओं, महाराजाओं तथा जागीरदारों से विरासत में मिला राजस्थान अनेक आर्थिक और सामाजिक अव्यव-स्थाओं से घिरा था, उसे एकरूप देने में कठिन परिश्रम की आवश्यकता थी। जागीरदारी उन्मूलन के साथ ही किसानों की व्यापक समस्याओं की ओर उनका ध्यान गया। अधिक पैदावार हो, किसान की आर्थिक स्थिति सुधरे, इसके लिए आवश्यक था कि कोई ऐसा माध्यम हो जिसके द्वारा किसान को अल्प ऋण, मध्यम ऋण और दीर्घ ऋण की सुविधा मिले। ऋण के साथ ही पैदावार में वृद्धि हो – इसके लिए यह भी आवश्यक था कि अच्छा खाद-बीज मिले। इस भावना को साकार रूप देने के लिए सहकारिता क्षेत्र ही एकमात्र माध्यम था – सहकारी बैंकों की स्थापना, भूमि विकास (पूर्व में मोर्गेज) बैंक का प्रारम्भ तथा उपज को बाजार में पहुँचाने आदि के लिए क्रय-विक्रय सहकारी समितियों का निर्माण, इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम था। राजस्थान में सहकारी आन्दोलन पंगु ही नहीं अपितु नहीं के बराबर था, उसे अपने पैरों पर खड़ा करने में सुखाड़ियाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। चीन के आक्रमण के बाद आम लोगों को जरूरत की चीजें नहीं मिलने की वजह से जो अभाव पैदा हो गया था उसे दूर करने के लिए प्राथमिक भण्डार, होलसेल भण्डारों का गठन करवाकर सहकारिता के क्षेत्र में उन्होंने एक नया अध्याय जोड़ा।

ठेकेदारों के चंगुल से राहत दिलाने के लिए श्रमिकों की अपनी समितियाँ स्थापित करवाई, आवासीय समस्याओं को हल करने के लिए गृह निर्माण सहकारी समितियों की रचना महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

वन श्रमिक सहकारी समितियाँ

मुझे याद है, आदिवासियों की गरीबी से वे इतने चिन्तित थे कि उन्हें राहत दिलाने के लिए वन श्रमिक संघ और वन श्रमिक सहकारी समितियों की स्थापना कराई। यद्यपि कालान्तर में उन संस्थाओं की हालत खराब हो गई। उसके अनेक कारण हैं, उनमें मैं नहीं जाना चाहता।

उनके कार्यालय में सहकारिता के क्षेत्र में अनेक प्रशंसनीय कार्य हुए। शरणार्थियों की समस्या को हल करने के लिए उदयपुर (प्रतापनगर) में भूपाल को-ऑपरेटिव सोसायटी का गठन कर विशाल आवासीय समस्या का समाधान करवाया, छोटे-बड़े उद्योगों की सहकारिता के क्षेत्र में स्थापना कर इसकी नींव को सुदृढ़ करने में सहायता की, केशोरायपाटन का शुगर मिल, गुलाबपुरा का स्पिनिंग मिल, फतहनगर का तेल उद्योग, उदयपुर का चीनी मिट्टी का कारखाना – आज भी प्रकट करते हैं कि सुखाड़ियाजी की सहकारिता के क्षेत्र में कितनी लगन थी।

आर्थिक आजादी का मार्ग

तब ऐसा लगता था कि आर्थिक आजादी के लिए यही एकमात्र मार्ग है। राज्यस्तरीय, जिलास्तरीय संगोष्ठियाँ, चर्चाएँ, कार्यशालाएँ और समारोह सभी में सुखाड़ियाजी सजीव रूप से भाग लेते थे।

राजनीतिक मतभेद होते हुए भी, सहकारिता के क्षेत्र में वे सभी को प्रोत्साहन देते थे और को-ऑपरेटर्स को उनसे प्रेरणा मिलती थी।

सहकारी कर्मियों की सेना

श्री मोतीलाल चोधरी और श्री नारायण चतुर्वेदी आज नहीं रहे, श्री कुम्भाराम आर्य अब सहकारिता में सक्रिय नहीं हैं, पर वे सुखाड़ियाजी के कार्यकाल में अग्रणी थे। श्रीमती कमला, श्री शोभाराम, श्री नत्थी सिंह, श्री विश्वेश्वर भार्गव, श्री पूनमचन्द विश्नोई, श्री रामपाल उपाध्याय, श्री गुलाबसिंह शक्तावत, श्री प्रकाशमल चतुर, श्री महेन्द्र शास्त्री, श्रीमती कान्ता खतूरिया आदि अनेक तब भी सक्रिय थे और आज भी उन दिनों की याद ताजा किये हुए हैं। राजस्थान में उन दिनों को-ऑपरेटर्स की एक सेना थी, स्वयंसेवी सेना, जिन्हें कोई भर्ती नहीं करता था। पर आज तो लगता है, राजस्थान में सहकारिता सूखती जा रही है, कोई सींचने वाला नहीं – केवल इस नाम का अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए उपयोग करना रह गया है – जनता शासन के बाद यही हाल हो गया था।

सहकारी अधिनियम

सुखाड़ियाजी ने राजस्थान के लिए सहकारी अधिनियम का निर्माण कर स्वतन्त्र इकाई के रूप में इस आन्दोलन को प्रतिष्ठित किया।

समय-समय पर अलग-अलग क्षेत्रों में उसके अध्ययन के लिए विभिन्न अध्यापन दल बनायें, उपभोक्ता आन्दोलन को अधिक सुदृढ़ करने के लिए, तब के संसदीय सचिव श्री जसराज की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया, वन श्रमिकों की समस्या के लिए शिवशंकर कमेटी गठित की तथा अनेक ऐसे कार्य किये जिनकी स्मृति मात्र से ही उनकी इस आन्दोलन के प्रति लगन का अहसास होता है।

जब वे तमिलनाडु के राज्यपाल थे, तब मैं उनसे अपने तमिल मित्रों के साथ वहाँ की सहकारिता के क्षेत्र की प्रशासनिक समस्याओं के सन्दर्भ में मिला। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से सबकी बातें सुनीं – और कुछ कारगर कदम उठाने के लिए आश्वासन दिये – आज भी मेरे वे मित्र सुखाड़ियाजी की सूझ-बूझ और क्षमता की प्रशंसा करते नहीं अघाते।

आज की तरह कागजी प्रचार नहीं था, उस समय गाँव की सतह से सहकारिता पल्लवित होती थी, और वट वृक्ष की तरह प्रदेश को अपनी छाया में समेटती थी।

सुखाड़ियाजी का स्पष्ट मानना था कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को यदि सुदृढ़ आधार देना है तो सहकारिता ही उसका प्रमुख माध्यम हो सकता है, इसी तरह पंचायतों की रचना, प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण की प्रतीक होनी चाहिये, इसीलिए उन्होंने अपने जीवन में पंचायतों और ग्राम सेवा सहकारी समितियों की महत्ता को पहचाना तथा उसे दिशा-निर्देश दिया।

कृषक मजबूत हो

उनका एक मात्र लक्ष्य था, किसान। किसान समृद्ध होना चाहिये, सुखी होना चाहिये, यदि किसान मजबूत है तो देश मजबूत होगा और इसीलिए इन संस्थाओं का

विकास किसान के हित में है – किसान के साथ-साथ अन्य वर्ग जो दस्तकारी का काम करते हैं, उनकी भी अपनी समितियाँ हों – जो उन्हें सक्षम बना सके, यही कारण है कि उनके शासन में इस क्षेत्र में सराहनीय प्रगति हुई और आन्दोलन के पक्ष में एक वातावरण बना – आर्थिक आजादी को प्राप्त करने के लिए यही उनका सूत्र था।

अधिकाधिक धन की व्यवस्था

राजस्थान के निर्माण में पंचवर्षीय योजनाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान था, किन्तु प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारंभिक वर्षों में प्रान्त को कोई लाभ नहीं मिला। मुख्यमंत्री बनने के बाद सर्वप्रथम योजना के शेष वर्षों का लाभ प्रान्त को दिया गया, और फिर द्वितीय पंचवर्षीय योजना में अन्य क्षेत्रों के विकास के लिए जितना आयोजन किया गया, उतना ही सहकारिता के लिए भी निर्धारित किया गया और समितियों को सक्षम बनाने के लिए अधिकाधिक धन की व्यवस्था की गई।

व्यक्तिगत जीवन में उनके साथ अनेक विभिन्न विचार वाले व्यक्तियों का सम्बद्ध भी एक प्रकार से सहकार के आधार पर ही था।

वे सच्चे मायने में राजनेता थे – राजनेता सदैव ही भावी पीढ़ी का ख़याल कर अपना कार्य करता है, तात्कालिक फल प्राप्ति की इच्छा राजनीतिज्ञ की होती है, राजनेता पूरे जनसमूह को अपने पीछे लिए हुए चलता है और उनका पथ भी प्रशस्त करता है।

सुखाड़िया के बिना राजस्थान शून्य

इसलिए सदियों से पिछड़ा राजस्थान सुखाड़ियाजी के नेतृत्व में आधुनिक राजस्थान का स्वरूप पा सका। कई मुख्यमंत्री हुए पर सुखाड़ियाजी के बिना राजस्थान शून्य ही माना जायेगा।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान ग्रामीण सर्वेक्षण कमेटी की सिफ़ारिशों और राष्ट्रीय विकास परिषद् के प्रस्ताव के आधार पर राजस्थान में भी पंचवर्षीय योजनाओं में प्रावधान किया गया – इस सन्दर्भ में सुखाड़ियाजी के वक्तव्य के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश उद्धृत हैं –

"आज तो संसार के सभी देशों में सभी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं में सहकारी आन्दोलन का महत्त्व स्वीकार किया जाने लगा है। भारतीय लोकतंत्र में तो इस आन्दोलन का महत्त्व कई दृष्टियों से बहुत अधिक है। हमने भारत को एक समाजवादी राज्य बनाने का संकल्प किया है तथा इस संकल्प को क्रियात्मक रूप प्रदान करने में सहकारी व्यवस्था को बहुत बड़ा योगदान देना होगा……।"

"एक जन प्रतिनिधि सरकार के लिए स्वाभाविक ही था, कि वह सबसे पहले अपना ध्यान इस ओर लगाये कि लोगों के रहन-सहन के स्तर को ऊपर उठाया जाये तथा उन्हें युगों से शोषण करने वाली प्रथाओं से मुक्ति दिलाई जाये।"

"सहकारी संस्थाएँ ग्राम की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए उत्तरदायी हैं, जबकि पंचायतों का प्रबन्ध व्यवस्था के लिए है। दोनों संस्थाओं में पूर्ण समन्वय परम आवश्यक है – हाँ मैं यह मानता हूँ कि दोनों का अस्तित्व और कार्य सुव्यवस्थित रूप से पृथक्-पृथक् हो। इन संस्थाओं में एक दूसरे से सर्वथा अलग रह कर कार्य करने की भावना उचित नहीं है।"

"सहकारिता को आज कितना अधिक महत्त्व दिया जा रहा है, यह इसी बात से स्पष्ट है कि इसे हमारे देश में समाजवादी समाज की रचना का आधार स्वीकार किया गया है। इसे जीवन का अंग बनाने की बात पर जोर दिया जा रहा है। आर्थिक लाभ प्राप्त करने के साथ-साथ सहकारिता सामाजिक व नैतिक विकास में सहायक होती है, जिसकी कि आज के इस जनतंत्रीय युग में पहली आवश्यकता है। परस्पर मिलजुलकर एक दूसरे के लाभ को विचार कर कार्य करने से जहाँ एकता, भ्रातृत्व जैसे भौतिक व मानवीय मूल्यों का विकास कर सकते हैं।"

"एक सबके लिए व सब एक के लिए" के मूल मंत्र को आज सभी को अंगीकार कर इसे कार्य रूप में अपनाना चाहिये।"

इन उद्धृत अंशों के साथ पण्डित नेहरू के इस वाक्यांश के – "सहकारिता सरकारी नियंत्रण नहीं है", यदि कहीं सरकारी नियंत्रण है चाहे अच्छा या बुरा, तो वहाँ पर सहकारिता नहीं हो सकती और चाहे जो कुछ भी हो, हमें इस बात को स्पष्ट समझ लेना चाहिए" के सन्दर्भ में विचार करना चाहिए कि हम किस स्थिति में हैं।

o

सुखाड़िया शासन में श्रम शक्ति का उन्नयन

एन. के. जोशी
सेवा निवृत्त श्रम आयुक्त, राजस्थान
जयपुर

श्री मोहनलाल सुखाड़िया राजनीतिक पटल पर राजस्थान के शुभारम्भ से ही सदैव उदीयमान भानु की तरह राजस्थान की भूमि पर प्रकाशमान रहे हैं। सर्वप्रथम जब राजस्थान का देशी रियासतों के विलीनीकरण के फलस्वरूप प्रथम निर्माण हुआ, उस समय इसकी राजधानी उदयपुर थी और उस समय के मुख्यमन्त्री श्री माणिकलाल वर्मा थे। श्री सुखाड़ियाजी इस मन्त्रिमण्डल में उद्योग एवं श्रम विभाग संभाले हुए थे। मेरा उनसे सर्वप्रथम परिचय सन् 1948 में हुआ। जब वे राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के निर्माण के समय, इसके प्रथम अधिवेशन में उद्घाटन भाषण देने आये थे। सौभाग्यवश, इस अधिवेशन का कार्यवाहक अध्यक्ष मैं चुना गया और इसकी सदारत की तथा मैंने अध्यक्षीय भाषण भी दिया।

सुखाड़िया अवार्ड

मेरी सेवायें कोटा राज्य के राजस्थान में विलीनीकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम उदयपुर में अर्जित की गई। उस समय मैं कोटा में निरीक्षक, इण्डस्ट्रीज एवं कॉमर्स के पद पर कार्य करता था और फैक्ट्रीज अधिनियम का पालन मेरे अधीन था। जब राजस्थान में सर्वप्रथम पृथक् श्रम विभाग का गठन हुआ, तो मुझे निरीक्षक, फैक्ट्रीज तथा माइन्स, बनाकर किशनगढ़ में स्थापित किया गया तथा मुझे किशनगढ़, भीलवाड़ा, निम्बाहेड़ा तथा चित्तौड़गढ़ के जिलों का चार्ज दिया गया। ये क्षेत्र मुख्यतः वस्त्र उद्योग तथा अभ्रक की खानों के प्रमुख केन्द्र थे। इसी अवसर पर महाराजा श्री किशनगढ़ मिल्स लि०, किशनगढ़ तथा मेवाड़ टैक्सटाइल लि०, भीलवाड़ा में श्रमिक आन्दोलन आरम्भ हुआ और स्थिति विस्फोटक बन गई। उस समय किशनगढ़ मिल के लिए प्रशासक की नियुक्ति की गई। श्री मित्तल, जिनकी सेवायें झालावाड़ राज्य के विलीनीकरण से प्राप्त हुई थीं, प्रशासक के पद पर स्थापित किये गये। चूंकि मैं

निरीक्षक, फैक्ट्रीज़ तथा माइन्स के पद पर किशनगढ़ में कार्य कर रहा था, अतएव मेरे क्षेत्र में किशनगढ़ तथा भीलवाड़ा के वस्त्र उद्योग कारखाने आते थे। श्री मित्तल ने मुझ पर इस जिम्मेदारी का भार, मेरे उद्योग एवं श्रम प्रतिनिधियों से परिचय एवं इस विषय का ज्ञान होने के कारण सुपुर्द किया। मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसी आन्दोलन के कारण मेरा भविष्य मुझे स्पष्ट दिखाई देने लगा, अतः मैंने समस्या के निराकरण में लगन तथा ईमानदारी से कार्यभार सम्पन्न किया। अन्त में यह विवाद सुखाड़िया साहब को पंच फैसले के लिये सुपुर्द किया गया, जो आगे चलकर "सुखाड़िया अवार्ड" के नाम से जाना गया। इस अवार्ड के अनुसार श्रमिकों का मासिक वेतन 24 रुपये से 28 रुपये के बीच से बढ़ाकर 56 रुपये प्रतिमास किया गया। मेरा परिचय सुखाड़ियाजी से इस अवधि में घनिष्ठता से हुआ।

अभ्रक खानों में श्रमिकों की दयनीय स्थिति

सुखाड़िया अवार्ड राजस्थान की भावी श्रमिक नीति की आधारशिला बना तथा इसे आधारभूत मानकर भविष्य में उपस्थित श्रमिक समस्याओं का निराकरण एवं समाधान इन्हीं सिद्धान्तों पर किया जाता रहा। सुखाड़ियाजी का श्रमिकों के प्रति विशेष स्नेह था तथा उनके हृदय में श्रमिकों के कल्याण एवं उन्नति के लिए सदैव उत्कंठा बनी रहती थी। वे श्रमिकों की कार्य-दशा, कार्य-विधि एवं कार्य-प्रणाली में आमूल परिवर्तन लाने के समर्थक थे, चूंकि इस समय श्रमिकों का शोषण चरम सीमा पर पहुँच चुका था और उनके हितों के संरक्षण के संबन्ध में, देशी राज्यों में कानून नगण्य थे। इनकी विचारधारा का मेरे जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा और धीरे-धीरे मेरा मानस श्रमिकों के उत्थान की ओर स्वतः ही आकर्षित होता गया। अभ्रक खानों में काम करने वाले श्रमिकों की दशा विशेषकर दयनीय तथा शोचनीय थी। इनका वेतन एवं इनकी कार्यदशा विशेष रूप से चिन्ता का विषय थी। न्यूनतम वेतन अधिनियम, 1948 के लागू होने के पश्चात् इस दिशा में सक्रिय कदम उठाये गये तथा अधिनियम के अन्तर्गत आने वाले सभी प्रतिष्ठानों एवं उद्योगों में, जहाँ वेतनमान जीवन-स्तर से काफी नीचे था, प्रथम बार सरकारी विज्ञप्ति द्वारा न्यूनतम वेतन घोषित किये गये। अभ्रक खान मिल मालिकों ने सरकारी विज्ञप्ति के विरुद्ध उच्च न्यायालय में रिट याचिकायें प्रस्तुत कर, इसको चुनौती दी। अन्य में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय अनुसार ये वेतनमान इन खानों में प्रचलित हुए तथा सरकार ने न्यायालय के निर्णय को दृष्टि में रख, न्यूनतम वेतन अधिनियम में, भारत सरकार के माध्यम से उचित संशोधन करवाये।

श्रमिक कल्याण कार्य

सुखाड़ियाजी ने मंत्री पद से अलग होते ही अपना सार्वजनिक जीवन अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त, श्रमिक हित एवं कल्याण की दिशा में सक्रिय रूप मे लगाया। वे श्रमिक समस्याओं को प्रस्तुत करते तथा उचित ढंग से तर्क द्वारा उनके निराकरण में सहयोग करते रहते थे। मेरे उनसे इन अवसरों पर विस्तृत विचार-विमर्श होते रहते थे। मैंने उनके परिपक्व ज्ञान एवं अनुभव का पूरा लाभ उठाया तथा मेरे जीवन में मैंने इन उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों को पूरी तरह उतारने का सदैव प्रयास किया।

श्रम कानूनों की पालना

बृहत् राजस्थान का निर्माण सन् 1949 में हुआ। उस समय मुझे मेरे अल्प सेवा-काल के कार्यकलाप के फलस्वरूप, निरीक्षक, फैक्टरीज़ तथा माइन्स के पद से पृथक् कर, श्रम अधिकारी के पद पर लगाया गया तथा मेरी पदस्थापना जयपुर में की गई। तत्पश्चात् मुझे विशिष्ट श्रम अधिकारी, राजस्थान के पद पर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवधि में, विलीनीकरण समिति द्वारा सेवाओं का विलीनीकरण किया गया और मैं इस चयन में श्रम अधिकारियों के पद पर सर्वप्रथम घोषित किया गया तथा इस पद पर स्थाई नियुक्ति भी की गई। इसी समय भारत सरकार ने भविष्यनिधि अधिनियम, 1952 के अन्तर्गत राजस्थान में केन्द्रीय कार्यालय स्थापित किया और इस पद के लिए चयन के दौरान मुझे चुनकर प्रति-नियुक्ति पर जयपुर में लगाया गया। सन् 1955 में श्रम विभाग का पुनर्गठन हुआ, मुझे सहायक श्रम आयुक्त के पद पर प्रतिनियुक्ति से बुलाकर लगाया गया। इस काल में सुखाड़ियाजी, राजस्थान के मुख्यमन्त्री थे तथा श्री बृजसुन्दर शर्मा, श्रममन्त्री थे। इसी समय भारत सरकार द्वारा "कोलम्बो प्लान टैक्नीकल एसिस्टेन्स प्रोग्राम" के अन्तर्गत, भारत के पाँच अधिकारियों का चयन हुआ तथा मुझे इस तकनीकी शिक्षा के लिये इंग्लैंड 6 मास की अवधि के लिये जाना पड़ा। प्रशिक्षण से लौटने पर मुझे पुनः सहायक श्रम आयुक्त के पद पर पदस्थापित कर प्रशासन एवं श्रम कानूनों का कार्यभार संभलाया गया। दिनांक 5.5.1959 से सहायक श्रम आयुक्त के पद को अपग्रेड

करके, उप श्रम आयुक्त में बदला गया तथा मुझे इस पद पर स्थापित किया गया। इस समय भी श्रम कानूनों की पालना का कार्य मेरे ही सुपुर्द किया गया। इसी सारी अवधि में मेरा सुखाड़ियाजी से विशेष रूप से सम्पर्क बना रहा।

श्रमिक आन्दोलन का श्रीगणेश

सुखाड़िया शासनकाल के समय श्रम नीति में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। जिनका प्रभाव व्यापक तथा श्रमिक-हित में निहित था। इस समय सरकारी विभागों में, जिनमें श्रमिकों की संख्या प्रचुर मात्रा में थी, आन्दोलन का श्रीगणेश हो चुका था। श्रमिक संगठन तेजी से उभरकर श्रमिक जगत में धाक जमाने लगे थे। वे श्रमिक समस्याओं एवं कठिनाइयों को आन्दोलन, हड़ताल तथा अन्य उचित-अनुचित माध्यमों से सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर रहे थे। इन विभागों में एक प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही थी, जिसके अन्तर्गत वर्क चार्ज कार्यों एवं योजनाओं पर वर्क चार्ज श्रमिक रखे जाते थे तथा उक्त योजना अथवा कार्य की समाप्ति पर, इन श्रमिकों की सेवायें स्वतः समाप्त मान ली जाती थीं। नये कार्यों अथवा नई योजनाओं के बजट स्वीकृति पर पुनः इन्हें कार्य पर लिया जाता था। ऐसे श्रमिक, निरन्तर सेवा-व्यवधान के कारण, वर्ष में न्यूनतम 240 दिन की सेवा पूर्ण नहीं कर पाते थे तथा इन्हें सारी आयु इसी प्रकार कार्य करना होता था एवं श्रमिक लाभ एवं उपलब्धियों से वे सदैव वंचित रहते थे। इस ओर जब सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया, तो इस विषय पर श्री सुखाड़िया ने सहानूभूति पूर्ण दृष्टिकोण अपनाया और निर्णय लिया कि इन श्रमिकों के कार्य एवं दिशा के सुधार हेतु उचित नियमों को लागू किया जाये। फलस्वरूप 6 माह से कम सेवाकाल वाले श्रमिक केज्यूअल, 6 माह से 2 वर्ष के सेवाकाल वाले अस्थाई (टेम्परेरी) और दो वर्ष पूर्ण होने पर इन श्रमिकों को अर्द्धस्थाई घोषित कर, उन्हें अवकाश तथा श्रमिक कानूनों के अन्तर्गत निहित अन्य सुविधाओं से लाभान्वित किया गया, जिसमें भविष्य-निधि का लाभ भी सम्मिलित था। इसी प्रकार 2 वर्ष से 10 वर्ष की सेवाकाल वाले श्रमिकों को स्थायी घोषित कर, उन्हें अन्य श्रमिक सुविधाओं से लाभान्वित किया गया। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय था, जिससे वर्क चार्ज श्रमिकों को न केवल श्रमिक कानूनों का लाभ ही प्राप्त हुआ वरन् उनकी एक कार्य की समाप्ति पर तुरन्त दूसरे कार्य पर लगाने के आदेश भी जारी किये गये, जिससे उनके सेवाकाल में व्यवधान उत्पन्न न हो और उन्हें इन सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त हो सके।

अन्य महत्वपूर्ण निर्णय जो इस काल में लिये गये वे अर्द्धसरकारी संस्थाओं एवं सरकारी नियमों से संबन्धित थे। अर्द्धसरकारी संस्थायें जैसे म्यूनिसिपलिटी इत्यादि में, वेतनमान, कार्य-दशायें, अवकाश की प्रणाली इत्यादि यद्यपि सरकार के आदेशों द्वारा निर्धारित की जाती थी, परन्तु इनमें भेदभाव की नीति अपनाई जा रही थी और प्रत्येक म्यूनिसिपलिटी अपने आय स्रोतों और आय-आंकड़ों के आधार पर, इस नीति का अनुसरण करती थी। इन संस्थाओं में भी इस समय श्रमिक आन्दोलन गति पकड़ चुका था। कई महत्वपूर्ण संस्थानों में हड़तालें हुईं, विशेषकर जयपुर, उदयपुर तथा कोटा म्यूनिसिपलिटियों में ये हड़तालें अधिक समय तक एवं तीव्रता से हुईं। इन संस्थाओं का न्यूनतम वेतन अधिनियम के अन्तर्गत आने के कारण, सरकार ने इनमें न्यूनतम वेतन निर्धारित कर लागू किया। इसके पश्चात्, इन पर सरकारी कर्मचारियों के सम्बन्ध में गठित वेतन आयोगों की सिफारिशों के अनुरूप मिलने वाली सुविधाओं से इन्हें लाभान्वित किया गया। यह भी श्रम नीति की दिशा में एक महत्वपूर्ण निर्णय था, अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं में कार्यरत हजारों श्रमिकों को श्रम कानूनों का लाभ प्राप्त होने लगा।

सरकारी निगमों में श्रम नीति का पालन प्रायः नगण्य था। इनमें निरकुंशता तथा स्वेच्छा की नीति ही श्रमिक-नियोजन संबंधों का आधार थी। इन निगमों के श्रमिकों में भी शनैःशनैः असंतोष व्याप्त हो रहा था तथा वे भी आन्दोलन के मार्ग पर अग्रसर होते जा रहे थे। राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में तो श्रमिक कानूनों तथा नियमों की सुव्यवस्थित ढंग से अवहेलना की जा रही थी तथा श्रम विभाग का सहयोग प्राप्त करने में इनके उच्च अधिकारीगण हिचकिचाहट करते रहते थे, इस निगम के तत्कालीन अध्यक्ष समझौता वार्ता में भाग लेने या श्रमिकों के साथ समझौता सम्पन्न करने से सदैव कतराते रहते थे तथा श्रम विभाग के उच्च अधिकारियों की भी खुले रूप से आलोचना किया करते थे। शनैः शनैः इस ओर भी सरकार का ध्यान आकर्षित हुआ। श्री सुखाड़िया ने इस दिशा में पहल की। सर्वप्रथम इन निगमों को आदेश जारी कर, श्रम विभाग का परामर्श एवं सहयोग प्राप्त करने को लिखा गया। इसके फलस्वरूप राजस्थान राज्य मण्डल तथा राजस्थान राज्य

पंच परिनिर्णय नियम अवार्ड श्रमिकों पर लागू हुए। इन दोनों नियमों के विवादों में मुझे पंच के रूप में स्वीकार किया गया, जिसमें मार्गदिशा स्वयं श्री सुखाड़िया द्वारा सुझायी गयी।

श्री सुखाड़िया ने अपने शासनकाल के दौरान श्रमिकों की मांगों, समस्याओं तथा सुविधाओं के संबंध में कई महत्त्वपूर्ण पंच निर्णय दिये, जिनसे श्रमिकों की कार्य-दशा में ही नहीं परन् उनके जीवन स्तर में भी महत्त्व-पूर्ण परिवर्तन हुए, इस प्रकार के अवार्ड, सुखाड़िया-अवार्ड के नाम से प्रचलित हुए।

श्री सुखाड़िया को श्रमिकों के प्रति विशेष प्रेम, लगाव तथा आकर्षण था यद्यपि वे यह भी मानते थे कि राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से एक पिछड़ा प्रांत है और यहाँ अधिक से अधिक औद्योगिकीकरण की आवश्यकता है। इनके समय में महत्त्वपूर्ण उद्योग प्रांत में लगे तथा इनके द्वारा श्रमिकों के रोजगार के अवसर भी बढ़े। परन्तु उन्होंने श्रमिकों के हितों को सर्वोपरि रखा तथा श्रमिक संगठनों के प्रति भेदभाव की नीति का कभी अनुसरण नहीं किया। वे जानते थे कि किस स्थान पर किस श्रम संगठन का बाहुल्य है। उन्होंने अमुक संगठन के साथ नियोजकों से समझौते करवाये तथा अपना सहयोग देने में सदैव तत्परता दिखाई। जे. के. सिंथेटिक लि. कोटा में श्री मोहन पूनमिया के संगठन का अधिक प्रभाव था। वे इस बात को पूर्णतया जानते थे अतः उनके माध्यम से इस उद्योग के प्रतिनिधियों एवं श्रमिक संगठन में, उनके समक्ष वार्तास्वरूप कितने ही महत्त्वपूर्ण निर्णय, समझौता-अवार्ड के रूप में लिये गये। उन्होंने सभी संगठनों के नेताओं एवं प्रतिनिधियों से खुले रूप से वार्ताएँ कीं और उनकी उचित मांगों के समाधान की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह उनकी निष्पक्ष श्रम-नीति का द्योतक है। श्रमिक हित के संबंध में वे पार्टी भावना से सदैव ऊपर रहा करते थे।

मुझे स्मरण है कि उन्होंने 1962 में केबीनेट स्तर पर यह निर्णय लिया था कि श्रम विभाग के ही उच्च अधिकारी को श्रम आयुक्त के पद पर पदोन्नत किया जावे, परन्तु उन्हें जब यह ज्ञात हुआ कि अजमेर के विलीनीकरण के कारण, मुझसे एक अन्य अधिकारी वरिष्ठ हैं और वे इस पद पर कुशलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकेंगे तो इस निर्णय को कुछ समय के लिये स्थगित करवा दिया। सन् 1966 में उन्होंने राज्य सचिवालय स्तर पर, श्रम-सलाहकार का पद सृजन कराकर, मेरी सेवायें इस पद पर लेना प्रारम्भ किया। सन् 1967 में जब सेवानिवृत्ति की आयु 58 वर्ष से घटाकर 55 वर्ष हुई, वे अधिकारी जो मुझसे वरिष्ठ थे, सेवा-निवृत्त हो गये। इस अवसर पर आपने मुझे श्रम आयुक्त के पद पर पदोन्नत कर, विभाग में भेज दिया। मेरे श्रम-सलाहकार के कार्य के साथ मुझे पदेन उप सचिव (श्रम) का कार्य भी करने को दिया गया था। अतः मेरे श्रम आयुक्त नियुक्त होने पर, मुझे पदेन उप सचिव (श्रम) के कार्य पर लगाये रखने का भी निर्णय लिया। बाद में यह पद, कार्य के विस्तार पर, बढ़ाकर, अतिरिक्त शासन सचिव में परिवर्तित कर दिया गया और श्रम विभाग के संयुक्त श्रम आयुक्त को पदेन उप सचिव के अधिकार दिये गये। यह एक महत्त्वपूर्ण एवं साहसिक निर्णय था, चूंकि इस समय भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में आई०ए०एस० अधिकारी ही इस पद पर पदासीन थे। मेरे श्रम आयुक्त काल में, श्रम विभाग के अन्य उच्च अधिकारियों, उदाहरणार्थ, चीफ इन्सपेक्टर ऑफ फैक्ट्रीज एण्ड बॉयलर्स तथा निदेशक, रोजगार विभाग ने मेरी नियुक्ति का विरोध किया जिन्हें अस्वीकृत किया गया। आई०ए०एस० अधि-कारियों ने भी इस निर्णय के विरुद्ध कितनी ही बार प्रति-वेदन प्रस्तुत किये तथा प्रतिरोध प्रकट किया, परन्तु श्री सुखाड़िया ने यह महसूस किया कि जो निर्णय उन्होंने लिया है सही है और विभाग का कार्य पूर्व की अपेक्षा अधिक सुचारु रूप से चल रहा है, उन्होंने केन्द्र में गृह विभाग से परामर्श कर, इस पद को आई०ए०एस० केडर से पृथक् करवाकर, विभागीय पद से भरने के संबंध में, नियमों में परिवर्तन करवाया तथा मुझे इस पद पर स्थाई घोषित कर दिया। यही श्री सुखाड़िया के निजी-व्यक्तित्व का ज्वलंत प्रमाण है कि वे जिस किसी व्यक्ति को सरकारी पद के योग्य समझते थे, उसे सदा संरक्षण देते रहते थे। मुझे पूर्णतया स्मरण है कि श्रम नीति के संबंध में अथवा जटिल श्रम समस्याओं के समाधान के समय, श्रममंत्री तथा अन्य विभागीय मंत्रीगण उनसे परामर्श एवं विचार-विमर्श किये बिना, कोई ठोस निर्णय लेने से हिचकिचाते थे। वास्तव में श्रम विभाग उनके अधीन न होने पर भी, राजस्थान की श्रम-नीति उन्हीं की देन है और श्रमिकों को जितनी भी उपलब्धियाँ इस नीति के कारण प्राप्त हुईं, वे उनके श्रमिकों के प्रति स्नेह तथा उनके कल्याण एवं उत्थान के संकल्प का ही प्रतीक है।

पंच निर्णय की एक अनूठी मिसाल

एक अन्य घटना का मुझे स्मरण हो रहा है, जो बड़ी ही दिलचस्प तथा उनके प्रति श्रमिकों एवं उनकी निष्पक्ष नीति पर आधारित है। श्री सुखाड़िया ने जब मुख्यमन्त्री पद छोड़ा, उस समय वे जयपुर उद्योग लि०, सवाईमाधोपुर की लगभग 40 मांगों पर पंच की हैसियत से कार्य कर रहे थे। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि चूंकि वे अब मुख्यमंत्री नहीं रहे और राज्यपाल की हैसियत से बंगलौर जा रहे हैं अतः इनके स्थान पर श्रम आयुक्त को पंच नियुक्त करने के लिये दोनों पक्षों की सहमति प्राप्त कर ली जावे। मैंने उन्हें नजीर पेश कर तर्क दिया कि श्री सम्पूर्णानन्द जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे, उनके पंच निर्णय में कई महत्वपूर्ण विवाद खांड (शुगर) उद्योग से सम्बन्धित विचाराधीन थे। राजस्थान के राज्यपाल की नियुक्ति के पश्चात् भी, वे इस रूप में कार्य करते और दोनों पक्ष उन्हें जयपुर आकर अपना प्रतिवेदन देते तथा वार्ता करते थे अतः उनके राज्यपाल बनने से इस दिशा में कोई आपत्तिजनक कठिनाई दिखाई नहीं देती। आपको निजी हैसियत से पंच नियुक्त किया गया है और आप पर दोनों पक्षों का पूर्ण विश्वास है तथा वे अभी भी आपके द्वारा इन मांगों पर पंच-निर्णय चाहते हैं। वे मुस्कराकर कहने लगे, मुझे यह सुझाव एक शर्त पर मंजूर है कि तुम मेरे प्रतिनिधि की हैसियत से इन विवादों के हल कराने में, समय-समय पर मुझे सहयोग देते रहोगे। मुझे केवल एक ही आपत्ति थी। मुझे 1971 एवं 1973 की अवधि में दो बार हार्टअटैक (दिल के दौरे) हो चुके थे तथा डाक्टरों के परामर्श के अनुसार मैं अकेला यात्रा नहीं कर सकता था। उन्होंने मेरी कठिनाई को महसूस करते हुए, दोनों पक्षों को इस बारे में उदारतापूर्वक रवैया अपनाने की सलाह दी और कहा कि श्री जोशी की बंगलौर अथवा अन्य स्थानों पर जहां-जहां वार्ता रखी जायेगी, सपत्नीक आया करेंगे तथा नियोजक को इनके हवाई जहाज का दोनों ओर का व्यय वहन करना होगा। इसी के सन्दर्भ में, उन्होंने यह भी कहा कि नियोजक प्रतिनिधियों को भी आने का खर्चा हवाई जहाज का देंगे जिससे श्री जोशी के लम्बे प्रवास के कारण, उनके सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न न हो। इस प्रकार के निर्णय एक साधारण व्यक्ति की क्षमता से बाहर हैं। इन वार्ताओं में उन्होंने श्रममन्त्री को भी सदैव आमन्त्रित किया। उनकी उदार-हृदयता एवं प्रसन्न-मुद्रा का दूसरा उदाहरण यह है कि उन्होंने वार्ता एक ही स्थान पर न रखकर, अन्य स्थानों पर रखी तथा हमारे इन स्थानों तक जाने व आने एवं ठहरने, खाने-पीने की भी पूर्ण व्यवस्था करवाई। वार्ताएं बंगलौर के अतिरिक्त मैसूर, बांदीपुर (गेमसेक्चुअरी), ऊँटी (उटकमंड), तिरुपति के बालाजी जैसे महत्त्वपूर्ण स्थानों पर हुई, जिसमें हमें इन स्थानों के देखने के अतिरिक्त, वहां के वातावरण में उनके पूर्णतया पारिवारिक ढंग एवं आत्मीयता की भावना का अहसास भी हुआ। वार्ता के दिनों में तथा पश्चात् भी वे समय निकालकर दोनों पक्षों से पृथक्-पृथक् एवं संयुक्त रूप से वार्ता करते रहते थे। उनके वार्ता करने का ढंग अनूठा था। वे दोनों पक्षों को पृथक्-पृथक् बुलाकर, लंच अथवा डिनर पर आमन्त्रित कर, वार्ता करते थे। मुझे इन अवसरों पर, सदैव उनके साथ ही रहना होता था। यह उनका मेरे प्रति सहृदयता का प्रतीक था। वार्ता के पूर्व एवं पश्चात्, वे मुझसे अलग से सारे विषयों पर विस्तृत चर्चा किया करते थे। आर्थिक तथा अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी गंभीरता से विचारों का आदान-प्रदान करते थे और मुझसे समस्या के निष्पक्ष तथा उचित निर्णय के संबंध में सुझाव आमन्त्रित करते रहते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि वे मुझे इतना सम्मान देते थे और मेरे विचारों एवं सुझावों की कद्र भी करते थे। इन्होंने अधिकांश निर्णय, जो अन्तरिम-अवार्ड के रूप में दिये, समझौता-अवार्ड के रूप में ही दिये, जो दोनों पक्षों के परामर्श एवं स्वीकृति पर आधारित थे। वार्ता लगभग 3 वर्ष तक चली। अन्तिम वार्ता तिरुपति में हुई, जहां पूर्ण-अवार्ड देकर, उन्होंने दोनों पक्षों की सहमति एवं विश्वास प्राप्त किया। यह पंच निर्णय की एक अनूठी मिसाल है, जहां पंच-अवार्ड विवादग्रस्त पक्षों की सहमति तथा समझौते के आधार पर घोषित किया गया।

श्री सुखाड़िया के साथ मेरे जीवन का सम्बन्ध मेरे लिए गौरव एवं सौभाग्य-मय काल का प्रतीक है। वे युग-पुरुष ही नहीं थे वरन् राजस्थान के निर्माण तथा राज्य की श्रम-नीति के सूत्रधार एवं कर्णधार भी थे। श्रमिक वर्ग उनकी स्मृति अपने मानस पटल से कभी ओझल नहीं कर सकता। जो स्थिति एवं दशा श्रमिक वर्ग की राजस्थान में आज दिखाई देती है, यह उन्हीं के संकल्प और श्रमिकों के प्रति उनकी भावनाओं का ज्वलंत प्रमाण है। इतिहास इसका साक्षी होगा कि सुखाड़ियाजी सरीखे व्यक्ति इस धरती पर कभी-कभी पैदा होते हैं और उनका जन्म युग-निर्माण तथा युग परिवर्तन के लिये ही होता है। निश्चय ही, श्री सुखाड़िया राजस्थान की भावी श्रमनीति के प्रथम निर्माता हैं, जिन्होंने शोषित एवं पीड़ित श्रमिक वर्ग को कष्टमय पृष्ठभूमि से उठाकर, आज की स्थिति में लाने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

राजस्थान विधान सभा में असाधारण कार्य

□
दीपेन्द्रसिंह शेखावत
पूर्व विधायक

20 फरवरी, 1982 को राजस्थान विधान सभा के सत्र को राज्यपाल महोदय ने संबोधित किया, यह एक परम्परागत कार्य था जो गत 30 वर्षों से हो रहा है। लेकिन इसके बाद विधान सभा ने जो कुछ किया या विधान सभा में जो हुआ वह परम्परागत नहीं, असामान्य या असाधारण ही था।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के बाद जब सदन की बैठक दोपहर को लगभग एक बजे पुनः शुरू हुई तो सदन में सन्नाटा था। सदन श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा था स्व. मोहनलाल सुखाड़िया को।

सुखाड़िया सन् 1952 से 1971 तक इस सदन के सदस्य रहे, इस दौरान 1954 से 1971 तक वे इस सदन के नेता रहे और राजस्थान के मुख्यमंत्री।

प्रत्येक वक्ता का हृदय-स्थल के अंतःस्थल से निकला हुआ एक-एक शब्द किसी तीखे बाण की तरह हर सदस्य के दिल को झकझोर रहा था। केवल सदस्य ही क्यों सदन की दीर्घाओं में बैठे प्रत्येक व्यक्ति के दिल को भी झकझोर रहा था। फिर वही दृश्य आँखों के सामने आ रहा है, 31 जनवरी, 1982 को बीकानेर में पंचायतराज सम्मेलन में बोलते-बोलते अचानक सुखाड़ियाजी की तबियत खराब हो गयी थी। मैं स्वयं भी उस सम्मेलन में उपस्थित था, उन्हें तुरन्त अस्पताल में भर्ती कराया गया, वहाँ उन्होंने अपने परिजनों और सभी शुभचिन्तकों को यह विश्वास दिलाया कि वे शीघ्र ही ठीक हो जायेंगे, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था, केवल 3 दिन बाद ही उसने हमसे उन्हें सदा के लिये छीन लिया।

सुखाड़ियाजी की मृत्यु की खबर पूरे प्रदेश में ही नहीं बल्कि देशभर में जंगल की आग की भाँति फैल गयी।

इसीलिये तो सदन के नेता मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मृत्यु तो सभी की होती है, लेकिन ऐसे व्यक्ति की मृत्यु जिसकी क्षतिपूर्ति मुश्किल हो, समय से पूर्व हो जाना हमारे लिये विधि की अजीव विडम्बना है।

श्री माथुर ने भर्राये गले से कहा, "सुखाड़ियाजी की जिन्दगी एक पैगाम थी, राजस्थान की विकास योजनाओं का मूलतः सारा श्रेय सुखाड़ियाजी को ही है।"

मुख्यमंत्री के बाद विपक्ष के नेता श्री भैरोंसिंह शेखावत का भी गला शुरू में ही भर्रा गया और सदन में सदैव वाक्-प्रहार करने वाला यह विपक्षी नेता भी यह कहने को विवश हो गया कि "सुखाड़ियाजी को किन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की जाये यह मेरे लिये बहुत ही समस्या का विषय है।"

भावावेश में भैरोंसिंहजी तो यह भी स्वीकार कर गये कि 20 वर्षों तक लगातार प्रयास करने के बाद भी वे सुखाड़ियाजी को "प्रोवोक" करने में असफल रहे। सुखाड़ियाजी की सहिष्णुता और सहनशीलता की गहराई का इससे बड़ा कोई उदाहरण नहीं हो सकता।

इसीलिये उन्होंने कहा कि राजस्थान नहर, खेतड़ी कॉपर, हिन्दुस्तान जिंक, चम्बल परियोजना न जाने कितने ऐसे नाम हैं जो सुखाड़ियाजी की स्मृति के बोलते हुए स्मारक हैं।

वयोवृद्ध नेता और कांग्रेस में सुखाड़ियाजी के सहयोगी श्री राजबहादुर की स्थिति तो यह हो गयी थी कि उन्हें अपनी बात कहने के लिये शायद शब्द ही नहीं मिल पा रहे थे। उनका अनुभव था कि सुखाड़ियाजी की मृत्यु से पूरे राजस्थान के जीवन में एक शून्यता आ गयी है। इस स्थान को कोई नहीं भर सकता। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार किया कि राजस्थान को बढ़ाने की बात पर चाहे हम सब लोग कभी पीछे रह गये हैं लेकिन सुखाड़ियाजी कभी पीछे नहीं रहे।

इसके बाद भी एक-एक कर सभी दलों के नेताओं श्री हजारीलाल शर्मा, श्री मेघराज तावड़, श्री मोहनलाल मोदी, श्री यदुनाथ सिंह और श्री त्रिलोक सिंह ने भी लगभग इन्हीं शब्दों में सुखाड़ियाजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अध्यक्ष श्री पूनमचन्द विश्नोई ने सबसे अंत में अपनी यादों को ताजा करते हुए पूरे सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जब यह कहा कि मेरी तो हार्दिक कामना है कि "अगर पुनर्जन्म संसार में होता हो तो सुखाड़ियाजी दुबारा हमारे इस प्रदेश के अन्दर जन्म लेकर आयें" जो सारे सदस्यों की आँखें पुनः भर आई।

दोपहर के करीब ढाई बज चुके थे, श्रद्धांजलियों का दौर करीब डेढ़ घंटे तक चला। पूरे समय हर सदस्य केवल मन-मस्तिष्क पर केवल एक नाम अंकित था – मोहनलाल सुखाड़िया। हर सदस्य यह सोच रहा था मानो सदन में कहा गया एक-एक शब्द उसकी ही ओर से कहा गया है और विधान सभा भवन का प्रत्येक कोना ऐसा मौन प्रतीत हो रहा था मानो वह अब भी उस महापुरुष का इंतजार ही कर रहा हो।

विजयश्री
का
निरन्तर शंखनाद

रामस्वरूप दंतोलिया
बिलौंची (जयपुर)

श्री सुखाड़िया राजस्थान की राजनीति-गगन के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। राजनीति में प्रवेश करने के बाद जहाँ एक ओर निर्विवाद नेता के रूप में रहे वहीं दूसरी ओर लाखों गरीब किसानों, हरिजनों, आदिवासियों, मजदूरों व हर एक पिछड़े तबके के लोगों के लिए हृदयसम्राट बनकर रहे।

श्रेयस्कर गुणों का अनुपम संयोग

श्री सुखाड़िया में कुशल नेतृत्व के वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक सर्वमान्य नेता के लिए अपेक्षित होते हैं। श्री सुखाड़िया में मिलनसारिता, मृदुभाषिता, कष्ट सहिष्णुता, धीरता, गम्भीरता आदि महत्त्वपूर्ण श्रेयस्कर गुणों का अनुपम संयोग था। जिनके कारण वे सदा अग्रगण्य बने रहे।

श्री सुखाड़िया में दो ऐसे महान गुण भी थे कि जो सुखाड़ियाजी की लोक यात्रा में लक्ष्य तक पहुँचने की सफ़ल साधना के लिए अमोघ अस्त्र की तरह वरदान सिद्ध हुए। वे महान् गुण थे अप्रत्यपकारिता – बुराई के बदले में बुराई न करना एवं निर्भीकता। इन दोनों दैविक गुणों के कारण ही वे विलक्षण रहे और एक महान् व्यक्तित्व के रूप में परिलक्षित होते रहे।

सफ़लता का रहस्य

एक बार एक संवाददाता सम्मेलन में किसी संवाददाता ने उनसे इतनी सुदीर्घ राजनीतिक सफ़लता के साथ कुशल प्रशासन का रहस्य पूछ लिया जिसके उत्तर में सुखाड़ियाजी ने हँसकर उत्तर दिया, "मैंने किसी के प्रति बदले की भावना नहीं रखी। मैंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा, अपना लक्ष्य ही मेरी साधना बनी रही"। यह वास्तव में उन्होंने सहज ही अपनी सफ़लता का रहस्य बता दिया था।

सुखाड़ियाजी में संकट में भी धैर्यवान रहकर कार्य करते रहने का एक अनुपम गुण था। वे कभी घबराते नहीं

थे। 1967 के आम चुनावों में जब राज्य का राजनीतिक वातावरण असामान्य हो रहा था विपक्षी दलों के चुनावी गठबन्धन के कारण आकस्मिक अल्पकालिक राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई थी। कांग्रेसी खेमें में सन्नाटा-सा छा रहा था। एक भयावह राजनीतिक झंझावात बह रहा था। विपक्ष के बड़े-बड़े दिग्गज विचार साम्य न होते हुए भी सत्ता की लालसा में एक मंच पर एकत्रित हो गये थे और दोनों हाथ उठा-उठा कर बड़ी भारी शेखी बघार रहे थे। जयपुर की लड़ाई दिल्ली तक हलचल मचा रही थी। तत्कालीन विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों में से तथाकथित ९५ विधायकों ने महामहिम राष्ट्रपति महोदय तक जाकर अपनी प्रतिक्रान्ति का बिगुल बजा दिया था। एक विचित्र माहौल बन गया था।

परन्तु संकट की ऐसी घड़ियों में जब कि पूर्ण निराशामय वातावरण छाया हुआ था सुखाड़ियाजी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, अनोखी सूझबूझ व उदाहरणीय निर्भीकता के साथ उस संकट का सामना ही नहीं किया अपितु राजनीतिक दलदल में फँसी कांग्रेस की गाड़ी को दलदल से बाहर खींच कर विजयश्री का शंखनाद बजा दिया था। कांग्रेस के डगमगाते राज्य सिंहासन को पुनः प्रतिष्ठित कर गिरते हुए सत्ता मुकुट को बचा लिया था। यह अनोखा करिश्मा कोई जादू नहीं था। उस महाप्राण की अपनी अप्रतिम विलक्षणता का एक अनुपम उदाहरण था।

गाय पर ठप्पा लगाना है

श्री सुखाड़ियाजी जैसी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे वैसी ही विलक्षण निर्भीकता के भी बेजोड़ उदाहरण थे। एक बार जयपुर में बड़ी चौपड़ पर एक चुनावी सभा हो रही थी, सुखाड़ियाजी भाषण दे रहे थे। किसी विक्षिप्त समाज कण्टक ने मंच पर पत्थर फेंका, पत्थर सुखाड़ियाजी के कान के पास से गुजरता हुआ पीछे लगे कांग्रेस चुनाव चिन्ह गाय के पेट पर लगा। बोर्ड में कपड़ा लगा हुआ था। पत्थर से कपड़ा फटकर बड़ा-सा छेद हो गया और पत्थर पीछे जा गिरा। तत्काल सुखाड़ियाजी ने हँसकर निर्भीक भाव से सभा को सम्बोधित कर कहा, हाँ, बस यहीं पर आपको बैलट-पेपर में चिन्ह पर ठप्पा लगाना है। यह देखिए किसी भाई ने पत्थर फेंक यह चिन्ह लगाने का स्थान बता दिया है। यह मैं तो भूल ही रहा था। इस निर्भीक वक्तव्य से सभा में बैठे सभी लोग दंग रह गए और सुखाड़ियाजी के अदम्य साहस की सराहना किए बिना नहीं रहे।

ऐसी अनेक घटनाओं में सुखाड़ियाजी ने अपने आपको इस राजस्थान की वीरजनयित्री धरा का धीरवीर पुत्र प्रमाणित किया। सदा संकटों से हँसते-हँसते जूझते रहना तो उनका स्वभाव ही हो गया था। अपने दैवी गुणों से समकालीन इतिहास में अनन्यता प्रकट करते रहे और सदा विजयश्री प्राप्त करते रहे।

सर्वदा अविजेय

चाहे विधानसभा में विपक्षियों का भयानक वाक् प्रहार भूचाल आया हो चाहे सड़कों पर भूस्वामियों का वीभत्व आन्दोलन आया हो या वाग्जीवियों का अहंपूर्ण असहयोग प्रदर्शन आया हो उस माई के लाल ने कभी डरना तो सीखा ही नहीं था बस जमना ही सीखा था। एक तरफ हजारों तो एक तरफ वे अकेले ही डटे रहते थे, जमे रहते थे। क्या काम भगने का, क्या मजाल थोड़ी भी थकान आने देते। और इस प्रकार सदा अविजेय बने रहे।

यह निर्विवाद तथ्य है कि सामन्ती रूढ़ियों में फँसा राजपूताना स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रथम दशक में देश के अत्यन्त पिछड़े हुए प्रान्तों की गणना में आता था। प्रदेश जहाँ एक ओर घोर अशिक्षा, अंधविश्वास तथा अस्पृश्यता एवं दरिद्रता के भयंकर अंधकार में जकड़ा हुआ था वहीं दूसरी ओर निरन्तर अनावृष्टि, बाढ़ आदि प्राकृतिक विपदाओं की विभीषिका व्याप्त थी। सैकड़ों वर्षों की गुलामी से त्रस्त यहाँ के जनमानस को प्राकृतिक विपदाओं एवं सामंती परम्परा की शृंखलाओं ने विचारहीन व पंगु बना कर रख दिया था।

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

ऐसे संकटापन्न वातावरण में प्रदेश की बागडोर संभालकर जिस योग्यता एवं दूरदर्शिता के साथ सफल शासन का (संचालन) किया यह उसी का परिणाम है, कि आज का राजस्थान, देश के अग्रगण्य विकासमान राज्यों में अपना स्थान बनाने में अग्रसर है। गाँव-गाँव में सड़कें, कूए, कुओं पर बिजली व घर-घर में प्रकाश की ज्योति जगमगा रही है। राजस्थान में पंचायतराज, भूमि सुधार, सामंतवाद से छुटकारा, औद्योगिक प्रगति सुखाड़ियाजी की अविस्मरणीय स्मृतियाँ हैं। सुखाड़ियाजी का सफल सुदीर्घ शासन संचालन राजस्थान के लिए वरदान सिद्ध हुआ – यह निर्विवाद सत्य है। आइए हम सब उस महान् आत्मा को श्रद्धावनत होकर सादर श्रद्धांजलि अर्पित करें। ●

श्रमिकों को श्री सुखाड़िया की देन

श्री मोहनलाल सुखाड़िया देश के गिने चुने योग्यतम मुख्यमंत्रियों में से एक थे जिन्होंने राजस्थान के नवनिर्माण में अपना जीवन खपा दिया। आज का यह राजस्थान श्री मोहनलाल सुखाड़िया के समर्पण की देन है। श्री सुखाड़िया ने अपने लम्बे कार्यकाल में अच्छे प्रशासन और कर्मठता का परिचय दिया। उनके प्रशासन में कर्मचारियों और अधिकारियों, प्रबन्धकों और श्रमिकों के बीच सम्बन्ध मधुर रहे। विरोधी दलों को भी श्री सुखाड़िया ने सदैव महत्व दिया तथा उनकी बातों, सुझावों को सुनकर राजस्थान की जनता का हितवर्धन किया। श्री सुखाड़िया को सभी पक्षों ने सदैव सम्मान दिया। उन्होंने जिन लोगों को राजनीति में प्रशिक्षण दिया, वे बाद में अच्छे राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक साबित हुए।

श्रमनीति का रुपहला परिचय

1955 में मैं आबूरोड से जयपुर आया और मैंने वेस्टर्न रेलवे मजदूर संघ का कार्य सम्हाला। श्री सुखाड़िया ने संघ को मजबूत एवं विकसित करने में भरपूर योगदान दिया। श्री सुखाड़िया ने संघ के प्राय: सभी अधिवेशनों, सभाओं में अपनी उपस्थिति देकर श्रमिकों का उत्साहवर्धन किया। इन्टक को मजबूती प्रदान करते हुए भी श्री सुखाड़िया अन्य श्रमसंघों को पनपाने के सदैव हामी रहे। यही कारण था कि अन्य श्रमसंघों के नेतागण भी श्री सुखाड़िया से प्रसन्न थे तथा उनकी कार्यशैली के प्रशंसक भी। श्री सुखाड़िया स्वयं श्रमिक नेता थे। स्वतंन्त्रता से पूर्व मेवाड़ टैक्सटाईल मिल के श्रमिकों की बागडोर सम्भाल कर संघर्ष किया तथा श्रमिकों को शोषण से बचाकर, उन्हें संगठन का महत्व समझाया। 1948 में संयुक्त (राजस्थान) राज्य के वे प्रथम श्रममन्त्री बने। आज का श्रमतंत्र सुखाड़ियाजी की देन है। देशी रियासतों में श्रमतंत्र की कोई व्यवस्था नहीं थी। सुखाड़ियाजी ने श्रम विभाग की रचना की तथा प्रमुख औद्योगिक नगरों में श्रम विभाग के कार्यालय खोलकर, सरकार की श्रमनीति का रुपहला परिचय दिया। श्रम अधिकारियों, कारखाना निरीक्षकों आदि की नियुक्तियां करके श्री सुखाड़िया ने श्रम कल्याण की दिशा में एक महान कदम उठाया।

हजारीलाल शर्मा

अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस, जयपुर

श्री सुखाड़िया ने प्रदेश की प्रगति की दिशा में जो काम किये थे उन्हीं का नतीजा है जो एक पिछड़ा प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से आगे बढ़ रहा है। श्री सुखाड़िया के प्रभाव एवं प्रयासों से ही उद्योगपतियों ने इस सूखे प्रदेश में उद्योग लगाये। इसी प्रकार श्री सुखाड़िया की पैनी सूझबूझ से राजस्थान में केन्द्र एवं राज्य के सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की स्थापना हुई जिससे प्रदेश की जनता को रोजगार के भरपूर अवसर मिले तथा प्रदेश सम्पन्नता की ओर अग्रसर हुआ।

श्रम सलाहकार मंडल की स्थापना

श्री सुखाड़िया ने केन्द्रीय श्रम कानूनों को राजस्थान में लागू किया तथा त्रिपक्षीय आधार पर राजस्थान श्रम सलाहकार मण्डल की स्थापना की। श्री सुखाड़िया ने श्रम-जगत की समस्या निपटाने तथा उन्हें सम्पन्नता की ओर ले जाने हेतु वे सभी कदम उठाए जो औद्योगिक प्रजातन्त्र के लिए आवश्यक थे। उन्होंने श्रम कानूनों के सन्दर्भ में राज्य के नियमों की रचना एवं क्रियान्वयन हेतु श्रमहित में अपनी प्रगाढ़ रुचि दर्शाते हुए, आवश्यकता पड़ने पर अपने प्रभाव एवं अधिकारों का भी उपयोग किया।

राजस्थान में न्यूनतम वेतन के निर्धारण का श्रेय भी कुशल प्रशासक एवं दूर-दृष्टा श्री सुखाड़िया को ही जाता है। श्रम विवादों को जल्दी सुलझाने एवं श्रमिकों को सामाजिक न्याय दिलाने तथा औद्योगिक शान्ति की स्थापना में श्री सुखाड़िया ने सदैव गहरी दिलचस्पी ली। राजस्थान के सूती कपड़ा उद्योग श्रमिकों के वेतन समानीकरण की दिशा में प्रथम प्रयास भी श्री सुखाड़िया का ही रहा। वेतन के समानीकरण हेतु "सुखाड़िया अवार्ड" सर्वविदित है। सूती कपड़ा उद्योग में कार्य दशाओं की जांच हेतु "देशपाण्डे समिति" की नियुक्ति भी श्री सुखाड़िया ने ही की। मँहगाई भत्ते को मूल्य सूचकांक के साथ जोड़ने हेतु फार्मूला तय करने के लिए "माथुर समिति" की स्थापना की। आज तक भी मंहगाई भत्ते का निर्धारण माथुर समिति की सिफारिशों के आधार पर ही होता है। श्री सुखाड़िया श्रमिकों एवं राज्य कर्मचारियों के हितों की सदैव रक्षा करते रहे।

श्री सुखाड़िया ने प्रदेश को दो महत्त्वपूर्ण श्रम कानून दिये तथा उनका सफल क्रियान्वयन करवाया—पहला, राजस्थान दुकान एवं वाणिज्य प्रतिष्ठान कानून 1958, दूसरा, राजस्थान औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1958। इस प्रकार प्रदेश के श्रमिकों को शोषण से मुक्ति दिलाने तथा उद्योगों में शान्ति की स्थापना की दिशा में श्री सुखाड़िया के प्रयास सराहनीय हैं। राजस्थान औद्योगिक विवाद अधिनियम में प्रतिनिधि यूनियन के रजिस्ट्रेशन का प्रावधान रखा गया। देश में महाराष्ट्र के बाद राजस्थान ही ऐसा प्रान्त रहा जिसमें सरकार ने ऐसा प्रावधान रखा। इससे श्री सुखाड़िया की प्रगतिशील दृष्टि का बोध होता है तथा ऐसे सपने का आभास मिलता है जो देश में राजस्थान को औद्योगिक सम्पन्नता में पहला स्थान दिला सके।

श्री सुखाड़िया ने कई महत्त्वपूर्ण औद्योगिक विवादों में अवार्ड दिये—जयपुर उद्योग, सवाईमाधोपुर, जे०के० सिन्थेटिक्स, कोटा, टैक्सटाईल उद्योग राजस्थान आदि। जिनके फलस्वरूप हजारों श्रमिकों को वेतन वृद्धि के साथ अन्य कई लाभ प्राप्त हुए।

जनता के मसीहा

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि श्री सुखाड़िया शोषितों के दर्द को महसूस करते थे तथा जन-सामान्य के कष्टों के निवारण हेतु भी सदैव तत्पर रहते थे। राजस्थान की जनता ने इसीलिए वर्षों तक उन्हें अपना मसीहा मानकर पग पग पर अपनी श्रद्धा अर्पित की। वैसे जनता की स्मृति बहुत कमजोर होती है परन्तु सुखाड़िया को लोग आज भी याद करते हैं, उनके प्रशासन की सराहना करते हैं। उनके पास कोई अद्भुत कला ही थी कि वे वर्षों तक श्रमिकों, नियोजकों, कर्मचारियों, अधिकारियों, व्यापारियों, श्रमसंघों, विरोधियों, जन-सामान्य आदि सभी से ऐसा तालमेल—ऐसा मधुर सामन्जस्य बनाये रख सकने में सफल रहे, जिसके फलस्वरूप यह पिछड़ा प्रदेश काफी कुछ ऊपर उठ सका। अतिशयोक्ति नहीं होगी, यदि मैं कहूँ कि राजस्थान में सुखाड़िया-काल में श्रमसंघ जितने मजबूत थे, आज नहीं हैं, औद्योगिक सम्बन्ध जितने मधुर थे, आज नहीं हैं, औद्योगिक विवादों का निपटारा जितना जल्दी और श्रमिकों के हित में होता था, आज नहीं होता, यहां तक कि राजनीति का आदर्श सामान्य अनुशासन, उत्पादकता, औद्योगिक विकास दर, जन संरक्षण, शिक्षा आदि की गरिमा एवं स्तर जो श्री सुखाड़िया के काल में था, आज उसका अभाव-सा लगता है।

राजस्थान के आकाश में चमकते इस नक्षत्र की चमक किसी भी काल में कम नहीं होगी, क्योंकि वे थे ही ऐसे—अपने महान कार्यों के कारण।

देश की चहुँमुखी सम्पन्नता के लिए आर्थिक रीढ़ का मजबूत होना जरूरी है और यह आर्थिक रीढ़ है—सम्पूर्ण श्रमिक जगत। जो इस जगत के दुःख को बांटेगा उसके सामने सिर तो झुकेगा ही सही।

श्री सुखाड़िया और औद्योगिक विकास

विश्वनाथ वामन काले
संपादक, वरुण
ब्रह्मपुरी, जयपुर

इतिहास में राजस्थान अपनी विशेष परम्पराओं के लिए जाना जाता रहा है। यहाँ की मरुभूमि जितनी नीरस, यहाँ के आदमी उतने ही सरस और जीवट के माने जाते हैं। साहस, शौर्य, त्याग और बलिदान इस मिट्टी का अपना गुण रहा है और यही कारण है कि इतिहास की वसीयत से हमें नये जमाने के लिये कुछ नहीं मिला परन्तु इस कुछ नहीं को हमने बहुत कुछ में बदल दिया।

स्वाधीन राजस्थान को अपनी वसीयत में मध्यकालीन सामन्तवाद की शाही परम्पराएँ, महल और अटारियाँ, उदारता की थोथी कहानियाँ और साहसी राजस्थान के गुज़रे हुये जमाने के खण्डहर मिले जो न तो अतीत के इतिहास को गौरवशाली बनाते हैं, और न आने वाले जमाने से मेल खाते हैं। अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवाद और सामन्तवाद में भयभीत असंख्य गरीबों का काफला जिनकी कोई मंजिल नहीं।

आज जब हम गर्व के साथ कहते हैं कि इतिहास बनाने वाला राजस्थान अब नया भूगोल भी बना रहा है तो इसका श्रेय इस माटी के उन तीन करोड़ पूतों को है जो अपनी दूर नज़र आती मंजिल की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। काफ़ी चले हैं मगर थकान नहीं है। परेशानियाँ हैं मगर निराशा नहीं। हर कदम में अटूट विश्वास है और साहस है।

हमें सोचना चाहिये कि दोहरी दासता से मुक्त जो राजस्थान हमें मिला उसकी पृष्ठभूमि क्या थी ? जिस पृष्ठभूमि पर नये राजस्थान का काम शुरू हुआ, वही सुखाड़ियाजी की सफलता की मौलिकता है। प्रजातंत्र में लोकप्रियता महत्त्वपूर्ण है और वह उन्हें भरपूर मिली इसका कारण उनकी कार्यकुशलता, आत्मविश्वास और राजनीति की

पेचिदगियों में 'अनिवार्य' बने रहने की योग्यता के अतिरिक्त उनके व्यक्तिगत गुण भी हैं जो उन्हें प्रकृति से मिले हैं। कितने राज्य हैं जहाँ कोई व्यक्ति 19 वर्ष तक लगातार मंत्री और मुख्यमंत्री बना रहा हो ? और आज भी उनके लिये यह कहना मुश्किल है कि उनसे कोई ऊब गया है या उनमें कोई थकान या निराश या उदासीनता आगई है।

प्रजातंत्र की सभी पेचिदगियों से उन्हें गुजरना पड़ा। 38 वर्ष की उम्र में जब वे मुख्यमंत्री बने तो किसी को एक क्षण के लिये भी यह विश्वास नहीं हो सका था कि वे अपने आने वाले कई वर्षों तक मुख्यमंत्री बने रहेंगे। उन्हें व्यासजी जैसे लोकप्रिय नेता की गद्दी पर बैठना पड़ौसी प्रदेश के ही देश के नेताओं में अपना स्थान रखते थे। कांग्रेस उच्चकमान को यह परिवर्तन बहुत रुचिकर लगा हो, ऐसा उस समय स्पष्टतया नहीं लगता था। स्वयं राजस्थान में काफ़ी अड़चनें थीं। परन्तु उन्होंने उस वातावरण से संघर्ष नहीं किया, चुनौती नहीं दी बल्कि वे मुझे और अपनी नम्रता और आदर भावना से नया वातावरण बनाना शुरू किया। प्रजातंत्र की राजनीति में एक का बल कुछ नहीं होता। सबका बल और सहयोग लेकर चलना ही एक आदमी की कुशलता का प्रमाण होता है और वह कुशलता सुखाड़ियाजी में थी। एक अच्छे कप्तान की तरह हमेशा उन्होंने टीम को बनाये रखा और उसी का परिणाम था स्थायी प्रशासन। पूँजी-नियोजन के लिये अत्यन्त आवश्यक होती है। फिर भी एक हिचक थी और राजनीतिक वातावरण में जो आये दिन काले बादल मंडराते रहते थे उससे पूँजी नियोजकों में एक संकोच था, सुविधाओं की माँग थी, स्थायित्व का तकाजा था और बिजली-पानी की गारण्टी माँगी जाती थी। कई बातें थीं जो राजस्थान जैसे अभावपूर्ण प्रदेश के लिये रोड़ा बनी हुई थीं। परन्तु सबसे ऊपर का सुखाड़ियाजी का विश्वासपूर्ण प्रयत्न। उनका हर कदम विश्वास से उठता था और उनकी हर बात में एक आत्मविश्वास होता है। वही विश्वास काम दे गया। वे एकबार नहीं कई बार बम्बई गये और उन्होंने राजस्थानियों को आमंत्रित किया कि वे यहाँ आयें, पूँजी लगायें और अपने भूले-बिसरे प्रदेश को सरसब्ज करने के लिये थोड़ा खतरा भी उठायें। उद्योगपति स्वयं खतरा उठाने में किसी से पीछे नहीं होते परन्तु उनका पहला कदम बड़ी मुश्किल से उठता है। जब दो साहसी मिल जायें तो खतरा आसान हो जाता है, मंजिल की दूरी आधी रह जाती है और सफलता का कलश सामने दिखाई पड़ने लगता है अब तो सुखाड़ियाजी का प्रयत्न उनके खेमों को उखाड़ने में सफल हो गया है।

यह मंजिल आसानी से तय नहीं हुई। बड़ी-बड़ी रुकावटों और बड़े-बड़े आरोप-प्रत्यारोपों का सामना करना पड़ा। प्रान्त की समृद्धि के लिए एक ओर कर्त्तव्य का तकाज़ा, विरोधी दलों का आरोप भरा आग्रह और उधर दूसरी ओर पूँजी नियोजन के लिए समुचित वातावरण और सुविधाओं की मांग। बड़े कठिन संतुलन में से गुजरने का सवाल था। पूँजी नियोजन के लिये सुविधा सहायता न दी जाये तो उद्योगपति आने में आनाकानी करे और यदि दी जावे तो विरोधी दल वाले पूँजीपतियों को प्रश्रय देने का आरोप लगावें, यह भूलकर कि प्रदेश की समृद्धि का आग्रह भी वे ही करते हैं। एक नहीं अनेक बार सुखाड़ियाजी को विधान सभा में इसके लिए कड़ाई से जबाव देना पड़ा। विरोधी दलों की बातें कभी-कभी उन्हें मानसिक दृष्टि से बेहद परेशान करती रही होंगी जिसकी सहज ही में कल्पना की जा सकती है परन्तु वे आखिर प्रान्त की समृद्धि की तुलना में आरोपों को कडुआहट को कैसे विजयी होने देते ? आखिर पौधे को प्राण देने में बागवान को तपस्या करनी ही पड़ती है। जहर पीने वाला ही नीलकण्ठ कहलाता है और उसे महादेव माना जाता है। राजस्थान के औद्योगीकरण के लिये सुखाड़ियाजी ने ऐसा ही विषपान किया है, इसे उद्योगपतियों को अनुभव करना चाहिये। और वे करते भी हैं।

राजस्थान के नये युग का सूत्रपात रियासतों के एकीकरण के बाद प्रारम्भ हुआ। लेकिन राज्य की नई तस्वीकर 1954 में श्री सुखाड़िया के नेतृत्व में शुरू हुई। उन्होंने श्रम का शंखनाद किया तो आने वाली शताब्दी स्वर्णयुग बन गयी। औद्योगिक विकास की नीवें भरी जाने लगीं और यह पिछड़ा क्षेत्र औद्योगिक क्रांति की देहरी पर खड़ा कर दिया गया।

सुखाड़िया प्रशासन में विश्वविद्यालयों की स्थिति एवं विकास

राजस्थान की पृष्ठभूमि में मेवाड़ का इतिहास आरम्भ से ही उज्ज्वल एवं गौरवमय रहा है। इसके ऐतिहासिक खण्डहर और यहाँ के सूरमाओं के रक्त से रंजित रजकण आज भी जहाँ एक ओर राष्ट्र के नाम पर मर मिटने वाले वीर पुरुषों के देश-प्रेम, स्वाभिमान एवं बलिदान की गाथाएं कहते हैं वहीं दूसरी ओर राजमहलों की चारदीवारी में बन्द रहने वाली वीर नारियों की, जिन्होंने देश की रक्षा के लिये हंसते-हंसते अपने किशोर पुत्रों को रण क्षेत्र में भेजा, अनूठी दास्ता प्रस्तुत करते हैं।

लेकिन ऐसा वीर शिरोमणि देश मेवाड़ भी आपसी फूट, द्वेष एवं कलह में फँस कर गुलामी की जंजीरों में जकड़ गया। कुछ समय मुगलों की और अंग्रेजी सत्ता में जीने के लिये मजबूर होना पड़ा। लगभग 200-250 वर्षों की गुलामी के बाद जब सम्पूर्ण देश स्वतन्त्रता के लिये छटपटा रहा था तो ऐसे में मेवाड़ भी पीछे न रहा। गांधी, नेहरू और सरदार पटेल की आवाज के साथ कदम मिलाने का प्रयास किया। किन्तु सदियों से पराधीनता के परिवेश में जीवन व्यतीत करने के कारण उनमें राष्ट्रप्रेम की चेतना ही शून्य हो चुकी थी। लेकिन ऐसे समय में सामान्य परिवारों से उठकर आगे आने वाले स्वतन्त्रता के सच्चे पुजारियों में स्व० माणिक्यलाल वर्मा के बाद यदि नाम आता है तो स्व० श्री मोहनलाल सुखाड़िया का जिन्होंने न केवल देश की आजादी की लड़ाई ही लड़ी अपितु आजादी के बाद स्वतन्त्र प्रदेश के निर्माण में एक कुशल नायक के रूप में मार्ग प्रशस्त किया। देश की आजादी के बाद श्री सुखाड़िया राजस्थान सरकार के एक आधार स्तम्भ के रूप में उभर कर आये।

श्री सुखाड़िया से पूर्व तीन मुख्य मंत्री क्रमशः श्री हीरालाल शास्त्री, श्री जयनारायण व्यास एवं श्री टीकाराम पालीवाल ने नवीन राजस्थान की बागडोर संभाली किन्तु उनका शासनकाल इतना छोटा था कि वे प्रदेश को किसी भी प्रकार का स्वरूप देने में सफल नहीं हो सके। 13 जुलाई,

चन्द्रसिंह मेहता
कार्यवाहक कुलसचिव,
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

1954 को जयनारायण व्यास के पार्टी में पराजित हो जाने पर श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। श्री सुखाड़िया प्रारम्भ से ही दूरदर्शी एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे। श्री सुखाड़िया 13 जुलाई, 1954 से लगातार 17 वर्षों तक (1967 के जयपुर गोली काण्ड के समय को छोड़कर) 9 जुलाई, 1971 तक मुख्यमंत्री पद पर बने रहे। श्री सुखाड़िया ने राजस्थान के संतुलित विकास को नई दिशा दी।

आधुनिक राजस्थान के निर्माण में जहाँ श्री सुखाड़िया ने सिंचाई योजनाओं, आणविक शक्ति योजना, उद्योग व्यवसाय स्थापित करने के लिये ठोस कदम उठाये वहीं उन उद्योग व्यवसाय आदि में कार्य करने हेतु कुशल कर्मचारियों की आपूर्ति के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार करने में भी कमी नहीं रखी।

सुखाड़िया प्रशासन से पूर्व सम्पूर्ण राजस्थान में केवल एक विश्वविद्यालय था। इस प्रदेश की भौगोलिक एवं जनसंख्या की दृष्टि से इस विश्वविद्यालय की शिक्षण व्यवस्था इतनी सीमित थी कि अध्ययन एवं शिक्षा के क्षेत्र में जिज्ञासा रखने वाले विद्यार्थियों को इसका पूरा लाभ नहीं मिल पाता था। अधिस्नातक एवं पीएच०डी० स्तर पर चिकित्सा विज्ञान एवं कृषि विज्ञान के साथ-साथ कला एवं वाणिज्य स्तर पर भी सीमित विषयों में शिक्षण व्यवस्था थी। यही कारण था कि राजस्थान प्रदेश के छात्रों को इलाहाबाद, आगरा एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयों की शरण लेनी पड़ती थी। कृषि शिक्षा के क्षेत्र में तो राज्य नितान्त अक्षम था। शिक्षा की ऐसी ही कुछ आधारभूत समस्याओं की ओर सुखाड़िया प्रशासन का ध्यान आकर्षित हुआ और सक्रिय प्रयास में राजस्थान विश्वविद्यालय में शिक्षण क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ नये विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजनाएँ स्वीकृत हुईं। इन्हीं योजनाओं के परिणामस्वरूप प्रदेश में शताब्दी के छठे दशक में दो और विश्वविद्यालयों का स्वरूप प्रदान किया गया।

एक आवासीय विश्वविद्यालय जोधपुर में जोधपुर विश्वविद्यालय के नाम से तथा दूसरे विश्वविद्यालय का शुभारम्भ 12 जुलाई, 1962 को उदयपुर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के नाम से किया गया।

विश्वविद्यालय का स्वरूप

आरम्भिक अवस्था में तो उदयपुर विश्वविद्यालय की स्थापना राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के नाम से की गई। इसका उद्देश्य कृषि उत्पादन में वृद्धि, ग्रामीण समुदाय तक परम्परागत खेती के स्थान पर नव कृषि ज्ञान पहुँचाने, विशाल मरुस्थल को कृषि योग्य बनाने आदि रहा किन्तु अगले दो वर्षों में ही अर्थात् सन् 1964 में इसका स्वरूप परिवर्तित कर दिया गया और इसे बहु संकायी विश्वविद्यालय का स्वरूप प्रदान किया गया इसमें कृषि सहित नौ संकायों का समावेश हो गया जिनके अन्तर्गत सात अंगीकृत तथा सात सम्बद्ध महाविद्यालय जोड़े गये। यद्यपि इस विश्वविद्यालय की स्थापना आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में हुई किन्तु इसके दो परिसर क्रमशः कृषि महाविद्यालय, जोबनेर एवं पशुपालन एवं चिकित्सा महाविद्यालय, बीकानेर भी बने।

विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियाँ

प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए विश्वविद्यालय ने राजस्थान के सामान्य जनमानस को किस प्रकार लाभान्वित किया है, उसे संक्षिप्त में विश्वविद्यालय के त्रिविध कार्यक्रम में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) आवासीय शिक्षण – आवासीय शिक्षण के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की प्रगति का अनुमान विद्यार्थियों की प्रवेश संख्या एवं प्रदत्त उपाधि संख्याओं से आंका जा सकता है। विभिन्न महाविद्यालयों में छात्रों का प्रवेश कतिपय नियंत्रण के बाद भी निरन्तर बढ़ता रहा है, वह इस प्रकार है :–

संकाय	छात्र संख्या	
	1963–64	1969–70
1. कृषि	897	857
2. पशुपालन व चिकित्सा	193	249
3. कृषि अभियांत्रिकी	–	171
4. कला एवं सामाजिक विज्ञान	–	1273
5. भौतिक विज्ञान	–	2686
6. वाणिज्य	–	434
7. विधि	–	211
8. शिक्षा	–	526

(ख) कृषि अनुसंधान केन्द्र

विश्वविद्यालय की स्थापना के सन्दर्भ में पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि उदयपुर में स्थापित विश्व-विद्यालय का स्वरूप भले ही बहुसंकायी शिक्षा का हो किन्तु इसका मौलिक उद्देश्य कृषि शिक्षा, कृषि अनुसंधान एवं प्रसार शिक्षा का है। इसी दृष्टि से विश्वविद्यालय में कृषि अनुसंधान कार्य पर भी विशेष शोध कार्य करने हेतु विश्व-विद्यालय में सन् 1963 में कृषि अनुसंधान केन्द्र की अलग इकाई स्थापित की गई। इस केन्द्र के अन्तर्गत कृषि शोध से अधिक सफलतम परिणाम प्राप्त करने हेतु प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण एवं परिस्थैतिक जलवायु के आधार पर कृषि अनुसंधान हेतु सम्पूर्ण राजस्थान में 7 कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं 7 कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र स्थापित किये गये। इन केन्द्रों पर विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों, शाक-सब्जियों, फल-फूल आदि की उन्नत, रोगरोधी एवं अधिक उपजाऊ प्रजातियाँ विकसित करने, भूमि की उर्वरता ज्ञात करने, मृदा परिरक्षण करने, कीट एवं पौध व्याधि नियंत्रण सम्बन्धित प्रभावी उपचारों का पता लगाने आदि समस्याओं पर शोध कार्य आरम्भ किये गये। और मक्का, बाजरा, गेहूँ तिलहन एवं तरकारियों आदि की प्रदेश की जलवायु एवं भूमि के आधार पर अनेक रोगरोधी अधिक उपजाऊ संकर किस्में तैयार की गई। इसी प्रकार फलों में भी फलों की त्वरित उपज वृद्धि, फल-पतन की रक्षा, अगेती फसल, फल सड़न के उपचार आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की गई। इसी प्रकार कृषि से जुड़े हुए पशुपालन एवं पशु-उत्पादन जैसे क्षेत्र पर भी शोध कार्य आरम्भ हुआ तथा दुग्ध एवं पशु-पालन में विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की गई।

(ग) वन-विस्तार शिक्षा कार्यक्रम

कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान की उपलब्धियों का सीधा सम्बन्ध राजस्थान प्रदेश के कृषि व्यवसाय से है। इस व्यवसाय के विकास में विश्वविद्यालय ने हर संभव अपनी क्षमता से भी बढ़ कर योगदान दिया है। कृषि अनुसंधान की प्रयोगशालाओं से प्राप्त प्रभावी एवं सफलतम परिणामों को किसानों तक पहुँचाने का कार्य कृषि विस्तार शिक्षा का है। विस्तार शिक्षा का कार्य विश्वविद्यालय के तीसरे अंग अर्थात् विस्तार निदेशालय द्वारा प्रतिपादित किया जाता है।

विश्वविद्यालय में विस्तार निदेशालय की स्थापना जुलाई 1966 में की गई थी। इसकी स्थापना का मूल ध्येय कृषि ज्ञान को पुस्तकों तक ही सीमित न रख कर इसे वास्तविक उपभोक्ताओं तक पहुँचाना है। निदेशालय अपनी स्थापना के साथ ही प्रदेश के 22 में से 12 जिलों के किसान परिवारों तक पहुँच गया और धीरे-धीरे समाजगत होता जा रहा है।

यह सुस्पष्ट है कि प्रदेश में कृषि पर निर्भर रहने वाली अधिकांश जनसंख्या अनपढ़ है, इसलिये कृषि विज्ञान की नवीन उपलब्धियों को सीधो किसानों में व्यवहृत बनाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। लेकिन ऐसी परिस्थिति में भी कृषि जगत की लाभकारी प्रणालियों को किसानों तक पहुँचाने में विस्तार निदेशालय ने किसी सीमा तक उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है।

किसानों को कृषि नवज्ञान की ओर प्रभावित करने के लिये विस्तार निदेशालय द्वारा संस्थागत कृषक प्रशिक्षण शिविर, गाँवों एवं खेतों पर एक दिवसीय शिविर, कृषक चर्चा मण्डल, किसान साक्षरता कार्यक्रम, अधिकारी प्रशि-क्षण, लघु सिंचाई एवं जल प्रबन्ध प्रशिक्षण, राष्ट्रीय प्रदर्शन कार्यक्रम, कृषि सलाहकार सेवा, के माध्यम से जहाँ एक ओर व्यावहारिक जानकारी देने का प्रयास किया जाने लगा वहीं दूसरी ओर संचार सेवा के माध्यम से पत्र एवं साहित्य प्रकाशन, कृषि पत्राचार-पाठ्यक्रम, कृषि पत्र व्यव-हार, कृषि प्रदर्शनियों, चलचित्रों एवं आकाशवाणी के माध्यम से आधुनिक खेती करने की विधि को किसानों के घर तक पहुँचाने का प्रयास आरम्भ किया। इसकी सफलता का प्रमाण यही है कि सम्पूर्ण राजस्थान आये वर्ष अकाल पीड़ित रहते हुए भी खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। ○

भारतीय चिकित्सा पद्धति के उद्धारक

□
वैद्य मदनगोपाल शर्मा
विभागाध्यक्ष, मौलिक सिद्धान्त विभाग
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

क्रान्ति की लहर जब उठती है व्यक्ति के परम्परागत एवं अर्थ शून्य बाहर के चरित्र से नहीं, अपितु अन्दर के निर्मल व्यक्तित्व से उठती है – श्री सुखाड़िया का व्यक्तित्व ऐसा ही निर्मल, निःशंक और निर्भय था। समाज के स्थापित मूल्य व्यक्तित्व के नहीं सदा परम्परा से चले आए चरित्र के पक्षधर हैं। व्यक्तित्व का चमत्कार इसमें है कि वह रूढ़ियों के परम्परागत स्थापित सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों का विरोध कर नये मान स्थापित करे। यही कारण है कि समाज ने सदा सर्वदा से ऐसे क्रान्तिकारी विचारकों, चिन्तकों तथा प्रवक्ताओं का आदर और सम्मान ही नहीं किया वरन् उन्हें महामानव सम्बोधित कर प्रतिष्ठित भी किया है। श्री सुखाड़िया ऐसे ही द्रष्टा और सृष्टा थे, जिनमें थोथी रूढ़ियों के प्रति गहरा अभिनिवेश था। एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर देश के शीर्षस्थ राजनेताओं, देशभक्तों, कुशल प्रशासकों की प्रथम पंक्ति में अपना स्थान स्थिर करना, श्री सुखाड़िया के चरित्र का अनूठापन था।

शेरे राजस्थान के सुदृढ़ करों से शासन की बागडोर संभालना तथा निरन्तर 17 वर्ष तक राजस्थान को स्वच्छ प्रशासन देना उनके कौशल और दूरदर्शिता की ओर इंगित है। श्री जयनारायण व्यास जैसे स्वतंत्र सेनानी सुदृढ़ व्यक्तित्व के धनी से जो शासन विरासत में पाया वह निःसंदेह कांटों का ताज था। समस्याओं से भरा राजस्थान, जहाँ भुखमरी, अकाल, अशिक्षा और आर्थिक विषमतायें ताण्डव नृत्य करती हो उसे अपने कार्य आचरण, निष्ठा और तत्परता से विकास की ओर उन्मुख करना श्री सुखाड़िया के अनुभव और अनुभूतियों की ओर संकेत है। आप जीवन के प्रभात से ही सामाजिक विषमता से जकड़े राजस्थान को अपनी पैनी दृष्टि से परखते थे और उसका समीचीन समाधान ढूंढ़ कर अपनी कार्य कुशलता की छाप दूसरों पर छोड़ने में एक सफल कलाकार, और कलानिधि का अभिनय करते थे। हमें यहाँ अधिक गहराई में न जाकर केवल स्वास्थ्य की समस्या पर सुखाड़ियाजी का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है –

सुखाड़िया और राजस्थान एक-दूसरे से इस प्रकार जुड़े हैं जैसे हृदय और कम्पन – आप मूलतः उदयपुर के थे अतः उदयपुर के आदिवासी लोगों की समस्याओं से सदा परिचित रहे – विशेष रूप से उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में। यह समस्या समग्र प्रान्त की समस्या थी जिसे वे प्रमुखता और प्रधानता देते थे। प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद विज्ञान के प्रति उनका विशेष रुझान और रुचि थी। समूचे राजस्थान में शासन की बागडोर संभालने के समय केवल 300 औषधालय थे। अपने शासनकाल में उस संख्या को 2000 से भी ऊपर पहुँचा दिया। सुदूर ग्रामीण जनता एवं पिछड़े वर्ग की चिकित्सा की समुचित व्यवस्था प्रदान कर मृत्यु दर की संख्या में न्यूनता ला आयु सीमा रेखा में अभिवृद्धि करना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि सुखाड़िया आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को देशकाल के अनुरूप स्वीकार करते थे।

भारतीय संस्कृति के आराधक को इतने से सन्तोष कहाँ। उन्होंने समय-समय पर इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को उचित अवसर और साधन प्रदान कर उनके अनुरूप स्थान पर अवस्थित कराने में जो योग दिया करते वह निर्विवाद इस सत्य को मुखरित करता है कि सुखाड़िया आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को विस्तृत और व्यापक बनाने के प्रबल पक्षधर थे। जहाँ मेवाड़ के रण बांकुरे राजपूत अपने शौर्य और साहस, त्याग और बलिदान के लिए विख्यात रहे हैं वहाँ मेवाड़ के सपूतों ने प्रशासन के क्षेत्र में भी यश और कीर्ति प्राप्त की है। श्री माणिक्यलाल वर्मा, केशरीसिंह बारहठ जैसे देश भक्तों के सान्निध्य में रह कर सुखाड़िया भी एक रहस्यमय, राजनेता बने।

पृथक् से आयुर्वेद मन्त्री, संचालक तथा उसके कार्यालय का सृजन कर आयुर्वेद विज्ञान को निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होने का अवसर दिया। इस अर्थ और भाव में सुखाड़ियाजी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की लुप्त प्राचीन चिकित्सा पद्धति को सार्थक सिद्ध करने में धन्वन्तरी के पंचामृत चूर्ण का कार्य किया है। आपके इस अथक प्रयास और प्रयत्नों का राजस्थान की जनता पर आशातीत प्रभाव पड़ा और थोड़े से अन्तराल में ही 2 करोड़ रुपये की उत्कल राशि अचल सम्पत्ति (भवनों) का निर्माण करने में जनता ने लगाई।

यही नहीं आयुर्वेद चिकित्सकों को सम्मानपूर्वक वेतनमान स्थापित करने में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। ●

संगठन के अनुशासित सिपाही

☐ ललित प्रसाद शर्मा, पत्रकार, पुर, भीलवाड़ा

2 फरवरी सन् 1982 को राजस्थान के लोकप्रिय नेता श्री मोहनलाल सुखाड़िया के अचानक स्वर्गवास से मेरा हृदय विचलित हो उठा। उनके बारे में पिछले 43 वर्ष के यदा-कदा के सार्थक व व्यक्तिगत सान्निध्य से मेरी आँखों के समक्ष वे सभी संस्मरण चित्रपट की भाँति उजागर हो उठे मानो मैं किसी सिनेमा में बैठा हुआ किसी महान पुरुष की आदि से अन्त तक की जीवनी के दृश्य देख रहा हूँ।

मेवाड़ प्रजामण्डल से प्रतिबन्ध हटा, उन्होंने माणिक्यलालजी वर्मा के सान्निध्य में प्रजामण्डल कार्यालय उदयपुर में कार्य करना आरम्भ किया। उदयपुर में ही हाथी-पोल बाहर मेवाड़ इलेक्ट्रीकल सप्लाई स्टोर खोलकर दुकानदारी करते भी उन्हें देखा मगर उनका दिल दुकानदारी पर कम और राजनीतिक कार्यों, हरिजन उद्धार, आदिवासियों की समस्याओं तथा सवर्ण-असवर्ण हिन्दुओं के भेदभाव, सामाजिक कुरीतियों, सामन्ती शासन से पीड़ितों की फ़रियादों को मेवाड़ सरकार के समक्ष रख प्रजामण्डल के माध्यम से उनसे त्राण दिलाने में दत्तचित देखा। मेवाड़ में हरिजनों व आदिवासियों के साथ हो रहे तत्कालीन सामाजिक एवं राजकीय अत्याचारों का विवरण प्राप्त करने वे मेवाड़ में सभी जिलों में गये। उस समय ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के साधन नहीं थे अतः कहीं पैदल, कहीं ऊँट, कहीं बैलगाड़ी, कहीं घोड़े पर भी वे गये और एक छोटी-सी पुस्तक घोसुण्डा में हाथ निर्मित कागज़ पर छपवा कर वितरित कराई।

मेवाड़ प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन उदयपुर में हुआ। आचार्य कृपलानी उदयपुर में आये। पूर्ण उत्तरदायित्व का शासन प्राप्ति का प्रस्ताव पास कराया। श्री वर्माजी के साथ इस सम्मेलन को सफल बनाने में दिन-रात जुटे रहे।

सन् 1945 में देशी राज्य लोकपरिषद् का उदयपुर में सम्मेलन हुआ। वर्माजी के साथ मेवाड़ व्यापी दौरा कर आपने सम्मेलन में मेवाड़ के हर क्षेत्र से काफी तादाद में ग्रामीण व जनता को इकट्ठा किया। सम्मेलन में सलेटिया ग्राउन्ड में पंडित नेहरू के साथ मंच पर बैठ कर संयोजक के रूप में कार्यक्रम को सुनियोजित ढंग से सम्पन्न कराने में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

सन् 1942 में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन में उदयपुर के तीज के चौक में विशाल सार्वजनिक सभा हुई। अन्य वक्ताओं के साथ श्री सुखाड़ियाजी ने प्रजामण्डल की ओर से महाराणा को अंग्रेजों से सम्बन्ध-विच्छेद करने और अंग्रेजों को भारत छोड़ने का अल्टीमेटम देने के औचित्य पर जोरदार भाषण दिया और रात्रि में ही, वर्माजी व अन्य नेताओं के साथ वे गिरफ्तार कर लिये गये और ईसरवाल जेल में नजरबंद रहे।

सन् 1946 में मेवाड़ एसेम्बली के चुनाव में क्षत्रिय परिषद् के उम्मीदवारों के मुकाबले प्रजामण्डल के उम्मीदवार जिले व तहसीलों से खड़े किये। हिन्दूसभा भी मैदान में थी। इसी दरम्यान उदयपुर में जुलूस निकाला और आनन्दीलाल, शान्तीलाल शहीद हुए, गोलीकाण्ड से श्री गुलाबसिंह शक्तावत की भी टाँग में फ्रेक्चर हो गया।

श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ सुखाड़ियाजी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य को प्रजामण्डल का लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बनाने के विषय में मैमोरन्डम दिया। अंग्रेजी में राघवाचार्य से श्री सुखाड़िया ने डिसकस किया। तब उन्होंने मंत्री पद के उम्मीदवारों की सूची देखकर कहा कि शिक्षा-दीक्षा से तो कोई काबिल नहीं है।

लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बना। प्रजामण्डल की ओर से श्री सुखाड़िया व श्री हीरालाल कोठारी व क्षत्रिय परिषद् की ओर से रघुवीरसिंहजी ओछड़ी वाले और स्टेट की ओर से प्यारेकृष्ण कौल मंत्री बने। भारत आजाद हुआ, उसके बाद 16 अप्रैल सन् 1948 को उदयपुर में 11 रियासतों को शामिल कर संयुक्त राजस्थान का निर्माण हुआ। उसमें श्री माणिक्यलाल वर्मा चीफ़ मिनिस्टर बने, श्री सुखाड़ियाजी सार्वजनिक निर्माण मंत्री बने और श्री शिवचरण माथुर सुखाड़ियाजी के निजी सचिव बनाये गये।

सन् 1949 में संयुक्त राजस्थान भंग होकर महान राजस्थान का संगठन हुआ। जयपुर राजधानी बनाई गई। उस वक्त श्री हीरालालजी शास्त्री चीफ़ मिनिस्टर बनाये गये। उधर उदयपुर में अनाज की समस्या, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, भोमट में अकाल की समस्याओं के लिये आन्दोलन हुआ। श्री सुखाड़ियाजी ने उसमें सक्रिय भाग लिया। उसके बाद श्री जयनारायण व्यास के मुख्यमंत्रित्व में ये राजस्व मंत्री बने और 1954 में नेता पद के चुनाव में बहुमत से नेता निर्वाचित होने पर राजस्थान के मुख्यमंत्री बने और 17 वर्ष तक निरन्तर मुख्यमंत्री बने रहे।

अन्त में सिन्डीकेट, इण्डिकेट के झगड़े में ये इन्दिराजी के प्रति तो व्यक्तिगत निष्ठावान रहे मगर एक व्यक्ति के मुकाबले संगठन के अनुशासित सिपाही के रूप में जब तक मुख्यमंत्री रहे अपने सिद्धान्त को नहीं छोड़ा। ◉

मोहनलालजी सुखाड़िया जैसा सुना : वैसा पाया

पं० नवलकिशोर शर्मा
महामंत्री, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इ)
नई दिल्ली

जैसा सुना : वैसा पाया

यद्यपि यह एक सत्य की श्रेणी में स्थान प्राप्त करती चर्चा है कि हम जो देखते हैं वह सत्य है, परन्तु दार्शनिक दृष्टि चिन्तन करने पर इसका खोखलापन हो जाता है। इसके साथ ही यह एक शाश्वत नियम रहा है कि कई बार हमारा भौतिक दर्शन भी इस विषय में उसी बिन्दु पर पहुँच जाता है कि जो कुछ हम देखते है वही सत्य नही है किन्तु मोहनलालजी सुखाड़िया के विषय में यदि यह कहा जाये कि जैसा देखा था वह वैसा ही था तो भी कोई अत्युक्ति नही होगी। भले ही इस विषय में कुछ दार्शनिक सीमाओं का उल्लंघन हो।

विराट् हृदय

सुखाड़ियाजी को मैंने विराट् हृदय वाले व्यक्तित्व के रूप में सन् 1954 में देखा। यद्यपि उस समय राजस्थान कांग्रेस मे कुछ अन्तर्विरोध था और उसमें मैं जयनारायण व्यास का शिष्य तथा रामकरण जोशी का अनुयायी था, फिर भी यदा-कदा किसी सार्वजनिक या व्यक्तिगत कार्यविशेष के कारण जब भी कभी सुखाड़ियाजी से भेंट होती, वे मुझे अभिन्न मित्र के रूप में ही समझते तथा सम्बन्धित कार्य में सहायता करके अपने हृदय को विशालता एवं सौम्यता का परिचय देते।

सामंतवाद के शत्रु

सुखाड़ियाजी को मैंने सामंतवाद के शत्रु के रूप मे राजस्थान जैसे राज्य में उभरते हुये देखा तो विश्वास नहीं होता था कि क्या यह वास्तविक रूप से सामंतवाद को समाप्त कर सकेंगे, परन्तु सामंतवाद के उस अंधड़ में वे अडिग स्थाणु बने रहे तथा अपनी मृदुभाषिता एवं सहन-

जीवनभर के अभाव से स्वयं की ही नहीं, पूरे प्रदेश की रक्षा करते रहे । अपने जीवन काल में ही वे यह सिद्ध कर सके कि राजस्थान में सामंतवाद समाप्त हो चुका है ।

भूमि सुधार

परम्पराओं से जकड़े प्रदेश में जमींदारी और जागीरदारी प्रथाओं की जड़ें गहरी होना स्वाभाविक था । मुखाड़ियाजी ने भूमि सुधार का कुठार इन जड़ों पर चलाया । जितना भूमि सुधार का कार्य राजस्थान में मुखाड़िया के शासन काल में हुआ उतना भारत के किसी प्रान्त में कहीं भी नहीं हुआ । मालिकों के हाथ से अधिकार छीन कर जमीन पर खेती करने वाले परिवारों को मालिकाना अधिकार दिलाने एवं भूमिहीनों को भूमि उपलब्ध कराने में मुखाड़ियाजी सफलतम मुख्यमंत्री रहे ।

पंचायतराज के जन्मदाता

श्री मुखाड़िया को राजस्थान में पंचायतराज प्रथा के जन्मदाता एवं पोषक के रूप में देख कर उनकी चिंतन शैली एवं वास्तविक प्रजातंत्रात्मक भावना का परिचय पाया, क्योंकि ग्राम पंचायतें हमारे प्रजातंत्र की आधारशिलायें हैं । पंचायतराज के माध्यम से सुप्त एवं सदियों से पिछड़े ग्रामीण समाज में सामन्तवाद के विरुद्ध लड़ने की चेतना एवं आत्म-कल्याण की भावना जाग्रत करते हुये देखा । पंचायत शासन प्रणाली से जो ग्राम विकास हुआ है वह सब मुखाड़िया का ही प्रतिबिंब है ।

अथक परिश्रम

मुखाड़ियाजी अथक परिश्रमी व्यक्ति थे । सन् 1968 में दौसा क्षेत्र से उपचुनाव में जब मेरे विरुद्ध महाराज कुमार ने चुनाव लड़ा तब श्री मुखाड़िया द्वारा मेरे समर्थन में किया गया अथक परिश्रम वर्णनीय था, विश्वास नहीं होता था कि इस शरीर में इतनी शक्ति सम्भव है । वे प्रतिदिन मेरे साथ प्रातः 6-7 बजे से ही शाम तक चुनाव प्रचार में लगे रहते थे । उस समय उन्हें भोजन, विश्राम आदि की कोई चिन्ता ही नहीं रहती थी ।

दलहित के साथ लोकहित

मुखाड़ियाजी धैर्य में हिमाचल के समान थे । कांग्रेस विभाजन का प्रभाव उनकी राजनीतिक क्रिया प्रणाली पर पड़ना स्वाभाविक था । परन्तु एक प्रान्त के मुख्यमंत्री ही नहीं अपितु तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश के राज्यपाल के रूप में भी पूर्ण समन्वय के साथ कार्य करते हुये सफल एवं सम्मान्य रहे । दक्षिण में जाकर भी राजस्थान को अपने हृदय में समाये रहे । महत्त्वपूर्ण प्रादेशिक समस्याओं पर राजस्थान सरकार को अपने सुझाव देने में कोई कंजूसी नहीं की । जिस ढंग का वातावरण सन् 1980 में श्री मुखाड़िया के प्रति दिशा ले चुका था उससे वे किंचित भी विचलित नहीं हुये । भौतिक रूप में संसद सदस्य परन्तु आत्मिक रूप से कांग्रेस के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के रूप में रहते हुये दलहित के साथ-साथ लोकहित में कार्य करते रहे ।

जैसा देखा, वे वैसे ही थे

सन् 1980 में लोकसभा आम-चुनाव के बाद राजस्थान में भी परिवर्तित परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में मेरा उनसे और अधिक समीप का सम्बन्ध हुआ । अन्त समय तक समय-समय पर उनसे विचार-विमर्श का क्रम जारी रहा । इस वर्णित कार्य की अवधि में मैंने यह अध्ययन किया कि क्या यही एकमात्र ऐसा व्यक्तित्व है जिसे आधुनिक राजस्थान के निर्माता के रूप में अपने हृदय में स्थापित करलूं । राजस्थान गठन के समय इसकी गणना अविकसित राज्यों में होती थी परन्तु आज यह विकसित प्रान्तों की श्रेणी में स्थान पा चुका है । इसका श्रेय मोहनलाल सुखाड़िया को ही जाता है । मैं ही नहीं राजस्थान का प्रत्येक नागरिक इस महान् निर्माता को अपने हृदय के एक क्षेत्र में इसी भावना से प्रेरित होकर यथास्थान देने के लिये निश्चित रूप से तत्पर है क्योंकि सबने मुखाड़ियाजी को जैसा देखा वे वैसे ही थे । ○

सन्तुलित विकास का शुभारम्भ

भीमसेन चौधरी
भूतपूर्व उपमंत्री, राजस्थान सरकार
जयपुर

श्री मोहनलालजी सुखाड़िया को ऐसे समय में नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त हुआ जो समय काफी चुनौतीपूर्ण था लेकिन उन्हें तत्कालीन राजनेताओं, जिनमें श्री माणिक्यलाल वर्मा, सरदार हरलालसिहजी आदि प्रमुख थे, का पूर्ण समर्थन प्राप्त होने के कारण उन्होंने उन चुनौतियों का साहस के साथ मुकाबला करते हुए जागीरदारी उन्मूलन करके किसानों को अपनी भूमि का स्वामित्व प्रदान करके राजस्थान राज्य को भूमि सुधार के मामले में अग्रणी बनाया।

स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष में से निखरने के कारण चुनौतियों का मुकाबला करना उनके स्वभाव का अंग बन गया था। यही कारण था कि वे लोकनायक जयनारायण व्यास जैसे व्यक्तित्व के मुकाबले में खड़े रह सके।

राजस्थान की विभिन्न रियासतों का विलीनीकरण, जागीरदारी उन्मूलन करके नवएकीकृत प्रशासन तंत्र के माध्यम से इस अविकसित एवं पिछड़े राज्य को विकास के पथ पर अग्रसर करना अत्यन्त दुष्कर कार्य था लेकिन श्री सुखाड़िया ने व्यवहार कुशलता, सूझबूझ, दूरदर्शिता के साथ अपने कार्यकाल में कृषि उत्पादन, सिंचाई, विद्युत उत्पादन एवं प्रसार, शिक्षा, यातायात, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा तथा औद्योगीकरण की दिशा में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करा आधुनिक राजस्थान की सुदृढ़ नींव डाली। गांधी सागर, भाखड़ा, राजस्थान नहर अनेक मध्यम छोटी सिंचाई योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्विति से कृषि उत्पादन बढ़ाकर कृषकों को व्यापारियों के अनुचित शोषण से मुक्ति दिलाने हेतु कानून बनाकर कृषि मंडियों की स्थापना करके राजस्थान के सभी क्षेत्रों का विकास करने का प्रयास किया। उनके विरोधी एवं आलोचक भी उनकी सहिष्णुता, बदले

की भावना न रखने एवं पूर्वाग्रहों से ऊपर रह कर कार्य करने की भावना की प्रशंसा करते रहे हैं। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में देश की अगुवाई की। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 30 में निदेशक सिद्धांतों में पंचायतराज व्यवस्था की स्थापना का प्रतिपादन किया, सुखाड़ियाजी ने पंचायत-राज की व्यवस्था स्थापित करने में अन्य राज्यों की अगुवाई की और भारत के प्रधानमंत्री पं० नेहरू से 2 अक्टूबर, 1959 को पंचायतीराज की शुरूआत नागौर में ज्योति प्रज्ज्वलित कराके की।

श्री सुखाड़िया ने सारे राजस्थान का समान रूप से विकास करने का प्रयास किया उन्होंने सभी वर्गों, धर्मों, सम्प्रदायों एवं जातियों के साथ समान बर्ताव करने का प्रयास किया। उन पर सभी जातियों एवं धर्मों के लोग भरोसा करते थे, उनके समय में बड़े-बड़े आन्दोलन भू-स्वामी आंदोलन, गंगानगर का किसान आंदोलन एवं जयपुर का 1967 का आंदोलन, सभी आंदोलनों में निहित समस्याओं का समाधान इस प्रकार से किया कि सभी पक्ष उनकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकते।

सुखाड़ियाजी ने सन् 1957 एवं 1967 में बड़ी नाजुक परिस्थितियों में शासन का संचालन किया तथा अपने विरोधियों को चाहे वे दल के भीतर हो या बाहर सबको नियन्त्रण में रखा तथा प्रशासन का संचालन ठीक ढंग से किया।

बीकानेर, कोटा संभाग से विरोध की काफी आवाज उठती थी। उन्हें बीकानेर में बार-बार काले झण्डों से स्वागत होते हुए भी उनके व्यवहार में बीकानेर की जनता के लिए जगह थी कि बीकानेर की आधुनिक जल प्रदाय योजना, मेडिकल कॉलेज, वेटेरिनरी कॉलेज, डूंगर कॉलेज का नया भवन एवं अनेक विषयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाएँ, पोलिटेकनिक, आई० टी० आई०, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बीकानेर की स्थापना, सरकारी क्षेत्र में ऊनी मिल स्थापना, राजस्थान नहर आदि योजनाओं की क्रियान्वित उन्हीं की देन है।

राजस्थान की अकाल एवं विषम पेय जल की समस्या के प्रति वे अत्यन्त चिन्तित रहते थे तथा ग्रामीण जनता की तड़पन को कम करने में प्रयत्नशील रहते थे।

सन् 1952-53 में जब वे राजस्व मंत्री थे, अकाल सहायता विभाग उनके पास था, राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा था उस समय में हृदयनाथ कुंजरू व अन्य संसद सदस्यों ने राजस्थान की अकाल समस्या पर संसद में जोरदार बहस की व बीकानेर जिले में एक महिला की भूख से कथित मृत्यु के बारे में आवाज उठायी। उस वक्त सुखाड़ियाजी स्वयं स्थिति का अध्ययन करने नोरंगदेसर गाँव में, जहाँ की वह महिला, थी, आये तथा लोगों की हालत का अध्ययन करके अकाल प्रभावित जनता को राहत पहुँचायी। अकाल के दौरान वे स्वयं सुदूर इलाकों का बार-बार दौरा करके, प्रशासन तंत्र की निगरानी रखते, सन् 1965-66, 1967-68, 1968-69 के अकाल के दौरान भी राहत कार्य बड़े पैमाने पर खोले तथा गैर सरकारी स्तर पर भी राहत पहुँचाने के प्रयास किए। बम्बई में राजस्थान रिलीफ सोसाइटी का गठन भी उन्हीं की प्रेरणा से हुआ। लूणकरणसर लिफ्ट सिंचाई योजना उनकी व्यक्तिगत रुचि का ही परिणाम है जिससे अकाल एवं पेयजल समस्या का किसी सीमा तक समाधान हो सका है। लूणकरणसर क्षेत्र जहाँ पानी के अभाव में मौतें भी हो जाना आश्चर्यजनक नहीं था वहाँ आज मूंगफली, गन्ना, कपास, गेहूँ, चने की लहलहाती फसलों के पैदा हो जाने से जनता के जीवन-स्तर में नई तबदीली आई, यह सुखाड़ियाजी की ही देन है।

राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र उदयपुर संभाग में माही जाखम, काली सिंध परियोजना आदि अनेक बड़े, मध्यम एवं लघु सिंचाई योजनाओं के माध्यम से तथा शिक्षा के क्षेत्र से आदिवासियों को शिक्षित करके नये रोजगार के साधन उपलब्ध कराने से आम लोगों के जीवन-स्तर में सुधार आया।

तत्कालीन कठिन आर्थिक स्थिति एवं अत्यन्त पिछड़ेपन का अन्दाज आज के नौजवान नहीं लगा सकते। सुखाड़ियाजी ने जिस लगन, सहिष्णुता से राजस्थान के कोने-कोने में पहुँचकर, जनता की हालत स्वयं देखकर उनके चहुंमुखी विकास की जो सुदृढ़ नींव रखी इसके लिए सुखाड़ियाजी को एक सफल निष्पक्ष प्रशासक एवं आधुनिक राजस्थान के निर्माता के रूप में हमेशा के लिए याद किया जाता रहेगा। ○

Banyan Tree of Politics: Sukhadiaji

Kumari Girija Vyas
M.L.A.
29-C, Madhuban, Udaipur

I have been asked to record my impressions regarding Shri Mohanlal Sukhadia, the former Chief Minister of Rajasthan.

Much has been written about the administration and political capabilities of Sukhadiaji both by his admirers as well as his critics. Some have called him the Creator of New Rajasthan, while others have called him the Banyan Tree of Rajasthan-politics. In this short article I shall briefly concentrate on my impressions of Sukhadiaji as a man.

My association with Sukhadiaji goes back to the time when I as a child would sit in the lap of my father late Shrikrishna Sharma and listen to the discussions that continued for hours between Sukhadiaji, my father and their friends at our house in Nathadwara, since then I was accepted as a member of the family by him and jia.

To my mind Sukhadiaji was a true and faithful example of a stithpragya man.

दु:खेष्वनुद्विग्नमना: सुखेषु विगतस्पृह: ।
वीतराग भय क्रोध: स्थितधीर्मुनि रुच्यते ॥

In him we could find a happy balance of the head and the heart whether he was happy or in difficulty he always kept his balance; always smiling his bewitching and famous smile, whether the man before him was his friend or foe. This quality, so rare, was found in abundance in Sukhadiaji. I think it was this that kept him so popular and alive through out his life. And what life ! covering almost half a century - embracing our birth and development of this state of ours.

I remember very clearly that we found no change in him when he stepped down as the Chief Minister and took up the new assignment. If nothing else, he added new dimensions of grace and elegance in the position of Governor. After quitting his Governorship when he came back to Durga Nursery, Udaipur he did not lose his plan. So also, after his election as MP when people asked him as to when he was going to become a minister, his answer was simply his enigmatic smile. He was happy when he was Chief Minister as well as when he was merely an MP in the political wilderness.

Let me give you one more example which bring and my point more clearly while on an official tour his jeep was stoned by some miscreants, when members of his entournage were making statements to the press giving names of those who were involved in that dustardly attack, Sukhadiaji just got up and said, "I don't think any man in his proper senses could have done this, this seems to be work of some mad persons." Saying this he walked away leaving the press wallas stunned, for they were sure that with such damning evidence enjoined his political rivals he would certainly press the point and take the maximum advantage out of it

This, I think, amply proves my thesis that he was a Stithpragya Man. A man for whom friends and foes were all alike. A man who had a well trained and balanced mind and heart. That is why once a person came in his contact, he never forget the experience and became his admirer for life. He is in a life time that such great souls visit us on this earth and it is indeed a great privilege that we were able to come in contact with him and such close working at the mind of this great Man. We all cherish this memory in our minds and hearts in our own way.

राजनीति के चाणक्य : सुखाड़ियाजी

राजकुमार जोशी
सचिव, श्री मोहनलाल सुखाड़िया स्मृति ग्रंथ समिति,
शाहपुरा बाग, आमेर रोड, जयपुर

राजस्थान के इतिहास निर्माता

31 जुलाई, 1916 का सूर्योदय रियासतों में विभाजित राजस्थान की तत्कालीन वसुन्धरा को आलोकित करता हुआ पुरुषोत्तमदासजी सुखाड़िया के परिवार को प्रकाशित कर गया था। झालरापाटन की रत्नगर्भा पर श्रीमती रामचन्द्री बाई की कोख से प्रसूत, मेवाड़ की गोद पर पोषित, उत्तर से दक्षिण भारत तक अपनी अविस्मरणीय सेवाओं एवं मन्द मुस्कान के लिए विख्यात श्री सुखाड़िया के पार्थिव जीवन का अप्रत्याशित पर्यवसान राज्य के मरुप्रदेश बेंगलोर में 2 फरवरी, 1982 को हो गया। आकाशवाणी से सुखाड़ियाजी की मृत्यु के दुःखद समाचार से देश स्तब्ध रह गया, राजस्थान शोकाकुल हो उठा, वास्तविकता की जानकारी के लिये जन-समूह उमड़ रहा था, मंत्री-नेता और अधिकारीगण इधर-उधर सम्पर्क-सूत्रों के माध्यम से कहीं बेंगलोर से सम्पर्क में प्रयासरत थे, तो कहीं दुर्गा नर्सरी उदयपुर में, तो कहीं सुखाड़ियाजी के दामाद श्री मुरलीधर दाधीच के निवास उदयपुर पर। समाचार की सम्पुष्टि पर राजनीतिक हलकों में शोकधारा बह चली, राष्ट्र और राज्य के नेता, अधिकारी और जनसाधारण उदयपुर पहुंचने लगे। दुर्गा नर्सरी में अपार जन-समूह समा नहीं पा रहा था – पर थे सभी व्याकुल और स्तब्ध। सभी उस महामना के अन्तिम दर्शनों को लालायित। अन्तिम दर्शनों के बाद 2 दिन से गमगीन उदयपुर के वातावरण को 'सुखाड़िया अमर रहे' के गुंजायमान नारों से चीरता हुआ उस पार्थिव देह की शव यात्रा का जुलूस उदयपुर के प्रमुख मार्गों से गुजरता हुआ, उदयपुर की नर-नारियों और बच्चों के कम्पित हाथों और भीगे नेत्रों द्वारा दी गयी पुष्पाश्रु श्रद्धांजलि को स्वीकारता हुआ दुर्गा नर्सरी में ही निर्मित समाधि स्थल पर पहुंचा और कोटि कोटि अश्रुपूरित नेत्रों के देखते देखते उस महामानव की पांचभौतिक नश्वर देह अग्नि को समर्पित कर दी गयी, जो पंचतत्वों में समाहित हो गयी। सदियों से चली आ रही मेवाड़ की ऐतिहासिक गाथा में उस राजस्थान के इतिहास निर्माता का एक नया अध्याय और जुड़ गया।

अपने 66 वर्ष के जीवन में जो सामाजिक क्रियाकलाप सुखाड़ियाजी द्वारा किये गये उनसे चिन्तनशील समाज परिचित है। राजस्थान को दी गयी उपलब्धियों की जनमानस पर अमिट छाप है। उनके सम्पर्क में आने वाले उनकी कार्यशैली एवं व्यावहारिक पक्ष से परिचित हैं, फिर भी श्रद्धा के वशीभूत सुखाड़ियाजी के प्रति कुछ शब्द सुमन अर्पित करते हुये मैं उस महान् आत्मा एवं जन-जन के प्रेरक को शत-शत प्रणाम करता हूँ।

सच्चे जननायक

समय की गतिशीलता समाज एवं व्यक्ति को भी परिवर्तन के लिये प्रेरित करती है किन्तु सुखाड़ियाजी के जीवन में ऐसा अवसर शायद ही आया हो जहाँ परिवर्तनशीलता उनके सौम्य, शान्त, धीर किन्तु गंभीर हृदय को स्पर्श कर पायी हो। जहाँ सुखाड़ियाजी ने जीवन भर राजस्थान की प्रगति और प्रदेशवासियों के सर्वांगीण विकास के कार्यों को प्राथमिकता दी, वहीं राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों ने उनके प्रति आजीवन वही भाव, श्रद्धा और सम्मान रक्खा। जितने वे स्वयं राजनीतिक, सामाजिक, यशस्वी, सम्मानित और प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों के कद्रदान थे उतने ही वे लोग उनके प्रति श्रद्धावनत रहे। कार्यकर्त्ता को उन्होंने परिवार का सदस्य समझा और उसकी विषम परिस्थितियों में उसकी मदद का उत्तरदायित्व उन्होंने पारिवारिक संरक्षक के रूप में निभाया। राजनीतिक एवं वैचारिक मतभेद रखने वाले व्यक्ति भी सदा उनसे उपकृत हो हुये। इसी कारण सुखाड़ियाजी किसी विशेष दल के नेता ही नहीं वरन् समस्त लोगों में एक सच्चे जननायक कहलाये।

मनोहरपुर में दर्शन

प्रगतिशील विचारधारा में विश्वास रखने के साथ समाजसेवा एवं शैक्षिक क्षेत्र में कार्यरत होने से मेरा परिवार भी तीन दशक से भी अधिक समय पूर्व उनके सम्पर्क में आया और धीरे-धीरे यह सम्पर्क आत्मीयता और विश्वसनीयता में परिणित हो गया। मेरे पिता श्री मोतीलाल जोशी का प्रथम परिचय श्रद्धेय सुखाड़ियाजी से जयपुर जिले के एक सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं संस्कृत सेवक के रूप में हुआ। पिताजी उस समय 'भारत सेवक समाज' के बैराठ तहसील में संयोजक थे। सौभाग्य से कुछ माह के अन्तराल के पश्चात् ही सुखाड़ियाजी का देहली से जयपुर लौटते समय अनायास ही सर्वप्रथम मेरे ग्राम मनोहरपुर रुकना हुआ, जब बस्ती से दूर सुनसान किन्तु रोड के समीप पश्चिम की ओर सघन बालू रेत के टोलों के बीच निर्मित एक बरामदेनुमा स्थान पर उनका दृष्टिपात हुआ। वे गाड़ी रुकवाकर पैदल ही उधर चल दिये। बरामदेनुमा स्थान पर निर्मित शिवालय और वहीं कुछ ग्रामीण बालकों के साथ संस्कृत के अध्ययन अध्यापन में निरत पिताजी को जब उन्होंने देखा तो पूर्व परिचय का पहिचान में बदलना प्रारम्भ हुआ। थोड़ी देर वे वहाँ रुककर रवाना हो गये।

कुछ दिनों बाद जयपुर जिला 'भारत सेवक समाज' का मनोहरपुर में अधिवेशन हुआ और उसमें सुखाड़िया साहब पधारे। उस समय संस्कृत विद्यालय की राज्याधीनता की माँग स्वीकारी गई और वह विद्यालय उन्हीं के कार्यकाल में शास्त्री (डिग्री) महाविद्यालय में अनवरत क्रमोन्नत होता गया और आज वह धूलेश्वर आचार्य (पी.जी.) संस्कृत महाविद्यालय के रूप में राज्य में संस्कृत शिक्षण के क्षेत्र में अपना विशिष्ट प्रेरणास्वरूप रखता है। आजीवन सुखाड़ियाजी के स्मृतिपटल पर मनोहरपुर और यह संस्कृत महाविद्यालय रहा और इसी सम्पर्क ने संस्कृत शिक्षा को नये युग का समारम्भ दिया।

संस्कृत शिक्षा संरक्षक

सुखाड़ियाजी भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के संयोजक थे। उन्होंने 17 वर्ष के अपने सुदीर्घ शासन में जहाँ राज्य का चहुँमुखी विकास किया वहीं संस्कृत शिक्षा का स्वतंत्र निदेशालय स्थापित कर भारतीय संस्कृति और संस्कृत के क्षेत्र में प्रान्त को देश में विशिष्ट दर्जा प्रदान किया।

"संस्कृत का देश की सांस्कृतिक एकता में विशेष योग रहा है। संस्कृत से देश की संस्कृति जीवित रह सकी है। संस्कृत भाषा हमारी दार्शनिक विचारधारा तथा सांस्कृतिक चेतना का आदि स्रोत है। संस्कृत से राष्ट्रीय एकता और सभ्यता का हमें मार्गदर्शन मिलता है। आज के वैज्ञानिक युग में यदि हम संस्कृत की महत्ता की वृद्धि एवं संवर्धन चाहते हैं तो सरकार को इसे विशेष प्रोत्साहित करना चाहिये। साथ ही संस्कृत समाज एवं विद्वानों की यह चेष्टा एवं कर्म होना चाहिये कि संस्कृत भाषा हर प्रकार के हर क्षेत्र के विचारों को व्यक्त करने में समर्थ हो।"

यह था संस्कृति के प्रति सुखाड़ियाजी का अध्ययन चिंतन, मनन और अभिव्यक्ति और इसी के अनुरूप थी संस्कृत विकास हेतु उनकी कार्यशैली। राजस्थान में उनके कार्यकाल में संस्कृत शिक्षा के विकास के लिये अनेक महत्वपूर्ण निर्णायक कदम उठाये गये। संस्कृत परीक्षाओं को बोर्ड एवं विश्वविद्यालय स्तर पर मान्यता, संस्कृत विद्यालयों और महाविद्यालयों के भवनों का निर्माण, राज्य में संस्कृत स्नातकों के प्रशिक्षण की सुविधा के लिये राजस्थान संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ की जयपुर में स्थापना, संस्कृत शिक्षकों की वेतन विसंगति का निराकरण, राजस्थान प्रशासनिक एवं अधिनस्थ सेवाओं की शैक्षणिक योग्यता में संस्कृत की शास्त्री (डिग्री), एवं आचार्य (पी. जी.) परि-

क्षाओं का समावेश आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य उनकी सरकार द्वारा राज्य में संस्कृत शिक्षा की अभ्युन्नति के लिये किये गये।

संस्कृत शोध विश्वविद्यालय

सुखाड़ियाजी राजस्थान में 'संस्कृत शोध विश्वविद्यालय' स्थापित करने की आवश्यकता महसूस करते थे। वे चाहते थे कि जब भी हमारे देश में कोई विदेशी आएँ और वे यहाँ के प्राचीन दर्शन और प्राचीन संस्कृति के बारे में जानना चाहें तो वे राजस्थान आकर प्राचीन दर्शन और संस्कृति का अध्ययन करें और जयपुर में यह संस्थान अपने गौरव को निभाते हुये उनकी जिज्ञासाओं का प्रशमन करें, किन्तु 'संस्कृत शोध विश्वविद्यालय' की स्थापना की उनकी अभिलाषा अब तक भी पूर्ण न हो सकी। यद्यपि 'संस्कृत विश्वविद्यालय' स्थापित करने सम्बन्धी प्रस्ताव तैयार करने हेतु तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री विष्णुदत्त शर्मा की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया था, जिसकी रिपोर्ट आ जाने के बाद 'संस्कृत विश्वविद्यालय' स्थापित करने की घोषणा भी श्रद्धेय सुखाड़िया साहब द्वारा नाथद्वारा में आयोजित संस्कृत साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर की गयी थी और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में ही इसके लिये आवश्यक धनराशि का प्रावधान करने का निर्णय भी उनके द्वारा लिया जा चुका था किन्तु विधि की विडम्बना कहिये या समय की परिवर्तनता 'संस्कृत विश्वविद्यालय' की स्थापना से पूर्व ही सुखाड़ियाजी मुख्यमंत्री पद से मुक्त हो गये।

अहस्तक्षेप की नीति

सुखाड़ियाजी ने कभी सत्ता अपने में केन्द्रित नहीं की अपने मुख्यमंत्रित्व काल में कभी उन्होंने मंत्रिमण्डल के सदस्यों एवं प्रशासनिक अधिकारियों को यह अनुभव नहीं होने दिया कि उनके विभागों की कार्यप्रणाली में मुख्यमंत्री का हस्तक्षेप हुआ है। नीतिसंगत मामलों और असमंजस की स्थिति में स्वयं मंत्रीगण एवं अधिकारीगण उनसे परामर्श लिया करते थे। यह था मंत्रियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों का उनके प्रति आत्मसम्मान और उनके नेतृत्व में अटूट निष्ठा। सुखाड़ियाजी ने अपने कार्यकाल में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के लिये ऐतिहासिक कदम उठाया, वह था 'पंचायत राज की स्थापना' जिसके लिये नागौर में पंडित जवाहरलालजी नेहरु के हाथों 'पंचायत राज' का दीप प्रज्ज्वलित करा, उन्होंने देश में सर्वप्रथम ग्रामीण विकास योजना के लिये एक उल्लेखनीय पहल की जिसका परिणाम सामने है शहरों की अपेक्षा गाँव अधिक स्वावलम्बी बनते जा रहे हैं।

एकीकरण की प्रक्रिया

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमारा प्रदेश अनेक रियासतों में बंटा हुआ और जागीरदारी प्रथा की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था लोकतंत्र की स्थापना और कांग्रेस की सरकार बनने के बाद जहाँ अनेक रियासतों को मिलाकर इस प्रदेश को 'बृहद् राजस्थान' का स्वरूप तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल ने प्रदान किया वहीं अनेक संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करते हुये जागीरी प्रथा का उन्मूलन कर किसान को उसके अधिकार राजस्थान में सुखाड़ियाजी ने प्रदान किये। सुखाड़ियाजी ने ही अनेक रियासतों के अलग-अलग नियमों, कानूनों और वेतन का एकीकरण कर राजस्थान को प्रगति पथ पर अग्रसर किया। सुखाड़ियाजी ने वृहद् किन्तु पिछड़े राजस्थान की खुशहाली के लिये कितनी योजनायें बनाईं और क्रियान्वित की उनका विस्तृत वर्णन तो लेख के रूप सम्भव नहीं होगा किन्तु इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि आज जिस विकासशील राजस्थान को हम देख रहे हैं, जो यहाँ के निवासी हैं प्रवासी हैं यदि वे इसकी पृष्ठभूमि का अध्ययन कर चिंतन करें तो उन्हें अनुभव होगा कि सामन्तशाही और अराजकता का दौर यहाँ किस तरह हावी था। हमारे अग्रज और बुजुर्ग तो उसके प्रत्यक्षदर्शी हैं। उसी सामन्तशाही और अराजकता को समाप्त करने और पिछड़े प्रदेश को सामुदायिक, औद्योगिक, सिंचाई, विद्युत, शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, पेयजल, सहकारी आंदोलन जैसी अनेक योजनाओं की क्रियान्वित में आधुनिकता का दर्जा दिलाने में सुखाड़ियाजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान और भावी समाज सुखाड़ियाजी को मुख्यमंत्री, राज्यपाल, सांसद के रूप में जानने के बजाय यदि 'आधुनिक राजस्थान के स्वप्नदृष्टा' के रूप में जाने तो अतिशयोक्ति न होगी।

आइये हम उसी माँ दुर्गा के परम भक्त, राजस्थान के इतिहास निर्माता, गरीबों के मसीहा, यशस्वी, समान्य और प्रतिभाओं के कद्रदान, राजनीति के चाणक्य, विरोधी एवं आलोचकों का भी हित चाहने वाले, कार्यकर्त्ता के मददगार, अजातशत्रु और राज्य को सुदीर्घ काल तक निर्विवाद सफल नेतृत्व प्रदान करने वाले जननायक सुखाड़ियाजी के आदर्शों के अनुगमन का संकल्प लेकर राज्य एवं राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में अपना योगदान देकर हमारे राष्ट्रभक्तों एवं शहीदों के स्वप्न एवं अभिलाषा को साकार करें। ○

सुखाड़िया शासन में संस्कृत शिक्षा का विकास

डॉ० रामनारायण चतुर्वेदी
निदेशक, संस्कृत शिक्षा, राजस्थान
सुभाष मार्ग, सी-स्कीम
जयपुर

जहाँ सुखाड़िया शासन में राजस्थान की चहुँमुखी प्रगति हुई, वहाँ सुखाड़ियाजी के मेधावी व्यक्तित्व ने संस्कृत भाषा को समुन्नत करने में अपनी रुचि प्रदर्शित की। देश में राजस्थान ही ऐसा एक राज्य है जहाँ संस्कृत विभाग पृथक् से स्वतन्त्र विभाग के रूप में काम कर रहा है। इसी शासन में पनपी राजस्थान में संस्कृत माध्यम विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना अपने आप में नयी थी। इनके शासन में संस्कृत जो वैकल्पिक विषय था उसे सामान्य विद्यालयों में मिडिल स्तर पर अनिवार्य विषय बनाया गया तथा माध्यमिक स्तर पर राजस्थान में अनिवार्य तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत का पाठ्यक्रम में समावेश किया गया। प्रदेश के तीनों विश्वविद्यालयों व अनेक सम्बद्ध महाविद्यालयों में संस्कृत के स्नातक व स्नातकोत्तर अध्यापन की व्यवस्था की गई और संस्कृत गवेषणा के लिए सुविधा उपलब्ध करायी गई। सामान्य शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत की सामान्य धारा के अविरल प्रवाह के समानान्तर संस्कृत विद्यालयों व महाविद्यालयों में परम्परागत धारा भी प्रवाहित रही है और प्रदेश ने संस्कृत शिक्षा के प्रचार व प्रसार के पुनीत कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। संस्कृत शिक्षा के सुनियोजित विकास क्रम की संकल्पना, संस्तुति, समारम्भ और उपलब्धियाँ निम्नानुसार हैं :–

निरीक्षणालय का विघटन : मांग-पत्र

सन् 1955 में राजस्थान के समग्र शिक्षा विभाग के पुनर्गठन के समय संस्कृत निरीक्षणालय का अंग भंग कर दिया गया और निरीक्षक और उनके कार्यालय के 5 लिपिकों को जयपुर से सामान्य शिक्षा के बीकानेर स्थित निदेशालय में स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया। समूचे राजस्थान और विशेषतः जयपुर में इस निर्णय का अत्यधिक विरोध हुआ। सभाएँ हुई, समाचारपत्रों में विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हुई। जनता तथा विधायकों द्वारा सरकार के समक्ष

संस्कृत शिक्षा से सम्बद्ध एक माँग-पत्र प्रस्तुत किया गया जिसकी मुख्य बातें निम्नांकित थीं :–

1. आयुर्वेद को संरक्षण व प्रोत्साहन देने के लिए जैसे पृथक् आयुर्वेद विभाग स्थापित है वैसे संस्कृत शिक्षणालयों को उचित व सही संरक्षण व प्रोत्साहन देने के लिए पृथक् से संस्कृत विभाग स्थापित किया जाए। विभाग का मुख्यालय, जयपुर में कायम किया जाए; क्योंकि अधिकांश पाठशालाएँ जयपुर में हैं।

2. संस्कृत पाठशालाओं और कॉलेजों के वेतन की दरें बढ़ायी जाएँ।

3. संस्कृत पाठशालाओं और कॉलेजों में पठन सामग्री व भवन की व्यवस्था के लिए अधिक से अधिक धन दिया जाएं।

4. संस्कृत छात्रों के लिए उचित दर पर छात्रवृत्ति दी जाए।

5. संस्कृत शिक्षणालयों के साथ निःशुल्क आवास व भोजन की सुविधा वाले छात्रावासों की व्यवस्था की जाए।

6. संस्कृत अनुसंधान के प्रोत्साहन हेतु कुछ छात्रवृत्तियों का प्रवर्तन किया जाए।

7. संस्कृत भाषा में मौलिक कार्य करने वाले विद्वानों के प्रोत्साहन हेतु वार्षिक पुरस्कार राशि का निर्धारण किया जाए।

8. संस्कृत पढ़े हुए व्यक्तियों को अध्यापक पद के अतिरिक्त अन्य राजकीय सेवाओं में भी लिया जाए।

9. मैट्रिक कक्षा तक संस्कृत विषय को अनिवार्य किया जाए।

10. संस्कृत सेवा में कार्यरत गैर सरकारी संस्थाओं को न्यूनतम 80 प्रतिशत सहायता अनुदान स्वीकार किया जाए।

11. संस्कृत की प्रवेशिका, उपाध्याय, शास्त्री व आचार्य परीक्षाओं को क्रमशः मैट्रिक, इण्टर, बी.ए. व एम.ए. के समकक्ष मान्यता प्रदान की जाए।

12. राजस्थान सरकार ने संस्कृत शिक्षा की उन्नति व प्रसार के सुझाव देने हेतु जो समिति गठित की थी और जिसमें प्रसिद्ध विद्वानों का प्रतिनिधित्व था, उस समिति की सिफ़ारिशों को शीघ्र लागू किया जाए।

संस्कृत की प्रगति हेतु समिति

राज्य के संस्कृत विद्वानों का एक शिष्टमण्डल भी उक्त माँगों के सन्दर्भ में सुखाड़ियाजी से मिला। शायद यही वह प्रथम अवसर था जब सुखाड़ियाजी ने संस्कृत की समस्याओं को एक साथ सुना और उनकी दृष्टि सीधी इन समस्याओं की ओर गई। उन्होंने तत्काल संस्कृत निरीक्षणालय को यथावत् रखने की आज्ञा प्रदान की और संस्कृत शिक्षा की प्रगति के लिए सुझाव देने हेतु नये सिरे से श्री लक्ष्मीलाल जोशी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन कर दिया। इस समिति में सर्वश्री चन्द्रशेखर द्विवेदी, के. माधव कृष्ण शर्मा, जुगलकिशोर शर्मा, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री और आर. सी. कुम्भारे को सम्मिलित किया गया।

उक्त संस्कृत समिति ने अपना प्रतिवेदन 1956-57 में दिया और समिति की सिफारिशों को स्वीकार करने की घोषणा सन् 1958 में उदयपुर में आयोजित राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन पर स्वयं सुखाड़ियाजी ने की। सिफ़ारिशों की क्रियान्विति के साथ सुखाड़िया शासन में संस्कृत शिक्षा के विकास कार्यों का योजनाबद्ध श्रीगणेश हुआ, जिनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य संस्कृत शिक्षा के लिए स्वतन्त्र व पृथक् विभाग की स्थापना का था।

स्वतन्त्र रूप से संस्कृत विभाग

संस्कृत समिति 1955 के प्रतिवेदन की संस्तुतियों को स्वीकार कर सुखाड़िया सरकार ने स्वतन्त्र व पृथक् संस्कृत विभाग की स्थापना की और जयपुर स्थित निरीक्षक, संस्कृत शिक्षणालय, राजस्थान के पद को संचालक, संस्कृत शिक्षा, राजस्थान के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। इस प्रकार नवस्थापित संस्कृत विभाग ने अपने प्रथम विभागाध्यक्ष श्री के० माधव कृष्ण शर्मा के नेतृत्व में 22 मार्च, 1958 को कार्यारम्भ किया। विभाग का मुख्यालय जयपुर में ही रखा गया। इस नवीन विभाग का सीधा सम्बन्ध शिक्षा सचिव, राजस्थान से हो गया।

राज्य के समस्त संस्कृत विद्यालयों व महाविद्यालयों को संस्कृत संचालक के नियन्त्रण में कर दिया गया। इस प्रकार संस्कृत शिक्षा के प्रोत्साहन, विकास व विस्तार के द्वार उद्घाटित हुए।

राजस्थान में संस्कृत क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के अवसर पर एक समारोह में बोलते हुए तत्कालीन लोक सभाध्यक्ष अनन्तशयनम् आयंगर ने राजस्थान के दो महत्वपूर्ण कार्यों – सत्ता के विकेन्द्रीकरण और संस्कृत शिक्षा के स्वतन्त्र विभाग की स्थापना के लिए सुखाड़ियाजी को बधाई दी थी। वस्तुतः इस शिक्षा के सन्दर्भ में राजस्थान को देश के

मानचित्र में प्रथम और अग्रणी स्थान पर अधिष्ठित कराने का श्रेय माननीय सुखाड़ियाजी को ही जाता है।

राज्य संस्कृत परामर्श मण्डल

राज्य में संस्कृत शिक्षा की समस्याओं के समाधान हेतु समय-समय पर उपयुक्त व कारगर सुझाव सरकार को देने के लिए एक राज्य संस्कृत परामर्शदाता मण्डल की उपयोगिता अनुभव की गई और सुखाड़िया ने चित्तौड़ में सम्पन्न अखिल भारतीय संस्कृत अधिवेशन के अवसर पर राज्य संस्कृत परामर्शमण्डल की स्थापना का शुभसन्देश संस्कृतज्ञों को देकर. सत्रह सदस्यीय मण्डल का गठन किया जिसमें राजस्थान के विभिन्न अंचलों के अनेक संस्कृत विद्वानों को सम्मिलित किया गया।

संस्कृत संस्थाओं का वर्गीकरण

संस्कृत परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों को राज्य सेवा के पर्याप्त अवसर व नियुक्तियां नहीं मिलती थीं और शनैः शनैः संस्कृत शिक्षा को जीवनयापन में सहायक और उपयोगी न मानकर संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में न्यूनता हुई। संस्कृत शिक्षा के सन्दर्भ में ऐसी निराशाजनक व भ्रामक स्थिति के निराकरण के लिए राजस्थान सरकार ने इस बिन्दु पर गहन और पर्याप्त विचार कर आचार्य, शास्त्री, उपाध्याय तथा प्रवेशिका परीक्षाओं (अंग्रेजी सहित) को क्रमशः एम.ए., बी.ए., इण्टरमीडिएट तथा मैट्रिक परीक्षाओं के समकक्ष राजकीय सेवाओं में नियुक्ति हेतु मान्य किया। इसी प्रकार संस्कृत विद्यालयों तथा महाविद्यालयों को भी सामान्य शिक्षा के विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के समतुल्य मानकर वर्गीकृत किया।

1. प्रवेशिका विद्यालय	–	हाईस्कूल
2. उपाध्याय महाविद्यालय	–	इण्टरमीडियेट कॉलिज
3. शास्त्री महाविद्यालय	–	डिग्री कॉलिज
4. आचार्य महाविद्यालय	–	पोस्ट-ग्रेज्युएट कॉलिज

राज्य सरकार द्वारा किए गये वर्गीकरण के फलस्वरूप संस्कृत संस्थाओं का सम्मान समाज में बढ़ा और इन संस्थाओं में छात्र संख्या भी बढ़ी। नौकरी की सुविधा प्राप्त होने से नियोजन के व्यापक अवसर उपलब्ध होने से संस्कृत परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों का असंतोष भी दूर हुआ। बोर्ड ने शास्त्री व आचार्य परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों को उच्च व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के पदों पर नियुक्ति हेतु मान्यता प्रदान की, इससे भी संस्कृत क्षेत्र में हर्ष की लहर दौड़ गई।

सुखाड़िया शासन में संस्कृत संस्थाओं की संख्या नयी संस्थाओं के खुलने, राज्याधीनता व क्रमोन्नति द्वारा निरन्तर वृद्धिगत हुई है। संस्कृत शिक्षा से अछूते क्षेत्रों में ऐसे विद्यालय खोलने हेतु भी कार्यवाही की गई है।

बोर्ड व विश्वविद्यालय से संस्कृत परीक्षाओं का सम्बन्धन

1955 की संस्कृत समिति की सिफारिश के अनुसार जिन्हें सुखाड़िया शासन पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध था, संस्कृत शिक्षा के वांछित स्तर की पूर्ति के उद्देश्य तथा सार्वदेशिक मान्यता के दृष्टिकोण से निर्णय किया कि रजिस्ट्रार विभागीय परीक्षाओं के अधीनस्थ संचालित होने वाली प्रवेशिका व उपाध्याय परीक्षाओं का माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर तथा शास्त्री व आचार्य परीक्षाओं का राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बन्धन कर दिया जावे। प्रस्तुत निर्णय के फलस्वरूप प्रवेशिका व उपाध्याय परीक्षाओं की प्रतिष्ठा और छात्र संख्या बढ़ने लगी। यही नहीं बोर्ड ने प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण छात्र को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की 11वीं कक्षा में प्रवेश की अनुज्ञा देकर संस्कृत छात्रों के लिए उत्साहवर्धन का कार्य किया।

शिक्षक-प्रशिक्षण व्यवस्था

राजस्थान में उच्च संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण व्यवस्था का अभाव भी शिक्षाविदों को खलने वाला था। केवल तिरुपति, दिल्ली व वाराणसी में ऐसे प्रशिक्षण की व्यवस्था थी। राजस्थान इस सन्दर्भ में परमुखापेक्षी था। यहाँ से शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उक्त तीनों स्थानों में जाना पड़ता था। ऐसे में सरकार की उदारता यह रही कि प्रदेश से बाहर ऐसे प्रशिक्षण हेतु शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति पर सरकार की ओर से पूर्ण वेतन व क्षतिपूर्ति भत्ता वर्ष 1965-65, 1965-66 व 1966-67 में स्वीकार किया गया। ऐसे अभाव की पूर्ति के लिए राजस्थान सरकार ने राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की मांग पर संस्कृत परीक्षाओं की शृंखला में शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षण परीक्षा का प्रवर्तन करने का एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया और वर्ष 1967-68 में राजस्थान में सर्वप्रथम शाहपुरा बाग आमेर रोड जयपुर में शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षण केन्द्र का समारम्भ किया और राज्य सरकार ने ऐसे प्रशिक्षणार्थियों को पूर्ण वेतन सम्बन्धी सुविधाएं भी दीं।

इसी क्रम में प्रगति का एक और चरण आगे बढ़ा जब राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत अध्ययन संकाय का गठन किया गया और समस्त स्नातक व स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालयों का सम्बन्ध सन् 1970 में उससे कर दिया गया।

परम्परागत संस्कृत प्रणाली के उत्पादों को शोध के उपयुक्त व उन्मुक्त अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राजस्थान विश्वविद्यालय में ही विद्यावारिधि व वाचस्पति शोध उपाधियों से सम्बन्धित नियमोपनियम प्रसारित किए गए।

जब तक परीक्षाओं को सरकार द्वारा मान्यता नहीं दी जाती तब तक भले ही कैसे ही स्तर की परीक्षाए क्यों न हों परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को समाज मान्यता कम ही देता है। हुआ भी यही. राजस्थान शासन ने संस्कृत की प्रवेशिका, उपाध्याय, शास्त्री और आचार्य परीक्षाओं को क्रमशः हाई स्कूल, इण्टर, बी.ए. व एम.ए. के समकक्ष घोषित कर मान्यता प्रदान की. फलतः संस्कृतज्ञों को सरकारी स्तर पर नियुक्ति हेतु मान्य समझा जाने लगा और इनके आत्मविश्वास की जागृति होने से नवचेतना व उत्साह का संचार हुआ। इस प्रकार सम्बन्धन और मान्यता के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत परीक्षाओं का मानकीकरण सुखाड़िया शासन में हुआ।

संस्कृत परीक्षाओं का सम्बन्धन बोर्ड व विश्वविद्यालय से होने से इनकी मान्यता के क्षेत्र विस्तृत हुए हैं। इन छात्रों को विभिन्न संकायों यथा कला संकाय, शिक्षा संकाय, विधि संकाय, पुस्तकालय, विज्ञान परीक्षा आदि में प्रवेशार्ह माना गया है। फलतः संस्कृतज्ञों के लिए विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश के द्वार खुले हैं, यथा – डाक-तार सेवा, पंचायत समिति सेवा व सचिवालयिक सेवा में इनके नियोजन के व्यापक अवसर सुलभ है। अब संस्कृतज्ञ रोजगार के लिए केवल शिक्षा विभाग तक ही सीमित नहीं रहते उन्हें विभिन्न राज्य सेवाओं व अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती सम्बन्धी परीक्षाओं में लिया जाता है। संस्कृत स्नातकों के राज्य प्रशासनिक पदों पर चयन के भी अनेक उदाहरण हैं। यही कारण है कि संस्कृत संस्थाएं एवं संस्कृतज्ञ जनता के अधिक निकट आये हैं। फलतः छात्र संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां संस्कृत संस्थाओं में 1957-58 में 8308 छात्र संख्या व 71-72 में लगभग 27 हजार छात्र संख्या थी वहां अब 60 हजार से भी अधिक रही है। इससे से स्पष्ट ज्ञात होता है कि 1957-58 वर्ष के मुकाबले वर्ष 1971-72 में लगभग साढे तीन गुनी व 1983-84 में छः गुनी से भी अधिक बढ़ोतरी हुई है।

राजस्थान में संस्कृत विश्वविद्यालय

राजस्थान संस्कृत और संस्कृति के विषयों के अध्ययन का केन्द्र रहा है और अतीत की परम्पराओं और संस्कृति को दृष्टि में रखते हुए इस प्रकार का विश्वविद्यालय स्थापित किए जाने के लिए राजस्थान सर्वाधिक उपयुक्त स्थान है। "संस्कृत के क्षेत्र में राजस्थान को सचमुच राष्ट्रविश्रुत करने की उनकी मनोभावना का परिचायक है 'संस्कृत माध्यम विश्वविद्यालय समिति' ने अपना प्रतिवेदन सरकार को प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के लिए उपयुक्त स्थान चयन का भी कार्य हुआ लेकिन दुर्देववश सुखाड़ियाजी की सारस्वत साध साकार रूप में परिणत नहीं हो पायी। जब कभी यह परिकल्पना साकार होगी तो इसके सूत्रधार का पुण्य स्मरण अवश्य किया जावेगा।

शोध कार्य

राजस्थान में दुर्लभ सहस्रों संस्कृत पाण्डुलिपियां व लेख गैर सरकारी तौर पर अनेक लोगों के पास, पुस्तकागारों, मठों, मन्दिरों व जैनालयों में अप्रकाशित रूप में प्रकीर्ण व संकलित किए हुए थे। इनके संरक्षण के प्रयास किये गये। हस्तलिखित ग्रन्थों व शोधकार्यों के लिए 1954 में एक समिति प्रसिद्ध शोधविद् संस्कृत शिक्षा संचालक के० माधव कृष्ण शर्मा के संयोजकत्व में गठित की गई। समिति ने पाण्डुलिपियों के संरक्षण व शोध हेतु शोध संस्थान की संस्थापना हेतु प्रतिवेदन दिया। परिणामस्वरूप राजस्थान में प्राच्य शोध प्रतिष्ठान की स्थापना हुई। आज यह राष्ट्रीय स्तर की इन्स्टीट्यूट बन गई है और इसकी शाखायें अनेक नगरों में कार्यरत हैं।

छात्रवृत्तियां

पूर्व में संस्कृत शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों का कोई प्रावधान नहीं था अतः संस्कृत समिति ने राज्य सरकार से छात्रवृत्तियों के प्रावधान हेतु अभिशंसा की। यद्यपि अनुशंसाओं के अनुसार छात्रवृत्ति की दरों का विनिर्धारण नहीं हुआ तथापि संस्कृत छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों का प्रथम प्रवर्तन 1957-58 में किया गया।

इन मेरिट कम नीड छात्रवृत्तियों से सैकड़ों संस्कृत के छात्रों ने लाभ उठाया। छात्रवृत्ति स्वीकृति के क्रम में एक

और उत्साहजनक कदम रखा गया और 1960-61 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर अग्रिम अध्ययन करने वाले संस्कृत छात्रों के लिए योग्यता छात्रवृत्ति का प्रवर्तन किया गया।

विद्वानों को विविध वृत्तियाँ

राज्य में संस्कृत के विद्वानों को सम्मानित करने तथा आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से तीन योजनाओं को प्रारम्भ किया गया। ऐसी योजना के प्रवर्तन में राजस्थान राज्य ने अग्रगामी पहल की। इन योजनाओं से अनुसन्धान की दिशा में तो प्रोत्साहन प्राप्त हुआ ही आर्थिक अभावग्रस्त प्राचीन विद्वानों को आर्थिक सहायता व राहत भी मिली। विद्वानों को दी जाने वाली विविध वृत्तियों का विवरण नीचे प्रस्तुत है :–

1. जीवन निर्वाह वृत्ति	100 रु. प्रतिमाह
2. योग्यता पारितोषिक	2000 रु. से 3000 रु. एकमुश्त
3. अनुसंधान वृत्ति	100 रु. से 200 रु. मासिक तक

वर्णित विविध योजनाओं से जहाँ संस्कृत के विद्वान प्रोत्साहित हुये हैं वहाँ संस्कृत के सृजनधर्मी विद्वान भी लाभान्वित हुए हैं। अब तक इसके अन्तर्गत लगभग 60 विद्वान् पुरस्कृत हो चुके हैं।

उपलब्धियाँ

1. राज्य सरकार द्वारा प्रवेशिका, उपाध्याय, शास्त्री, आचार्य व शिक्षा शास्त्री परीक्षाओं की समकक्षता क्रमशः हाईस्कूल, इण्टर, बी.ए., एम.ए. व बी.एड. के समतुल्य कायम की जा चुकी है।

2. संस्कृत के क्षेत्र में शोध की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने हेतु विद्यावारिधि व विद्यावाचस्पति शोध उपाधियों का समारंभ राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। शोध छात्रवृत्तियाँ चालू की गई हैं।

3. विभिन्न सेवा में नियोजन के लिए संस्कृतज्ञों को मान्यता दी गई। संस्कृत परीक्षोतीर्ण व्यक्तियों को पुलिस सेवा, सामान्य शिक्षा सेवा, पंचायत समिति सेवा, डाक-तार सेवा आदि सेवाओं में नियोजन की सुविधा प्राप्त हो चुकी है। शिक्षक सेवा के अतिरिक्त मन्त्रालयिक सेवा, ग्राम सेवक, पटवारी, टेलीफोन आपरेटर, सब-इन्सपेक्टर ऑफ पुलिस आदि पदों के प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए संस्कृत परीक्षोतीर्ण को योग्य माना जा चुका है।

4. संस्कृत शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए संस्कृत बी.एस.टी.सी. स्कूल व शिक्षाशास्त्री प्रशिक्षण महाविद्यालय की व्यवस्था की जा चुकी है।

5. प्रत्येक उच्च प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय में क्रमशः तृतीय व द्वितीय वेतन श्रृंखला के संस्कृत शिक्षक के लिए एक पद आवण्टित करने हेतु शासकीय आदेशों का प्रसारण हो चुका है।

6. सामान्य शिक्षा के प्रत्येक जिला एवं उप जिला मुख्यालय पर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय में संस्कृत वैकल्पिक विषय खोलने की नीति का निर्धारण किया गया है।

7. शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण को समस्त विषयों की एम.ए. परीक्षाओं तथा एलएल.बी. परीक्षा में सीधे प्रवेश की सुविधा दी गई है।

8. बोर्ड द्वारा प्रशिक्षित शास्त्री को माध्यमिक विद्यालयों में तथा प्रशिक्षित आचार्य को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक पद के लिए योग्यता प्राप्त माना जा चुका है।

9. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षाओं में शास्त्री उपाधिकारी प्रविष्ट होने लगे हैं।

10. संस्कृत परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में प्राचीन शास्त्रीय विषयों के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक-ज्ञान, इतिहास, नागरिक शास्त्र, चित्रकला, हिन्दी शीघ्र लिपि व टंकण, पूर्व आयुर्वेद तथा विभिन्न व्यावहारिक विषयों का समावेश किया जा चुका है जिससे संस्कृतज्ञों के लिए रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हुए हैं।

11. राजस्थान में संस्कृत अकादमी का गठन किया जा चुका है।

इस प्रकार आलोच्य अवधि में संस्कृत शिक्षा का योजनाबद्ध विकास होने से यह राजस्थान में उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हुई है।

नक्षत्रों की दृष्टि में सुखाड़ियाजी

पं० रामपाल शर्मा
ज्योतिष विभागाध्यक्ष
महाराजा संस्कृत कॉलेज, जयपुर

राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया के व्यक्तित्व, नेतृत्व एवं संगठन शक्ति तथा कूटनीति के विषय में बहुधा देखा-सुना और पढ़ा गया है, वे एक प्रतिभासम्पन्न कुशल प्रशासक रहे हैं। भारत के किसी भी प्रान्त में इतने लम्बे समय तक किसी भी जनप्रतिनिधि ने मुख्यमन्त्रित्व का सफल निर्वहन नहीं किया जितना मनमोहक मुस्कान के धनी मोहनलालजी सुखाड़िया ने किया।

श्री सुखाड़ियाजी की जन्मकालिक ग्रह स्थिति निम्नांकित प्रकार से है –

संवत् 1973 शाके 1838 श्रावण शुक्ल प्रतिपद् सोमवासरे 8 घ. 25 पलानि अश्लेषा नक्षत्रे 24 घ. 20 प. व्यतिपात योगे 30 घ. 55 प. दिनमानम् 32 घ. 55 पलानि श्री सूर्योदयादिष्टम् 30 घ. 00 प. स्पष्टोरविः 3/15/7/50 समयेऽस्मिन्धनुर्लग्नोदये पं. पुरुषोत्तमदासजी सुखाड़िया गृहे मघा नक्षत्रस्य प्रथमपदे पुत्र जन्म। "मनोज" राशिनाम् सिंह राशिः।

जन्मदिनाङ्काः 31 जोलाई 1916 मिताः खिस्तब्दाः जन्मसमयः सायं स्टै. 6 घं. 6 मि. 13 सै. वादने, राजस्थान प्रान्तस्य झालावाड़नगरे जन्म।

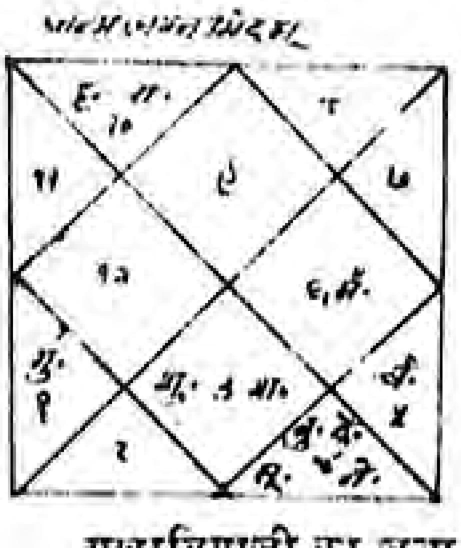

सुखाड़ियाजी का जन्म विक्रम संवत् 1973 के श्रावण मास में शुक्लपक्ष की प्रतिपद तिथि सोमवार को सायं धनु लग्न में हुआ था। खगोलशास्त्र के अनुसार सूर्यास्त के तीन घन्टे पूर्व यदि प्रतिपद तिथि समाप्त हो जाय तो उसी दिन

आकाश के पश्चिम क्षितिज पर नूतन चन्द्रमा का उदय होगा, ठीक इसी नियम के अनुसार इनके अवतीर्ण होने के साथ ही चन्द्रोदय भी हुआ। अतः शुक्लपक्ष की द्वितीया के नवोदित चन्द्रमा की भांति बालक मोहनलाल सर्वप्रिय एवं मोहक व्यक्तित्वसम्पन्न महामानव के रूप में विकसित हुआ।

सुखाड़ियाजी का जन्मलग्न धनुलग्न था, लग्नेश वृहस्पति पञ्चमभाव में मित्रक्षेत्र में स्थित होकर नवम दृष्टि से जन्मलग्न को देख रहा है। यह मातृभाव का स्वामी भी है, लग्न पर वृहस्पति और शुक्र दोनों प्रबलतम शुभग्रहों की दृष्टि है। अतः आचार्य गणेश दैवज्ञ के अनुसार यदि लग्नेश केन्द्र में स्थित हो तथा जन्मलग्न पर बुध-वृहस्पति-शुक्र ग्रहों की दृष्टि हो, लग्नेश यदि मित्रक्षेत्री उच्चनवमांश स्वगृही हो तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्वसम्पन्न, सर्वप्रकार की सम्पत्ति से युक्त ज्ञानी, मन्त्री, प्रशासक अच्छे नेत्र वाला श्रेष्ठ मनुष्य होता है –

> अंगाधीशः स्वगेहे बुध-गुरु-कविभिः संयुतः केन्द्रगो वा स्वीये तुंगे स्वमित्रे यदि शुभभवने वीक्षितः सत्स्वरूपः स्यान्नूनं पुण्यशीलो सकलजनमतो सर्वसम्पन्निधानं ज्ञानी मंत्री च भूपो मुरुचिरनयनो मानवो मानवानाम्।

ज्योतिषशास्त्र में जन्मलग्न को आत्मा और चन्द्रमा को मन माना जाता है। जिस प्रकार जन्मलग्न पर ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति योगायोगों की गणना की जाती है, उसी प्रकार चन्द्रलग्न से भी योगायोग देखने का विधान है।

इस प्रक्रिया के अनुसार सुखाड़ियाजी का चन्द्रलग्न सिंह राशि है। सिंह राशि सुदृढ़, पराक्रमी, दृढ़निश्चयी एवं सत्तासम्पन्न तथा खगोल की प्रधानतम राशि है। इस प्रकार श्री सुखाड़िया का जन्मलग्न धनु (देवगुरु की राशि) सचिव लग्न एवं सिंह राशि राजा राशि आत्मा और मन की राशियां का एक ही तत्व एक ही दिशा होने तथा दोनों के स्वामियों में प्रगाढ़ मित्रता होने के कारण मन और आत्मा की एकात्मकता के कारण ये जीवन के विविध क्रियाकलापों में सर्वदा सफल रहे।

सुखाड़ियाजी की जन्म-कुण्डली में धन स्थान का स्वामी शनि ग्रह-धनेश-पराक्रमेश होकर अपने मित्र स्वीकारक ग्रह शुक्र जो लाभेश भी है। उसके साथ सप्तम (स्त्री) भाव में बैठा है, अतः स्वयं के पराक्रम से सम्पत्ति समर्जन का योग एवं स्त्रीपक्ष द्वारा उसमें वृद्धि का सुविदित योग है।

मित्र स्थान के स्वामी वृहस्पति की पञ्चम भाव में स्थिति से विविध प्रकार के मित्रों का सुख-सहयोग श्री सुखाड़िया को प्राप्त हुआ।

सुखाड़ियाजी के जन्मपत्र में राज्येश-सप्तमेश बुध का भाग्येश सूर्य से सम्बन्ध उत्तम राजयोग का कारक है, अनेक प्रकार के राजयोग इस कुण्डली में बनते हैं –

(1) जन्मलग्न वर्गोत्तमासन्न है तथा लग्नेश उच्च-नवमांश का होकर पूर्ण दृष्टि से लग्न भाव को देखता है।

(2) दशम भाव में पञ्चमेश मंगल की स्थिति से "कुलदीपक" योग बनता है, यह उत्तम स्तर का राजयोग है।

(3) प्रबल केन्द्रेश बुध का सर्वोत्कृष्ट त्रिकोणेश सूर्य से सम्बन्ध उत्तम राजयोग कारक है। यह योग अष्टम भाव में है और साथ में केतुनामक छाया ग्रह भी स्थित है अतः राजयोग प्राप्ति में प्रबलतम संघर्ष का योग है जो कि वास्तव में श्री जयनारायण व्यास एवं श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि के साथ कांग्रेस विधायक दल के नेतृत्व संघर्ष में दृष्टि-गत भी हुआ।

इनका जन्मनक्षत्र "मघा" नक्षत्र का प्रथम पद होने से विंशोत्तरी दशा क्रमगणना से "केतु" ग्रह की महादशा में जन्म हुआ। यह समय लगभग 6 वर्ष 6 मास रहा। केतु अष्टम भाव में स्थित होने से बालक मोहनलाल अपने जन्मस्थान "झालावाड़" नगर में न रहकर वहाँ से केतु के समय में पितृकारक ग्रह सूर्य के साथ "नाथद्वारा" आ गये तदनन्तर 20 वर्ष तक शुक्र की महादशा में अध्ययन, क्रीड़ा एवं साहित्यिक एवं सामाजिक सम्पर्क का समय रहा।

सन् 1943 ई. में इन्हें भाग्येश सूर्य की दशा प्रारम्भ हुई और इनका सम्पर्क सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में श्री वर्मा आदि उच्चकोटि के प्रान्तीय नेताओं से हुआ और कांग्रेस के सक्रिय उच्च कार्यकर्त्ता से उठकर नेतृत्व पंक्ति में समादृत होते हुए प्रशासन में सूर्य की महादशा के 6 वर्षों अर्थात् 1949 ई. तक मन्त्रित्व पद पर आसीन हो गये।

विधायक दल के नेतृत्व के स्व. व्यासजी के साथ संघर्ष के समय श्री सुखाड़िया को चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का समय था, चन्द्रमा अष्टमेश एवं शनि द्वितीयेश पराक्रमेश था। इस प्रकार से यह एक प्रकार से "विपरीत राजयोग" जिसे मारक राजयोग भी कहा जाता है, वह समय था। महर्षि पाराशर के मतानुसार यदि मारक

दशा-अन्तर्दशाओं के समय यदि राजयोग प्रारम्भ हो तो उसे मारक दशादिक का समय बढ़ाता रहता है।

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारक भुक्तिषु
प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः (ल. पा.)

इस तरह सन् 1959 ई. तक चन्द्रमा की दशा चली और उद्यमशील श्री सुखाड़िया अपने पराक्रम एवं संगठन शक्ति के सहयोग (साहस) से अपनी स्थिति सुदृढ़ करके राजस्थान कांग्रेस के लिये अपरिहार्य नेता के रूप में प्रतिष्ठित हो गये।

संसदीय कांग्रेस दल के नेता निर्वाचन में

सन् 1959 ई. के प्रारम्भ से सन् 1966 ई. के प्रारम्भ तक श्री सुखाड़िया को सातवर्ष की मंगल की महादशा का समय परमोत्कर्ष एवं वर्चस्व का रहा, क्योंकि मंगल पञ्चम एवं व्ययस्थानों का स्वामी है। यहां व्ययेश की अपेक्षा उसका त्रिकोण स्थानाधिपत्य ही प्रबल रूप से मान्य है। क्योंकि लग्न से द्वितीय और व्यय के स्वामियों का शुभा-शुभ फल उनके द्वितीय भाव (दूसरे स्थान) के अनुसार माना जाता है। अतः मंगल भी प्रधान रूप से पञ्चमेश का ही फलदायी हुआ और त्रिकोणेश की केन्द्र में स्थिति और भी श्रेष्ठफलदायिनी होते हुए "दिग्बली भौम" ने श्री सुखाड़िया को भारतीय कांग्रेस के सत्तापक्ष एवं संगठन पक्ष के उच्चकोटि के नेताओं की प्रथम पंक्ति में ला दिया। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के स्वर्गवास के पश्चात् श्री लालबहादुर शास्त्री के संसदीय कांग्रेसदल के नेता निर्वाचन में निभायी गयी सुखाड़ियाजी की प्रमुख भूमिका इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। श्री सुखाड़िया की ऐसी ही भूमिका श्री लालबहादुर के असामयिक निधन के उपरान्त श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेता चुने जाते समय भी रही।

सन् 1966 ई. के प्रारम्भ से श्री सुखाड़िया को राहु की महादशा का समय प्रारम्भ हुआ।

इस समय में मार्च 1971 ई. से राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का समय जनवरी 1974 ई. तक रहा। राहु दशाधिपति से अन्तर्दशानाथ शनि षष्ठभाव में स्थित होने के कारण –

"अन्योऽन्य षष्ठाष्टमदायकाले।
स्थानच्युतिर्वा मरणं तु वाप्यम्"

स्वेच्छापूर्वक पद त्याग

इस प्रमाण के अनुसार विधानसभा कांग्रेसदल में पूर्ण बहुमत होने पर भी श्री सुखाड़िया को स्वेच्छापूर्वक पद त्याग करके राजस्थान से सुदूर दक्षिण भारतीय प्रदेशों (आंध्र, तमिलनाडु एवं कर्नाटक) में राज्यपाल पद को सुशोभित करना पड़ा।

पुनः सक्रिय राजनीति में

सन् 1977 ई. के आरम्भ में जब समग्र उत्तर भारत में जनक्रान्ति के रूप में प्रचण्ड बहुमत से जनता शासन का प्रारम्भ हुआ तब केतु ग्रह की अन्तर्दशा के अन्तिम भाव में श्री सुखाड़िया ने स्वेच्छापूर्वक राज्यपाल पद त्यागकर शुक्र की अन्तर्दशा में पुनः सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया।

पुनः कांग्रेस (इ) में

अगस्त 1977 ई. से अगस्त 1980 ई. तक तीन वर्ष तक राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा के समय में श्री सुखाड़िया ने राहु से शुक्र की षडष्टक स्थिति के कारण कांग्रेस (अर्स) का परित्याग कर पुनः कांग्रेस (आई) में प्रवेश कर दलीय संगठन करते हुए उदयपुर लोकसभा सीट पर प्रतिष्ठापूर्ण विजय प्राप्त कर प्रथम बार भारतीय संसद में प्रवेश किया।

सन् 1981 ई. के जुलाई से श्री सुखाड़िया को राहु की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का समय था। इनकी कुण्डली में चन्द्रमा अष्टमेश है, तथा दशानाथ राहु से अन्तर्दशेश चन्द्रमा की षडष्टक स्थिति आकस्मिक रूप से हृदयाघात द्वारा इनके निर्वाण का कारण हुआ।

इस प्रकार जैसे श्री सुखाड़िया का जीवन एक व्यापारी, समाजसुधारक, सक्रिय कांग्रेस कार्यकर्त्ता, मृदुभाषी, जनप्रिय नेता, कठिनतर परिस्थितियों में भी विरोधियों को अपनी मृदु मुस्कान मात्र से परास्त कर देने वाले, सुदृढ़ एवं कुशल प्रशासक, सर्वमान्य राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। उसका कारण उनके जन्मकालिक ग्रहों की स्थिति उनका पारस्परिक सम्बन्ध एवं अनेक प्रकार के योगायोगों से प्रमाणित होता है।

गरीबों के मसीहा

सुश्री शकुन्तला श्रीवास्तव
प्रधान, पंचायत समिति, झोटवाड़ा
511, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर

महामना, सुखाड़ियाजी मेरे लिए संरक्षक, मार्गदर्शक और एक प्रकार से मेरे आदर्श थे, वे थे नहीं, आज भी हैं कम से कम मुझ जैसी एक अकिंचन व्यक्तित्व वाली सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्त्ता के लिये। हम सब के बाबूजी श्री मोहनलाल सुखाड़िया प्रातः स्मरणीय, मेरे पास शब्द नहीं हैं, मैं उनके बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकूँ। ऐसा व्यक्तित्व जो नारी समाज के प्रति संवेदन शील हो और उसका दुःख जिनसे न देखा जाए, वे थे मेरे बाबूजी।

मेरे मानस पटल पर बहुत सी स्मृतियाँ हैं। यूँ तो मैंने समाज सेवा का काम सन् 1948 से ही आरम्भ कर दिया था किन्तु मेरे काम को गति तब मिली जब सन् 1952 में मैं बाबूजी के सम्पर्क में आयी। उस समय वे नव युवा थे और मेरी अन्तर आत्मा ने कहा कि यह मात्र एक व्यक्ति नहीं, एक मंत्री नहीं, वल्कि यह राजस्थान और देश को एक ऐसी दिशा दिखाने वाली ज्योति है जिसके पदचिन्हों पर यदि मैं चली तो निश्चय ही मैं इस शोषित समाज को कुछ दे सकूँगी। उस समय वे राजस्थान के खाद्य, आपूर्ति एवं कृषि मंत्री थे। समय के साथ-साथ सम्पर्क भी बढ़ता गया और मुझे इस बात का गौरव है कि उन्होंने और परमश्रद्धेया जिया इन्दुबालाजी ने मुझे अपने एक पारिवारिक सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया। उन दिनों मैं शहरी क्षेत्र की हरिजन बस्ती और कच्ची बस्तियों में काम किया करती थी। कुछ समय बाद में वे राजस्थान के राजस्व मंत्री बने। राजस्व मंत्री बनने पर सुखाड़ियाजी ने जो सबसे बड़ा ऐतिहासिक एवं चुनौतीपूर्ण कदम उठाया, वह था शोषित किसानों के हितों की रक्षार्थ जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन और जो बोये जमीन उसी की। इस कानून को बनाने में उनको बड़े भारी संघर्षों का सामना करना पड़ा परन्तु वे अपने निर्णय से संघर्षों एवं आन्दोलनों के बाद भी अविचलित एवं दृढ़ रहे और उन्होंने राजस्व नियमों में जिस तरह का संशोधन किया कि आज यदि किसान सही मायने में उनके प्रति यदि जरा भी श्रद्धा रखते हों तो उनको ये नहीं भूलना चाहिये कि जिनके बाप-दादाओं ने राजा-महाराजाओं, जागीरदारों-जमीदारों को ही देखा था वो कभी सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि किसी दिन वे स्वयं अपने आप में जागीरदार (भूस्वामी) हो जायेंगे। उस समय की स्थिति यह थी कि सभी रियासतों में जमीन पर पसीना किसान का बहता था। सर्दी, गर्मी, बरसात वो सहता था परन्तु अपनी मेहनत से उगाये अनाज का एक दाना भी राज अथवा जागीरदारों की मर्जी के बिना न स्वयं अपने पेट में डाल सकता था और न अपनी भूख-प्यास से बिलखते बच्चे और पत्नी को ही खिला सकता था। किन्तु सुखाड़ियाजी के इस क्रांतिकारी

कदम है न केवल दाना बल्कि पेड़ की टहनी तथा पूरी भूमि ही किसानों को ही मिल गयी जिसके कि वे आज तक स्वामी हैं और आने वाली पीढ़ियां, उनकी औलादें उसकी मालिक रहेंगी।

मैं सुखाड़ियाजी के निकट सम्पर्क में थी, मैंने उनको कभी गुस्सा होते हुए या किसी को कटु शब्द कहते हुये भी नहीं सुना बल्कि मेरे सामने ही सामने कई सिरफिरे उनको बुरा भला कह जाते थे। यही नहीं गालियां तक निकाल देते थे। परन्तु उस ठाकुर के मुख पर सिवा मुस्कुराहट के जरा भी शिकन या तनाव कभी नजर नहीं आया। बल्कि उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार करने वाले उनकी मुस्कान से स्वयं ही लज्जित होकर पानी-पानी हो जाते थे।

सन् 1954 आया उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रद्धेय श्री जयनारायण व्यास थे। किसी बात को लेकर श्रद्धेय कुम्भाराम, श्रद्धेय मथुरादास माथुर (भाजी), के व्यासजी के साथ कोई मतभेद हो गये, मतभेद होकर परम श्रद्धेय श्री माणिक्यलाल वर्मा जो राजस्थान के लौह पुरुष के रूप में याद किये जाते हैं, सुखाड़ियाजी के राजनैतिक गुरु थे। उन जैसा निर्भीक और दृढ़निश्चयी और निडर व्यक्तित्व शायद कोई विरला ही मिलेगा। संगठन हुये और व्यासजी को पदच्युत करने की योजना बनी। सुखाड़ियाजी इन सब बातों से अनभिज्ञ थे परन्तु इन तीनों महापुरुषों को सुखाड़ियाजी में ही शायद वे गुण नजर आये जो एक राजनेता, कुशल प्रशासक और कूटनीतिज्ञ हो। इसलिये उनको ही राजनीति का शिखण्डी बनाया गया। शक्ति परीक्षण हुआ और सुखाड़ियाजी हिन्दुस्तान में सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री बने। उसके बाद का इतिहास तो बहुत लम्बा-चौड़ा है, वे सबको साथ लेकर चलना चाहते थे, और साथ लेकर चले, यह बात दूसरी है कि लोगों ने सुखाड़ियाजी को छोड़ दिया परन्तु सुखाड़ियाजी ने लोगों को नहीं छोड़ा। उनके मुख्यमंत्रित्व काल की एक घटना मुझे याद है कि जोबनेर के ठाकुर नरेन्द्रसिंहजी जोबनेर में कृषि महाविद्यालय बनाना चाहते थे लेकिन किसी प्राइवेट शिक्षण संस्था को राज्याधीन कर ऊँचा दरजा देने में कई प्रकार की प्रशासनिक कठिनाइयां और नियम आड़े आ जाते हैं। बाबूजी ने ठाकुर साहब को आश्वस्त कर दिया था कि वे निश्चित रूप से उनकी समस्या का समाधान करके जोबनेर में कृषि कॉलिज बना देंगे, और बनाया भी। परन्तु ठाकुर साहब शायद सुखाड़ियाजी के व्यक्तित्व को नहीं जानते थे कि उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं हुआ करता। उन्हीं दिनों भूस्वामी आन्दोलन छिड़ा। राजस्थान के और बाहर के समस्त राजपूत जागीरदारी उन्मूलन प्रथा के खिलाफ हो गये और आंदोलन पर उतर आये। एक दिन लंच के समय बाबूजी खाना खा चुके थे, मैं भी वहीं पर थी। सूचना मिली ठाकुर जोबनेर आये हैं, बाबूजी सहज भाव से ड्राइंगरूम में आये और बोले फरमाइये ठाकुर साहब वो कहने लगे कि आपने मेरा काम अभी तक नहीं किया, मुझ पर सारे राजपूत आंदोलन में शामिल होने हेतु दबाव डाल रहे हैं, आपका क्या जवाब है, यदि आप नहीं करते हैं तो मैं भी इस आंदोलन में कूद पड़ूँगा। यह पहला अवसर था जब मैंने बाबूजी को गुस्सा करते हुआ देखा, बाबूजी एकदम लाल-पीले होकर बोले कि आप मुझे धमकी दे रहे हैं, जाइये आप के जो जी में आये कीजिये मोहनलाल सुखाड़िया ने किसी के सामने झुकना नहीं सीखा है। प्रशासन मैं अपनी बुद्धि से चला रहा हूँ आप लोगों के सहयोग से नहीं। ठाकुर साहब घिघियाने लगे, मैं चित्रलिखित-सी रह गयी क्योंकि उनका ऐसा रौद्र रूप मैंने पहली बार देखा था। बाबूजी अपनी बात कहकर अन्दर घुसे। मैं पीछे से भागकर एक गिलास पानी लायी और मैंने उनसे कहा कि बाबूजी पानी पीजिये। उन्होंने घूर कर मेरी ओर देखा। मैंने हँसते हुए कहा कि दुनियां तो कहती है, कि आपको कभी गुस्सा नहीं आता आज मैं यह क्या देख रही हूँ। वो हँसे, पानी का गिलास लिया, पिया और मुस्कुरा कर बोले, अरे हाँ रे आज मुझे क्या हो गया, जो मैं गुस्सा कर बैठा – बस इसके बाद वही मोहक मुस्कान वाले सुखाड़ियाजी थे। यह पहला अवसर था कि जब मैंने उनको इस प्रकार क्रोधित होते हुए देखा। यों तो बातें बहुत सी हैं, उनकी विशेषताओं का वर्णन करना असंभव सा ही है। परन्तु वे इतने सहृदय, दयालु और स्नेह से भरपूर थे कि जब वे कहीं दौरे पर जाते अक्सर मैं भी उनके साथ जाती थी। जब खाना खाने का सवाल सामने आता तो सबसे पहले कहते मेरे स्टॉफ़ ने और गार्ड ने खाना खाया है कि नहीं, पहले उनको खिलाओ और स्वयं जहां वे लोग खा रहे होते थे जाकर देखते और उन लोगों से पूछते कि आप लोगों ने ठीक तरह से खाना खाया कि नहीं मुझे चलने की जल्दी नहीं है, आप लोग आराम से खाना खाइये और जब वो लोग खा चुकते तब स्वयं बाबूजी और हम लोग खाना खाते। इस प्रकार के गुण शायद बहुत ही कम राजनेताओं में देखने को मिलते हैं।

पंचायत समिति, झोटवाड़ा तो उनके ऋण को कभी चुका नहीं सकेगी। आज पंचायत समिति, झोटवाड़ा का जो सर्वांगीण विकास हुआ है वह बाबूजी की ही देन है। क्योंकि जिस समय मैं प्रधान बनी थी मात्र सिरसी गांव में बिजली थी लेकिन जब मैंने विधायक बनकर 1972 में प्रधान पद से त्यागपत्र दिया तो पूरी पंचायत समिति का विद्युतिकरण हो चुका था, किसानों के लिए इससे बड़ा और कोई वरदान क्या हो सकता है जो बाबूजी ने दिया। इसी प्रकार जहाँ लोग स्कूलों को तरसते थे छोटे से एरिया में प्राइमरी स्कूल तो थे ही, मिडिल स्कूल और सेकण्डरी स्कूलों का कहीं भी अभाव नहीं। कितने काम गिनाऊँ जो बाबूजी ने इस पंचायत समिति के लिए किये। ○

राजनीतिक सहिष्णुता के धनी

□
जुझार सिंह
सांसद
ओल्ड खजाना हाउस, सिविल लाइन्स, कोटा

मुझे माननीय सुखाड़ियाजी के मंत्रिमंडल में रहने का तो अवसर नहीं मिला परन्तु मैं लम्बे अर्से तक उनके सम्पर्क में आता रहा था और उनके सम्पूर्ण मुख्यमंत्री काल में, मेरी राजनीतिक भूमिका उनके विरोध में रही थी। सुखाड़ियाजी के मुख्यमंत्री पद से अलग होकर, राजस्थान की राजनीति से हट जाने के बाद, मैं उनके नजदीक आया और उनके अन्तिम समय तक, उनका विश्वास प्राप्त करता चलता रहा। मुझे उनके मन में वर्षों के राजनीतिक विरोध का लेशमात्र भी आभास नहीं हुआ जो प्रजातंत्र में सफल नेतृत्व की बुनियाद होती है।

उपरोक्त संदर्भ में, मैं सुखाड़ियाजी की सहिष्णुता व राजनीतिक उदारता पर अपने एक दो अनुभव लिखना चाहूँगा जिनकी छाप वे मेरे मन पर छोड़ गये हैं :

(1) 1967 का चुनाव, राजस्थान के चुनाव इतिहास में, और शायद सुखाड़ियाजी के जीवनकाल में भी सबसे अधिक संघर्षमय चुनाव था। कांग्रेस के भीतर के विरोध व प्रतिद्वन्द्वता के फलस्वरूप, महाराजा हरिश्चन्द्र व चौधरी कुम्भाराम अपने साथियों के साथ कांग्रेस छोड़कर विरोध में चुनाव लड़े थे व कांग्रेस के विरोध में बराबर की शक्ति के रूप में उभर कर, सुखाड़ियाजी के नेतृत्व के लिए चुनौती बन गये थे। राजस्थान का राजनीतिक वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध व तनावपूर्ण था जिसमें महाराजा हरिश्चन्द्र की अकस्मात् मृत्यु के कारण तनाव और भी बढ़ गया था जो विधान सभा के 1967-72 काल में, सुखाड़ियाजी के मुख्यमंत्री पद पर बने रहने तक सामान्य नहीं हो पाया था। ऐसे क्षुब्ध व तनावपूर्ण वातावरण में, मैंने विरोधी के रूप में, विधान सभा में प्रश्न रख कर माँग की थी कि महाराजा हरिश्चन्द्र के आखिरी चुनाव क्षेत्र "खानपुर" में बंधे, हीचर बाँध का नाम, उनकी स्मृति में "हरिश्चन्द्र-सागर-बाँध" कर दिया जावे; क्योंकि इसी प्रकार की कार्यवाही चित्तौड़ में, भवानीशंकरजी नन्दवाणा की स्मृति में की जा चुकी है। उस समय के सिंचाई मंत्री द्वारा मेरा प्रस्ताव अस्वीकार कर देने पर मैं सुखाड़ियाजी से मिला था और उनका मेरे प्रति व्यक्तिगत विरोध होते हुए भी, उन्होंने, उस तनावपूर्ण स्थिति में, बिना अड़चन, हिचकिचाहट व झिझक के, बड़ी नम्रता व सहृदयता के साथ मेरा सुझाव मान लिया था। सुखाड़ियाजी के इस सुखद निर्णय के फलस्वरूप अब हीचर बाँध, महाराजा साहब की स्मृति में "हरिश्चन्द्र सागर बाँध" के नाम से जाना जाता है। सुखाड़ियाजी द्वारा, अपने सबसे शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी के प्रति बताया गया यह सम्मान उनकी उदार हृदयता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

(2) 1967-72 विधान सभा काल में ही, मेरे चुनाव क्षेत्र रामगंजमंडी में साँगोद से राजगढ़ तक प्रस्तावित सड़क का काम इसलिये बन्द करवा दिया गया था कि मैं काँग्रेस के विरोध में था और यह सड़क मेरे गांव से होकर गुजरती थी। कोटा क्षेत्र के काँग्रेसी कार्यकर्त्ताओं के दबाव में आकर, उस समय के सार्वजनिक निर्माण मंत्री ने यह फैसला लिया था। इस प्रश्न पर भी मैं, अपने पक्ष की सच्चाई के आधार पर, सुखाड़ियाजी से मिला और मुझे खुशी है कि उन्होंने इस मौके पर भी, राजनीतिक विरोध को, क्षेत्र के विकास में बाधा नहीं बनने दिया और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के विरोध के बावजूद यह सड़क इसी 67-72 के संघर्ष-मय समय में बन कर पूरी हुई।

सुखाड़ियाजी के लम्बे शासन काल में, मैं अधिकांशतः उनके विरोध में ही चलता रहा था परन्तु मैंने कभी ऐसा महसूस नहीं किया कि सही काम लेकर जाने पर, वे मेरे काम में जान-बूझकर आड़ लगायेंगे। उपरोक्त दो उदाहरणों के अतिरिक्त और भी अनेक अवसरों पर, मुझे सुखाड़ियाजी के व्यवहार में सदैव सहिष्णुता व राजनीतिक व व्यक्तिगत उदारता का आभास हुआ है। आज हमारी उम्र के, वर्षों तक साथ बैठने वाले साथी ही राज में बैठे हैं परन्तु हमें उनसे मिलने पर इसलिये अटपटा महसूस होने लगा है कि वे हमारे धरातल पर आकर हमारी समस्या समझने को तैयार नहीं हैं और हर बात को प्रशासनिक रवैये से देखने लगे हैं जिस पर न तो उनकी पकड़ है और न ही अधिकार। राजस्थान का राजनीतिक, प्रशासनिक व संगठनात्मक ढांचा चरमरा गया है और सब ओर असंतोष व अविश्वास का वातावरण बनता जा रहा है। सुखाड़ियाजी की पुण्य जन्म-तिथि पर हम उनको याद करके, उनके सद्गुणों को ग्रहण कर सकें।

प्रेरक आदर्श : सुखाड़ियाजी

मुन्नालाल गोयल
आई.ए.एस.
डी-40 ए. गणेशमार्ग, बापूनगर, जयपुर

यह बात स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति के गुणावगुणों को प्रकाश में लाने से प्रबुद्धजन अपने आत्मिक एवं बौद्धिक चिंतन से स्वयं के जीवन और विचार शैली में यथानुकूल परिवर्तन, परिवर्द्धन द्वारा कमियों की सम्पूर्ति करना है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया के कार्यकाल में हुए राजस्थान के विकास कार्यों के संदर्भ में मुझे भी ग्रंथ प्रकाशन समिति की ओर से प्रातः स्मरणीय सुखाड़ियाजी के कृतित्व और व्यक्तित्व के संदर्भ में दो शब्द लिखने का सौभाग्य मिला।

श्रद्धेय सुखाड़ियाजी एवं उनके परिवार का सदस्य होने व मेरे आत्मीय सम्बन्धों के कारण मैं श्री सुखाड़ियाजी एवं उनके परिवार तथा कार्यों के सम्बन्ध में निकटतम रूप से सम्बद्ध एवं जानकारी रखते हुए भी समाज के समक्ष अपने विचारों को अभिव्यक्त करना महज आत्मीयता के सम्बन्धों के कारण पुष्टि करना मात्र ही कहा जायेगा।

वस्तुतः समाज, राज्य एवं राष्ट्र के अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग श्री सुखाड़ियाजी के कार्य एवं व्यवहार के विषय में जो विचार रखते हैं, मैं भी उनका मात्र पृष्ट-पोषक ही माना जाऊँगा।

मेरी तो यही मान्यता है कि वे एक अत्यन्त कुशल समाज के रचियता एवं दिशा निर्देशक थे, जिनकी प्रेरणा और आशीर्वाद ही मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण संवरण है, मैं सदैव उनके चरणों में आत्म-श्रद्धा के साथ शब्द-सुमन अर्पित करता हूँ।

एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व

टीकाराम पालीवाल
भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान
शिवाजी मार्ग रामबाग रोड, जयपुर

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व के दशक में जब राजस्थान के विभिन्न राज्यों में भी प्रजामण्डल, प्रजा परिषद् अथवा लोक परिषद् आदि संस्थाओं के माध्यम से उत्तरदायी शासन प्राप्ति के लिये संगठित प्रयास चल रहे थे और हम लोग आपस में अपने-अपने संगठनों के अधिवेशनों अथवा सम्मेलनों में दूसरे राज्यों के साथियों को भी आमंत्रित कर बुलाया करते थे, उन्हीं दिनों मेरा श्री मोहनलाल सुखाड़िया से परिचय हुआ और प्रथम परिचय में ही मैं उनके व्यक्तित्व से काफी प्रभावित भी हुआ तथा मुझे वे एक होनहार युवक लगे। देशी राज्य लोक परिषद् के उदयपुर में हुए अधिवेशन में मैंने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से सक्रिय देखा। सम्मेलन से सम्बन्धित सभी गतिविधियों – आमन्त्रित अतिथियों एवं प्रतिनिधियों को यथास्थान ठहराने एवं उनकी भोजन आदि की व्यवस्था से लेकर सम्मेलन के विचारार्थ महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों के प्रारूप तैयार करने आदि सभी कार्यों में श्री सुखाड़िया का हाथ दिखाई देता था। साथ ही श्री सुखाड़िया की मधुर मुस्कान उनकी सहजशालीनता एवं छोटे-बड़े सभी कार्य कर लेने की तत्परता, उनके सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों को बरबस उनके प्रति आकर्षित करती थी। यह स्पष्ट था कि उस समय मेवाड़ के एक मात्र नेता श्री माणिक्यलालजी वर्मा के, जिन्होंने उन्हें राजनीति में आगे बढ़ाया था, श्री सुखाड़िया मुख्य साथी एवं सहायक थे। कुछ ही समय बाद जब सन् 1948 में श्रद्धेय वर्माजी के प्रधानमंत्रित्व में छोटे राजस्थान की लोकप्रिय सरकार बनी तो श्री सुखाड़िया सरकार में वर्माजी के प्रमुख साथियों में थे तथा उन्होंने बड़ी योग्यता एवं दक्षता से शासन संचालन में वर्माजी को सहयोग दिया।

सन् 1948 के अन्तिम दिनों में जब राज्य संगठनों का अ० भा० कांग्रेस में विलय हुआ और सन् 1949 के अप्रैल में सभी राज्यों का राजस्थान में विलय हो गया तो हम लोगों को पहले प्रान्तीय संगठन तथा फिर सरकार में भी साथ-साथ कार्य करने का तथा एक-दूसरे को अधिक निकटता से जानने का अवसर मिला। सन् 1952 के प्रथम लोकतांत्रिक चुनावों के बाद राजस्थान में जो सरकार बनी उसमें श्री सुखाड़िया मेरे सहयोगी रहे तथा कांग्रेस विधायक दल के उपनेता एवं राजस्वमंत्री के रूप में जो अमूल्य सहयोग उन्होंने मुझे शासन संचालन में दिया वह मेरे लिये बराबर एक सुखद स्मृति रही है। मैं शुरू से ही जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन का पक्षधर रहा था तथा राजस्व मंत्री के रूप में श्री सुखाड़िया की तत्परता, लगन एवं सूझ-बूझ से वह कार्य कम से कम समय में सम्पादन हो सका था।

यह निःसंकोच रूप से कहा जा सकता है कि श्री सुखाड़िया एक योग्य प्रशासक, चतुर एवं व्यावहारिक राजनीतिज्ञ तथा सहृदय मानव थे।

राजनीति में जोड़तोड़ एवं मतभेद आदि सदैव रहे हैं और रहेंगे, किन्तु श्री सुखाड़िया ने राजनीतिक मतभेदों को कभी पारस्परिक सद्भाव एवं व्यक्तिगत सद्व्यवहार में बाधक नहीं होने दिया। वे मित्रों के मित्र तो थे ही किन्तु राजनीतिक विरोधियों के प्रति भी उनका व्यवहार सदैव आदरपूर्ण, उदार एवं शालीनता का रहा।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में श्री सुखाड़िया ने शासन को स्थायीत्व तो दिया ही – साथ ही इस राज्य के औद्योगीकरण तथा जो भी विकास कार्य हुए उनके लिये बहुत बड़ा श्रेय भी स्वभावतः श्री सुखाड़िया को ही जाता है। निःसंदेह श्री सुखाड़िया असाधारण प्रतिभा के धनी थे तथा उनकी प्रतिभा का लाभ राजस्थान तक ही सीमित न रहकर राज्यपाल के रूप में दक्षिण के तीन राज्यों – आंध्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु को भी मिला। यह दैव की विडम्बना ही कही जायगी कि इस प्रतिभाशाली व्यक्ति का निधन अपेक्षाकृत कम आयु में ही हो गया जबकि उनसे अभी और बहुत आशाएँ की जा सकती थीं। उनके इष्ट मित्र, स्वजन, परिजन एवं सहयोगी तो उनकी स्मृति को संजोये रहेंगे ही किन्तु राजस्थान की जनता भी उन्हें बहुत काल तक याद करती रहेगी।

सुखाड़ियाजी का जनसम्पर्क और फ़ोटोग्राफ़ी के प्रति जागरूकता

□

बंशीलाल
कैमरामैन
सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय
राजस्थान, जयपुर

किसी जन-प्रतिनिधि की लोकप्रियता का आकलन इस बात से किया जा सकता है कि आम लोगों में उसकी पैठ कैसी है। इसी सन्दर्भ में मोहनलाल सुखाड़िया की चर्चा करें तो राजस्थान के तीन करोड़ लोगों के बीच उनकी अपनी पहचान थी, लोग-बाग खुद ब खुद आगे आकर सुखाड़ियाजी को हृदय से पूजते थे, यह इकतरफ़ा प्रक्रिया नहीं थी। राजस्थान के नवनिर्माण के आधार स्तम्भ सुखाड़ियाजी ने लोगों के मन में स्थान बनाया, उनका दिल जीता।

अक्सर गाँवों की चौपाल पर बैठे मुखिया और गाँववासी बतियाया करते थे कि सुखाड़ियाजी से उनका परिचय घनिष्ट है। एक होड़-सी लगती थी लोगों में कि किसका परिचय घना है। इसका निर्णय तो उस वक्त हो पाता था, जब सुखाड़िया उनके गाँव में आते, गाँव में पहुँचने बाद वे लोगों को नाम से पुकारते, उनके बताये कार्यों का जिक्र करते और खेत खलिहान से लेकर बच्चों की हारी-बीमारी तक का जिक्र करते तो लोगों में यह भेद मुश्किल हो जाता कि किसके प्रति उनका आकर्षण अधिक है। एक नहीं गाँवों के दस-बीस, पच्चीस-पचास लोगों को तो वे आत्मीयता के साथ बतिया कर रिझा लेते।

विरोधी के प्रति भी वे सदैव नम्र रहते, उसका आदर करते थे। विरोध और काले झंडों से वे कभी कुपित नहीं होते। उनकी इस बात के हर एक कायल हो जाते। विधानसभा हो या जनसभा, विरोध को कभी उन्होंने नहीं दबाया, विरोधियों के गिले शिकवे दूर करने का प्रयास किया।

अंतिम दिनों की बात थी, बीकानेर में पंचायतराज सम्मेलन के दौरान उनको हृदयाघात लगा। बीमार हालात में प्रिंस विजयसिंह मेमोरियल अस्पताल में वे इलाज करा रहे थे। रोजाना सैकड़ों नहीं हजारों की संख्या में शहरी ही नहीं ग्रामीण स्त्री-पुरुष बच्चे अपने सर्वप्रिय नेता के स्वास्थ्य लाभ की कामना करने आते थे, लेकिन होनी को कौन टाल सकता था? मौत की खबर सुन कर पूरा बीकानेर शहर उमड़ पड़ा और वह बीकानेर जहाँ सुखाड़ियाजी का काले झंडों से स्वागत होता था।

एक बार की बात है, एक जिला मुख्यालय पर राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता के कारण स्थिति तनावपूर्ण हो गई थी। सत्तादल के मुकाबले विरोधी हावी होने लगे थे, हालात की नज़ाकत को देखते हुए उन्होंने राज्य के एक वरिष्ठ मंत्री को वहाँ भेजा लेकिन कोई सफ़लता नहीं मिली। आखिरकार वे स्वयं उस स्थान पर गये और सारी स्थिति का अध्ययन किया। देखते-देखते चुनाव में विरोधी दल के प्रति जनसमर्थन व्यापक होता गया और सत्तादल के उम्मीदवार को पराजय का सामना करना पड़ा। इस बात को लेकर सत्तापक्ष के लोगों ने भी उनके विरुद्ध अपप्रचार किया लेकिन वे संयत रहे। दो महीने बाद ही एक ऐसा चमत्कार हुआ कि विजयी लोग बिना किसी शर्त के सुखाड़ियाजी की शरण में आ गये और राजनीतिक रूप से सत्तादल को सुदृढ़ बनाने का सिलसिला शुरू हुआ।

सुखाड़ियाजी ने अपने जीवनकाल में लोगों का विश्वास जीता है, उनके मन में आस्था जगाई है, लोगों को जाग्रत किया है। यह सब उनके कुशल व्यक्तित्व, प्रभावी जनसम्पर्क का परिणाम है।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसे अहम ओहदों को सफलतापूर्वक सम्भालने वाले मोहनलाल सुखाड़िया सदैव हर क्षेत्र में सतर्क रहते थे। प्रशासन का मामला हो या राजनीतिक बैठक हो या सभा समारोह, वे अखबार नवीश और फोटोग्राफर्स की आवश्यकताओं के प्रति सचेष्ट रहते थे। उनका ध्यान सभी ओर रहता था ताकि लोग-बाग अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य कर सकें।

कितना भी तनाव हो लेकिन वे कभी भी चेहरे पर शिकन नहीं आने देते थे। कई बार एन्गल या दूसरे कारणों से फोटोग्राफर सही चित्र न ले सके तो वे उसे उसकी आवश्यकता के हिसाब से मौका देने में कभी नहीं चूकते थे।

जनसम्पर्क और फ़ोटोग्राफ़ी के प्रति उनकी जागरूकता ने उन्हें सर्वप्रिय बनाया, लोगों में उनके प्रति अपनत्व को जन्म दिया। ○

अभूतपूर्व मुख्यमंत्रित्व

□

नारायणसिंह मसूदा
मसूदा हाउस, अजमेर

श्री मोहनलाल सुखाड़िया के साथ मेरा राजनीतिक सम्पर्क अजमेर के राजस्थान में विलीन होने से ही प्रारम्भ होता है। अजमेर के दासाहब अर्थात् हरिभाऊजी उपाध्याय का उनसे विधानसभा काँग्रेस पार्टी की अध्यक्षता के लिए संघर्ष का माहौल जब बना तब मैं दासाहब के साथियों में था। वह संघर्ष नहीं हुआ पर सुखाड़ियाजी में मैंने संकट में "धीर-वीर-गंभीरत्व" का प्रथम परिचय प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् मैं उन्हीं का साथी रहा और उनके मंत्रिमण्डल का कई वर्षों तक सदस्य रहा।

समाज की बेजोड़ कड़ियों को हिम्मत से जोड़नेवाला व्यक्तित्व उनका इतर व्यक्तित्व से अलग होते हुए भी व्यक्तित्व की विभिन्न शलाकाओं में सबसे अधिक देदीप्यमान था। वही चीज उनके अपने व्यक्तित्व को मौलिकता प्रदान करती थी और उसकी छद्म धाराएँ उनके सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में व्याप्त थीं। कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना उन्होंने अदम्य धैर्य एवं वीरत्व के साथ किया। हर वस्तु के विचार में उन्होंने पूर्ण गम्भीरता बरती। कहीं भी क्रोध एवं उतावल के वशीभूत होकर उन्होंने अंतिम निर्णय निकालने में संतुलन नहीं खोया।

उनकी प्रशासन कुशलता के विषय में तो कहीं दो मत नहीं। प्रशासन के हर पहलू में उनकी छाप थी। हर चीज की बड़ी पकड़ थी जो आई०ए०एस० के घुटे-घुटाए अफसरों और अपने आपको बड़े कानूनदां माननेवालों को कानूनी पेचीदगियों की नकेल बन जाती थी। इसी पकड़ के कारण वे प्रशासकीय एवं कानूनी गुत्थियों को अधिक पढ़े-लिखे न होते हुए भी बड़ी सूझ और दूरदर्शिता से सुलझा लेते थे।

विधानसभा के कार्यकलाप में वे कभी अपना संतुलन नहीं खोते। कटु से कटु परिस्थिति को अपने सस्मित मुख के साथ हँसते-हँसते टाल जाते और आक्षेपक को जहाँ का तहाँ रख देते। उनके मंत्रिमण्डलीय साथी जो उनसे कहीं अधिक शिक्षित और कुशल अपने आपको मानते वे भी जब विधानसभा के बवंडरों में उलझ जाते सुखाड़ियाजी ही अपनी चिरस्थाई मुस्कान एवं दबी पान की गिलोरी के साथ उन अक्ल से बोझिल साथियों का त्राण कर देते।

राजनीति की बात करते मैं उनकी एक बड़ी कूटनीतिज्ञ सूझ के उद्गार को नहीं भूल सकता जब उन्होंने एक दिन मुझे कहा, "यदि कोई दुश्मन भी मुझे आकर कहे कि मैं आपका दोस्त हूँ तो मैं उसे क्यों कहूँगा कि तुम नहीं हो। मैं तो उसकी कथनी ससम्मान स्वीकार करूँगा पर उससे पूरा सतर्क हमेशा रहूँगा।" यही कारण था कि अपने दुस्साहसी राजनीतिक शत्रुओं को मात देकर भी अपने साथीपने के दायरे में उन्हें सदैव खपाते रहे। राजनीति उनके विपक्षी के लिए उनके आवेश या उत्तेजना का कारण नहीं बल्कि शतरंज के खेल की सतर्कता ही बनी रही। इसीलिए सत्तरह वर्ष तक राजस्थान का अभूतपूर्व मुख्यमंत्रित्व कर लिया।

अजातशत्रु व्यक्तित्व

□

आचार्य उमेश शास्त्री
निदेशक,
व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर

व्यक्तित्व स्वयं सम्मान अर्जित करता हुआ स्व की प्रतिष्ठा स्थापित कर पाता है और इतिहास में अपना स्थान बना लेता है। ऐसे हस्ताक्षर कुछेक ही होते हैं जो काल-कवलित संसार में युग-निष्ठा के पात्र होते हैं, उनमें से एक नाम श्री सुखाड़िया का है। राजनीति-निष्णात, उदार-हृदय, व्यवहारविद्, पद-प्रतिष्ठापालक एवं जनप्रिय नेता के रूप में भारतीय जन-मानस को आन्दोलित कर श्रद्धा प्राप्त कर सके। राजस्थान के इतिहास में एक लम्बा अध्याय श्री सुखाड़िया का रहा, जो विकास की कहानी के रूप में जाना जाता है। सत्रह वर्षीय इस गाथा में सीमावर्ती क्षेत्र से राजधानी तक के लोगों के मन को सम्मोहित करने वाला यह व्यक्तित्व अजातशत्रु के रूप में ख्यात रहा। इनके शासन-काल में दल के नेता भाई-बन्धु की तरह आचरण करते तथा विरोधी-दल के सदस्य मित्रवत् व्यवहार करते थे, ऐसा समन्वय राजनीतिक घटना-चक्र का अनुपम उदाहरण ही रहेगा। राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में अधिष्ठित यह नाम मरुधरा की लहरों में सदा अमर रहेगा। ये जहाँ भी रहे, वहाँ ही अपने अनुपम व्यक्तित्व एवं उदार-व्यवहार से अपनापन सिद्ध करने में सफल हुए, यही कारण रहा कि राजस्थान का यह हस्ताक्षर भारतीय जन-चेतना का आदर्शस्पद बना।

संस्कृत-प्रेम

राजस्थान में संस्कृत का विकास सुखाड़िया-शासन के इतिहास का महत्त्वपूर्ण पृष्ठ है। स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय संस्कृति की आधारशिला संस्कृत के प्रति शासन-तंत्र का विशेष ध्यान नहीं था, किन्तु सुखाड़ियाजी ने इसकी यथार्थता और सोद्देश्यप्रियता को दृष्टिगत रखते हुए संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए महती भूमिका प्रस्तुत की, जिसका परिणाम है कि आज संस्कृत-शिक्षा कल्पवृक्ष की तरह पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होती हुई अपनी अमृतमयी छाया में ज्ञान-पिपासुओं को तृप्त करती हुई दिशा बोध दे रही है। "वाराणसी वा जयपत्तनम्" उक्ति को चरितार्थ करने की दृष्टि से सम्पूर्ण राजस्थान को 'छोटी काशी' बनाने का संकल्प लिया और संस्कृत-शिक्षा का व्यापक विस्तार किया। इनके शासनकाल में राजस्थान के कोने-कोने में संस्कृत का प्रचार-प्रसार हुआ। संस्कृत-संगठनों को सम्बल मिला, संस्कृत का रचनात्मक इतिहास बनने लगा। संस्कृत शिक्षा को संरक्षण देने वाला यह व्यक्तित्व संस्कृतमय बन गया था और संस्कृति के उन्नयन में संस्कृत की अपेक्षा स्वीकारने लगा था। 'राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन' का सभापतित्व स्वीकारना एक असाधारण घटना है, एक महान व्यक्तित्व, जिसे व्यस्तता एवं भार से क्षण भर की मुक्ति नहीं, वह संगठन के कार्य के लिए अपने-आपको समर्पित कर सके, यह आश्चर्य ही कहा जायेगा, वस्तुतः संस्कृत के उन्नयन के लिए श्रद्धा और समर्पण का समन्वित भाव की सत्ता ही उन्हें इस ओर प्रेरित कर सकी। संस्कृत-शिक्षा के निदेशालय की स्थापना सम्पूर्ण भारतवर्ष में महत्वपूर्ण कदम कहा जाता है, यह उनकी संस्कृत-भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। संस्कृत के विकासात्मक इतिहास के वर्तमान अध्याय में श्री सुखाड़िया का नाम अभिनन्दनीय है।

विद्वानों के उपासक

राजनीति और वैदुष्य का समन्वय सहज नहीं है। श्री सुखाड़िया विद्वानों के प्रति दृष्टिकोण में उदात्त भावना जीते थे। किसी भी भाषा का विद्वान हो, उसके वैदुष्य के प्रति श्रद्धा-भाव व्यक्त करते थे, अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर विद्वानों से भेंट करने में उन्हें आनन्द की अनुभूति होती थी। जब कभी साहित्य एवं संस्कृति का चिन्तन एवं चर्चा-परिचर्चा होती तो यह व्यक्तित्व तल्लीन हो जाता और जब कभी शासन-तंत्र द्वारा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के सन्दर्भ में असहमति अथवा अर्थबाधा की टीका-टिप्पणी होती तो उनका स्मितहास ही बाधाओं को दूर कर देता था। जब कभी संस्कृत विद्वानों से भेंट होती तो वे गद्गद् हो उठते थे और उनके मन में 'ऋषि-संस्कृति' का स्वप्न अंगड़ाइयाँ लेने लगता था।

ऐसे ऋषिमानव की स्मृतियाँ इतिहास के मानस पर ऋचाओं की तरह सदा अंकित रहेंगी। ○

सहृदय सुखाड़ियाजी

□
घनश्याम तिवाड़ी
घनश्याम कुटीर,
एस० एम० एस० हॉस्पीटल के सामने,
आदिनाथ मार्ग, जयपुर

सन् 1940-41 में शिक्षक के पद पर स्थानान्तरित होकर मैं मेवाड़ रियासत की राजधानी उदयपुर पहुँचा। तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री लक्ष्मीलाल जोशी से वहाँ भेंट की। उन्होंने मेरी आवास सम्बन्धी समस्या हल करने हेतु माननीय श्री सुखाड़िया को एक पत्र लिखा। सुखाड़िया साहब की उस समय विद्युत उपकरणों की एक दूकान थी जहाँ मैंने उनसे भेंट की वह सूरजपोल अस्थल के पास एक तिमंजिले मकान में किराये से रहते थे। इसकी निचली दो मंजिलें खाली थीं। जोशी साहब का पत्र पढ़ते ही उन्होंने मुझे उनकी धर्मपत्नी इन्दुजी के पास भेज दिया। श्रीमती बाईजी ने इसे सुखाड़िया साहब की स्वीकृति मान कर नीचे की मंजिल में मुझें रहने की स्वीकृति दे दी। उनकी अनुकम्पा से मैं वहाँ रहा।

1942 में राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का जेल भरो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। उस दिन शाम को "देहली दरवाजे" कांग्रेस द्वारा विशाल आम सभा का आयोजन किया गया। साहब ने पुरजोर शब्दों में स्वतन्त्रता के संकल्प को दोहराया। रात्रि 10 बजे सभा समाप्ति के पश्चात् मैं व साहब घर पहुँचे। उस समय हम सब ही आशंकित थे किन्तु सुखाड़िया साहब ने बड़े ही सहज भाव से संकेत दिया कि शायद आज रात उन्हें गिरफ्तार कर लिया जावेगा। उनकी ऐसी गतिविधियों का तो मुझे भान ही नहीं था। अर्द्धरात्रि को पुलिस की आवाज सुन मैं आशंकित-सा उठा। एस. पी. सुन्दरलालजी व उनके अन्य पुलिस सहयोगी उन्हें जोर-जोर से पुकार रहे थे। मेरे दरवाजा खोलते ही पुलिस धड़ाधड़ अन्दर दाखिल हुई उनके हाथ में मेवाड़ स्टेट के तत्कालीन प्रधानमंत्री टी० विजयराघवाचार्य द्वारा उनकी गिरफ्तारी के लिये जारी किये गये वारन्ट की एक प्रति थी। सुखाड़िया साहब ने उन्हें शान्त भाव से देखा और कहा —मुझे गिरफ्तार कीजिये। साथ ही आवश्यक सामान आदि बाँधने के निर्देश दिये। सब तैयारी हो चुकी थी – वह विदा समय श्रीमती इन्दुबालाजी के पास गये उन्होंने मेवाड़ी वीरांगना की तरह सुखाड़िया साहब के मस्तक पर मांगलिक तिलक लगाया एवं मुँह मीठा कराते हुए उन्हें विदा किया। सूरजपोल अस्थल के बाहर खड़ी पुलिस गाड़ी तक मैं एवं बाईजी उन्हें पहुँचाने गये। हम लोग उदास थे किन्तु उनके कदमों में दृढ़ता थी, संकल्प था, ध्येय निष्ठा थी, तभी स्वतन्त्रता के दीवाने मंजिल पाने में सफल सिद्ध हुए।

ऐसे राजनीतिक बंदियों को जब रिहा किया गया तो सुखाड़िया साहब भी छूट कर आए। मैं उनके साथ उसी मकान में निरन्तर रह रहा था। वह मकान मालिक को पूरा किराया देते रहे। मेरे निरन्तर आग्रह के उपरान्त भी उन्होंने मुझसे किराया नहीं लिया। बीच में उस मकान को छोड़कर मैंने मेरे एक भाई के साथ एक अलग मकान में रहने का भी प्रयास किया किन्तु साहब ने एक विश्वसनीय नौकर सोहन को भेज कर मुझे पुनः बुलवा लिया। उनकी सहृदयता के सम्मुख मुझे ज़िद छोड़नी पड़ी। इस परिवार के सौहार्द का भागीदार मैं तब तक बना रहा जब तक कि उनकी पत्नी श्रीमती इन्दुबालाजी (जो कि उस समय धान-मण्डी गर्ल्स विद्यालय की प्रधानाध्यापिका थी) ने देहली दरवाजे पर विद्यालय भवन में ही रहना शुरू नहीं कर दिया।

सन् 1947 में महाराणा साहब ने उनको जनता प्रतिनिधि के रूप में मंत्री पद पर नियुक्त किया तब दिल्ली दरवाजे के बाहर ही उन्हें बंगला मिला जहाँ वह रहने लगे। श्रीमती सुखाड़िया ने राज्य सेवा से लम्बा अवकाश ले लिया दिनों-दिन उनका भाग्योदय होता रहा। सुखाड़िया साहब राजस्थान के नव-निर्माण में संलग्न थे किन्तु व्यस्तता के इन क्षणों में भी जब किसी अवसर पर दर्शन होते उसी स्नेह भाव से मुझसे कुशल समाचार अवश्य पूछ लेते। ⊙

स्नेह का सागर

कन्हैयालाल जैन
सचिव, राजस्थान चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, जयपुर

सन् 1954 मेरे जीवन की वह संस्मरणीय तिथि है, जब मैं उतनी ही सीमित राजनीति से परिचित था, जो छात्र-संघ के दायरे में परिव्याप्त रहा करती है, जयपुर स्थित महाराजा कॉलेज के छात्र-संघ का तब मैं ज्वाइन्ट सेक्रेटरी था, मुखाड़ियाजी सन् 1954 के अंतिम महीनों में मुख्यमंत्री बने थे, लेकिन उससे पहले वे राजस्थान के शिक्षामंत्री थे। इस नाते हम अपने राजनीतिक अस्त्रों को प्रतिक्षण तेज, तीक्ष्ण धार से सुसज्जित रखा करते थे कि उससे संघर्ष का मौका आये तो खुलकर हम अपने हाथों का जौहर दिखायें, खून में तब ऐसी ही उबाला वाली गरमी थी। लेकिन यह मौका हमें सन् 1956 में मिला। इस वर्ष राजस्थान में छात्रों की फीसों में वृद्धि की गयी थी और हमें इस चुनौती का सामना डटकर करना था। सारे राज्य में छात्र आक्रोश फैल चुका था। जयपुर में हमने एक मजबूत कदम उठाया, बड़ा जुलूस निकाला और हमारी शिकायतों को लेकर हम मुख्यमंत्री सुखाड़ियाजी से मिलने के लिए एक बड़ी भीड़ बनाकर सिविल लाइन्स की ओर बढ़ने लगे। जब हम रेलवे क्रॉसिंग के पास पहुंचे तो पुलिस ने हमारा रास्ता रोक लिया। पुलिस और छात्रों का वैसा ही वैमनस्य समझिये जैसा एक सांप और नेवले का होता है। गांधीजी के आन्दोलनों के समय छात्रों ने पुलिस से संघर्ष करने के लिए एक अपूर्व शक्ति का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया था, लेकिन राजस्थान में यह मौका हम सबको जरा देर से मिला था। पुलिस दल को देखते ही हम सभी उत्तेजित हो उठे, मानो किसी शॉर्ट सर्किट के कारण आग दहक उठी

हो। पुलिस ने मुझे हिरासत में ले लिया। अब छात्रों के आक्रोश का कोई ठिकाना नहीं था, क्योंकि हमारे साथ विश्वासघात किया गया था। हम तो मुख्यमंत्री के उस निमंत्रण के आधार पर मिलने जा रहे थे, जो हमें प्राप्त हुआ था। लेकिन मेरी हिरासत ने छात्रों की भीड़ में घृताहुति का काम किया। छात्रों का क्रोध काबू से बाहर हो गया। पुलिस के अधिकारी यह जाँच करने के लिये कि क्या सचमुच सुखाड़ियाजी ने हमें भेंट करने का निमंत्रण दिया है, हमें सुखाड़ियाजी के समक्ष ले गये। मेरे साथ छात्रों का पूरा दल मुख्यमंत्री की कोठी तक आक्रामक नारे लगाता हुआ पहुँचा।

लेकिन सुखाड़ियाजी के सामने पहुँचते ही हम स्वतः निरस्त्र होने लगे। हम क्रोध से उफन रहे थे। सुखाड़ियाजी निरंतर मुस्करा रहे थे, प्रसन्नचित्त हो हमें स्नेह पाश में बाँध रहे थे। हमारी उल्टी-सीधी बातों का उत्तर एक मीठे सद्-व्यवहार से दे रहे थे। ऐसा लगा कि वे मुख्यमंत्री नहीं, सभी युवकों के पिता-तुल्य थे। और देखते-देखते उन्होंने हमें शांत किया, हमारी सभी शिकायतों को दूर करने का अभयदान दिया। जब हम वहाँ से लौटे तो उनके अपनत्व और आत्मीयता को रज्जू में बँधे हुए लौटे। हमारे-उनके बीच में पुलिस की हथकड़ियाँ कपूर की तरह धुआँ बनकर अदृश्य हो गयी थीं।

चाहे छोटी कॉन्फ्रेंस हो या बड़ी, सुखाड़ियाजी जब भी बोले संबंधित विषय पर पूर्ण अधिकार के साथ बोले। मितभाषी के नाते कम बोले, पर प्रेरणा-स्रोत के अधिकारी के नाते संबंधित विचारणीय विषय के भावी पक्ष को आशाप्रद प्रकाश से उज्ज्वल करते हुए बोले। लेकिन बोलते समय उपस्थित श्रोता यह महसूस करते रहे कि मानो व्यक्तिगत रूप से सुखाड़ियाजी उन्हीं को सम्बोधन कर रहे हैं। भाषा में वे सरल रहते, प्रेरणा देने में उनकी जोड़ का दूसरा व्यक्ति कम से कम राजस्थान में अभी तक सामने नहीं आया है।

और कपड़े? कपड़े के मामले, वेशभूषा के मामले में वे बहुत उदासीन थे। फटे कपड़ों की ओर जब उनका ध्यान दिलाया जाता तो बहुत मीठी हँसी हँसते और उत्तर नहीं देते।

कोई व्यक्ति उन्हें पसंद है या पसंद नहीं है यह विकास या आसक्ति वे कभी अपनी वाणी से प्रकट नहीं करते। क्रोध में, आवेश में वे कभी बोले हों, यह याद नहीं पड़ता। वे स्नेह और प्यार ही बाँटते रहे, सबकी समस्याओं में यथा-संभव योगदान देने में विश्वास करते रहे।

उनकी सरकार और सरकारी नीतियों की कटुतम आलोचना के क्षणों में उन्हें उत्तर देते हुए देखना एक आनंद का विषय था। बिना प्रतिपक्षी की उत्तेजना का कोई संस्पर्श लिये, वे मुग्धभाव से मुस्करा कर उत्तर देते हुए पाये गये। प्रायः ऐसे मौकों पर अच्छाखासा व्यक्ति बौखलाहट का शिकार हो जाता है। पर सुखाड़ियाजी दूसरों की बौखलाहट को इस तरह सहलाते रहे मानो किसी घाव पर शीतल मरहम की पट्टी बाँध रहे हों, वे सरकार की कमियों को बहादुरी के साथ स्वीकार करने में कभी नहीं हिचके इसी तरह किसी संगीन मामले में तत्काल निर्णय लेने में वे कभी सस्पेन्स से या ऊहापोह से ग्रस्त नहीं हुए। दूसरों का दायित्व तो अपने कंधों पर उठा लेने में, दूसरों की भूल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ लेने में सुखाड़ियाजी ने कठोर नैतिकता का अनेक बार परिचय दिया। जब बिक्री कर के उठाने का निश्चय किया, चुंगी कर हटाया गया, बिजली की दरों में कमी की गयी, भूमि प्रदान के समय लीज़ की दरों में कमी लाई गई तो सुखाड़ियाजी ने पूरी मुस्तैदी के साथ और समस्याओं की गहन क्लिष्टताओं को हस्तामलक बनाते हुए कदम उठाये।

सुखाड़ियाजी पर कुछ लिखने के लिए मैं कोई अधि-कारी व्यक्ति नहीं हूँ पर जितना पुत्रवत् स्नेह मुझे उनसे मिला है एक बात कहने की आज्ञा मैं जरूर चाहता हूँ सुखाड़ियाजी देश के अन्य सभी राजनीतिज्ञों से अधिक कार्यकाल तक एक विशाल प्रदेश के राज्य सत्ता सुशोभित राजपुरुष रहे। लेकिन प्रतिक्षण वे महान् मानवतात्मा की सी सांस लेते हुए राजस्थान के विनीत नागरिक बनकर जीवित रहे। आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं तो उनका विनीत नागरिक पक्ष जनता की आँखों में और भी प्रधान हो उठा है। ●

सुखाड़िया शासन में संस्कृत का स्वरूप निर्धारण

प्यारे मोहन शर्मा
साहित्य विभागाध्यक्ष
महाराज संस्कृत कालेज
जयपुर

संस्कृत से जिसका यत्किञ्चित् भी परिचय है वह राजस्थानी भली-भांति जानता है कि राजस्थान में संस्कृत का जो वर्तमान स्वरूप है वह राजस्थान के निर्माता माननीय श्री सुखाड़िया की देन है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में राजस्थान को ही एकमात्र सर्वप्रथम यह गौरव प्राप्त हुआ है कि, जिसमें अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और वेदों के अलौकिक ज्ञान की निधि संस्कृत भाषा के समुचित प्रचार प्रसार व संरक्षण के लिये एक स्वतन्त्र संस्कृत निदेशालय स्थापित किया गया।

सम्मेलन के सभापति

स्वर्गीय श्री सुखाड़िया का संस्कृत के साथ गहन अनुराग था। मुझे भली-भांति याद है कि हमारे मित्र श्री मोतीलाल जोशी, महामंत्री, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जब 1966 में सर्वप्रथम माननीय श्री सुखाड़ियाजी से राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सभापति पद का कार्यभार स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करने के लिये उनके समक्ष उपस्थित हुए तो उन्होंने मुख्यमंत्री के गुरुतर उत्तरदायित्व से अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी उक्त पद के भार को स्वीकार किया और न केवल स्वीकार ही किया अपितु यावज्जीवन संस्कृत सेवा के इस व्रत को निभाया। एक बार श्री सुखाड़िया के मुख्य मन्त्रित्व काल में आर्थिक कटौती के शासकीय निर्णय के परिप्रेक्ष्य में वित्त विभाग ने संस्कृत शिक्षा विभाग के कुछ महाविद्यालयों को इस कटौती का लक्ष्य बनाया। संस्कृत जगत के सजग प्रहरी राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री मोतीलालजी ने इस शासकीय निर्णय से संस्कृत कॉलेजों की रक्षा के लिये चारों ओर सम्मेलन के अपने सहयोगियों को उद्योग करने हेतु प्रेरित किया। मैं उस समय संस्कृत कॉलेज सीकर में व्याख्याता के पद पर कार्यरत था। मुझे भी श्री जोशी का प्रेरणा सन्देश प्राप्त हुआ। मैंने भी शेखावाटी जन पद के विधान सभा सदस्यों से सम्पर्क साधा और उन सभी ने एक स्वर से श्री सुखाड़ियाजी से इस कटौती के वज्राघात से संस्कृत विभाग को बचाने की अपील की। दूरभाष

पर उनसे सम्पर्क साधा गया, कि संस्कृत कॉलेजों को इस कटौती से मुक्त रखा जावे।

प्रशंसा का आदि नहीं

एक बार संस्कृत सम्मेलन के मञ्च से श्री सुखाड़िया के श्रेष्ठ कार्यों की प्रशंसा की जा रही थी। स्वयं श्री सुखाड़िया सभाध्यक्ष पद पर आसीन थे। जैसे ही वे बोलने के लिये उठे, तो कहने लगे कि मेरे सम्बन्ध में अभी जो प्रशंसा की गई है वस्तुतः मैं उसका पात्र नहीं हूँ और न ही मैं प्रशंसा सुनने का आदी हूँ। इस प्रकार के निरभिमानी एवं विद्वानों के भक्त श्री सुखाड़िया का संस्कृत के साथ जो अनुराग था उसका वर्णन किया जाना सर्वथा असंभव है।

सुखाड़िया साहब कर्नाटक के राज्यपाल थे उस समय राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की महासमिति की बैठक जयपुर में माननीय श्री लक्ष्मीलालजी जोशी के निवास स्थान पर बुलाई गई। सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं की प्रबल इच्छा थी कि श्री सुखाड़िया साहब इस अधिवेशन में अवश्य पधारें। सम्मेलन के महामन्त्री मोतीलाल जोशी ने श्री सुखाड़ियाजी से उक्त अधिवेशन में पधारने का आग्रह किया। सुदूर स्थान पर स्थित होते हुए भी उन्होंने संस्कृत के इस लघु अधिवेशन में पधारना स्वीकार किया और समय पर पधार कर सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाया। इस बैठक में उनसे आग्रह किया गया कि संस्कृत सम्मेलन के चौदहवें अधिवेशन के लिए प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिराजी को आमन्त्रित कर राजस्थान में संस्कृत के बढ़ते हुए कदमों को और गतिशील बनाया जावे। उन्होंने तुरन्त स्वीकार किया और कहा कि आप सम्मेलन की तैयारी करें प्रधानमन्त्रीजी को आपके सम्मेलन में लाने का उत्तरदायित्व मैं लेता हूँ।

दिग्गज वकील

एक बार संस्कृत साहित्य सम्मेलन के मंच से संस्कृत विभाग में विद्यमान विभिन्न आर्थिक मुद्दों के सम्बन्ध में श्री लक्ष्मीलाल जोशी ने श्री सुखाड़ियाजी का ध्यान आकर्षित किया। श्री सुखाड़िया मन्द मुसकान के साथ पूर्ण सावधानी से सब बातें सुन रहे थे। जब सुखाड़िया साहब बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि संस्कृत की वकालत करने वाले बकील बड़े प्रबल हैं, उनके द्वारा कही गयी किसी भी बात को अस्वीकार किये जाने का साहस मुझ में नहीं है। संस्कृत वालों के पास ऐसे दिग्गज वकील हैं कि संस्कृत का कोई मुकदमा कभी भी फेल नहीं हो सकता है और इन्हीं शब्दों के साथ उन्होंने सरकार द्वारा जो भी करणीय है उसे संस्कृत के लिए अवश्य किये जाने की घोषणा की।

संस्कृत अनुरागी

श्री सुखाड़िया का संस्कृत के नाम से ही अनुराग था। मैं दौसा संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य के पद पर कार्यरत था। दौसा के राजकीय महाविद्यालय में मुख्यमन्त्री श्री सुखाड़िया को वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था। मुझे जब यह ज्ञात हुआ कि श्री सुखाड़िया साहब का दौसा पधारने का कार्यक्रम बना है तो मेरे मन में भी लोभ का संचार हुआ और मैंने चाहा कि संस्कृत कॉलेज में भी श्री सुखाड़िया साहब कुछ समय के लिए पधारें। मैं तुरन्त जयपुर आया कार्यक्रम अधिकारियों से सम्पर्क किया, परन्तु मुझे समय नहीं दिया जा सका और मैं निराश हो वापस दौसा लौट गया। निश्चित दिन श्री सुखाड़िया राजकीय महाविद्यालय में पधारे। मैं भी उत्सव में भाग लेने हेतु उपस्थित हुआ। उत्सव समाप्ति के पश्चात् चाय पान के अवसर पर मैंने श्री सुखाड़िया साहब के समीप जाकर निवेदन किया कि हम पाँच मिनट का आपका समय संस्कृत कॉलेज के लिए चाहते हैं। क्या यहाँ संस्कृत कॉलेज भी है? श्री सुखाड़िया ने पूछा और यह जानकर प्रसन्न हुए कि यहाँ एक अच्छे स्तर का संस्कृत कॉलेज कार्यरत है। यद्यपि वे हमारे साथ संस्कृत कॉलेज तो नहीं पधारे, परन्तु वहीं संस्कृत कॉलेज के छात्रों से अलग आकर मिले और बड़े प्रेम से हमारे माल्यार्पण को स्वीकार किया तथा कहा कि फिर कभी आपके यहाँ आऊंगा।

इस प्रकार उनके प्रत्येक आचरण से पदे-पदे संस्कृत के प्रति उनका अनुराग स्पष्टतः परिलक्षित होता है। श्री सुखाड़िया कोई साधारण मानव नहीं थे वे तो मानव देह में वर्तमान युग में कोई अद्भुत शक्ति अवतरित हुए थे। हजारों वर्षों के इतिहास में ऐसा व्यक्ति देखने को नहीं मिलता जिसने समूचे राजस्थान को एक सूत्र में बांध कर सर्वांग इस प्रकार विकास किया हो। राजस्थान के कोने-कोने में संस्कृत का जो दीप जगमगाता दिखाई देता है वह श्री सुखाड़िया की ही देन है।

THOUGHTS & SPEECHES OF SUKHADIAJI

Compiled & Edited by :
SHRIKRISHNA SHARMA
'GEETANJALI'
26, Mangal Marg
JAIPUR 302015

At the Opening Ceremony of Government Hospital, Tiruppur

'We knew that the fruits of democracy and benevolent Government are many. But these fruits would not reach every citizen if population growth is not controlled. The Government have spared no efforts to bring home to the people, the merits of Family Planning to the individual as well as the Nation. The entire machinery of the Government has been geared up to motivate the people to accept Family Planning as a way of life for ensuring a better tomorrow. A successful health campaign should include in it a successful Family Planning Campaign as well.'

At the Seminar on "Population and Law", organised by Annamalai University on 10.9.1976

'India's population has already crossed the 600 million mark from 361 million at the 1951 census. It is now increasing at the rate of over one million a month or about 13 million a year. Thus, if the present rate of growth is not reduced, by the turn of the century, i.e., in less than 24 years, we will be 400 million more—almost over a billion.'

'What does this mean in terms of development and well-being of the people ? Rapid population growth slows down the growth of per capita income and tends to perpetuate inequalities of income distribution. It adversely affects public education, health and welfare and the quality of the environment in which people live. In fact, at the current rate of population increase, we will need every year 1.5 lac more schools, 4 lac more teachers, 25 lac more houses, 2000 lac more metres of cloth and 125 million quintals more of food grains, not to speak of corresponding additional medical and recreational facilities. Social and political consequences of uncontrolled population growth are indeed disturbing.'

'In India for the last two decades and more we have been engaged in a vast exercise of socio-economic transformation through planned development. Despite all the big strides that the Country has taken during the period in industrial progress and social justice, we still have to go a long way to provide a reasonable standard of living to the mass of our people. In these circumstances, will it be at all possible to generate in the next two decades at least the barest minimum resources to support another 400 million, even assuming the free availability of modern technology ? The only way this problem could be tackled is through reduction in the birth-rate.'

'Law today operates not just as a dispute-resolving mechanism, but as a dynamic instrument for socio-economic development and distributive justice. In a Country like ours where the Government is democratic and where a major social policy like population control can be implemented only with the stamp of legislative approval, we have to examine the legal implications of proposed policy packages. No policy, however, good or desirable can be forced on a people unless it has legislative sanction reflecting the consensus of a majority of the people themselves through their representatives in Parliament.'

'Action in the Family Planning sector may take the form of :

(a) direct controls to prevent births through conventional contraception, sterilisation, abortion or such other Family Planning methods and
(b) indirect controls to reduce the birth-rate by motivating people to adopt the small family norm as a

[illegible] in life. Among indirect methods, educational programmes, marriage and family laws including the status of women, labour and tax-laws and social security laws are important. Even administrative adjustments avoiding possible conflicts between an anti-natal population policy and other social and economic policies may help improve the effectiveness of the implementation of the population policy. The question which of the two approaches is to be adopted in a given situation depends on a variety of social, cultural, economic and political factors. It is here that academic thinkers and researchers in law can collaborate usefully with demographers and other social scientists for overall national development.

In our Country the law has already been invoked successfully to advance the Family Planning Programme. The Medical Termination of Pregnancy Act, 1971 is an important milestone in this direction. The proposed law raising the age of marriage is a welcome step to accelerate the pace of reduction of the birth and the consequent improvement in the living conditions and consumption levels of our people." O

At the Field Publicity Seminar on "Dowry as a Social Evil" held on August 14, 1976

We are living in an era of rapid changes in the social and economic spheres. In the social sphere, the equality of the sexes and the dignity of the individual cannot be guaranteed unless social evils like dowry that militate against these values are eliminated. The Father of the Nation, Mahatma Gandhi, condemned this practice in no uncertain terms long ago. Addressing the youth of the Country, he said—

> **Any young man who makes dowry a condition of marriage discredits his education and his Country and dishonours womanhood.**

But can we say that young men of high education have set their faces against the practice of dowry ? High education is perhaps not the same as good education as conceived by Gandhiji and other nation-builders. The sad fact remains that at least in some areas the more educated a young man, with higher potentialities for lucrative employment, the larger the amount of dowry that he manages to earn in the marriage market. It makes little difference whether he demands it or his parents do, so long as the result is that he is the beneficiary at the expense of the bride's parents, who are hard-pressed in paying up his price.

A bridegroom who supports or even remains a silent spectator to his parent's demand for dowry, is as guilty as the parents themselves.' O

At Dr. Ambedkar's Birthday Celebrations on August 8, 1976

'We have paid a heavy price for casteism and communalism. Mahatma Gandhi, in his mature wisdom, included the fight against social evils in the mighty struggle for freedom. Dr. Ambedkar who had suffered seriously from the disabilities imposed by casteism was a crusader in the matter of social reforms. Casteism, untouchability and other evils prevented large sections of people from progressing in any direction, be it political, economic or social. Dr. Ambedkar made it a mission in his life to work for the progress and welfare of the oppressed and the depressed. The Constitution of India, in the drafting of which he had a big hand, embodied many of the ideals which Dr. Ambedkar held dear in the Directive Principles.'

'In spite of all the Constitutional provisions, the battle against casteism, communalism and social evils like untouchability is not over, and they raise their ugly heads in some form or other from time to time. Several laws have been enacted to put down social evils but untouchability is still practised here and there. It is not by law alone that we can change the Society or put down social evils. It is by a process of continuous education and persuasion on one side, and on the other by firm action against the offenders that we have to implement social reform.' O

At Dharma-Chakra-Pravarthana Day Celebrations at Mahabodhi Society on August 8, 1976

'Buddha is the light of Asia. His message spread to far off countries and a large part of humanity reveres him. Buddhism appeals to everyone because of its spirit of reason and its ethics of love. The basic analysis of the problem which Buddha made and the solutions he offered are known to us as the four Noble Truths and the Eight-fold path. The four Noble Truths are....(1) Existence is unhappiness, (2) unhappiness is caused by selfish craving, (3) Selfish craving can be destroyed and (4) It can be destroyed by following the Eightfold Path whose steps are :—(1) Right understanding (2) Right purpose (aspiration) (3) Right speech (4) Right conduct (5) Right vocation (6) Right effort (7) Right alertness and (8) Right concentration. ●

At the inauguration of Srikrishna Jayanthi Celebrations organised by Asthiga Samajam, West Tambaram on the September 3, 1976

'It is true that there is an outward diversity in India in the matter of caste and community, in customs and manners. But below this diversity, runs a glorious thread of fundamental cultural unity. It is this fundamental unity which has kept us together as one nation and as one people. Even foreign domination could not do any harm to this fundamental unity. Today freedom has given us many opportunities to forge the same old unity and to live as a free united people.'

The message of Lord Krishna, as enunciated in the Gita has a validity for all time and is of universal application. Mahatma Gandhi consulted the Bhagavad Gita whenever he was confronted with doubts and difficulties. To believe in the Gita is to have faith in God. Prayer meditation, contemplation, yoga and other sadhanas are various means to establish communication with God. Even an English poet has said

More things are wrought by prayer, than this world dreams of.

I have seen that if a person becomes an atheist and a materialist, professing no faith in God, he never feels mentally happy. There are circumstances in his life which make him unhappy and discontended. If, without God's intervention, he can achieve everything he likes, why should he feel unhappy ? Or if he fails to achieve what he wants, why should he start blaming God ? Voltaire, a great intellectual and atheist, is reported to have said : "Thank God, I am an atheist". If there is no God for an atheist, where is the need for thanking God for being an atheist ? You will, therefore see that atheism or mere materialism does not solve the problems of man or humanity. The Bhagavad Gita gives hope to the fallen; wisdom to the wise; support to a sense of duty and responsibility, and light in the midst of darkness and despair. Faith is always rewarded and lack of faith has not resolved our difficulties.'

At the inauguration of Seminar on 'Law, Labour and Social Change' on the July 28, 1976

'Our Constitution is the supreme law of our land, embodying the basic ideals, hopes and aspirations of the people. We have watched its working for a decent length of time. We have experienced a lot of difficulties in implementing several policies like land reforms, which are calculated to benefit the masses. Some of the fundamental rights guaranteed by the constitution have been misused by interested parties and vested interests. Advantage is taken of the judicial processes to thwart the reforms. We must remember that freedom is not licence and law is not a static document. Efforts are, therefore, rightly made, from time to time, to amend the constitution and other laws to remove obstacles that stand in the way of achieving the basic objectives of the constitution, i.e. ensuring better living conditions and employment opportunities for all the citizens. We have now an opportunity to see right the imbalances, speed up reforms, -political, economic and social--and to lay a sound and solid foundation for democratic socialism, guaranteeing the largest good for the largest number of people of our vast Country. We have, therefore, to appreciate the need for changing the law to suit the changing times, to improve the economic condition of the people and to strengthen our national unity. A law, divorced from the lives of the people, will ever remain a dead letter.'

The entire fabric of our constitution is woven with the concept of social justice. The concept of social and economic justice is a living one as it gives sustenance to the rule of law and meaning and significance to the ideal of a Welfare State. Social change may mean different things to different nations in different times. The meaning of social change for us is India to-day could only be eradication of poverty, disease and ignorance through rule of law. Ensuring social change through peaceful and democratic means call for a concerted effort by all of us, government, industry, trade unions and people at large. Labour Management cooperation is vital for maximising production and for rapid industrialisation of our Country on which depends the fulfilment of our objectives. The laws enacted in the industrial field try to provide a just and congenial atmosphere for constructive cooperation between labour and management.'

'Industrial harmony is a pre-requisite to orderly social change. Work stoppage and direct actions are injurious to the health of the nation and have no relevance and place in the changing social and economic order. Higher production and productivity, cost reduction and quality improvement should be as much the concern of labour as it is of management. While the long arm of law, will and should reach the offenders, the discipline that comes from "within" will quicken the pace of social change.'

At the Seminar on 'National Literary Forum' at Rajeshwari Kalyana Mantapam, Madras on 17.7.1976

'Surprisingly enough, the political disunity had never stood in the way of cultural unity. The Adhi Shankaracharya, for example, was able to establish *Maths* in different corners of the Country and he was well received wherever he went. Similarly many *Saints* and *Acharyas* were respected by the people all over the Country irrespective of the place of their birth. In those days, in spite of the lack of communication facilities and the menace of dacoits, people in the north felt it as their religious duty to visit Rameshwaram in the south and the people in the south felt that their religious life would not be full if they failed to visit Kashi (i.e. Banaras) in the north. Religion and culture have in fact identified this Country as one and this has stood the tests of time.

'Our ancestors were wise and hence they always considered this Country as one in spite of many kingdoms. Boundaries of different kingdoms never came in the way of this thinking. Shankaracharya, Ramanujacharya, Vallabhacharya, Nimbarkacharya were all born in the south but their disciples are all over the Country. Mahavira and Budha, though born in the north, their message has reached everywhere in the south.'

'When we were fighting for the independence of the Country, it never struck us that we are fighting for the advantage of any one region, it was for the whole Country.'

'In today's context let us keep in mind the whole world.'

'I come from Rajasthan and have seen 3 aggressions from Pakistan side on our boundary, but for the defence services of our Country we would have been nowhere. In the present world to have modern defence services is a Herculean task and no small country can afford to build that, the result generally is that they are dependent on other big powers.'

'The move of the European Countries to have a common market for all their countries is a lesson which many of us will have to learn. Fortunately for us, during our struggle for independence, we had the leadership of people like Gandhiji and Nehruji for whom the unity of the Country was dearer than their lives. They fostered a united India and bequeathed the same to us and we should strive to make the Country strong and see that our unity and freedom are not threatened in any way.'

'We all know that Handloom is our ancient cottage industry and it has established in the past a name and fame in foreign countries. Even today, it provides livelihood for over 10 million people in the Country. In spite of the vast scientific and technological advancement in the field of cloth production, this ancient industry is able to flourish, perhaps, because of the uniqueness of the fabrics besides certain special varieties which cannot be woven otherwise.'

'The weaver works in his own house assisted by his family in various ancillary processes. Thus handloom provides work for at least 3 persons in a weaver's family. In terms of rural employment, the industry ranks in importance next only to agriculture with a production of nearly 1/4th of the Country's requirements of cloth, especially in rural areas. In this context, the capital saving rural industries like handlooms assume special significance in view of their large employment potential.'

'As you all know, "Special Help for Handloom Industry and Protection to Weavers" is the 9th item in the list of 20-Point Economic Programme. Much earlier, the Government of India appointed a High powered Study Team on Handloom Industry under the chairmanship of Shri B. Shivaraman, member, Planning Commission. The Committee made far-reaching recommendations for securing to the handloom industry a well deserved place of pride in the economic activities of the Country. The Government of India have already taken policy decisions on most of those recommendations with a view to achieving an accelerated growth of the industry in the next few years. A Development Commissioner for Handlooms has already been appointed. The all-India Handloom Board has been reconstituted with the responsibility of guiding in an integrated manner, the various development schemes for strengthening this sector. A number of mammoth programmes to enhance the cooperative coverage of handloom weavers to 60%, to set up export oriented as well as intensive handloom development projects, to involve the handloom industry in the production of controlled varieties and sarees in a big way etc. have already been announced.'

'Yet another problem is the exploitation of the poor weavers by self-seeking master weavers and big manufacturers of handloom goods. As I told you earlier, even after increasing the cooperative coverage to about 3 lacs of weavers, there will be still $2\frac{1}{2}$ lac of weavers in the private sector. All necessary measures would be taken to protect the interests of these weavers with regard to security of employment, minimum wages and other facilities like leave, provident Fund, bonus etc. Another aspect of the handloom industry which, to my mind, is of vital importance, is the need to diversify the production pattern of the weavers. Planning in the handloom industry should be more and more export-oriented.' O

At the National Programme on Modernization of Small-scale Industries on 28.7.1976

'During the last two decades, the small-scale industries have registered phenomenal progress. The growth in the number of small-scale industries during this period has been a rewarding experience of our planned economic development. The small-scale industries have proved to be indispensable tools for promoting decentralised and dispersed development of industries and for providing employment to myriad persons.'

'Notwithstanding the quantitative expansion of the small-scale industries and some diversification and sophistication that they have achieved, they have still to assert themselves in qualitative terms, obsolescence of machinery, men and materials is a serious problem which the small-industry-sector has to reckon with today. The programme of modernization of small-scale industries in a phased manner and on systematic lines is a major thrust in the development programme of small-scale industries under the Fifth Five Year Plan. Modernization of the sector means modernisation of men, material, machinery and management.' O

At the Inauguration of the City Headmasters Conference, Madras on September 18, 1976

'Head-masters are the king-pins of educational institutions.'

'The students of today cannot be merely content with text-book education. A modern student is exposed to various influences exercised by mass media of communication like newspapers, radio, television, films, etc. Unless these influences widen the outlook of the students and shape their conduct and character along healthy lines, there is a risk of their being spoiled by these influences. One of the reasons why the student community sometimes indulges in acts of violence and indiscipline is that they are exploited by antisocial elements and interested parties. We have, therefore, to be vigilant in seeing to it that the students, in their impressionable age, are not influenced by antinational and unpatriotic slogans and catchwords.'

'The need of the hour is that the teachers should educate the youth on the economic and social problems confronting the Country and the services and sacrifices required to solve them. The present generation is growing without having any idea about the supreme sacrifices made by the older generation for winning Swaraj. Freedom is the most cherished possession of ours. Instead of enlightening the youth about this, if teachers adopt a parochial outlook, what will happen to posterity ? This is a serious question which must engage your consideration. I hope you will emphasise the need to educate the youth to follow the footsteps of our national leaders.' O

At the 27th Vanamahotsava Celebrations on 25.7.1976 at Raj Bhavan, Madras

'The idea of launching a nationwide tree planting programme was first thought of by the late Shri K. M. Munshi, in 1950. The main objective of this annual tree planting festival is to make the people forest conscious and enlist their cooperation in raising trees and protecting the forests. According to him "Trees mean water, water means bread and bread is life".'

'Scientists are of the view that for the well-being of any Country, at least one-third of her geographical area should be under forest cover. Most of the advanced countries despite their heavy industrialisation, have kept adequate areas under forest. The percentage of forests in USSR is 39.3, in Japan it is 68.7 and in USA is 34.6. Our Country has only 23.4% of her area under forests and in Tamil Nadu it is only 16.84%.'

'The forests serve as a veritable store house of diverse products. They provide us the timber for construction and the fuel for our homes. The bamboos, fibres, valuable medicinal plants, gums, resins, tanning materials and fodder are all abundant in our forests. They also augment our food supplies by offering a wide variety of edible products.'

'It should be well-remembered that forestry is the foster-mother of agriculture. To increase our food production, we are producing and applying fertilizers on a large scale. Little have we realised that for want of tree cover, 6000 million tonnes of rich top soil is being washed off every year. Our Country consumes 233 million cubic metres of wood as fuel every year and by 1990 the consumption will shoot up to 330 million cubic metres. Forests afford the only scope for providing us inexhaustible fuel resources, provided we judiciously exploit them. In this context, I am tempted to quote our late revered Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru, who wrote thus : "In the economy of Nature, forests are of utmost importance. But with the spread of industrial civilisation and the rapid growth of population, unhappily forests tend to disappear. We are apt to forget that in so far as this happens, we are upsetting the economy of Nature and doing injury to man. I am pained when I see a noble tree which has taken long to grow and spread out in all majesty, cut down by careless hands. There should be a strong feeling among our people to prevent this vandalism. If such cutting down becomes unavoidable, we should develop a convention that it should be replaced immediately by planting two trees. I hope that the vital importance of forests will be fully realised.' o

At the Programme of 'Folk Dances of India' arranged by Gujarati Stree Mandal on the August 1, 1976

'Our folk songs and folk dances have a hoary past. They form an integral part of our cultural heritage.' o

On Television Gandhi Jayanti Talk by Shri Mohanlal Sukhadia, October 2, 1976

'If we analyse what is happening in our midst, we will find that where we have moved away from Gandhiji we have run into difficulties. The intensely practical nature of his creed becomes apparent to us, and his own ideas become strangely alive and relevant to us today, after the lapse of so many years. Discipline, hard work and non-violence should become a way of life. Stringent laws to regulate the society should be replaced by self-restraint.' o

Inaugurating the Annual General Meeting of the South India Film Producers Guild at New Woodlands on 24.7.1976

'Film Industry plays a large, significant and influential role in the country. It has had its impact on popular music, in the growth and development of language and in influencing social behaviour of the people. During the British Raj, some of the patriotic film producers attempted to convey ideas of nationalism, national integration, social reform etc., through films.'

'Films are not merely a source of entertainment but also a powerful medium of social communication. I am aware of the arguments that people do not invest money in films just for the sake of advancing social purposes. What is most urgently called for is an attitude within the industry to treat the film not merely as a popular consumer product which is to spin easy money for those who produce it and for those who market it, but also as a creative art and as a valuable instrument to bring about social changes and to mould public opinion.' o

Broadcast by Shri Mohanlal Sukhadia on the eve of Independence Day, August 14, 1976

'The concept of India, as a unity in diversity and as a people with a shared outlook and composite culture, expressed in the term "From the Sethu to Himachal" is three thousand years old.'

'Our sense of unity arises out of our commonly shared sense of history, common joys and sorrows experienced together and common achievements contributed by all. We had this sense of oneness, as I mentioned earlier, over the last three thousand years of recorded history. This was enriched during our

freedom struggle, and we have built upon it in the last twenty-nine years of freedom. We have faced external aggression together, as a united nation; we have many achievements to our common credit such as the Pokaran test, Aryabhatta and the Bangladesh liberation and we have also faced many of the travails caused by natural calamities as a united nation.'

At the Madras University Research Scholars' Association on September 28, 1976

'Research work in India has got to be reoriented in the context of various developments—historical, political, cultural, scientific, economic and social. First of all, the history of India will not be complete without an authentic history of the mighty struggle for our freedom. Good lots of materials are available in the Country for this work. Secondly, the general history of India—ancient and modern—contains many distortions introduced by foreign authors who had their own axe to grind.'

'The Research scholars would do well to devote attention on several other aspects of the Indian life. For instance, our cultural history is intimately linked up with the political history of our people. From the dim and distant past, our fundamental cultural unity has come down to us, generation after generation. Though we lost our freedom on account of our own weaknesses, this fundamental cultural unity was not lost sight of. Freedom has now given us many opportunities not only to reconstruct our history but to build up our national unity on a sound basis.'

'There is another field where Indian scholars have not done adequate work to project our image. This relates to our ancient sciences. The world knows that we, in India were, once upon a time, very advanced in the matter of scientific discoveries. One has only to cite astronomy, astrology and mathematics. This scientific knowledge is lying buried in the different languages of India. Research bodies have a vital role to play in digging out these treasures and bringing them once again to light.'

'All the languages of India enjoy equal status. It is very unfortunate that the treasures contained in one language are not known to the people speaking other languages. We have paid a heavy price for parochialism in the name of language. I feel that the research scholars of India working in every university should pool their wisdom and knowledge and produce authentic translations of all standard works in every language. Such a project, I am sure, will promote national integration.'

AIR Broadcast on Gandhi Jayanti by Shri Mohanlal Sukhadia, October 2, 1976

'I myself started my public life when I was a student, mainly under the influence of Gandhiji. I entered the freedom struggle because I felt that it was the only possible response I could offer to his ideals. He had an irresistible appeal even to those who did not know him personally. It is this impact of Gandhiji which roused millions to action, the magic which made people change their attitude and become fully committed to the various causes that he had taken up.'

'Unfortunately though we never said it in so many words, we gradually began to feel that Gandhiji was an impractical idealist who set an impossible code of conduct for everyone, that his vision of India was without contemporary relevance and that his economic and social ideals, however pious they may sound, were out of tune with our requirements and aspirations in the modern world.'

'Today we have begun to discover that he was more of a realist than many of us, that he knew this vast Country with its teeming millions and its insurmountable problems far more closely than we can possibly hope to do. He knew where our strength and weakness lay, and the line along which our potentialities could be best developed.'

'This generation will be able to take a fresh look at Gandhiji and all that he represented.'

At the Annual Day Celebrations of the Government Mahabubia Junior College for Girls

'Our culture envisages complementary role for men and women. In western society where there is so much talk of rights and privileges for women, I do not think women are all that happy. I do not believe that there is any basic conflict between the interests of men and women and there is no need for any member of the fair sex to believe that she can get her rightful place in society only by following the path of confrontation with men.'

"What we are waging today in our Country is a war against poverty and this is a more difficult war than the wars we have witnessed. It is well known to us that for winning a war, the most important qualities required are self-confidence, discipline, courage and hard work. Same qualities are required for winning the war against poverty. The difference is that in a war against enemy we depend upon the defence forces mainly, but in the war against poverty every citizen will have to contribute his share. Hence it should be the primary aim of any educational system to instil self-confidence among the students and make them face the challenges of this word with courage and conviction."

– Mohanlal Sukhadia

At the Rotary International Conference
January 31, 1976

'The crux of the problem before us today is to bring together different sections of the society and make them engage themselves in this gigantic task of developing our Country. In an underdeveloped country like ours, with vast population, production should get number one priority, whether in the agricultural sector or in the industrial sector. Unless our production is increased the rate of economic growth of our Country will be low and there will be nothing but stagnation. The basic problem facing us today is the tremendous growth in the population of our Country. It is unfortunate that in spite of all our efforts, we have not been able to check effectively our population growth. The fact that our population is growing at a very fast rate adds a new dimension to our problem. Unless the rate of our economic growth exceeds the rate of our population growth by a sufficient margin, we cannot really register any significant progress. In other words, even to remain at the same level of development, allowing for the increase in population every day, we have to achieve at least a growth rate equal to the rate of growth of population. In other words, it may be said that we have to run faster and faster to remain where we are. During the fifth Plan period, our objective is to achieve a growth rate of 5½%. During this period the population of our Country might go up by about 1.8%. Violent agitations only weaken the foundation of our democracy. In fact violence is the very antithesis of democracy.'

'Violent agitations besides impeding the economic growth of the country demoralises the people. We have seen that when violent agitations become the order of the day in a democracy, the economic progress is retarded and things start drifting. In such a situation people begin to lose faith in the very concept of democracy. We have also seen that wherever things started drifting, democracy has been the first casualty. We need not look too far to realise this obvious truth. Our own neighbouring country, Bangla Desh should serve as an eye-opener to us. We have to realise that merely winning freedom is not sufficient. Preserving the hard-won freedom is an equally important and difficult task. Whatever may be our internal differences, we have to ensure that we do not weaken our Country and thereby pave the way for foreign interference. Democracy recognises the right to dissent, but it does not mean that we should carry our differences to such an extent as to jeopardise our very existence as a nation. Democracy presumes a spirit of tolerence and give and take among the people. Each citizen in a democratic country may be conscious of his own rights. It is essential that he should be equally conscious of his own responsibilities and rights of others, if democracy is to survive in that Country. This would mean that democracy can succeed only when there is an atmosphere of self-restraint in the Country. It is in this field that I feel Rotarians who belong to the educated and enlightened sections of the society should give a lead to others who are not as fortunate as the Rotarians. The Rotarians with their background will be in a position to appreciate the complexities of a democratic system. They can take the lead in enlightening the masses with regard to their duties as well as their privileges and thereby strengthen the foundations of democracy in our Country. I trust that the Rotarians will be able to impress upon one and all that we can safeguard our democracy only by recognising others' rights and one's own responsibilities.'

'I find that the theme Chosen for the Conference is "Dedicate....Develop the Deserving". I must compliment all those who are responsible for choosing such an apt theme. The most important thing in our

Country today is to ensure a society without class differences, a society in which all human beings will have equal opportunities and equal rights.' ○

At Andhra Pradesh Women-Students Conference on January 31, 1976

'It is essential that women themselves first realise the significant role they have to play in our society. This realisation can come only through education. The second aspect is that education would provide necessary capacity to women to shoulder the responsibilities that may be entrusted to them. It is this capacity that would ultimately give women the necessary status.'

'There is another issue which vitally concerns women and that is dowry. This social evil deserves to be condemned by all right thinking people. In fact I would go to the extent of saying that the system of dowry is a disgrace to our society. I can easily understand how strongly educated young women feel about this obnoxious system. It is necessary for the young women to organise themselves and approach young men and convince them that the system of dowry is a blot on our society and culture. I am sure that most of the young men feel as strongly as young women about this social evil, but the only thing is that everybody feels helpless in the face of a particular tradition. It is not sufficient if we merely have a law against dowry Social evils like dowry cannot be fought on the basis of legislative measures alone. The evil of dowry can be fought only by creating necessary social awareness about the consequences of such a reprehensible system. In creating this social awareness, organisations like Women Students Conference have a vital role to play. While I would like women in our Country to organise themselves and ensure that they get their rightful place in our society, I would not like them to merely copy what is happening in Western countries. It is not wise for us to forget our culture which contemplates besides an honoured place for women in society, mutually complimentary role for men and women. It is not necessary for young men and women to imagine that there is some sort of basic conflict between the interests of men and women.' ○

On "20-point Programme : Its Challenge to Professional Management" at Osmania Management Association, Hyderabad on March 1, 1976

'As you are all aware, the 20-point Economic Programme is a package programme. One of the main complications of the situation prevailing before we took decisive steps to arrest the inflationary process was that wages were chasing the prices and prices were chasing the wages. The main philosophy behind the 20-Point Economic Programme is to give a boost to both industrial and agricultural production and thereby achieve price stability and social justice. Managers have a vital role to play in increasing production.' ○

On the Family Planning at Lepakshi 5-3-1976

'I am afraid that we will be heading towards disaster. Our population has increased by more than 50 per cent in the last twenty years or so, and our Country's population in the year 1971 was 546.9 million. It is expected that by 1987, the total population will be 705.5 million if we assume that the growth rate of our population during 1976-81 and 1981-86 will be 16.75 and 13.68 per thousand respectively as compared to the growth of 20.34 per thousand during 1971-76. Unless our rate of economic growth exceeds the rate of population growth by a substantial margin, we cannot register any significant progress. In fact, we have to run faster and faster even to remain where we are.' ○

At the Annual Day Celebrations of Smt. Kasturba Gandhi College for Women, Nehrunagar, Secunderabad on March 8, 1976

'It is significant that this college has been named after the great lady Kasturba. As you all know, she did not have much of formal education and she made service to her husband, her life's mission. Her only objective in life was to be of help to her husband and thus enable him to achieve success in life. Mahatma Gandhi, as you are aware, had to try quite a bit to make Kasturba give up her old traditional ideas with regard to various things like ornaments, social customs etc. Kasturba represents an ideal Indian woman and is no exaggeration to say that she played a great role in moulding the personality of Mahatma Gandhi and making him the Father of the Nation.'

'I am well acquainted with a number of political leaders of our Country. Most of the political leaders have very Intelligent wives. These wives may remain in the background, but none the less, their contribution in developing the personality of their husbands and shaping their political career is truly immense. I would go to the extent of saying that leaders who had understanding wives have always been able to achieve better success and improve their political image. Even in my personal case, I have no hesitation in acknowledging that to a great extent my wife is responsible for making me what I am today.

Just after three years of our married life I had to go to Jail and face difficulties. If my wife had not cooperated with me at that stage, I do not know whether I would have been what I am today. If there is no peace at home, no man can concentrate on his work. By saying that wives should maintain peace at home and thereby enable their husbands to concentrate on their work, I do not mean that a wife has always to adjust herself with her husband. She can, on a number of occasions, point out the mistakes committed by her husband or the shortcomings of her husband and mend his ways. I firmly believe that the wife can play a very significant role in changing the attitude of an erring husband. That is why I always believe that behind every successful man, there is an Intelligent and effective wife.'

'I would like to make one appeal to those ladies who are comparatively better placed in life and who do not have the economic compulsion to go in for job. These women must take to social welfare activities. You are all comparatively lucky in the sense that you are having the benefit of university education. You must realise that millions of women in our Country do not even get the opportunity of getting elementary education, not to speak of secondary or university education. Therefore, there is a special responsibility which you have to discharge. You must always think of those sisters of yours who are not as fortunate as you are and try to help them to the extent possible.' ⊛

At the Seminar on Andhra Pradesh State Harijan Conference at Hyderabad on April 10, 1976.

'Our main concentration should be on improving the economic condition of the members of the scheduled castes. By this I do not of course mean that there is nothing for us to do on the social plane immediately. My point is that while we may ensure quick elimination of social handicaps, we should at the same time realise that it is not sufficient if we concentrate on removal of social handicaps alone. Fortunately, the programme of first improving the economic condition of Harijans has been taken up seriously by the Central Government as well as by the State Governments.'

'Unless the administrative machinery at the lower levels is conscious of its special responsibility towards Harijans in the matter of giving them necessary protection vis-a-vis rich and powerful elements, I am afraid Harijans will have to continue to suffer silently.'

'Another suggestion which I would like to make is that the ministers and senior officers should have on their personal staff at least one Harijan member so that they may be able to set an example to others. There is a general impression that while many highly placed people talk about removal of untouchability, most of them are unwilling to have on their personal establishment, especially household side, members belonging to scheduled castes. When leaders of public opinion themselves set an example I am sure many others will follow suit and we can bring about effective integration of Harijans with the rest of the community.'

'The key to improve the lot of Harijans whether in the economic or social plane is education. After independence there has been considerable improvement in this matter. Government has started a number of hostels and is giving scholarships and other incentives. We have to ensure that the Harijan boys and girls do not miss their education on one ground or the other. This is a vicious circle which we have to break. Many Harijan parents do not send their boys and girls to school because they want their boys and girls to start earning at a very young age and the Harijans are not able to go up the economic or social ladder because they do not have education. Determined efforts are required in order to break this vicious circle. In our anxiety to provide them with facilities of boarding and lodging we have started what are called Harijan hostels. I personally feel that time has come when this system of separate hostels where there are only Harijan students should be gradually given up and arrangements should be made for admitting them in the general hostels. I do appreciate that the boarding grant which we are giving now to Harijan boys and girls for their maintenance in the Harijan hostel is less than the charges which the inmates of general hostels are called upon to pay. I also appreciate that if we have to maintain the Harijan boys and girls in the general hostels, it has certain financial implications for the State Government. But I think in a matter of this type financial constraint should not be allowed to inhibit our thinking or vision or our desire to do what is right. By having separate hostels for Harijan boys and girls, we are only accentuating the gulf that already exists, for various historical reasons, between Harijans and the rest of the society. Even if we are not able to ensure admission for all the Harijan boys and girls in the general hostels and maintain them in those hostels, we can have a phased programme under which every year about 20 per cent of the students who are in Harijan hostels will be transferred to general hostels. By this process in about 5 years' time we can dispense with separate hostels for Harijans and ensure that Harijan students live in the same hostels as others. In the interim

period we can reserve a percentage of seats in the Harijan hostels for non-Harijans and give incentives to such of those non-Harijans who opt to live in Harijan hostels. I firmly believe that if we can admit Harijan boys in the general hostels and abolish the system of separate hostels at least for college going students to start with, it will go a long way in bringing about social integration.'

'I feel yet another field where we should concentrate is enabling Harijan boys and girls to prepare themselves well for competitive examinations conducted by Union Public Service Commission, other all. India bodies and State Public Service Commissions. If in crucial services like IAS, IPS and State Services, we have a number of Harijan boys and girls that in itself will change the outlook of administration towards the Harijans. I must say that I do not subscribe to the theory that a non-Harijan Officer will not be interested in the welfare of Harijans. In fact, in Andhra Pradesh itself we have instances of many outstanding officers who have done a great deal for the welfare of Harijans, but at the same time, it cannot be denied that by having more Harijan Officers in the services the desired transformation in the outlook of administration can be brought about more rapidly. Because of inherent disadvantages which the Harijans have to face, they cannot compete effectively with others in competitive examinations. It is, therefore, necessary to have special coaching for Harijan students who want to appear for competitive examinations. ○

At the Bhavan's College of Mass Communication, Hyderguda, Hyderabad on April 24, 1976

'I deal with the role of mass media in our Country with special reference to the role of the press. As we all know the newspaper is a very powerful media which influences the thinking of millions and millions of people in the Country and plays a significant role in determining the public opinion on any issue because of the tremendous power wielded by the press, those who are in charge of this medium have a heavy responsibility on their shoulders. Freedom of Press, like all other freedoms, has to be exercised with responsibility and restraint. Freedom of Press if misused can result in a tremendous amount of hardship to the community as a whole and, as we had occasion to observe in our country, can erode the self-confidence of a nation. We know from our past experience that during certain situations of internal distrubances, whether language or communal riots; great mischief has been done by irresponsible reporting. Suppression of some facts can sometimes be worse than distortion of facts. It has to be appreciated that the freedom of press does not mean mud slinging or character assasination. We know that some of our newspapers were accustomed to make baseless allegations against persons in public life and thereby create an atmosphere of distrust in our Country. Our newspapers somewhow have a tendency to highlight the events and issues pertaining to urban areas and neglect rural areas. Moreover their tendency is to give wide coverage only to political news and ignore news pertaining to the developments in economic and social fields which are taking place in our Country. Our newspapers also have a tendency to give importance to the news items which have an element of sensationalism. I must also say here that some of our newspapers lack perspective. After we attained independence, so many developmental programmes have been taken up in rural areas resulting in fundamental socio-economic changes, but very few newspapers and periodicals in the Country have considered it necessary to send their correspondents into the rural areas to find out as to what type of changes are taking place and how our villagers are reacting to the new programmes which are meant for ameliorating their condition. I feel that our press must have proper perspective and rural India should not be relegated to the background. As I mentioned before, the press has a tendency to give wide converage to political events even if they are not of any great significance, while at the same time it ignores the events which have a social or economic significance. You take, for example, the evil of dowry or drinking habit. We must say that our press has not made much efforts to mould the public opinion against these social evils. I would like the press to play a very useful role in tackling social evils. At the moment the films happen to be the most important mass media in our Country. It is necessary that this media is not used to debase human beings but used to elevate the human beings. At present in our films, there is an unfortunate emphasis on crime and violence and this creates lot of problems.' ○

At the "Bhagavata Saptaham", Exhibition Grounds, Hyderabad, June 1, 1976

'It may not be out of place to mention here that I myself come from a place which is rich in the tradition of Bhakti and devotion to Lord Krishna. The Bhajans of Meera still echo in the hearts of the people of Rajasthan just as they strike a chord of devotion in Bhaktas everywhere in the Country. I was brought up in Nathadwara which is famous throughout India for its temple of Lord Krishna. I consider myself blessed and fortunate that this privilege of inagurating Bhagavata Saptaham has been conferred upon me.' ○

भारत के महान सपूत

□

कंवर ललितसिंह
बाँसी, चित्तौड़गढ़

मुझे वो राजनीति में लाए यह एक बहुत बड़ा इतिहास है उस सदंर्भ में मैं नहीं जाऊँगा केवल इतना ही संकेत काफी है कि वो एक बड़े दूरदर्शी व महान् राजनेता थे। सन् 1967 के चुनावों की जो हवा देश व प्रान्त में चली उससे वो पूरी तरह अवगत थे और वे नहीं चाहते थे कि मेवाड़ में कोई भी उस हवा का प्रभाव हो या कोई संकट मोल लेवें। जयपुर डिवीजन में व अन्य जगह तो कांग्रेस हारी ही पर जोधपुर में भी श्री रामनिवास मिर्धा व श्री नाथूराम मिर्धा जैसे बड़े नेता हार गये थे। केवल मेवाड़ की जनता ने ही बाबूजी की व कांग्रेस की बात रक्खी व कुछ समय राष्ट्रपति शासन लागू रहने के बाद उन्होंने अपनी सरकार बना ही ली यह केवल उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम है; क्योंकि सन् 1967 के ठीक बाद सन् 1971 में जब एक ऐसी इन्दिरा हवा चली की उस ऐतिहासिक चुनाव में भी इन्दिरा कांग्रेस मेवाड़ की तीनों लोक सभा सीटें बुरी तरह हारीं व बांसवाड़ा सीट भी केवल एक हजार वोटों से जीती। अब आप सोचिये कि अगर सन् 1967 में बाबूजी अपनी दूरदर्शिता का परिचय देकर श्रीमान् महाराणा साहब व हम लोगों को उनके पक्ष में नहीं लाते तो क्या हाल होता? लेकिन ये चुनाव की राजनीति इतनी गंदी है व राजनेता ऐसे हथकन्डे अपनाते हैं कि मेरे जैसे आदमी के लिए यह समझ बैठे कि ये बाबूजी के बड़ा नजदीक है कहीं मिनिस्टर नहीं बन जाय तो मेवाड़ प्रान्त के ही कुछ धाक लोगों ने बाबूजी से क्या कहा व मुझे कुछ और कहा। वो तो महान् थे मुझे निभाते ही गये कभी भी कहीं ऐसी झलक नहीं दी कि मैं उनके लिए अनर्गल बातें करता हूँ। वे समझते थे मैं दिल में भोला हूँ व राजनीति में अभी बच्चा हूँ इस कारण उन्होंने मेरी सब कही-सुनी गलतियां माफ करी व निभाया। लेकिन जब बाबूजी मुख्यमंत्री पद से निवृत्त होकर उदयपुर पधार गये व इधर जब मैंने उनके बाद कई मुख्यमंत्री अपने राजनीतिक जीवन में देखे व आज भी देख रहा हूँ तो वे मुझे सब से महान् लगे। नेताओं व मंत्रियों में वे एक इन्सान थे जिसमें कूट-कूट कर महानता, शालीनता व इन्सानियत थी व इन्सानों में वो एक फरिश्ता थे। राजस्थान के व देश के तकरीबन सभी राजनेताओं, सब ही पार्टियों के व सब ही राजा-महाराजाओं को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कितने ही मेरे मेहरबान व व्यक्तिगत दोस्त हैं पर जो शालीनता, महानता व इन्सानियत बाबूजी में देखी वह केवल महाराणा व देश के पहले व अन्तिम महाराज प्रमुख श्री भूपालसिंह मेवाड़ में देखी। बाबूजी अपने आप में एक चलती-फिरती संस्था थे। राजा, महाराजा, राजनेता, गरीब जनता व हर स्तर के अफसरों I.A.S., I.P.S., R.A.S. या कर्मचारियों तक को डील करने का अपना उनका अलग ही ढंग था। सब को इज्जत कर सबसे प्रान्त के हित व राष्ट्रहित का काम लेने का तरीका उनका विलक्षण था। नेता, मंत्री, विधायक व किसी स्तर के अफसर के आपस में कहीं कोई टकराव हो जाता तो वे अपनी शैली के दोनों की इज्जत रख अपने तरीके से दोनों को ही खुश कर देते थे। यह गुण अपना उनका ही था जो उन पर प्रभु कृपा व माता दुर्गा का आशीर्वाद ही रहा। ज्यों-ज्यों राजनीति में उनसे मेरी दूरी होती गई हृदय से मैं उनका पहले से भी ज्यादा भक्त बनता गया। मुझे अफसोस है कि उनके जीवनकाल में ही मैं उनकी पार्टी से अलग हो गया पर उनके प्रति मेरी श्रद्धा व आदर पहले से भी ज्यादा बढ़ती गई। काश वो भारत के प्रधानमंत्री बन जाते तो पं० जवाहरलालजी की तरह जनता के हृदय में स्थान ले लेते। फिर भी जिन-जिन राज्यों में वो राज्यपाल बन कर रहे वहाँ की जनता के वो हृदय सम्राट बन कर रहे व आज भी हैं। सुखाड़ियाजी भारत के तो सपूत थे ही पर राजस्थान व खास कर 'मेवाड़' में उनकी सेवायें स्वर्ण अक्षरों में लिखी जावेंगी। आज के राजनेता उनके व्यवहार का दो आने भी आचरण कर लेवें तो जनता में वे लोग पूजे जा सकते हैं पर आचरण करना तो दूर रहा बाबूजी को गाली देकर मंत्री पद ले रहे हैं क्या विधि की विडम्बना है? मेवाड़ ने हर वक्त व मोड़ पर प्रान्त व देश को एक सपूत दिया है इतिहास इसका साक्षी है। बाबूजी उस मेवाड़ की महान् परम्परा व इतिहास को निभा अनुशासन में रह कर अपनी कुर्बानी दे गये। ○

राजस्थान :
निर्माण के नये क्षितिज

□

सत्यनारायण सिंह
निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान
जयपुर

राजस्थान की जनता श्री मोहनलाल सुखाड़िया की सदैव ऋणी रहेगी। यहां की माटी का कण-कण, नदियों की बहती धाराएं, पहाड़, मैदान और मरुस्थल सभी अपने अन्तर में उनकी याद को समेटे हुए है।

सुखाड़ियाजी ने राजस्थान के निर्माण की जो परिकल्पना की थी, उनके अनन्य सहयोगी उसे मूर्त्त रूप देने में समर्पित भाव से जुटे हुए हैं। नवनिर्माण और विकास की नई करवटें लेता, पिछड़े, दलितों और आदिवासियों के उत्थान के प्रति समर्पित आज का राजस्थान उनके प्रेम, स्नेह, करुणा और आत्म भाव का जीवन्त प्रतीक है।

राजस्थान का चप्पा-चप्पा यहां के नर-नारियों के जीवन-संघर्ष का मुंह बोलता शिलालेख है। सामन्तवाद के शिकंजे से निकल कर लोकतन्त्री व्यवस्था तक आने में उसने जो कठिन सोपान चढ़े हैं, इतिहासकर उनकी कीर्ति-कथा को कलमबद्ध करके निश्चय ही कृतार्थ होंगे।

कुदरत ने उसकी जिन्दगी की किताब में कुछ ऐसे सफे जोड़े हैं, जिनसे दर्द की स्याही पूरी तरह कभी नहीं सूख पाती। बीहड़ रेगिस्तान, बहती नदियों की कमी, कुछ इलाकों में पीने के पानी के लिए मीलों का सफर और ऊपर से आये दिन अकाल का साया, यही सब उसकी नियति है। उसकी एक ही सबसे बड़ी खूबी है – कठोर मेहनत से अपनी किस्मत गढ़ने की अटूट तमन्ना।

साढ़े तीन दशकों से भी ऊपर हुआ, जब आज के राजस्थान का निर्माण हुआ था। छोटी-बड़ी रियासतों से उत्तराधिकार में प्राप्त सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ापन, अज्ञान, अशिक्षा, आजीविका के साधनों का अभाव – यही उसकी विरासत थी। वह तस्वीर जिसने देखी है वह आज फिर एक नई नजर से उसे देखता है, तो लगता है जैसे तिलस्म हो गया है।

पिछले वर्षों में राजस्थान ने अपने पुनर्निर्माण की दिशा में कई मंजिलें तय की हैं। विभिन्न विकास योजनाओं के जरिये प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की काया-पलट करने के लिए बहुमुखी प्रयत्न किये गये हैं। इन सभी प्रयत्नों का लक्ष्य सामान्य-जन के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने का रहा है।

वर्तमान प्रशासन प्रगति की इस यात्रा के सभी सोपानों और पड़ावों के प्रति सचेष्ट और जागरूक है, किन्तु उसका सर्वोपरि लक्ष्य हमारे युवा प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के सुदृढ़ नेतृत्व में पहले उन आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, जो प्राथमिकता प्राप्त करने की अधिकारी हैं और जिनका उद्देश्य निर्बल को बल देने और उसे सुख पहुंचाने का है।

अपना वर्तमान अस्तित्व ग्रहण करने के बाद राजस्थान ने अपनी बहुआयामी विकास-यात्रा के दौरान जो असाधारण उपलब्धियां अर्जित की हैं, उनका अनुमान कुछ तथ्यों से सहज ही किया जा सकता है।

खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी

राज्य में 1951 में कुल खाद्यान्न उत्पादन जो लगभग 29 लाख टन था और पूर्णतः मानसून की दया पर निर्भर रहा करता था, अब बढ़कर 100 लाख टन से अधिक पहुंच

चुका है; क्योंकि प्रदेश में सिंचाई के साधनों, उर्वरकों के उचित प्रयोग और भूमि सुधार कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया गया है। अतिवृष्टि और अकाल यदि व्यवधान न डालें, तो स्थिति और भी सुखद हो सकती है।

विद्युत्-विकास

1951-52 में राज्य में मात्र 8 मेगावाट विद्युत् शक्ति उपलब्ध थी और केवल 42 बस्तियों में ही बिजली का प्रकाश पहुंच पाया था, किन्तु आज 1800 मेगावाट से अधिक विद्युत् उत्पादन हो रहा है और इक्कीस हजार से अधिक बस्तियां विद्युत् की रोशनी से जगमगा रही हैं। प्रदेश में हो रहे विद्युत्-विकास के फलस्वरूप आज ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 2.90 लाख कुओं पर बिजली से पानी निकाला जा रहा है। राज्य सरकार अपने विद्युत् स्रोतों को बढ़ाने के लिए बराबर प्रयत्नशील है।

सिंचाई के साधन

वर्तमान में राजस्थान में 41,20,000 लाख घनफुट पानी सिंचाई के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा इन्दिरा गांधी नहर, चम्बल परियोजना (द्वितीय चरण), माही बजाज सागर, व्यास परियोजना, थीन बांध तथा बीसलपुर परियोजनाओं का काम तेजी से चल रहा है। इनके अलावा बीस मध्यम तथा कई लघु सिंचाई परियोजनाओं पर भी काम चल रहा है। इन परियोजनाओं के पूरा होने पर राज्य के सिंचित क्षेत्र में लगभग दस से बारह लाख हैक्टेयर की वृद्धि हो जायेगी।

वन एवं वन्य पशु

राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का नौ प्रतिशत भाग वनों से ढका हुआ है जो 30,506 वर्ग किलोमीटर से कुछ अधिक है। वन्य उपजों से राज्य सरकार को प्रति वर्ष नौ करोड़ रुपये से अधिक आय होती है। राज्य में तीन राष्ट्रीय उद्यान हैं, जिनके नाम हैं—रणथम्भोर वन्य जीव अभ्यारण्य, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान तथा राष्ट्रीय मरुद्यान। इनके अलावा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चौदह वन्य जीव अभ्यारण्य भी हैं। जिनमें शेर, बघेरे, हिरन, चीतल, सांभर तथा नील गाय आदि पशुओं को स्वच्छन्द विचरण करते देखा जा सकता है।

उद्योग

राज्य में इस समय पंजीकृत लघु उद्योगों की संख्या 1,22,304 है जिनमें 475 करोड़ रुपयों से भी अधिक की पूंजी लगी हुयी है तथा 4 लाख 62 हजार व्यक्तियों को रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। उद्यमियों को वित्तीय तथा तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के लिए राज्य में 27 जिला उद्योग केन्द्र तथा 171 औद्योगिक क्षेत्र काम कर रहे हैं।

पेयजल

पेयजल की उपलब्धि राजस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। राज्य के समस्त 201 नगर पेयजल सुविधा से लाभान्वित हैं। अब तक लगभग 24 हजार से अधिक गांवों में पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध थी। शेष ग्रामों में स्वच्छ पीने का पानी ग्रामीणों को सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक उपलब्ध कराने के लिए रात-दिन प्रयत्न किए जा रहे हैं।

पशुपालन

पशुपालन कृषि के बाद राजस्थान के निवासियों की जीविका का सबसे बड़ा साधन है। वर्ष 1983 की पशु गणना के अनुसार राज्य में पशुओं की संख्या लगभग 5 करोड़ थी। इनमें से गौ-वंश 134 लाख से अधिक, भेड़ 133 लाख से अधिक, बकरे-बकरियां 154 लाख तथा ऊंट 7 लाख से कुछ अधिक हैं। इन पशुओं से प्रति वर्ष 35 लाख टन से अधिक दूध, 1700 लाख अण्डे तथा 17.5 हजार टन मांस प्राप्त होता है। पशु-धन के संरक्षण के लिए राज्य के विभिन्न भागों में 1083 पशु चिकित्सा संस्थाएं कार्यरत हैं जिन पर राज्य सरकार प्रति वर्ष लगभग पौने चार करोड़ रुपये व्यय करती है।

डेयरी

दुग्ध उत्पादकों को उनके दूध का लाभप्रद मूल्य दिलाने तथा उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर दूध उपलब्ध कराने की दृष्टि से राजस्थान में 14 जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ काम कर रहे हैं। इनसे 2.14 लाख दुग्ध उत्पादक परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। राज्य में दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों एवं दूध संग्रहण केन्द्रों की संख्या 4 हजार 206 है। राज्य में प्रतिदिन औसतन 8.25 लाख लीटर दूध का संग्रह किया जाता है। इसके अतिरिक्त दूध को ताजा रखने के लिए 8 डेयरी संयन्त्र तथा 23 अवशीतन केन्द्र भी कार्य कर रहे हैं।

सहकारिता

आर्थिक शोषण को समाप्त करने में सहकारिता की भूमिका अब सर्वमान्य है। राजस्थान में भी सहकारिता आंदोलन ने सराहनीय सफलता प्राप्त की है। राज्य में विभिन्न प्रकार की 18 हजार 698 सहकारी समितियां काम कर रही हैं जिनकी सदस्य संख्या लगभग 59 लाख है। खाद्यान्नों एवं वस्तुओं के भण्डारण के लिए 2 हजार 833

गोदाम बने हुए हैं जिनकी भण्डारण क्षमता 2 लाख 55 हजार 200 मैट्रिक टन है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में लोगों को चिकित्सा सुविधा सुलभ करने के लिए 186 चिकित्सालय, 25 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 388 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 252 सहायक स्वास्थ्य केन्द्र, 111 मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र तथा 390 परिवार कल्याण केन्द्र काम कर रहे हैं। इनके अलावा 3 हजार 46 आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं औषधालय, 80 होम्योपैथिक चिकित्सालय तथा 72 यूनानी चिकित्सालय भी चल रहे हैं। इनमें 23 हजार 344 रोगी शय्याएं हैं।

शिक्षा

शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से भी राजस्थान में आजादी के बाद काफी काम हुआ है। इस समय राज्य में 35 हजार 508 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय, 2 हजार 944 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय, 5 मेडीकल कॉलेज, 5 आयुर्वेदिक संस्थान, 3 विधि महाविद्यालय तथा 63 राजकीय महाविद्यालय चल रहे हैं। इनके अलावा 5 इंजीनियरिंग कॉलेज, 32 संस्कृत महाविद्यालय तथा 34 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भी चल रहे हैं। तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए 13 पौलिटेकनिक कॉलेज तथा 48 राजकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भी कार्यरत हैं। राज्य में इस समय लगभग 27 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं।

पर्यटन

अपने गौरवशाली अतीत तथा भौगोलिक वैविध्य के कारण राजस्थान पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। इसलिए राज्य सरकार ने पर्यटन विकास को भी पर्याप्त महत्व दिया है। राज्य के उदयपुर, जयपुर, सिरसका, रणथम्भौर, अजमेर तथा जैसलमेर पर्यटन स्थलों को अधिक आकर्षक बनाने के अलावा पर्यटकों के आवास तथा भोजन की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस समय 33 पर्यटन आवासगृह राजस्थान के विभिन्न भागों में बने हुए हैं जिनमें 1700 से भी अधिक शय्याएं उपलब्ध हैं। वर्ष 1985 में राज्य में लगभग 34 लाख पर्यटक आए जिनमें 31 लाख से अधिक पर्यटक स्वदेशी तथा लगभग पौने तीन लाख पर्यटक विदेशी थे।

जनजाति कल्याण

राजस्थान में जनजातियों की संख्या 41.83 लाख है जो राज्य की कुल आबादी का 12.20 प्रतिशत है।

ये जनजातियां मुख्य रूप से बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों, उदयपुर जिले के दक्षिणी भागों, चित्तौड़गढ़ व सिरोही जिलों तथा 10 अन्य जिलों के छोटे-छोटे हिस्सों में बसी हुई हैं। भील अधिकतर राज्य के दक्षिणी भाग में पाये जाते हैं जबकि मीणों की आबादी उत्तर-पूर्वी भागों में मिलती है।

बदलाव का सिलसिला

जनजातियों के विकास के लिए राज्य में प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान जनजाति क्षेत्रों में सड़कें, चिकित्सा सुविधाएं, सिंचाई, शिक्षा, तथा पीने के पानी आदि की सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयत्न मुख्य रूप से किया गया है। वर्ष 1955-56 में इन जनजातियों के लोगों को महाजनों तथा समाज के अन्य शक्तिशाली वर्गों के हाथों शोषित होने से बचाने के लिए नए कानून राज्य विधान सभा द्वारा पास किये गये।

दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में जनजाति क्षेत्रों के विकास में कृषि तथा उससे सम्बद्ध सेवाओं को प्राथमिकता दी गई। वर्ष 1956 में बांसवाड़ा जिले में कुशलगढ़ में बहुउद्देशीय जनजाति विकास खण्ड विशेष रूप से आरंभ किया गया। तीसरी पंचवर्षीय योजना में जनजाति विकास कार्यक्रम 18 विकास खण्डों में आरंभ किया गया। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से शिक्षा, कृषि, सिंचाई, स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध कराने तथा विकास के लिए मूलभूत ढांचा तैयार करने का काम किया गया। राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयत्नों को अतिरिक्त केन्द्रीय सहायता से बल मिला। जनजाति विकास खण्ड प्रति 1 लाख की आबादी में 66.66 प्रतिशत जनजातियों की आबादी के आधार पर खोले गये हैं।

जनजाति उपयोजना का शुभारम्भ पांचवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में हुआ। इसके अन्तर्गत बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले, उदयपुर जिले की सात पंचायत समितियां, चित्तौड़गढ़ जिले की दो पंचायत समितियां तथा सिरोही जिले की आबू रोड़ पंचायत समिति सम्मिलित है। इन क्षेत्रों में जनजातियों के लोगों की आबादी कुल आबादी की 66.37 प्रतिशत है। इन क्षेत्रों में जनजाति के लोगों की कुल आबादी 18.30 लाख है जो राज्य में जनजातियों की कुल आबादी के 44 प्रतिशत के बराबर है।

जनजाति उपयोजना क्षेत्र में विकास का काम क्षेत्रीय विकास तथा व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं का मिलाजुला कार्यक्रम होता है। जनजाति उपयोजना के क्रियान्वयन के

दौरान यह अनुभव किया गया कि इसमें भी कुछ कमियां हैं तथा जनजातियों के लोगों की कुछ जनसंख्या विकास के लाभों से वंचित रह जाती है। ऐसे लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए ऐसे ग्राम समूहों में जहाँ जनजाति के व्यक्तियों की 10 हजार आबादी हो तथा वह आबादी कुल स्थानीय आबादी की 50 प्रतिशत अथवा उससे कुछ अधिक हो, माडा योजना आरंभ की गई। राज्य के 13 जिलों में ऐसे 30 छोटे विकास खण्ड हैं जिनसे 8.62 लाख जनजातियों की आबादी को लाभ मिल रहा है।

सहरिया एक आदिम जनजाति है जो कोटा जिले की शाहबाद और किशनगंज पंचायत समितियों में पाई जाती है। इनकी जनसंख्या लगभग 48 हजार है। यह संख्या इन पंचायत समितियों की कुल आबादी का 32.84 प्रतिशत है तथा राज्य की कुल जनजाति आबादी के 1.15 प्रतिशत के बराबर है। इनके जीवन-स्तर को देखते हुए इनके विकास के लिए बनाये गये कार्यक्रमों में शिक्षा, कृषि तथा स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता दी गई है।

राज्य में जनजाति विकास के लिए अपनाई गई रण-नीति का उद्देश्य इन जनजातियों में गरीबी और बेरोज-गारी को कम करना, न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के माध्यम से उनके जीवन-स्तर में सुधार लाना, आमदनी और सम्पत्ति की विषमताओं को कम करना तथा जनजाति क्षेत्रों के प्राकृतिक साधनों के अधिकतम उपयोग के लिए मूलभूत ढांचा तैयार करना आदि शामिल हैं।

उपलब्धियाँ

योजनाबद्ध प्रयत्नों के परिणामस्वरूप जनजाति क्षेत्र में साक्षरता का प्रतिशत जो 1951 में केवल 5 था अब बढ़कर 16.9 हो गया है। शिक्षण संस्थाओं की संख्या 900 से बढ़कर 3,560 हो गई है। सिंचित क्षेत्र जो केवल 68,000 हेक्टेयर था बढ़कर 2.39 लाख हेक्टेयर हो गया है खाद्यान्न उत्पादन भी 2.9 लाख टन से बढ़कर 4.74 लाख टन हो गया है। यही नहीं, जनजाति क्षेत्रों के 50 प्रतिशत ग्रामों में बिजली भी जगमगाने लगी है। लाखों आदिवासियों को व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं से लाभान्वित किया गया तथा 1 लाख आदिवासियों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के लिए आर्थिक सहायता दी गई। आदिवासियों की बड़ी समस्या पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण खेती योग्य भूमि की कमी और खेतों का छोटा आकार है। इसलिए छोटी पहाड़ियों के ढलानों पर क्यारियाँ बनाई जा रही हैं और खेती के साथ-साथ पेड़ लगाने का काम भी किया जा रहा है।

सिंचाई के साधनों के विस्तार के लिए 4 बड़े आकार की तथा 19 मध्यम आकार की सिंचाई परियोजनाएं क्रियान्वित की गई हैं, जिनसे सिंचित क्षेत्र का विस्तार हुआ है। आदिवासी क्षेत्र की गंगा – माही नदी – पर माही बजाज सागर परियोजना के पूरी होने से 61 हजार 220 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होने लगी है। जाखम बांध भी लगभग तैयार हो चुका है और इससे 7 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में अति-रिक्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्यों के तहत 15 हजार कुओं को गहरा कराने का कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। आदिवासियों को अपने कुओं को गहरा कराने की मजदूरी के रूप में गेहूं दिया जा रहा है। इस कार्य से इस वर्ष लगभग 10 हजार हेक्टेयर भूमि को सिंचाई के तहत लाया जा सकेगा।

रोजगार की नवीन योजनाएं

आदिवासी क्षेत्र में हर साल तीस हजार युवक रोजगार पाने की उम्र में आ जाते हैं। उनको रोजगार उपलब्ध कराने के लिए उद्योगों की स्थापना तथा स्वरोजगार योजना को क्रियान्वित करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस समय राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में छः कपड़ा मिलें तथा 65 हाथ-करघा इकाइयों के अलावा तीन हजार से ज्यादा लघु उद्योग इकाइयाँ काम कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता से रेशम उत्पादन का नया काम आरम्भ किया गया है। सैकड़ों आदिवासी परिवार शहतूत की खेती एवं रेशम के कीड़ों के पालन के कार्य से अपनी आजीविका कमाने में लगे हुए हैं। आशा है कि सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक एक करोड़ रुपये मूल्य के रेशम का उत्पादन होने लगेगा।

आदिवासी क्षेत्रों में फल विकास कार्यक्रम भी आरम्भ किया गया है जिसके तहत आम, अमरूद तथा नींबू आदि के पौधे निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। रतनजोत के पौधे आदिवासियों के लिए अतिरिक्त आमदनी का अच्छा साधन हैं। इस पौधे के बीज से अखाद्य तेल निकाला जाता है। अरण्ड एवं सोयाबीन की खेती को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

पशुपालन

पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए भेड़, मुर्गी, सूअर, बतख आदि की इकाइयां स्थापित की जा रही हैं। आदि-वासी युवकों को पशु धन सहायक के पद का प्रशिक्षण दिलाया जाता है ताकि वे इस पद पर कार्य करते हुए आदि-वासी क्षेत्र के पशुओं की प्रभावी देखभाल कर सकें। अनेक पशु चिकित्सालय खोले गये हैं। बांसवाड़ा व डूंगरपुर में

एक-एक दुग्ध अवशीतन केन्द्र तथा उदयपुर में दुग्ध संयंत्र स्थापित किया गया है ।

मत्स्य पालन

जनजाति क्षेत्र में मछली पालन का काम भी बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है । ये लोग परम्परागत मछली पकड़ने का काम करते आ रहे हैं किन्तु ठेकेदारों द्वारा लम्बे समय से इनका शोषण होता रहा है । जयसमंद में आदिवासियों की 18 सहकारी समितियां बनी हुई हैं । इनके द्वारा पकड़ी मछलियों की राजस संघ वाजिब व नकद भुगतान देता है । इस कार्यक्रम को व्यापक पैमाने पर चलाने के लिए बांसवाड़ा में मछुआरे को प्रशिक्षण दिया जाता है । वर्ष 1985 से 1990 तक इस कार्यक्रम पर एक करोड़ रुपये की राशि व्यय की जायेगी ।

नंगी पहाड़ियों पर वृक्षारोपण

नगरों और गांवों में वृक्षों के कटाव के फलस्वरूप पहले जो पहाड़ियां घने वनों से आच्छादित थीं, आज वे वन-विहीन हो रही हैं । वनवासियों की व्यथा इससे बढ़ी है और उनका जीवनयापन प्रभावित हुआ है । पर्यावरण और पारिस्थितिक संतुलन भी इससे बिगड़ा है । अतः वृक्षारोपण का कार्य व्यापक पैमाने पर हाथ में लिया गया है । लगभग 11 हजार हेक्टेयर बंजर पहाडियों पर पेड़ लगाने का कार्य आरंभ किया गया है । सड़कों के किनारों गाँवों में पड़त भूमि पर पेड़ लगाये जा रहे हैं । वृक्षों की खेती व सामाजिक वानिकी योजनाओं के माध्यम से गरीब आदिवासियों को अनुदान देकर पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है । इस कार्यक्रम से सामाजिक सुरक्षा के तहत अब तक 325 परिवार लाभान्वित हुए हैं । प्रत्येक परिवार को 2 हेक्टेयर भू-खण्ड हर साल के हिसाब से 15 साल तक दिया जाता है । इस कार्य के लिए 3 हजार रुपये वार्षिक अनुदान भी मिलता है । पेड़ों से प्राप्त आमदनी का 20 प्रतिशत भाग उन्हें मिलता है । इस कार्यक्रम से शनैः शनैः नंगी पहाड़ियों की हरियाली फिर लौट आयेगी और पर्यावरण संतुलन पुनः स्थापित हो जायेगा ।

छठी योजनान्तर्गत एकीकृत ग्रामीण विकास के तहत 42 हजार जनजाति परिवारों ने बैंकों व अन्य वित्तीय संस्थानों के माध्यम से आर्थिक सहायता प्राप्त कर जीवन-यापन के स्थाई साधन अर्जित कर लिये हैं ।

आदिवासियों को ग्रामीण क्षेत्रों में शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए सहकारिता की गतिविधियों का जाल बिछाया गया है । इस क्षेत्र के 4 हजार 844 गाँवों की 29 लाख आबादी को जीवनयापन में सहायता देने के लिए 237 वृहद बहुउद्देशीय सहकारी समितियां गठित की गई हैं । यह समितियाँ तथा राजस संघ आदिवासियों की ऋण आदि की जरूरतों को पूरी करता है तथा कृषि पैदावार व लघु वन उपज संग्रह के विपणन की व्यवस्था करता है ।

नारू रोग से मुक्ति का अभियान

चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से जनजाति क्षेत्रों में अब झाड़े-फूकों और भोपों के प्रति रुझान कम होने लगा है । इस समय 9 चिकित्सालय व 71 औषधालयों के अलावा 25 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 257 उप केन्द्र तथा 19 लघु स्वास्थ्य केन्द्र आदिवासियों को इस रोग से मुक्त करने में कार्यरत हैं । 146 आयुर्वेदिक औषधालय तथा 3 चल-चिकित्सालय इकाइयाँ भी चल रही हैं जो गाँवों में जाकर कैम्प लगाती हैं ।

धागे के आकार का सफेद सांप – नारू इस क्षेत्र के लोगों की सुख शांति का सबसे बड़ा शत्रु है । यह किसी भी पुरुष, स्त्री या बच्चे के किसी भी अंग से निकलकर असहाय पीड़ा देता है । इस क्षेत्र में अनेक लोग उसके कारण विकलांग बन चुके हैं ।

बावड़ियों व तालाबों का गन्दा जल पीने से होने वाले इस पीड़ादायी नारू रोग उन्मूलन के विशेष प्रयास किये जा रहे हैं । विशेष शल्य चिकित्सा शिविर लगाकर नारू के कीड़े को ऑपरेशन द्वारा बाहर निकाला जा रहा है तथा गंदे एवं दूषित पानी की 2 हजार 700 बावड़ियों को बंद कर 4 हजार हैण्ड पम्प लगाये जा रहे हैं । इसके लिए 12 करोड़ रुपये की योजना लागू की जा रही है । इस क्षेत्र के कुल 4 हजार 378 गांवों में से 3 हजार 578 ग्राम पीने के पानी की समस्या से ग्रस्त हैं । छठी पंचवर्षीय योजना की अवधि में 3 हजार 317 गाँवों को शुद्ध पीने का पानी मुहैया कराया गया । अब केवल 261 गाँव ही इस समस्या से ग्रस्त रह गये हैं जिनमें सातवीं पंचवर्षीय योजना अवधि में पीने का पानी सुलभ करा दिया जायेगा ।

इस प्रकार जनजातियों के विकास के लिए सरकार निरन्तर कारगर प्रयत्न कर रही है और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास किये जा रहे हैं ।

मरुस्थल में हरियाली

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के दूसरे सबसे बड़े राज्य राजस्थान का लगभग दो-तिहाई भाग मरुस्थलीय है । जिसका

फैलाव राज्य के ग्यारह जिलों में है। इसका क्षेत्रफल 2 लाख 8 हजार 751 वर्ग किलोमीटर है तथा 1981 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 1 करोड़ 34 लाख 83 हजार 22 है जो राज्य की कुल आबादी की लगभग 38 प्रतिशत है। वर्षा की कमी के कारण इस क्षेत्र में प्राय: अकाल पड़ते रहते हैं जिनके कारण यहाँ के पशुओं तथा पशुपालकों को राज्य के अन्य भागों में तथा राज्य के बाहर चला जाना पड़ता है। इस भू-भाग में समस्या केवल वर्षा की कमी की ही नहीं है बल्कि उसके समय पर न होने तथा असमान होने की भी है।

चुनौती का सामना

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए राज्य सरकार ने जो रणनीति अपनाई है उसमें वर्षा के पानी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने के लिए मिट्टी एवं जल के संरक्षण के उपाय, फसलों को बदल कर बोना, छोटे सिंचाई साधनों का निर्माण, भू-जल का अधिकतम उपयोग, चारे तथा चरागाहों का विकास, व्यापक रूप से पेड़ लगाना, पशु-पालन तथा डेयरी विकास तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण और ग्रामीण विद्युतीकरण आदि शामिल हैं।

आरम्भ में मरु विकास कार्यक्रम सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम के नाम से शुरू किया गया था। यह कार्यक्रम राज्य के नौ जिलों में प्रारम्भ किया गया था तथा वर्ष 1974-75 से वर्ष 1981-82 तक चला। इस कार्यक्रम पर 53.85 करोड़ रुपये की राशि व्यय की गई। मरु विकास कार्यक्रम अपने वर्तमान स्वरूप में वर्ष 1977-78 में आरम्भ हुआ। आरम्भ के दो वर्षों में यह कार्यक्रम शत प्रतिशत केन्द्र प्रवर्तित कार्य-क्रम था। इसके पश्चात् यह कार्यक्रम केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की साझेदारी का कार्यक्रम बन गया जिसमें आधा-आधा खर्चा दोनों सरकारें वहन करती थीं। अब सातवीं पंचवर्षीय योजना में इस कार्यक्रम को पुन: केन्द्र प्रवर्तित कार्यक्रम बना दिया गया है।

मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत सातवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में इस कार्यक्रम के लिए 10.96 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया था। इसमें से लगभग 8.6 करोड़ रुपये की राशि का उपयोग किया गया। चालू वित्तीय वर्ष में इस कार्यक्रम के लिए 30 करोड़ रुपये की राशि व्यय किये जाने का प्रावधान है। यह राशि मुख्यत: कृषि (जिसमें मुख्य रूप से मिट्टी और पानी के संरक्षण का कार्य है) तथा ऐसे कार्य का सर्वेक्षण, भू-जल, सिंचाई, वन विकास, भेड़ एवं चरागाह विकास, पशुपालन तथा डेयरी विकास, पशु स्वास्थ्य, राष्ट्रीय मरु उद्यान तथा पशुओं के लिए पीने के पानी के साधनों के विकास आदि पर व्यय की जायेगी।

यह कार्यक्रम क्षेत्रीय तथा जलाशयों की उपलब्धि के आधार पर बनाया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों का हर तीसरे महीने पुनर्विलोकन करना जरूरी होता है। राज्य की योजना के अन्तर्गत इस कार्यक्रम की योजनाओं का राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम तथा ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम आदि के साथ समन्वय भी आवश्यक है।

जल एवं मिट्टी का संरक्षण

मिट्टी और जल के संरक्षण की योजनाएं तैयार करने के उद्देश्य से 14 लाख 76 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्रारम्भिक सर्वेक्षण तथा 7 लाख 90 हजार 600 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत सर्वेक्षण किया जा चुका है। विभिन्न मिट्टी एवं जल संरक्षण की योजनाओं के अन्तर्गत 63,360.50 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले जलाशयों वाले क्षेत्र में चरागाहों के विकास एवं वन लगाने के कार्यक्रम क्रियान्वित किये गये हैं। 852 हेक्टे-यर क्षेत्र में खड़ीनों का निर्माण किया गया है। इसके अलावा 21 भू-खण्डों में जिप्सम प्रदर्शन लगाए गये हैं तथा छिड़काव प्रणाली से सिंचाई करने के 39 यन्त्रों का उपयोग किया जा रहा है। चालू वित्तीय वर्ष में शुष्क खेती प्रणाली के प्रदर्शन के लिए नया कार्य आरम्भ किया गया है जिसके अन्तर्गत 47 भू-खण्डों में प्रदर्शन लगाए गये हैं।

भू-जल

भू-जल स्रोतों के विकास का कार्य मुख्यरूप से दो प्रकार से किया जाता है। पहला अन्वेषण कार्यक्रम कहलाता है तथा दूसरा दोहन कार्यक्रम। अन्वेषण कार्यक्रम के अन्तर्गत 58,123 कुओं की सूची बनाली गई है तथा 51,776 पानी के नमूनों का रासायनिक विश्लेषण करा लिया गया है। इसके अलावा 473 सर्वेक्षण कुओं की खुदाई भी करली गई है। सफल होने पर ये कुएं जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को सौंप दिये जायेंगे ताकि उनसे लोगों को साफ पीने का पानी उप-लब्ध कराया जा सके। दोहन कार्यक्रम के अन्तर्गत किसानों के खेतों पर कुओं का निर्माण कराया जाता है। अब तक लगभग साढ़े सात सौ कुओं का निर्माण कराया जा चुका है।

सिंचाई एवं वन

मरु क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधाओं के विस्तार के लिए 228 कार्य कराये जा चुके हैं जिनसे 33,322 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध हो गई हैं। इसके

अलावा वन विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत 74,396 हेक्टेयर भूमि में जलाने की लकड़ी, चारा, फलों के पेड़, सड़क किनारे छायादार पेड़ लगाने तथा बालू के टीबों के स्थिरीकरण आदि के कार्य सम्पन्न किये जा चुके हैं। इसके अलावा लगभग 41,000 हेक्टेयर क्षेत्र में इस तरह के कार्य प्रगति पर हैं।

पशुपालन एवं डेयरी विकास

मरु क्षेत्रों में पशुपालन वहां के निवासियों की आजीविका का मुख्य साधन है। पशुओं में भी भेड़पालन का काम यहां के लोग मुख्य रूप से करते हैं। मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत 100-100 हेक्टेयर के 103 भू-खण्डों का रख-रखाव एवं विकास भेड़पालकों की सहकारी समितियों द्वारा किया जा रहा है। डेयरी विकास के अन्तर्गत राज्य के मरुस्थलीय क्षेत्रों में 2 हजार 101 दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों द्वारा प्रतिदिन 3·5 लाख लीटर दूध एकत्र किया जाता है। विभिन्न स्थानों पर 15 दुग्ध अवशीतन केन्द्रों का निर्माण किया जा चुका है तथा बीकानेर तथा जोधपुर की डेयरियों का विकास भी किया जा चुका है।

भूमि उपयोग नीति

मरु क्षेत्रों में बार-बार पड़ने वाले अकालों के कारण फसलें बर्बाद होती रहती हैं। इसके अलावा लगातार जुताई तथा अवैज्ञानिक चराई के कारण भूमि की उर्वरता भी बहुत कम हो जाती है। इसलिए मरु क्षेत्रों में भूमि के उपयोग की नई नीति की आवश्यकता अनुभव की गई। नई नीति के अन्तर्गत ठीकठाक वर्षा वाले क्षेत्रों में घास, मिलजुली फसलें तथा चारा, फल एवं ईंधन देने वाले पेड़ लगाये जा रहे हैं।

इस प्रकार भारत सरकार ने मरु विकास कार्यक्रम को पुनः शत प्रतिशत केन्द्र प्रवर्तित कार्यक्रम बनाकर एक नया आयाम दिया है जो राजस्थान जैसे राज्य के लिए निश्चय ही एक शुभ संकेत है। मरु क्षेत्र के निवासी इस कार्यक्रम के सहारे अपने जीवन-स्तर को बेहतर बना कर एक सुखद भविष्य की ओर अग्रसर होंगे।

विविध क्षेत्रों में हुई प्रगति के संदर्भ में यहां उन कतिपय विशेष प्रयत्नों का उल्लेख प्रासंगिक होगा, जिसके लिए वर्तमान शासन अतिरिक्त रूप से चिन्तित रहा है।

किसानों को रियायतें

भूमि सुधारों और कृषक कल्याण कार्यक्रमों की दृष्टि से राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में रहा है। वर्तमान शासन ने हाल ही में कृषकों को और अनेक सहूलियतें प्रदान की हैं। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम में "कृषि" शब्द की परिभाषा में "वानिकी" को भी शामिल करने का निर्णय लिया गया है। इससे काश्तकारों को अनुत्पादक कृषि भूमि पर सघन वृक्षारोपण करने की प्रेरणा मिली है और अपेक्षित ऋण एवं सुविधाएं मिलने से वे परम्परागत ढंग से की जानेवाली कृषि से हटकर अधिक आय प्रदान करने वाली कृषि "वानिकी" को अपनाने लगे हैं। राज्य सरकार द्वारा कृषि के लिये अनुपयुक्त भूमि के निजी वन के रूप में विकास के लिए आवंटन करने के नियम बनाये थे। इन नियमों को और अधिक उदार एवं व्यापक बनाने की दृष्टि से यह प्रावधान किया जा रहा है कि इस प्रकार की भूमि में से एक निश्चित प्रतिशत लघु एवं सीमान्त कृषकों के लिए सुरक्षित रखा जायेगा और इन काश्तकारों में भी अनुसूचित जाति एवं जनजाति के काश्तकारों को प्राथमिकता दी जायेगी।

राजस्थान के मन्दिरों और उनमें स्थापित मूर्तियों की सेवा पूजा के लिए कृषि भूमि और अन्य सम्पत्तियों के दान की गौरवशाली परम्परा रही है। काल क्रम में इन मन्दिरों के पुजारियों ने इन जमीनों को या तो अपने नाम करवा लिया या उन्हें अन्य व्यक्तियों को हस्तान्तरित कर दिया। यह काम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम के प्रावधानों के विपरीत था। इसलिये निर्णय लिया गया है कि इन भूमियों के खरीददार अथवा हस्तान्तरिती उसी प्रकार से बेदखल किये जायेंगे जिस प्रकार से सरकारी भूमियों के अतिक्रमी बेदखल किये जाते हैं।

इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के द्वितीय चरण में 50 हजार बीघा भूमि भूतपूर्व सैनिकों एवं 12 हजार 500 बीघा भूमि सीमा सुरक्षा बल के भूतपूर्व कर्मियों के लिए आरक्षित की गई है। इसमें से लगभग 52 हजार बीघा भूमि भूतपूर्व सैनिकों एवं भूतपूर्व सीमा सुरक्षा बल के कर्मियों को आवंटित की जा चुकी है। शेष लगभग 10 हजार बीघा भूमि भी शेष बचे कर्मचारियों को शीघ्र आवंटित करने की कार्यवाही की जा रही है।

काश्तकारी अधिकारों का संरक्षण और इनके प्रति जागरूकता के फलस्वरूप आपसी कानूनी विवादों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इन विवादों को तत्परता से निपटाने के लिए राज्य सरकार ने वर्ष 1985–86 में 11 नये सहायक जिलाधीश एवं दंडनायक न्यायालय खोले हैं तथा एक नया राजस्व उप खण्ड (शाहबाद, जिला कोटा) सृजित किया गया है। यह भी निर्णय लिया गया है कि जिन उप खण्ड मुख्यालयों पर उप खण्ड अधिकारी तथा सहायक जिलाधीश एवं दंडनायक दोनों हैं वहां से सहायक जिलाधीश न्यायालय हटाकर (जिला मुख्यालय को छोड़कर) उन्हें ऐसे तहसील मुख्यालयों पर पदस्थापित कर दिया जाये जहां ज्यादा मुकदमें हों या जो केन्द्र स्थान हों।

भूमिहीन व्यक्तियों को भूमि आवंटित हो जाने के पश्चात् भी उन्हें आवंटित भूमि का लम्बे समय तक कब्जा नहीं मिलता या मुकदमें शुरू हो जाते हैं। आवंटित भूमि का कब्जा 15 दिन के अन्दर दिये जाने की पाबन्दी की गई है। इसके लिए पटवारी, गिरदावर एवं ग्राम सरपंच को आवंटन के दिन ही लिखित में पाबन्द किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। यदि भूमि का विवरण पटवारी द्वारा गलत दिया गया और उसके कारण कब्जा दिया जाना सम्भव नहीं होता तो पटवारी को तत्काल निलम्बित कर कार्यवाही करने के निर्देश दे दिये गये हैं। इसी प्रकार नामान्तरकरण कार्य को भी समयबद्ध एवं सुनिश्चित करने की प्रक्रिया निर्धारित की गई है।

संक्षेप में राज्य सरकार ने राजस्व एवं काश्तकारी नियमों में संशोधन कर कृषि भूमि का मालिक उसे जोतने वाले किसान को बनाया है तथा ऐसा सामाजिक और प्रशासनिक वातावरण तैयार किया है जिससे किसानों को कृषि उत्पादन बढ़ाने में तथा अपना जीवन-स्तर सुधारने में किसी तरह की रुकावट महसूस नहीं हो।

मरुस्थलीय और पर्वतीय क्षेत्र का विकास

गत वर्ष जब प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी राजस्थान की यात्रा पर आये तो राज्य सरकार ने मरुस्थलीय विकास और पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत विभिन्न राज्यों को मिलने वाली सहायता के संबंध में अपना पक्ष प्रस्तुत किया था। प्रधानमंत्रीजी की राजस्थान की समस्याओं में गहरी रुचि का ही परिणाम है कि मरुस्थलीय क्षेत्र विकास के लिए अब केन्द्र सरकार राजस्थान को शत प्रतिशत सहायता देगी। केन्द्र ने इसे एक राष्ट्रीय समस्या माना और यह महसूस किया है कि राजस्थान की सहायता की जानी चाहिए।

इसी तरह पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत प्रधानमन्त्री के समक्ष राजस्थान ने अपना पक्ष प्रस्तुत किया था और अरावली क्षेत्र विकास के लिए केन्द्र सरकार ने 90 प्रतिशत आर्थिक सहायता देने पर सहमति व्यक्त की है। 10 प्रतिशत राशि राज्य सरकार 28 खण्डों में विकास के कार्यों पर खर्च करेगी। इस तरह मरु-क्षेत्र, जनजातीय क्षेत्रों के विकास के लिए वर्तमान शासन बहुत सजग है।

डाकू उन्मूलन

डाकू उन्मूलन क्षेत्र के लिए भी राज्य सरकार को केन्द्र से पहली बार सहायता प्राप्त हो सकी है। इसके तहत उन क्षेत्रों में पुल, सड़कें बनाने तथा डाकू उन्मूलन के लिए कार्य किये जायेंगे।

सीमावर्ती क्षेत्रों का विकास

राजस्थान सीमावर्ती राज्य होने के कारण केन्द्र से सीमावर्ती क्षेत्र विकास के लिए भी सहायता लेने में सफल रहा है। राजस्थान ने अपनी सीमा पर अधिक चौकसी बरती है। तस्करों को पकड़ने और उग्रवादियों की घुसपैठ को रोकने के लिए विशेष कदम उठाये हैं। 1986–87 में सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास के लिए 25 करोड़ 43 लाख रुपये व्यय करने का प्रावधान है, इससे 13 खण्डों में विकास कार्य होगा। सातवीं पंचवर्षीय योजना में इस कार्य के लिए 120 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

राहत कार्यों के ज़रिये स्थायी निर्माण

पिछले वर्ष जब भीषण अकाल का सामना करना पड़ा, तो राज्य में पहली बार राहत कार्यों के ज़रिये स्थायी महत्त्व के निर्माण-कार्य हाथ में लिये गये। राहत कार्यों में 6 हजार स्कूल भवन बनवाये गये, 6 हजार ही औषधालय, पटवार घर और अन्य भवन बनवाये गये। तीन हजार बंध, एनीकट, तालाब, गाइड बंध और सिंचाई के अन्य कार्य कराये गये। इनसे 85 हजार एकड़ क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई सुविधा हो सकेगी। इसी तरह 1200 भू-संरक्षण के कार्य कराये गये। इनसे 75 हजार एकड़ क्षेत्र में कृषि भूमि कटाव से बचेगी। वन विभाग द्वारा 550 कार्य कराये गये। सड़कों के 1,200 कार्य किये गये और 4,000 किलोमीटर लम्बी सड़कें बनवायी गईं। 15,000 कुए गहरे किये गये, 215 तालाबों की मरम्मत की गई और 2,000 गांवों में पीने के पानी के साधन मुहैया किये गये।

फिर अकाल से मुकाबला

राजस्थान से मानसून एक बार फिर रूठ गया है। राज्य में लगातार पड़ने वाला यह अकाल का तीसरा वर्ष है तथा पिछले 9 वर्षों में पड़ने वाले अकालों का आठवां साल है। कई वर्षों से निरन्तर अकाल पड़ने से इस वर्ष अभाव एवं सूखे की विषम स्थिति पैदा हो गई है। इस वर्ष शुरू में कुछ वर्षा होने तथा बाद में लम्बे समय तक वर्षा नहीं होने से खरीफ की फसल को भारी क्षति पहुंची है। राज्य के 38 हजार 670 गांवों में से 10 हजार 661 गांवों में खरीफ की फसलों का 50 से 74 प्रतिशत तथा 21 हजार 261 गांवों में 74 से 100 प्रतिशत नुकसान हुआ है।

2 करोड़ 70 लाख की ग्रामीण आबादी में से 2 करोड़ 52 लाख लोग अकाल से प्रभावित हुए हैं। इसी प्रकार 8 करोड़ 27 लाख पशु अकाल की चपेट में हैं।

इस गम्भीर प्राकृतिक विपदा का मुकाबला करने के लिए राज्य के मुख्यमन्त्री, श्री हरिदेव जोशी के नेतृत्व में शासन ने दोहरी रणनीति तैयार की है। इस रणनीति के

तहत प्रभावित लोगों को रोजगार, पीने का पानी, चिकित्सा सुविधा, पौष्टिक आहार के साथ ही पशुओं के लिए चारे की समुचित व्यवस्था की जा रही है। इसी प्रकार वित्तीय एवं अन्य प्रकार की सहायता भी उपलब्ध करायी जायेगी, जिससे लोग उत्पादन एवं आर्थिक विकास के कार्य को जारी रख सकेंगे।

नवम्बर, 86 से जुलाई, 87 तक 3042 लाख मानव दिवसों का रोजगार उपलब्ध कराये जाने का भी प्रस्ताव है। इसके लिए 471.51 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। इस राशि से 334.62 करोड़ रुपये मजदूरों को मजदूरी के रूप में दिया जाना तथा 156.89 करोड़ रुपये निर्माण सामग्री पर खर्च करना प्रस्तावित है। इसके साथ ही 37.5 करोड़ रुपये श्रमिकों को उपकरणों के बदले में नकद देना प्रस्तावित है। अकाल राहत कार्यों के अन्तर्गत गत वर्ष के अधूरे रहे पक्के निर्माण कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जायेगा। सूखे की रोकथाम के लिये खेतों पर नये कुओं का निर्माण, कुओं को गहरा कराने, कुण्डों का निर्माण कराने और सड़कों, भवनों, तालाबों, नदियों एवं कुओं का निर्माण कराया जायेगा। इसके साथ ही सिंचाई, भू-संरक्षण और वनों के विकास के कार्य भी हाथ में लिए जायेंगे। बुनकरों एवं हाथकरघा उद्योग में लगे लोगों को रोजगार देने वाले कार्य भी शुरू किये जाने के प्रस्ताव हैं।

गरीब को प्राथमिकता

राहत कार्यों पर एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत चयनित परिवारों के व्यक्तियों, बंधक मजदूरों, भूमिहीन मजदूरों, लघु एवं सीमान्त कृषकों और अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार दिया जायेगा। लगभग 21 हजार हस्तकला कारीगरों को उनके औजारों की मरम्मत तथा नवीनीकरण के लिए 200 रुपये प्रति इकाई और कच्चा माल खरीदने के लिए 250 रुपये प्रति इकाई के हिसाब से अनुदान उपलब्ध कराया जायेगा।

इसी प्रकार करीब 8000 हैण्डलूम एवं खादी बुनकरों को मरम्मत, लूम के नवीनीकरण एवं अन्य सामग्री तथा धागा और दूसरी सामग्री क्रय करने के लिए प्रति इकाई 200–200 रुपये का अनुदान दिया जायेगा। इसके लिए 126.50 लाख रु. की आवश्यकता होगी। इससे सूखा प्रभावित क्षेत्र के लोगों को लाभप्रद रोजगार देने में मदद मिलेगी।

अन्य सहायता

अभाव की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए राज्य सरकार ने भूमि राजस्व की वसूली स्थगित करदी है। इससे राज्य सरकार को 1262.25 लाख रुपये के राजस्व का नुकसान होगा। इसमें गत वर्ष की 559.85 लाख रुपये के राजस्व की राशि भी शामिल है। अल्पकालीन सरकारी ऋणों को मध्यावधि ऋणों में परिवर्तित किया जायेगा। इस पर 496.80 लाख रुपये का खर्चा आयेगा। लघु एवं सीमान्त काश्तकारों को ब्याज सहायता उपलब्ध करायी जायेगी और 1359 लाख रुपये के सरकारी ऋणों को चालू वित्तीय वर्ष में फिर से क्रम देने के इस कार्य के लिए अनुदान उपलब्ध कराने के वास्ते 271 लाख रुपये की जरूरत होगी।

इसी तरह ऋणों की किस्तें चुकाने और ऋण का क्रम बदलने तथा ब्याज जो इस वित्तीय वर्ष में देय होंगे, के लिए 288 लाख रुपये की जरूरत पड़ेगी। लघु एवं सीमान्त काश्तकारों के ऋणों को फिर से क्रम देने के लिए लगभग 500 लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

पेयजल

अकाल के दौरान पीने के पानी की सप्लाई का कार्य भी कठिन समस्या होगी। पानी के स्रोतों को बढ़ाने तथा पाइप लाइनों के विस्तार के लिए 140 लाख रुपये से अधिक राशि की आवश्यकता होगी जबकि 712 लाख रुपये से अधिक राशि की नगरीय क्षेत्रों में पीने के पानी की सप्लाई के लिए जरूरत होगी। 252 निष्क्रमण एवं फोडर विक्रय डिपो खोले जायेंगे और पशुओं के लिए 45 हजार क्विंटल चारा वन विभाग से प्राप्त किया जायेगा। पंचायत समितियां तथा स्वयंसेवी संस्थाओं को चारा खरीदने और पशुओं को चिकित्सा सुविधाएँ मुहैया कराने के लिए ब्याज-मुक्त ऋण दिया जायेगा। इस कार्य के लिए 157 करोड़ से भी अधिक राशि की आवश्यकता होगी।

पौष्टिक आहार एवं चिकित्सा

अकाल प्रभावित क्षेत्रों के 15 लाख बच्चों और 5 लाख गर्भवती एवं दूध पिलाती माताओं को पौष्टिक आहार एवं चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराये जाने का प्रस्ताव है। मोटा अनाज खरीद कर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या में वितरित किया जायेगा।

असहाय सहायता

वृद्ध, अपाहिज एवं असहाय व्यक्तियों, जो राहत कार्यों पर जाने में असमर्थ हैं, को असहाय सहायता के रूप में नकद राशि उपलब्ध करायी जायेगी। इन कार्यक्रमों के लिये 47 करोड़ रुपये की जरूरत पड़ेगी।

राज्य में पड़े भयंकर अकाल का मुकाबला करने के लिये राज्य सरकार ने कुल 869 करोड़ रुपये की मांग भारत सरकार से की है।

इस प्रकार राज्य सरकार ने एक बार फिर राजस्थान में पड़े भयंकर अकाल से लड़ने की सभी तैयारियां पूरी करली हैं।

A Prince Among Men

Bansi Lal
Chief Minister, Haryana

Shri Mohan Lal Sukhadia left us prematurely, but great men never die. He was not only a great patriot, an outstanding administrator of his times and a seasoned politician, but a prince among men. His contribution to the development of Rajasthan cannot be measured in words. He strode the scene like a gentle colossus - quiet but firm. He was an inspiration and a model to all of us who were trying to find our feet in public life. He impressed everyone by his qualities of head and heart, but what made him stand out amongst leaders of his generation was his sense of detachment and a totally relaxed attitude towards life. He was not the one to be perturbed whatever the provocation. He would remain cool and calm whatever the crisis. He never had a harsh word for anyone and even to those who were offensive, he would give a smile - a smile of understanding. There was nothing mean about him, no malice or vindictiveness, no desire or effort to settle personal scores. He was too big a man and was the very embodiment of goodness, wisdom and humility. Such men are indeed rare today. O

आदर्श कर्मयोगी

रामनिवास मिर्धा
वस्त्र मंत्री, भारत सरकार

सुखाड़िया साहब के नाम के साथ अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। बहुत सुन्दर शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व और उससे भी अधिक उदार मन तथा हृदय की विशालता के वे धनी थे। वे इतने महान् थे कि कोई भी उनके यहां से निराश नहीं लौटता था। वर्षों तक हमको साथ-साथ काम करने का अवसर मिला – कठिन से कठिन समय और उनके उतार-चढ़ावों में उनको देखा, लेकिन उनके व्यक्तित्व में सदा एकरूपता ही देखने को मिली। सफलता और विजय में न दम्भ और असफलता या पराजय में न निराशा, प्राय: सदा समभाव और व्यवहार में अजातशत्रु – जिन्होंने विरोधियों को भी कभी शत्रु के रूप में नहीं माना और आवश्यकता पड़ने पर उनकी सेवा को अपना सौभाग्य समझा। जिनकी मुस्कान ने कटु से कटु प्रसंगों को भी मधुर बना दिया और जिनकी सहनशीलता ने आलोचकों के अधिकतर प्रश्नों का अपने मौन से ही समाधान कर दिया। निर्णय और उनके अनुपालन में तथा राष्ट्र के हित के लिए वज्र से भी कठोर, लेकिन सामान्य जन-समुदाय के लिए फूल से भी कोमल थे। सचमुच इस प्रकार के मित्र और नेता को पाकर हम धन्य थे। जिनका जीवन केवल सेवा के लिए था। सत्ता का लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण उनका स्वप्न था। नागौर में पंचायतराज सम्मेलन में राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू के आशीर्वाद से उनके पंचायतराज का श्रीगणेश किया। हमारे युवा नेता श्री राजीव गांधी के सान्निध्य में आयोजित पंचायतराज सम्मेलन में भाग लेने के लिए वे बीकानेर गये थे – वहीं उनकी अन्तिम सभा थी और पंचायतराज पर ही उनका अन्तिम सन्देश था। पंचायतराज के कार्यक्रम के साथ ही जीवन की पूर्णाहुति होना एक विशेष अभिप्राय रखता है। वास्तव में एक आदर्श कर्मयोगी के रूप में उनका जीवन आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रकाशस्तम्भ है। O

युग परिवर्तनकारी पुरुष

नाथूराम मिर्धा
सदस्य,
राजस्थान विधान सभा

श्री मोहनलाल सुखाड़िया बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अत्यधिक पिछड़े और पुरानी रियासतों में बंटे राजस्थान को आधुनिक स्तर पर लाने का बहुत सारा श्रेय श्री सुखाड़ियाजी को जाता है।

कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखने की उनकी क्षमता न केवल अनुकरणीय ही थी बल्कि अद्भुत थी। प्रशासन एवं संगठन के क्षेत्र में मुझे उनके साथ कार्य करने का काफी लम्बा अवसर मिला है। इसी अनुभव के आधार पर मेरी यह मान्यता है कि उनकी प्रशासनिक एवं संगठनात्मक योग्यता उच्चकोटि की थी। राजस्थान के विकास की दौड़ में भाग लेकर उसे गति देने का महत्वपूर्ण कार्य श्री सुखाड़िया ने किया था—इस नाते वे युग परिवर्तनकारी पुरुष थे। राजनीतिक संबंधों में मत विभिन्नता होने के बावजूद भी उन्होंने सभी साथियों से बहुत ही मधुर सम्बन्ध वैयक्तिक आधार पर रखे थे। यह उनकी एक विशेष महत्ता थी।

श्री सुखाड़िया का जीवन हमें तथा सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी लोगों को युग-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा। ○

जाज्वल्यमान नक्षत्र

अक्षय कुमार जैन
सी-47, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली

प्राचीन राजपूताना शौर्य और बलिदान की भूमि था और आधुनिक राजस्थान श्रम और अध्यवसाय का परिचायक है। स्वराज्य से पूर्व छोटी-बड़ी अनेक देशी रियासतें राजस्थान का भाग थीं। लोकतंत्रीय भारत में राजा-रंक, श्रेष्ठी और श्रमजीवी सभी समान रूप से राजस्थान के निर्माण में भागीदार हैं। आधुनिक राजस्थान के निर्माताओं में जहाँ उसके संस्थापक पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार बल्लभभाई पटेल का नाम शीर्ष पर आता है वहाँ श्री मोहनलाल सुखाड़िया भी एक ज्वाज्वल्यमान नक्षत्र हैं।

जिस समय राजस्थान का एकीकरण, संगठन हो रहा था सुखाड़ियाजी एक युवा राजनीतिक कार्यकर्त्ता थे। और उस समय तक वे अन्तर्जातीय विवाह करके सामाजिक क्रांति का उद्घोष कर चुके थे। सामान्यजन की हैसियत से उन्होंने अपना जीवन प्रारम्भ किया और अपने श्रम तथा अध्यवसाय से शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया।

राजस्थान को राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक मार्ग पर प्रशस्तता, औद्योगिक विकास तथा सर्वांगीण उन्नति किस प्रकार हो, सुखाड़ियाजी हर क्षण इस दिशा में सोचते थे और कार्य करते थे।

स्वभाव से वे अत्यन्त स्नेहिल, विनयी तथा जागरूक प्रशासक थे। उनके समय में राजस्थान ने काफी तरक्की की। एक समय का रेगिस्तानी राजस्थान धीरे-धीरे हरियाली प्राप्त करता गया तथा आज वहाँ अंगूर की बाड़ियाँ लहराती हैं और जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर तथा बीकानेर का सूखा प्रदेश अब ऐसा सूखा नहीं रह गया जहाँ मृगमरिचिका के समान जल कहीं दिखाई न देता हो।

राजस्थान के विकास की कहानी सुखाड़ियाजी की सेवा, कुशल प्रशासन एवं नीति की परिचायक है। राजस्थान सदा उनका ऋणी रहेगा। ○

Architect of Modern Rajasthan

Sohanlal Singhania
Director,
J. K. Synthetics Limited
Kamla Tower, Kanpur

My association with the late Shri Mohanlal Ji Sukhadia, the ex-Chief Minister of Rajasthan, lasted for more than three decades, and in him, I found a man of culture and affable manners, showing concern for the down-trodden and the masses, and a Friend, Philospher and Guide to all who endeared him. He took decisions quickly, without dilly-dallying. He was clear-headed, spoke less and kept right man at the right place.

He was widely respected in Rajasthan. To him, nothing was more dear to heart than to bring about the industrial and economic development of Rajasthan. It is apt to give him the sobriquet—ARCHITECT OF MODERN RAJASTHAN, which he richly deserves.

J. K. Synthetics Limited, which occupies a pivotal place in the industrial and economic development of our Country today by being the largest producers of Synthetic fibres under one roof, owes its pre-eminence to the late Shri Sukhadia, who had taken unerring interest in its growth and development from the start. o

सर्वप्रिय सुखाड़िया

कालूलाल श्रीमाली
भूतपूर्व शिक्षा मंत्री
विद्याभवन, उदयपुर

सुखाड़ियाजी राजस्थान के मुख्य मंत्री सन् 1954 से 1971 तक रहे। यह समय राजस्थान के संघर्ष और नव-निर्माण का था। एक तरफ तो राजस्थान के राजा, महाराजा और जागीरदार कांग्रेस के विरुद्ध चुनाव में खड़े हो गये थे और दूसरी ओर सैकड़ों वर्षों से पिछड़े हुए राजस्थान का नवनिर्माण का प्रश्न था। दोनों दिशाओं में सुखाड़ियाजी ने बड़ी कुशलता और चतुराई से कार्य किया। राजा, महाराजाओं को चुनाव में हार खानी पड़ी और आज हम राजस्थान में शिक्षा, उद्योग, कृषि इत्यादि अनेक दिशाओं में जो सर्वतोमुखी प्रगति देखते हैं वह सुखाड़ियाजी ही की देन है। आज राजस्थान का जो स्वरूप हम देखते हैं वह सुखाड़ियाजी का बनाया हुआ है।

किसी से द्वेष नहीं

सुखाड़ियाजी का विशेष गुण यह था कि उनका कभी किसी व्यक्ति विशेष से द्वेष नहीं रहा। जो राजनीति में विरोधी दल के लोग थे वे भी उनके स्नेह से वंचित नहीं थे। सुखाड़ियाजी से जो भी सहायता हो सकती थी वे करते थे। सुखाड़ियाजी सदैव सब के मित्र बने रहे। मैंने सुखाड़ियाजी को कभी किसी से क्रोध या आवेश में बातचीत करते नहीं देखा। सुखाड़ियाजी सदैव प्रसन्नचित और हँसमुख रहते थे। कैसी भी कठिन परिस्थिति हो सुखाड़ियाजी हँसते-हँसते उसका सामना करते रहे।

एक बार सुखाड़ियाजी जब मोटरगाड़ी में जयपुर से दिल्ली जा रहे थे रास्ते में दुर्घटना हो गई और उनको कई दिनों तक दिल्ली में नर्सिंग होम में रहना पड़ा। मैं उस समय दिल्ली में था। नेहरूजी उनको देखने के लिये गये और डॉक्टरों को यह हिदायत कर गये कि सुखाड़ियाजी की मूल्यवान सेवाओं की देश को आवश्यकता है इसलिये उनकी देखरेख और इलाज का समुचित प्रबन्ध होना चाहिये। नेहरूजी की इस बात से ही यह स्पष्ट है कि नेहरूजी का उन पर कितना बड़ा विश्वास था। o

स्वयंसिद्ध पुरुष

बलवन्तसिंह मेहता
भू. पू. उद्योग मंत्री, राजस्थान
अस्पताल रोड, उदयपुर

श्री सुखाड़ियाजी राजस्थान के ही नहीं भारत को एक विभूति थे। वे उदारमना व कुशल प्रशासक थे। वे भारत के उन इने-गिने लोकप्रिय नेताओं में थे जो जल्दी नहीं भुलाये जा सकेंगे।

वे विरोधियों को उपकृत ही नहीं करते वरन् उनके संवर्धन में सहायता भी करते थे। यह उनके चमत्कारी व्यक्तित्व और लोकप्रियता का ही कारण था कि वे लोकतंत्र में भी प्रान्त के सर्वोच्च पद पर 17 वर्ष तक बने रहे। उनकी मृत्यु पर अपार एवं विशाल जनसमूह ने जो भाव एवं अश्रुपूरित श्रद्धांजलि दी वह तो देव दुर्लभ ही नहीं वरन् देवों की ईर्ष्या का कारण भी कहा जा सकती है। जो देश के बहुत कम नेताओं को अब तक मिल पायी।

वे किसी के बनाये हुए नेता व उत्तराधिकारी नहीं थे वरन् स्वयंसिद्ध पुरुष थे। वे सदा प्रसन्न व हँसमुख रहते। नियति व संकट के समय भी वे कभी मलिन मुख नहीं दीख पड़े। वे अपनी सदा प्रसन्न मुद्रा व मधुर मुस्कान से विरोधियों को भी प्रेम से आकर्षित कर लेते थे। मेरा राजनीतिक एवं राजनयिक मामलों में प्रायः उनसे विरोध रहता किन्तु मेरे प्रति उनके प्रेम व सम्मान में कभी कोई न्यूनता नहीं आने दी। यह उनकी महानता एवं विशालता थी। ०

राज्य की प्रगति के आधार

पुरुषोत्तमदास कुदाल
अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली

राजस्थान के मुख्यमंत्री पद को 17 वर्ष तक सुशोभित करने वाले श्रद्धेय सुखाड़ियाजी ने जब शुरू में मुख्यमंत्री का पद संभाला तो यह राज्य हर क्षेत्र में पिछड़ा और अविकसित राज्य था। राज्य की पिछड़ी जातियों, जनजातियों को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। श्रद्धेय सुखाड़ियाजी ने जिस गति से सम्पूर्ण राजस्थान का विकास किया, वह अविस्मरणीय है। राज्य की अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़ी जातियों को शिक्षित करने से लेकर उन्हें राज्य के हर एक विकास कार्य में सहयोग दिया, उन्हें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने का पूरा-पूरा मौका दिया।

आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि वर्तमान उन्नत और प्रगतिशील राजस्थान का जो रूप हम देख रहे हैं, उसका सारा श्रेय श्रद्धेय सुखाड़ियाजी को ही जाता है। दूसरे शब्दों में यदि उन्हें वर्तमान राजस्थान का निर्माता कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। ०

राजस्थान के पथ-प्रदर्शक

डॉ० इकबाल नारायण
निवृत्त कुलपति
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ.प्र.)

समाजशास्त्र के विद्वान होने के नाते मैं श्री सुखाड़िया को आधुनिक राजस्थान के निर्माता के रूप में देखता हूँ। उन्होंने न केवल राजस्थान को राजनीतिक स्थिरता देकर प्रगति का अवसर दिया बल्कि साथ ही राजस्थान की सामंती समाज के प्रजातन्त्रीकरण में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस सन्दर्भ में उनके द्वारा पंचायतराज की स्थापना के सन्दर्भ में किये गये प्रयास उल्लेखनीय हैं। जिससे न केवल प्रजातन्त्र की जड़ें राज्य की भूमि में मजबूत हुई बल्कि प्रशासन और सामान्य जनता के बीच की दूरी भी कम हुई। यह भी स्मरणीय है कि वो भारत के उन मुख्यमंत्रियों में से एक थे जिन्होंने विशेषकर उच्चशिक्षा के महत्व को आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में समझा और उनके प्रतीक मात्र में उन्होंने स्वयं शिक्षा का कार्यभार मुख्यमंत्री के पद के साथ संभाला जिससे न केवल शिक्षा का महत्व उभरकर सामने आया बल्कि वो राजस्थान के आधुनिकीकरण के यन्त्र मात्र शिक्षा को सही दिशा दे पाये। मेरी यह धारणा है कि श्री मोहनलाल सुखाड़िया का राजस्थान के इतिहास में आधुनिकीकरण और प्रजातन्त्रीकरण की दिशा में प्रयास के लिये और इन दोनों के यन्त्र मात्र शिक्षा के प्रसार के लिये एक महत्वपूर्ण स्थान है। उनके द्वारा अपनाये हुआ मार्ग राजस्थान का हमेशा पथ-प्रदर्शन करता रहेगा और इसके अनुकरण के फलस्वरूप ही वो उन्नति के अग्रसर हो पाये। ○

उदारमना सुखाड़िया

श्रीमती कान्ता कथूरिया
जिला प्रमुख, बीकानेर

मैं सन् 1967 में पहली बार विधायक चुनी गई थी। सुखाड़िया सरकार का गठन होने के पश्चात् प्रशासन में कुछ हेर-फेर किये गये। जिलों में भी कतिपय अधिकारियों के स्थानान्तरण हुए। बीकानेर जिले में एक अधिकारी के पद स्थापन पर अपनी आपत्ति प्रकट करने में मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया के पास पहुँची। वे बड़ी देर तक मेरी बात सुनते रहे, किन्तु कुछ नहीं बोले। मैंने झल्लाकर कहा. "आप तो कार्यकर्त्ताओं की कुछ भी सुनना नहीं चाहते. कर दीजिये उनका दमन।" इस पर वे थोड़ी हरकत में आये और फ़ोन का चोगा उठाकर सम्बन्धित अधिकारी को तत्काल वांछित परिवर्तन के आदेश दिये। मैं हतप्रत रह गई। मेरे चेहरे पर पसीना आ गया। मैं बिना कुछ आभार प्रकट किये उठकर चल दी। संकोचवश कई दिनों तक मैं उनसे मिलने से कतराती रही। एक दिन सचिवालय के बरामदे में उन्होंने मुझे बचकर निकलते हुए देख लिया और आवाज देकर बोले. "भई कान्ताजी, अब तो नाराजगी खत्म करो।" यह था उनका एक कार्यकर्त्ता के प्रति सहजभाव। वे सचमुच बड़े उदारमना थे। ●

सामाजिक सम्बन्धों के निष्णात राजपुरुष

□

भैरोंसिंह शेखावत
भूतपूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान
सी 51, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर

सुखाड़ियाजी का व्यक्तित्व आजन्म संघर्ष की देन है राजनीतिक जीवन में वह दलीय संघर्ष में तो उलझे ही रहे साथ ही नवगठित राजस्थान की समस्याओं ने उनके समक्ष निरन्तर संघर्ष का वातावरण ही बनाये रखा, लेकिन यह संघर्ष उनको विचलित नहीं कर सके। उनकी व्यवहार-कुशलता समस्या और उसके समाधान का ज्ञान और समाधान करने की इच्छा ने उनको ऐसी शक्ति प्रदान की कि जिससे वे निरन्तर सफलता की ओर अग्रसित होते रहे। वैसे तो मेरा परिचय था ही परन्तु वास्तविक परिचय एक संघर्ष के वातावरण में ही हुआ। सीकर में जिला बोर्ड द्वारा ऐसे कर की वसूली हो रही थी जो संविधान लागू होने के पश्चात् वसूली योग्य नहीं था। सीकर में इसके लिए आन्दोलन हुआ और मेरे नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने उनसे इस संबंध में भेंट की। मैं निरन्तर जोश में बोलता रहा और वे शांतचित्त सुनते रहे। अंत में उन्होंने यह कहकर इस प्रकरण को समाप्त कर दिया कि आपकी माँग सही है किन्तु यह बात तो मैं आपके उत्तेजित हुए बिना ही स्वीकार कर लेता हूँ। हमारी माँग भी मंजूर हुई और मुझे यह भी अहसास हुआ कि ऐसे व्यक्ति के समक्ष तर्क से ही सफलता प्राप्त हो सकती है उत्तेजना दिखाने से नहीं।

उदयपुर से एक बार हम दोनों ट्रेन से जयपुर के लिए रवाना हुए, वे I क्लास में थे मैं III क्लास में। मावली स्टेशन पर उतर कर वे मेरे डिब्बे के पास आये और नीचे उतर कर एक चाय की स्टाल पर ले गये वहाँ खड़े-खड़े चाय पी, बहुत भीड़ इकट्ठी हो गयी। मुझे आश्चर्य हुआ एकत्रित लोगों में से अधिकांश से वे नाम से पुकार कर बात कर रहे थे और नाम से पुकार कर ही सबका कुशल-क्षेम पूछ रहे थे। राजनीति में इस प्रकार के व्यवहार जनमानस पर उनकी एक अमिट छाप छोड़ता है।

विधानसभा में उनकी बहुत बार तीखी आलोचना हुई किन्तु कभी उनको विचलित होते नहीं देखा। एक बार नाथद्वारा के खजाने के मामले में वे उत्तेजित हुए और उसी दिन गलती कर बैठे। इस विषय में मेरी कई बार उनसे बातचीत हुई और उन्होंने स्वीकार किया कि वे अनावश्यक ही उत्तेजित हुये। मैं निरन्तर अपने विधायक साथियों को कहता रहता था कि विधानसभा में सुखाड़ियाजी को जो उत्तेजित कर लेगा वह सफल विधायक होगा।

किसी भी गम्भीर मसले पर उस विषय की गम्भीरता को मानते हुए उसके तीखेपन को वे अपने वाक्चातुर्य से कम करने के तो विशेषज्ञ ही थे। विपक्ष की ओर से यदि एक भी कोई कमजोर बात उठ गयी तो वहीं से वे अपना भाषण प्रारम्भ करके हर बिन्दु पर सरकारी पक्ष प्रस्तुत करते, और ऐसे वातावरण में विवादास्पद मामलों को निरुत्तर ही छोड़ जाते।

उनकी पुत्रियों के एक-एक दिन के अन्तर से विवाह निश्चित हुए। निमन्त्रण-पत्र विधान सभा की लॉवी में रख दिये गये, मुझे यह बुरा लगा और मैं शादी में शामिल नहीं हुआ। मेरी अनुपस्थिति उन्हें अखरी। उन्होंने निरंजननाथजी आचार्य को मेरे पास भेजा। मैंने निमन्त्रण भेजने की व्यवस्था को अपमानजनक माना। आचार्यजी चले गये और इसके 15 मिनट बाद सुखाड़ियाजी सपरिवार मेरे घर आ गये, अपनी इस भूल को स्वीकार किया और अपने साथ मुझे विवाह स्थल पर ले गये। वे सामाजिक सम्बन्धों को कितना महत्त्व देते थे इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है।

विधानसभा में एक बार उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनता के समक्ष झुकने या घुटने टेकने में संकोच नहीं होता परन्तु खुशी होती है—ये शब्द उनके अनमोल हैं। और राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वाले के लिए मार्गदर्शक हैं। ये बात गंगानगर आन्दोलन के सम्बन्ध में विधान सभा में उत्पन्न वाद-विवाद के संदर्भ में उन्होंने कही। गंगानगर एजीटेशन के सम्बन्ध में हम कई बार उनसे मिले। हमारी माँगें स्वीकार नहीं की गयीं। आन्दोलन चला, सरकार ने माँगें मंजूर करलीं। तब मैंने कहा था सुखाड़ियाजी के हमने घुटने टिका दिये।

राजस्थान में सुखाड़ियाजी ने जितना प्रवास किया उतना किसी भी राजनेता ने नहीं किया होगा। प्रदेश के हर क्षेत्र की समस्याओं का उन्हें व्यक्तिगत ज्ञान होता था और इस कारण वे समस्याओं का समाधान करने में सरकारी अधिकारियों की जानकारी पर निर्भर नहीं रहते थे।

संसद सदस्य बनने पर एक बार मैंने उनसे कहा कि आपको संसद सदस्य नहीं बनना चाहिए था—उनका सटीक उत्तर था कि राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वाला व्यक्ति निष्क्रिय रहेगा तो न वह अपने साथ न्याय करेगा और न जनता के साथ। इसकी कोई चिन्ता नहीं कि वह पद पर रहे या नहीं रहे, लेकिन उसे निरन्तर सक्रिय रहना चाहिये।

1972 में मेरी एक दुर्घटना में टाँग टूट गयी थी। मैं 2½ वर्ष तक निरन्तर प्लास्टर में रहा—वे कई बार मुझसे मिलने को आये। उनको किसी ने जानकारी दी कि अर्थाभाव से मैं बहुत ही संकट में हूँ—उन्होंने बंगलौर जाकर मेरे कुछ मित्रों से ड्राफ्टों द्वारा कुछ रुपये भिजवाये—मैंने वे सारे ड्राफ्ट वापस लौटा दिये तब उनका एक पत्र मिला जो मेरे पास सुरक्षित है कि आपने यह ड्राफ्ट वापस भेजकर अपने व्यक्तित्व का निखार किया है लेकिन राजनीति में काम करने वाला व्यक्ति अन्य दलों के व्यक्तियों से सामाजिक क्षेत्र में भी दूरी रखता है—तो यह उसके साहस की कमी का संकेत है। प्रशासन में वे अविश्वास से काम नहीं करते थे। इसी का कारण रहा वे प्रशासनिक अधिकारियों को विश्वास में लेकर राजस्थान के विकास की आधारभूत व्यवस्थायें कर पाने में सफल हुए।

मेरी उनसे अन्तिम भेंट दिल्ली में हुई थी। मैं अपनी पुत्री के विवाह का निमन्त्रण लेकर उनके पास गया था। वे थोड़े अस्वस्थ थे उन्होंने कहा था मैं 3 दिन पूर्व आजाऊँगा। संयोग की बात है विवाह के ठीक एक दिन पूर्व ही उनका स्वर्गवास हो गया।

आज के युग में राजनेताओं का परिवार कई बार उनकी राजनीति में संकट का कारण बनता है, परन्तु सुखाड़ियाजी सौभाग्य से पारिवारिक संकट में कभी नहीं उलझे। परिवार उनका संबल रहा। भाग्यशाली नेताओं को ही इस प्रकार का पारिवारिक सम्बल मिलता है।

विश्वसनीयता के प्रश्न पर सुखाड़ियाजी का जीवन अनुकरणीय रहेगा—जब कभी भी किसी को आश्वासन दिया उसका उन्होंने निष्ठापूर्वक पालन किया। आज के युग में उनकी यह विश्वसनीयता देखने को बहुत कम मिलती है।

उनकी मुस्कराहट भी विचित्र थी, उसका कोई सही अनुमान नहीं लगा सका। उनके हाव-भाव से व्यक्ति की पीड़ा तो तत्काल दूर होती थी किन्तु वह उनके प्रति आदर का भाव लेकर निकलता था। राजनीतिक क्षेत्र में कार्यकर्ता में इस प्रकार की मुस्कुराहट कई प्रकार की समस्याओं के समाधान का स्वतः ही एक आधार बन जाता है।

राजस्थान की राजनीति में सुखाड़ियाजी ने जीवन-पर्यन्त अपना प्रभाव बनाये रखा। अभिमान से दूर परन्तु व्यवहार में निपुणता, मृदुभाषी ये कुछ उनके गुण थे जिनके कारण राजनीतिक जीवन में उनको सफलता प्राप्त हुई। विरोधियों का सम्मान करना भी उनका स्वभाव बन गया था जिसके कारण कई बार उलझनें भी उत्पन्न हुईं किन्तु उनके स्वभाव में कभी परिवर्तन नहीं आया।

भारतीय संस्कृति और संस्कृत के अनन्य संपोषक

मोतीलाल जोशी
महामंत्री, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन
शाहपुरा बाग, आमेर रोड, जयपुर

भारतीय संस्कृति और संस्कृत के पण्डितों के प्रति प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया के मानस में अनन्य आस्था और प्रगाढ़ निष्ठा थी। संस्कृत मनीषियों और संस्कृत शिक्षाविदों को वे अधिक से अधिक समृद्ध बनाकर ऊंचाइयों पर प्रतिष्ठित करने हेतु सदैव तत्पर रहे। यों तो उनका स्निग्ध स्नेह राज्य के विभिन्न भागों में फैले देववाणी के आराधकों को वरदान के रूप में प्राप्त होता रहा है किन्तु मैं भी उनके स्नेहामृत की वृष्टि से सदैव सिंचित रहा हूं।

1952-53 में बैराठ-तहसील कांग्रेस के मंत्री व तहसील भारत सेवक समाज के संयुक्त संयोजक के रूप में मैं तहसील के अभाव-अभियोगों, जागीरदारी प्रथा से उन्मुक्त किसानों और अनुसूचित जाति, जनजाति के कल्याणकारी कार्यक्रमों को लेकर राज और समाज से सम्पर्कित हो चुका था। कुछ अर्से तक लोकनायक व्यास व जयपुर जिले के गांधी के नाम से विख्यात श्री रामकरणजी जोशी के अनुयायियों में हमारी गणना थी। राजस्थान के मंत्रिमण्डल में फेरबदल के बाद बागडोर सुखाड़ियाजी ने संभाली और 1955 में निरीक्षक संस्कृत पाठशालाएँ राजस्थान के जयपुर कार्यालय का स्वरूप सीमित कर देने और उसे जयपुर से हटाकर बीकानेर स्थानान्तरित करने के प्रसंग से शेखावाटी के नरपुंगव संस्कृत विद्वानों को साथ लेकर मैंने उनसे पहली भेंट की। 8 सिविल लाइन्स स्थित निवास पर वैदिक स्वस्तिमंत्रों के आशीर्वाद से अभिभूत उनके ओजस्वी मुखमण्डल के प्रभापूर्ण लोचन स्निग्ध थे। उत्तर था — आप विद्वत् मण्डली ने कैसे कृपा की? हमने एक ज्ञापन राजस्थान में परम्परागत संस्कृत शिक्षा के पुनरुद्धार और योजनाबद्ध विकास के लिए एक समिति गठित करने तथा संस्कृत शिक्षा के लिए वाराणसी के बाद दूसरा स्थान रखने वाले जयपुर से संस्कृत निरीक्षणालय स्थानान्तरित न करने का अनुरोध किया था। उसी क्षण वांछित आदेश मुख्यसचिव को प्रदान कर दिये गये। राजस्थान में संस्कृत शिक्षा के विकास का श्रीगणेश यहीं से होता है। इसके बाद जिला भारत सेवक समाज के मनोहरपुर

अधिवेशन पर 1956 में उनका मनोहरपुर पदार्पण हुआ और वहाँ की छोटी सी संस्कृत पाठशाला को देख कर उन्होंने वहीं उसकी राज्याधीनता के आदेश दे दिये जो जुलाई में क्रियान्वित हुए। संस्कृत समिति की नियुक्ति लक्ष्मीलालजी जोशी की अध्यक्षता में हो चुकी थी। उसकी रिपोर्ट 1958 में आई। यह निःसन्देह साहसपूर्ण कदम था कि राजस्थान संस्कृत सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन पर उन्होंने कमेटी की सभी सिफ़ारिशों को लागू करने की तथा संस्कृत शिक्षा के विकास और देखरेख के लिए राजस्थान में स्वतंत्र संस्कृत विभाग की स्थापना की घोषणा की।

लोकसभाध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् अयंगर जब संस्कृत शिक्षा क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के अवसर पर महापुरा आये थे तो उन्होंने मुक्तकण्ठ से उद्गार प्रकट करते हुए कहा था कि "राजस्थान में दो महत्त्वपूर्ण काम हुए हैं – एक तो सत्ता का विकेन्द्रीकरण और दूसरा संस्कृत शिक्षा के लिए स्वतंत्र विभाग। इसके लिए श्री सुखाड़िया बधाई के पात्र हैं।" राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महाधिवेशनों के अवसर पर राजस्थान का संस्कृतजगत पूर्ण श्रद्धा और आदर के साथ उनको याद करता था और वे बड़े उत्साह और प्रेम के साथ पण्डितों के बीच आकर अपने आपको गौरवान्वित पाते थे। अजमेर, भीलवाड़ा और मनोहरपुर के महाधिवेशनों पर संस्कृत शिक्षा के विकास के लिए उनके द्वारा की गई घोषणाएँ देश में संस्कृत शिक्षा के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। इस दृष्टि से राजस्थान को ही गौरव प्राप्त हुआ है कि यहाँ के संस्कृत विद्यालयों और महाविद्यालयों की कार्य शैली, शिक्षण, योजना प्रशासनिक पद्धति और नियन्त्रण, भौतिक समृद्धि आदि की दृष्टि से भारत सरकार के शिक्षाधिकारियों की बैठक में यह सर्वसम्मत निर्णय 1971 में लिया कि देश की सभी राज्य सरकारों को संस्कृत निदेशालय के गठन के लिए राजस्थान सरकार का अनुकरण करना चाहिए।

केन्द्रीय संस्कृत कमीशन जो पश्चिम बंगाल विधान परिषद् के अध्यक्ष डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या की अध्यक्षता में गठित हुआ था और जिसने राजस्थान के दौरे के समय सुखाड़ियाजी से साक्षात्कार करके अपनी यह राय जाहिर की थी कि राजस्थान उच्च संस्कृत शिक्षा के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित किया जाय। यह स्वर आजीवन सुखाड़ियाजी के मनमानस में स्थापित रहा और उन्होंने इसे मूर्त रूप देने के लिए संस्कृत-आयुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना की संभावनाओं पर विचार करने लिए श्री विष्णुदत्त शर्मा तत्कालीन शिक्षा सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया। राज्य सरकार ने संस्कृत शिक्षा के विकास का जायजा लेकर उस समय भले ही राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत संकाय का गठन कर इस समस्या का तत्कालीन निराकरण कर दिया हो किन्तु यह सत्य है कि वे स्वतंत्र संस्कृत विश्वविद्यालय राजस्थान में देखना चाहते दे और इसके पीछे तत्कालीन राज्यपाल डॉ० सम्पूर्णानन्द जो बनारस में स्वतंत्र संस्कृत विश्वविद्यालय कायम करने के बाद राजस्थान आये थे – उनकी भी इच्छा थी। अस्तु, राजस्थान संस्कृत जगत् यह महसूस करता है कि राजनेता और देश में महान् मुख्यमंत्री माने जाने वाले सुखाड़ियाजी के साथी और अनुयायी राजनीतिक संस्कृत शिक्षा के लिए उच्च शोध संस्थान एवं संस्कृत विश्वविद्यालय की योजना को साकार करेंगे तो भारतीय संस्कृति और उससे देश में साम्प्रदायिक सद्भाव, सौहार्द, नैतिकता, एकता, देश की अखण्डता के लिए, वह एक सशक्त साधन होगा और महामना सुखाड़ियाजी के प्रति सच्ची भावाञ्जलि होगी।

कला, संस्कृति, साहित्य और इतिहास को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी उत्कट अभिलाषा रही और वे निःसंकोच भाव से इनका सम्पोषण करते रहे। 1966 से आजीवन राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में संस्कृत जगत् को सम्बल प्रदान करना संस्कृत के प्रति उनके प्रेम, स्नेह और विश्वास का जीवन्त निदर्शन है। संस्कृत कर्मी के रूप में मैं उनके स्नेह, कृपा और आशीर्वाद का सदैव पात्र रहा हूँ और जो कुछ भी संस्कृत सेवा के व्रत को लेकर जो लोकहितकारी कार्य की योजनाएँ सरकार को दी जाती रही हैं – उनकी क्रियान्विति एकमात्र सुखाड़ियाजी के संरक्षण से ही हो सकी है। ऐसे यशस्वी, कर्मचेतना सम्पन्न और भासमान व्यक्तित्व के प्रति मेरा हार्दिक अभिनन्दन और अभिवन्दन।

श्री सुखाड़िया की त्रिगुणात्मक शक्ति संसाधना

पं० जगदीश शर्मा, वेदाचार्य
511, शंकरगूर्जर मार्ग, चाँदी की टकसाल
जयपुर

वीर भोग्या वसुन्धरा

राजस्थान की वीर भोग्या वसुन्धरा को अपने जन्म से अलंकृत करने वाले श्री सुखाड़िया में बाल्यकाल से ही अपने माता-पिता के नैसर्गिक गुणों की झलक तो दिखाई देती ही थी, किन्तु उनकी सद्वृत्ति, दूरदर्शिता, मिलनसारिता और आत्मीयता के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं साहित्य और हिन्दू धर्म के प्रति गहन आस्था तथा उसमें विशिष्ट निष्ठा का गुण संभवतः ईश्वरीय अद्‌भुत देन थी। जिसके बल पर सुखाड़ियाजी ने अपने जीवन में बडी से बड़ी सामाजिक, राजनीतिक बाधाओं, आपत्तियों और कष्टों का अपनी मन्द मुस्कराहट के साथ हँसते-हँसते सामना करते हुए उन पर विजयश्री प्राप्त की। चाहे वे कैसी भी परिस्थिति में रहे हों किन्तु उनकी अपनी धार्मिकनिष्ठा में कभी न्यूनता अथवा उपेक्षा का भाव नहीं आया, बल्कि यह कहा जाये कि श्री सुखाड़ियाजी की इस ओर निष्ठा में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

दैवीय शक्ति की मान्यता

श्री सुखाड़ियाजी बाल्यकाल से ही त्रिगुणात्मक शक्ति भगवती पराम्बा के चरणों में अनुराग रखते थे और अपनी आत्मशक्ति की वृद्धि के लिए सतत आराधन एवं मानसिक चिंतनशील रहते थे। राजनीतिक प्रशासन में सब धर्मों का समावेश एवं उनका सम्मान तथा दूसरी ओर अपने धर्म की अनुपालना और उसमें निष्ठा – ये दोनों ऐसी बातें हैं जो

किसी एक व्यक्ति के गुणों में समान रूप से देखने का उदाहरण सहसा ही प्राप्त होता है। श्री सुखाड़िया ने अपने संस्कारों में इन दोनों बातों को शब्द और अर्थ की भाँति संयुक्त रूप से समाविष्ट किया। उन्होंने महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य के मंगलाचरण

"वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थः प्रतिपत्तये,
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।"

का जीवन में अपनी कार्य एवं वैचारिक शैली के माध्यम से व्यावहारिकता का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया।

आबाल – वृद्ध – नरनारी

ये ही गुण संभवत श्री सुखाड़ियाजी को मानव जाति के विकास, उसकी संस्कृति एवं सभ्यता को निरन्तर उन्नति प्रदानकारक बना सके और उनका उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण व्यक्तित्व निखरकर जनसाधारण के समक्ष आया, जिससे प्रान्त के आबाल – वृद्ध – नरनारी श्री सुखाड़िया को अपने हृदयकमल के अन्तस्थल में बसाये हुए हैं और उनका नाम जब भी प्रान्त एवं राष्ट्रीय स्तर की राजनीति, समाज-सेवा एवं वैयक्तिक विचारों के संदर्भ और प्रसंग में आता है तो देश एवं प्रान्त के नागरिकों में उनके व्यवहार तथा गुणों के कारण मस्तक साभिवादन के साथ महान् नेता, समाज-सुधारक, कर्त्तव्यनिष्ठ, तपःपूत श्री सुखाड़िया के प्रति अगाधनिष्ठा एवं स्नेह और आत्मीयता की प्रत्यक्ष झलक देखने को मिलती है।

विनम्रता के आगार

जैसे-जैसे श्री सुखाड़िया का व्यक्तित्व निखरकर सामने आया और उनके द्वारा महत्त्वपूर्ण दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का निर्वहन किया जाने लगा तो उनमें विनम्रता बढ़ती ही चली गई। राजर्षि भर्तृहरि के विचारों में "भवन्ति नम्रास्तखः फलोद्गमैः" के आधार पर वृक्ष पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होने पर अपने इन तीन गुणों के अतिरिक्त विनम्रता का चौथा विशिष्ट गुण और प्राप्त कर लेता है। इसी कारण श्री सुखाड़िया अनेक महत्त्वपूर्ण पदों के अतिरिक्त राजस्थान के शासन में सुदीर्घ अवधि तक सम्बद्ध रहे। उसमें महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शासक को मंत्र एवं उत्साह इन दो शक्तियों से सम्पन्न होना चाहिए और ये दोनों बातें सुखाड़ियाजी के जीवन में निरन्तर बनी रहीं; क्योंकि विजय चाहने वाले व्यक्ति के बढ़ते हुए स्वामित्व के लिए मूल रूप से ये अत्यावश्यक हैं।

आत्मसम्पत्ति के मूल

शासक द्वारा शासन तभी सफलतापूर्वक संचालन किया जा सकता है जब शासनेच्छु: मंत्र एवं उत्साहशक्ति का स्वयं सम्पादन के लिए प्रयत्न करें; क्योंकि ये दोनों जय की इच्छा वाले की उदय होती हुई आत्मसंपत्ति के मूल कारण हैं, अतः श्री सुखाड़िया ने अपने जीवन में त्रिगुणात्मक शक्ति की सतत संसाधना की।

शक्ति संसाधना के परिणामतः श्री सुखाड़िया में महान् गुणों के समाविष्ट हो जाने के फलस्वरूप प्रकृतियाँ अवयव और मंत्र गोपन ही उनका सम्पूर्ण कवच, गुप्तचर नेत्र और दूत मुख का कार्य करते रहते थे और इसी परिप्रेक्ष्य में श्री सुखाड़िया बुद्धिशस्त्ररूपी बल के द्वारा आलोचकों का मुखबन्द कर देते थे और आलोचकों की उनमें स्वतः ही निष्ठा उत्पन्न हो जाती थी।

सर्वविध अभ्युदय

सर्वविध अभ्युदय एवं जनकल्याण की प्रमुख कामना रखनेवाले श्री सुखाड़िया ने अपने कार्य एवं व्यवहार से मानव एवं राष्ट्रोत्थान के लिए आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक त्रिविध प्रयासों के प्रति सदैव सत्-चित्-आनन्द के विचारों का अनुभव प्राप्त किया। त्रिगुणात्मक शक्ति का यह महान् उपासक इन तीन गुणों की संसिद्धि में दो फरवरी को संसार में दिव्यस्वरूप, कीर्तिमान कृतित्व एवं व्यक्तित्व का निदर्शन हमारे समक्ष प्रेरणास्वरूप प्रदान कर शक्तिपुंज श्री सुखाड़िया शक्तिस्वरूपा भगवती की गोद में लीन हो गए।

इस महान् आत्मा एवं व्यक्तित्व के धनी श्री सुखाड़िया को एक सच्चे राजनीतिक, प्रशासक, समाजसुधारक, गरीबों के मसीहा, जनकल्याण एवं परोपकार का हितैषी, हिन्दू संस्कृति एवं धार्मिक निष्ठा का सजग प्रहरी के रूप में हम भारतवासी सदैव स्मरण करते हुए भावी राष्ट्रोन्नायक, समाजसेवी आदि सभी वर्ग के व्यक्ति इनके कार्यों एवं आदर्शों से अपने जीवन में आचरण एवं व्यवहार द्वारा राष्ट्रोन्नति में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका की भागीदारी निभाने का सत्संकल्प करेंगे।

राजस्थान का वर्तमान स्वरूप : सुखाड़ियाजी की देन

□

रतनलाल ताम्बी
विधायक,
जहाजपुर (भीलवाड़ा)

आधुनिक राजस्थान के निर्माता श्री मोहनलाल सुखाड़िया का प्रजामंडल के जमाने से हमारे इलाके में परिवार से एक निकटतम का संबंध रहा है। मेवाड़ राज्य में दोहरी, तिहरी गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी जनता को उस युग में जागृत करना अपने आप में एक खतरा था, किन्तु युवा श्री सुखाड़िया ने एक सामान्य परिवार में पैदा होकर जिस अदम्य साहस से राजाशाही और जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध जो कार्य किया है उसको राजस्थान और विशेष तौर से मेवाड़ का वह इलाका विस्मृत नहीं कर सकता है। श्री सुखाड़िया गरीबों, आदिवासियों एवं पददलितों के आधारस्तंभ के रूप में विशेष तौर से हरिजन सेवा जैसे रचनात्मक कार्य में एक उन्नायक के रूप में अपने को प्रतिष्ठापित करते हुए, उन इने-गिने नेताओं में अपने कर्म, विवेक और दूरदर्शिता के आधार पर अग्रिम पंक्ति के नेता के रूप में सर्वमान्य होकर एक सशक्त नेतृत्व और मार्गदर्शन देकर कार्यकर्त्ताओं की एक लम्बी फौज के कप्तान के रूप में माने जाने लगे।

सर्वप्रथम 1946 में हमारे क्षेत्र में इनको देखकर जो एक प्रेरणा और उत्साह मिला उसी का परिणाम है कि एक साधारण कार्यकर्त्ता के रूप में जनता के लिए काम करने का मेरे मन में संकल्प बना और यह कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मेरे इस सार्वजनिक जीवन को बनाने का श्रेय श्री सुखाड़ियाजी की देन है। वे हमेशा कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा, मार्गदर्शन और उत्साह संचारित करने वाले, बड़ी से बड़ी चुनौती के लिए संघर्ष करने वाले प्रेरक के रूप में माने जा सकते हैं।

आज का राजस्थान श्री सुखाड़िया की श्रम एवं साधना की ही देन है। इस विराट व्यक्तित्व ने राजस्थान के इतिहास को ही नहीं भूगोल को बदलने का श्रेय प्राप्त किया है। राजस्थान के बालू रेत के टीबों में राजस्थान नहर जिसको अब इंदिरा गांधी नहर कहा जाता है – श्री सुखाड़ियाजी के प्रशासन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में युगों-युगों तक याद रहेगी। हाड़ौती अंचल में चंबल बांध का निर्माण, रावतभाटा, जवाहर सागर, गांधी सागर जैसी सैकड़ों परियोजनायें सुखाड़ियाजी की कल्पना और दूरदर्शिता के स्मारक आज भी उनका स्मरण दिलाते हैं। राजस्थान के औद्योगीकरण, श्वेत एवं हरित क्रांति की अभूतपूर्व योजनायें, राजस्थान की कायाकल्प की कहानी और उनकी गौरव गाथा मानी जा सकती है। सुखाड़ियाजी का प्रशासन एक संवेदनशील प्रशासन के रूप में देश में प्रसिद्ध रहेगा। वे राज्य के जन-जीवन से इतना जुड़ गये थे कि राज्य के गाँव-गाँव और गाँव के प्रमुख-प्रमुख व्यक्तियों का परिवार और नाम उनकी जुबान पर रहता था। राजस्थान के किसानों को जागीरदारी प्रथा से मुक्ति दिलाकर धरती का मालिक बना देना और देश में सर्वप्रथम पंचायतीराज का श्रीगणेश कर ग्रामों में समग्र विकास की अभिनव क्रांति भुलायी नहीं जा सकती है। आज ग्रामीण विकास का आधारभूत ढाँचा उनकी ही देन है।

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता कि उन्होंने 38 वर्ष की उम्र से देश में सबसे कम आयु के मुख्यमंत्री के रूप में अनेकानेक वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में झंझावतों और संघर्षों के बीच प्रशासन की नैया संभाली तब यह माना जाने लगा कि यह युवक इस इस विशाल समस्याग्रस्त प्रदेश को क्या नेतृत्व दे सकेगा किन्तु इन आशंकाओं को उन्होंने एक कुशल प्रशासक के रूप में जो नेतृत्व प्रदान किया वह इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ बन गया है। वे एक ऐसे सौभाग्यशाली मुख्यमंत्री थे जो

अपने मृदु व्यवहार और मुस्कान से चाहे कर्मचारी हो, चाहे जन-प्रतिनिधि और अन्य वर्ग, सभी उन्हें अपना हितैषी और शुभचिन्तक ही नहीं अपितु अपना मुखिया मानते थे। आज तो क्या? उनके प्रशासन में राज्य का विपक्ष काफी सबल और चुनौती देने वाला रहा, किन्तु यह कुशल प्रशासक अपने दल और बाहर दोनों मोर्चों पर एक के बाद एक चुनौतियों का हमेशा मुकाबला करते हुए पिछड़े प्रदेश को योजनाबद्ध विकास की मंजिल-दर-मंजिल बढ़ाने के लिए एक महान् शिल्पी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता रहा।

एक जमाना था जब सदियों से पिछड़े प्रदेश में 22 रजवाड़े जहाँ पर अलग-अलग भाषा, पुरातन परंपरायें और विविधतायें थीं – उस प्रदेश को एक सूत्र में पिरोकर जागीरदारी प्रथा की समाप्ति एवं राजाओं के प्रिविपर्स समाप्त कर उन्हें भी एक सामान्य नागरिक की श्रेणी में लाने में उनकी विशेष भूमिका रही है। भूमि सीमा निर्धारण का कानून उनकी प्रगतिशीलता और गरीबों के उत्थान का एक युग प्रवर्तक कार्यक्रम रहा।

राजस्थान आज जो कुछ नजर आता है उसकी नींव और निर्माण श्री सुखाड़िया की ही देन है। शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, उद्योग, संचार, सिंचाई, विद्युत आदि अनेकानेक योजनायें और कार्यों की जो उपलब्धियाँ आज नजर आती हैं वे श्री सुखाड़ियाजी के प्रशासन की याद दिलाती है।

देश में आज राजस्थान जिन अग्रणी राज्यों को पंक्ति में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है – उसका आधारभूत ढाँचा उनकी सूझबूझ, विवेक और दूरदर्शिता का ही परिणाम है, जिसके फलस्वरूप राज्य में आर्थिक प्रगति और राजनैतिक चेतना दृष्टिगत हो रही है।

सुखाड़ियाजी मानव के रूप में देव पुरुष कहे जा सकते हैं। जिनकी धीरता, गंभीरता और वीरता अद्वितीय थी। पाकिस्तान और चीन युद्ध के समय राजस्थान को सीमावर्ती प्रदेश होने के नाते सुखाड़ियाजी द्वारा जिस अदम्य साहस और उत्साह का संचार राज्य की जनता में किया गया वह एक कुशल सेनापति के रूप में जाना जायेगा। खतरे के वातावरण में निरन्तर सीमाओं पर जनता और सैनिकों को उत्साहित करना उनका अपना एक विशेष प्रयास था जिससे उस संकट की चुनौती में राजस्थान एक मजबूत मनोबल के साथ तैयार खड़ा था।

राज्य में बिक्री कर, उच्च न्यायालय, शिक्षण फीस वृद्धि और भू-स्वामी संघ जैसे चुनौती भरे आंदोलनों में सुखाड़ियाजी का मनोबल देखने योग्य था। उनका आदर्श परिस्थितियों से झुकना नहीं बल्कि लड़ना था।

वर्तमान राजस्थान उनकी ही देन है जिसकी विकसित और विकासशील योजनायें उनकी दूरदर्शिता की गौरव गाथायें सुना रही हैं। मुझे आज भी याद है कि "जब सुखाड़ियाजी दिल्ली यात्रा के समय एक बार कार दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल हुये थे तथा उन्हें दिल्ली के अस्पताल में दाखिल करवाया गया था। पं० नेहरू ने उन्हें देखकर डाक्टरों से कहा था, "सुखाड़ियाजी का इलाज पूरी मुस्तैदी से किया जाय, वे देश की आशाओं में से एक हैं।" सुखाड़ियाजी का विराट व्यक्तित्व इसी से परिलक्षित होता है।

देश में ऐसे बिरले ही नेता हुए हैं जिन्हें जनता और साथियों का उत्तरार्द्ध तक सहयोग और समर्थन मिला। जब राज्य के मुख्यमंत्री पद से 17 वर्ष के सुदीर्घ शासन के बाद सुखाड़ियाजी ने त्याग-पत्र दिया तो राज्य के 110 कांग्रेसी विधायकों में 108 विधायक दिल्ली गये तथा इंदिराजी से कहा कि राजस्थान अभागा हो गया। सुखाड़ियाजी का व्यक्तित्व सत्ता और बाहर सदैव छाया रहा। सत्ता से हटने के बाद जब वे चेतक रेल से उदयपुर रवाना हुये तो जयपुर स्टेशन के बाहर जन-समूह करुणा से वेदनामय था। जन-मन की अश्रुधारायें बह रही थीं। उनका आकाशवाणी से राज्य की जनता के नाम प्रसारित संदेश भावपूर्ण और हृदय-विदारक था जो कि अविस्मरणीय है। श्री सुखाड़िया एक कर्मठ और कुशल प्रशासक तथा संतुलित और आकर्षक वक्ता थे जिनकी वाणी का जन-मन पर असर होता था। उन्हें सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती थी। वे प्रतिशोध से दूर अपने विरोधी के दुःख-सुख में रहनुमा के रूप में माने जा सकते हैं।

काश! आज के राजनेता श्री सुखाड़ियाजी के प्रेरक जीवन से प्रेरित हों। उस तरह का शासन जनता को दें – जैसा त्रेता युग में भगवान राम ने दिया, वैसा ही इस युग में सुखाड़ियाजी ने जिन परिस्थितियों में दिया वह अविस्मरणीय रहेगा। सुखाड़ियाजी आज हमारे बीच नहीं है, जीवन-भर उन्होंने हजारों कार्यकर्त्ताओं को विकसित किया। सादगी के सार्वजनिक जीवन के मूल्यों को आगे बढ़ाया। सादा जीवन और उच्च विचार उनका मूल मंत्र रहा। ऐसे महान् व्यक्ति, राजनीति के खिलाड़ी और कुशल प्रशासक का हमारे बीच न होना एक अभाव के रूप में खटकता रहेगा। आज उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना और उनके आदर्शों को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उदयपुर में उनके स्मारक और उसके साथ जुड़ी विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की योजनाओं को पूरा करना भी हम सबका एक पुनीत कर्तव्य है। ताकि उस महापुरुष की प्रवृत्तियां सदैव हमें प्रेरणा देती रहें। ©

श्री मोहनलाल सुखाड़िया के मुख्यमंत्रित्वकाल की प्रमुख उपलब्धियाँ

व्यंग्य चित्र : आर० के० लक्ष्मण

(1) **अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन** का श्री गणेश वर्ष 1951 में ही हो चुका था जबकि राजस्थान में एक लाख टन अन्न का अभाव था। उस समय अन्न का कुल उत्पादन 29.41 लाख टन था। पर वास्तविक रूप से श्री सुखाड़िया के काल में इसे कार्यरूप में परिणत कर वर्ष 1970-71 ई० में 70 लाख टन खाद्यान्नों का उत्पादन सफलतापूर्वक किया गया।

(2) **भांखड़ा नांगल नहर योजना** पर कार्य तो वर्ष 1951 में ही प्रारम्भ हो गया था पर सम्पूर्ण कार्य 1957 में पूर्ण हुआ। इसके अन्तर्गत 900 मील लम्बी नहरें बनाई गईं।

(3) **चम्बल परियोजना** का कार्य सन् 1954 में प्रारम्भ किया गया था जो सन् 1960 में पूर्ण हुआ, इसी प्रसंग में सिंचाई के लिये कोटा बैराज का कार्य पूर्ण किया गया, जिसका उद्घाटन सन् 1961 में हुआ।

(4) **राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955** कृषकों को भूमि का स्वामी बनाने के लिये इस भूमि सुधार कानून को 1955 में ही लागू कर दिया गया जिसमें 50 लाख एकड़ भूमि में कृषकों को भूमि का स्वामी बनाकर खातेदारी के अधिकार प्रदान किये गये। इस कानून की गणना भारत के सर्वोत्तम प्रगतिशील भूमि सुधार कानूनों में की जाती है।

(5) **राजस्थान भू-जल मण्डल** का गठन जनवरी 1956 में किया गया था, जिसमें 10 सदस्य थे तथा इसके अध्यक्ष तत्कालीन कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार थे, इसका कार्य राजस्थान में कुओं को गहराकर उनमें पानी की मात्रा बढ़ाना तथा भूगर्भ स्थित जल के नये क्षेत्र खोज-कर, उसके माध्यम से राजस्थान की पेयजल समस्या तथा

कृषि के लिये सिंचन की आवश्यकताओं को पूर्ण करना था। ये तत्कालीन कृषि मंत्री सुखाड़ियाजी ही थे।

(6) राजस्थान राज्य का पूर्ण एकीकरण एक नवम्बर 1956 को केन्द्रीय शासन द्वारा शासित अजमेर राज्य का राजस्थान में विलीनीकरण करके तथा कुछ अन्य राज्यों के छोटे भागों को उनकी सुविधानुसार मिलाकर राजस्थान राज्य का वर्तमान स्वरूप स्थित किया गया।

(7) जन-सम्पर्क विभाग का विस्तार जिला कार्यालय स्तर तक करने का निर्णय लिया गया था, सन् 1959 में प्रत्येक जिले में जन-सम्पर्क कार्यालयों की स्थापना इसी नीति के परिणामस्वरूप हुई थी, इस विभाग से जनता को बहुत राहत मिली।

(8) राजस्थान (इन्दिरा गाँधी) नहर 429 मील लम्बी होगी तथा मुख्य नहर पूर्णतया पक्की बनेगी। इससे राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी रेगिस्तानी भागों की कायापलट होगी, इसका उद्घाटन सन् 1959 ई० में तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत द्वारा किया गया था, इसका राजस्थान फीडर सहित 225 मील लम्बाई तक का कार्य सन् 1971 तक पूर्ण हो चुका था। अब यह नहर पूर्ण हो चुकी है।

(9) डाकू उन्मूलन समस्या का राजस्थान के एकीकरण के समय शान्ति एवं विधि व्यवस्था के लिये निराकरण होना आवश्यक था। इस दिशा में आवश्यक निर्णय लिये गये। सन् 1959 तक 3500 डाकुओं का सफाया कर उनसे अनेक हथियार भी प्राप्त किये गये।

(10) लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण (पंचायतराज), ग्रामों में सामाजिक एवं आर्थिक क्रान्ति का सूत्रपात करने तथा नये स्थानीय नेतृत्व को उदीयमान कर उसके विकास करने की दृष्टि से 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर में इसका श्रीगणेश प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया।

(11) पोंग डेम (बाँध), राजस्थान (इन्दिरा गाँधी) नहर में पानी की कमी पूर्ण करने के लिये पंजाब में व्यास नदी पर पोंग गाँव के पास एक बाँध बनाने का निर्णय लिया गया। इसका कार्य 1960-61 में प्रारम्भ किया गया।

(12) नौरंगदेसर शाखा का उद्घाटन वास्तव में राजस्थान (इन्दिरा गाँधी) नहर का राजस्थान में प्रवेश इसी शाखा से हुआ जो गंगानगर जिले में स्थित है। इसका उद्घाटन तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् द्वारा वर्ष 1961 में हुआ था।

(13) उदयपुर-हिम्मतनगर रेलवे लाइन मीटर गेज की है, जो उदयपुर से डूंगरपुर होकर गुजरात के हिम्मतनगर स्थान का राजस्थान से संबंध स्थापित करती है, इसका उद्घाटन सन् 1962 में उदयपुर सिटी स्टेशन से किया गया था। इससे युगों से अपेक्षित डूंगरपुर के विभिन्न खनिजों का विकास होना प्रारम्भ हुआ।

(14) सोडियम सल्फेट कारखाना भारत का पहला कारखाना है, जहाँ नमकीन पानी से सोडियम सल्फेट का निर्माण किया जाता है। इसकी स्थापना डीडवाना (नागौर) में दिसम्बर 1963 में की गयी।

(15) खेतड़ी कॉपर परियोजना का श्रीगणेश सन् 1963 में हुआ था, यह स्थान झुंझुनूं जिले में स्थित है तथा दिल्ली से 150 किलोमीटर दूर है। देश में यह अपनी किस्म का पहला कारखाना हुआ।

(16) आणविक विद्युत केन्द्र, कोटा की स्थापना चम्बल परियोजना के अन्तर्गत निर्मित राणा प्रताप बाँध के निकट 5 मील की दूरी पर की गयी है। भारत में यह द्वितीय आणविक केन्द्र है। इससे 440 मेगावाट विद्युत उत्पन्न होती है। इस पर दिसम्बर 1964 से कार्य प्रारम्भ किया गया था।

(17) जयपुर-रतनगढ़ 132 के. वी. विद्युत लाइन का निर्माण विभागीय स्तर पर दिसम्बर 1964 को प्रारम्भ करके 2 मार्च 1965 को पूर्ण कर लिया गया था। इस विद्युत लाइन से जयपुर-रतनगढ़ (120 मील दूर) नगरों को सम्बद्ध किया गया था ताकि भाखड़ा योजना से अधिक विद्युत मिल सके; क्योंकि चंबल परियोजना से मिलने वाली बिजली में से 2·76 लाख यूनिट विद्युत गाँधी सागर में पानी के अभाव के कारण राजस्थान को देना बन्द कर दिया गया था।

(18) वृद्घावस्था एवं अपंग पेंशन योजना सामाजिक सुरक्षा से संबंधित है जिसे एक अक्टूबर, 1964 से

लागू किया गया है । इसके अनुसार 65 वर्ष की आयु वाले उन सभी व्यक्तियों को 20 रु० प्रतिमाह की पेंशन मिलती है जिनके कोई रक्षक या पुत्र उत्पादित नहीं है ।

(19) जिंक स्मेल्टर कारखाना देश में अपनी किस्म का प्रथम है । इसका कार्य 1965 ई० में उदयपुर से 8 मील दूर देबारी ग्राम में 450 एकड़ भूमि पर आरम्भ किया गया ।

(20) माही व जवांहा योजना, सन् 1965 में भारत सरकार द्वारा नियुक्त योजना समिति को राजस्थान सरकार ने इस योजना से लाभान्वित होने वाली राजस्थानी क्षेत्र के विषय में अपनी सिफारिशें भेजी । इस योजना से बाड़मेर व जालोर जिलों की 7 एकड़ भूमि में सिंचाई होने की संभावना हुयी ।

(21) डेगाना टंगस्टन परियोजना डेगाना स्टेशन से 2 मील दूर रेवत पहाड़ी में वर्ष 1966 ई० में आरम्भ की गयी थी । देश में उत्तम किस्म का टंगस्टन इसी पहाड़ी में पाया जाता है । टंगस्टन खनिज का उपयोग टैंक-भेदी गोले बनाने, ड्रिलिंग मशीनों तथा अन्य कार्यों में होता है । जिस प्रकार चाकू से फल-सब्जियाँ काटी जाती हैं, उसी प्रकार आसानी से टंगस्टन से लोहा काटा जा सकता है ।

(22) जैसलमेर-पोकरण रेलमार्ग, जैसलमेर, राजस्थान का वह भाग है जहाँ पूर्ण रूप से मरुस्थली प्रदेश है । सन् 1928 ई. में बीकानेर के तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंह द्वारा बीकानेर के कोलायत, जैसलमेर, हैदराबाद सिन्ध होकर करांची को रेलमार्ग स्थापित करने की योजना थी, पर तत्कालीन महारावल द्वारा अनिच्छुक होने पर इसे पूर्ण न किया जा सका । 28 जनवरी, 1968 को पोकरण-जैसलमेर मीटर गेज रेल का उद्घाटन कर एक महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की गयी ।

(23) लूणकरणसर लिफ्ट सिंचाई नहर योजना का शिलान्यास 5 जुलाई, 1968 को राजस्थान नहर के 48.7 मील वाले स्थान से आरम्भ किया गया । देश की यह प्रथम बड़ी लिफ्ट योजना है । इससे लूणकरणसर, बीकानेर तथा गंगानगर के क्षेत्रों में सिंचाई तथा पेयजल की समस्या हल हुयी ।

(24) राजस्थान राज्य औद्योगिक एवं खनिज विकास निगम की स्थापना 22 मार्च, 1969 को जयपुर में इस उद्देश्य से हुई थी कि राजस्थान में अधिकाधिक संख्या में विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थापना के लिये यह प्रयत्नशील रहे ।

(25) राजस्थान कृषि उद्योग निगम की स्थापना भी वर्ष 1969 में हुई थी । इसका प्रमुख कार्य कृषि के विकास से संबंधित उद्योगों के लिये प्रयत्नशील रहना है ।

(26) क्रेश प्रोग्राम की योजना मई सन् 1971 में बनी थी । इसके अन्तर्गत 2.54 करोड़ रुपये की धनराशि से राजस्थान के ग्रामों में विभिन्न प्रकार के कार्य आरम्भ किये जाकर प्रत्येक जिले के 1000 ग्रामीणों को रोजगार देना था ।

उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त पलाना लिग्नाइट खान से आधुनिक विधि से कोयला निकाल कर 440 मेगावाट विद्युत शक्ति का थर्मल पावर हाउस स्थापित करने, इन्टरलोकिंग ट्यूबवेल संगठन के माध्यम से जलपूर्ण चूरुवासियों की पेयजल समस्या को हल करने, न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक् करने, 2500 से अधिक जनसंख्या वाले ग्रामों में नल-जल योजनायें स्थापित करने, सीमान्त सड़क संगठन स्थापित करने, आदि के संबंध में भी आवश्यक निर्णय किये गये ।

इन्दु का सर्वस्व : इतिहास की धरोहर

□

इन्दुबाला सुखाड़िया
सांसद
दुर्गा नर्सरी, उदयपुर

श्री सुखाड़िया की पार्थिव देह उदयपुर में आ चुकी थी। शोकाकुल जनसमुदाय दुर्गा नर्सरी के विशाल परिसर में भी समा नहीं पा रहा था। मुख्यमंत्री और वरिष्ठ अधिकारी काफी दौड़-धूप के बाद भी शव-दाह स्थल के लिये उपयुक्त स्थान निर्धारित नहीं कर पा रहे थे। असमंजस के इन क्षणों में श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया जिनका सर्वस्व लुट चुका था, असीम धैर्य और साहस का परिचय देते हुए न केवल स्वयं को वश में रख रही थीं, अपितु शोकाकुल परिजनों को भी आश्वस्त कर रही थीं। लोग चकित थे इस महिला के धैर्य और साहस को देख कर। उन्होंने स्वयं चल कर दुविधाग्रस्त मुख्य मंत्री और अधिकारियों को समाधि-स्थल बताया और बिना किसी हिचक के घोषणा करदी–यह भूमि, मैं अन्तिम संस्कार के लिये देती हूं। सब अवाक् थे, किंकर्त्तव्यविमूढ़। वे सर्वस्व लुटने पर भी दायित्वशीला की तरह सबको सम्हाल रही थीं। मन का अवसाद घुमड़ कर मुखाकृति को धूमिल कर रहा था। मन की हूक आँखों मे बरस-बरस जाती थी। उनके सामने उस महापुरुष की पार्थिव देह रखी थी जो अजातशत्रु बन कर कालजयी बन गया था। वह उनके लिये केवल पति था और जिसके साथ उन्होंने जीवन के 44 वर्षों की यात्रा, कंधे से कंधा मिलाकर की थी।

इन्दुजी का समूचा व्यक्तित्व एक ऐसी कर्त्तव्यपरायण और दायित्वशील नारी की छवि प्रस्तुत करता है जिसने न केवल कुशल गृहिणी के रूप में आदर्श प्रस्तुत किया बल्कि जिसने सारी चितायें स्वयं वहन करते हुए अपने पति को देश-सेवा के अवसरों की निश्चितता प्रदान की। आज सुखाड़ियाजी इतिहास की धरोहर बन गये हैं लेकिन बहुत कम लोगों को इस सत्य की जानकारी है कि सुखाड़ियाजी के व्यक्तित्व को तराशने और गढ़ने में उनका कितना महत्व-पूर्ण योगदान रहा है। अतीत की स्मृति के झरोखों में ऐसे बिम्ब अभी भी टंके हुए हैं। उन्हें एक-एक पल, सांस का एक-एक क्षण जो उन्होंने अपने दिवंगत महिमामय पति के साथ व्यतीत किया, आज भी जैसे कल-परसों की ही बात लगती है।

मैं, उन्हें कुरेदता हूँ। शायद कुछ महत्त्वपूर्ण बात पल्ले पड़ जाय। वे बताती हैं– विवाह के पूर्व जब ये बम्बई पढ़ रहे थे, तब तक पिताजी के जीवित रहते विवाह तय हो चुका था, उन्होंने एक पत्र लिखा था। पत्र क्या था, अपने भावी जीवन के संकल्पों और उनसे उत्पन्न खतरों के प्रति आगाह किया था। लिखा था – मुझसे विवाह करने के पहले सोच लो। मैं, देश की आजादी के लिये संकल्पित हूं। यह रास्ता फूलों का नहीं, कांटों का है। इसमें जेल है, यातना है, फांसी है। इन्दुजी का तात्कालिक उत्तर था – हर यातना आपके साथ सहूँगी, आपके सपनों और संकल्पों को पूरा करने में कभी बाधक नहीं बनूँगी। आपकी जरूरत देश को है और इस महान् यज्ञ में आपके साथ आहुति देने में, तनिक भी विचलित नहीं होऊँगी।

यह आश्वासन किसी भावुक नारी का आश्वासन नहीं था। यह संकल्प था, उस नारी का जो पति के सपनों की पूर्ति में अपना यत्किंचित योग देने के लिये प्रतिबद्ध थी। विवाह हुआ। कुछ समय अजमेर और ब्यावर में व्यतीत किया। आजीविका के लिये सुखाड़ियाजी ने ब्यावर की एक मिल में आवेदन किया। नौकरी और वह व्यक्ति करे जिसके सपने राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ कर कुछ कर गुजरने के थे। नियुक्ति-पत्र देख कर इन्दुजी ने विवाह पूर्व लिखे पत्र की याद दिलाई। देश की आजादी के लिये यातना सहने वाले

संकल्प की याद दिलाई। नौकरी मिलने पर जहाँ सामान्य नारी प्रसन्न होती है, वहाँ इन्दुजी ने इस विचार को ही अस्वीकार कर दिया। गुलामी क्यों? नौकरी क्यों? मेरे लिये देश को क्यों भुलायें? अन्तिम विजय इन्दुजी की हुई। सुखाड़ियाजी ने नौकरी करना अस्वीकार कर दिया और उदयपुर चले आये।

देशी रियासतों में वे बड़े आतंक के दिन थे। प्रजा त्रस्त थी और शासक भयमुक्त लूट मचा रहे थे। प्रजामंडल आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था और "सिर बाँधे कफनवा हो, शहीदों की टोली निकली" की गूँज सर्वत्र प्रतिध्वनित हो रही थी। सुखाड़ियाजी ने उदयपुर में बिजली के सामान की एक छोटी-सी दुकान लगाई और प्रजामंडल आन्दोलन से जुड़ गये। उन्हीं दिनों वैद्य अमृतलालजी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में रत् बजाज परिवार से परिचय हुआ। तपोनिष्ठ माणिक्यलालजी वर्मा ने इस युवक में छिपी हुई अग्निरेखा को पहचान लिया और वे उनके मार्गदर्शन में जीवट के साथ जुट गये। सभा, जुलूस, हड़तालें—देशव्यापी आन्दोलन के हिस्से। रोज योजनायें बनाना और उन्हें पुलिस की नजर बचा कर क्रियान्वित करना। सुखाड़ियाजी दत्तचित्त कर्म क्षेत्र में उतर चुके थे और परिवार की ओर से उन्हें इन्दुजी के कारण निश्चिंतता पहले ही मिल चुकी थी। संघर्ष के भयानक दौर में इन्दुजी का यह आश्वासन कि "आप देश के लिये काम करते रहिये, मेरे कारण दायित्व न भूलिये और पहले देश है फिर मैं हूँ" सुखाड़ियाजी के जीवन का सबसे बड़ा सम्बल था। वे समाज सेवा और राजनीति का मोर्चा सम्हालते रहे, इन्दुजी उनकी प्रेरणा बनकर उन्हें प्रोत्साहित करती रहीं। गाड़ी के दोनों पहिये समान दायित्व और समान गति से गतिशील होते गये।

और फिर आया सन् 1942 का क्रांति-चरण। गाँधीजी का "करो या मरो" का नारा। "जेल भरो" आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था। सुखाड़ियाजी के विवाह को मात्र 3 वर्ष ही हुए थे। तब उनके तीन माह की एक बच्ची थी। एक दिन अचानक रात को 1 बजे पुलिस आ धमकी। घर की तलाशी ली। इन्दुजी ने उन्हें तिलक लगाकर, नारियल देते हुए हँसते-हँसते विदा किया। सुखाड़ियाजी ईसवाल जेल में बंद कर दिये गये। इन्दुजी ने भी एक बार जेल यात्रा की सोची किन्तु यह विचार कर कि कहीं मेरे भी जेल जाने से उनके बढ़ते कदम डगमगा न जायें, इरादा छोड़ दिया। अब वे अधिक जिम्मेदारी के साथ अपने मोर्चे पर डट गईं। अन्य राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं की भाँति चंदाश्रित आजीविका इन्हें पसंद नहीं थी। आर्थिक सहयोग के कुछ सुझाव भी आये, किन्तु इन्होंने सहजता से अस्वीकार कर दिये। परिवार था ही कितना बड़ा? वे अध्यापिका बन गईं और अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के समाधान का माध्यम स्वयं ही खोज लिया। देहली गेट के भीतर स्थित एक प्राथमिक पाठशाला के पुराने रिकार्डों में इन्दुजी के अध्यापन-कार्य के पत्रादि आज भी कहीं सुरक्षित होंगे। जेल में दी जाने वाली यातनाओं के भयानक वर्णन सुनने को मिलते किन्तु न वे भयभीत हुईं और न विचलित।

सुखाड़ियाजी को पथ से विचलित करने के लिये पुलिस ने एक नायाब चाल चली। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक सुन्दरलाल त्रिवेदी ने सहानुभूति का नाटक रचा। इतने कम वेतन में कैसे काम चलता होगा? उन्हें अपने पति को समझाना चाहिये। स्थिति इतनी विकट है कि पता नहीं क्या हो? शायद सारी उम्र जेल में कट जाय या यह भी सम्भव है कि राजद्रोह के अपराध में फाँसी की सजा हो जाय। इन्दुजी ने जेल चल कर पति से बात करने की पुलिस की सलाह मान ली। शर्त यही रखी कि वे पति से जेल में एकान्त में बात करेंगी। पुलिस ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया।

स्मृति के झरोखे में अतीत के चल-चित्र चल रहे हैं। इन्दुजी को वह क्षण आज भी कल की घटना सी याद है जब वे अपने पति से मिलने जेल गईं। उन्होंने सुखाड़ियाजी को सारी स्थिति से अवगत कराया। पुलिस द्वारा आतंकित करने वाली बात बताई। सुखाड़ियाजी ने पूछा, "तुम क्या कहती हो? क्या तुम भी सरकार के सामने समर्पित होने को कहती हो"। वह क्षण ऐतिहासिक क्षण था। विवाह पूर्व हुए पत्र-व्यवहार की स्मृति इन्दुजी के मानस में कौंध गई। ब्यावर से नौकरी त्यागने के संकल्प लेने के कारण याद आये। बड़ी सहजता से उन्होंने कहा—"आप मेरी और बेबी की चिंता न करें। मेरे मोह में पड़ कर विचलित हो गये तो इससे बड़ी अपमानजनक पीड़ा मेरे लिये और कुछ नहीं होगी। मैं आपसे सिर्फ यह कहने आई हूँ कि यदि फाँसी पर भी झूलना पड़े तो झूल जाना, लेकिन पथ से डिगना मत"। सुखाड़ियाजी गर्व से अभिभूत हो उठे। उन्हें सहधर्मिणी से ऐसे ही उत्तर की अपेक्षा थी। पुलिस आश्वस्त थी कि पत्नी जब भयंकर यातनामय भविष्य की बात कहेगी तो सुखाड़ियाजी पथ से डिग जायेंगे। लेकिन यहाँ तो उल्टा हुआ। इन्दुजी उनके इरादों को और पुख्ता कर आई। एस० पी० के पूछने पर उन्होंने सहजता से कह दिया—फाँसी पर झूलना कबूल है, पथ छोड़ना असंभव है। पुलिस सिर धुन कर रह गई।

फिर आई आज़ादी । पन्द्रह अगस्त सन् उन्नीस सौ सैंतालीस । इसके पूर्व सुखाड़ियाजी मेवाड़ के अंतरिम मंत्रिमंडल में सम्मिलित कर लिये गये थे । फिर बना वर्मा मंत्रिमंडल । सुखाड़ियाजी बने मंत्री और इन्दुजी बनी रहीं अध्यापिका । अध्यापन का सिलसिला 10 वर्ष तक चला । सुखाड़ियाजी कार से गुजरते और इन्दुजी पैदल स्कूल जातीं । यह सिलसिला टूटा सन् 1952 में जब जयपुर जाकर रहने की विवशता सामने आई । वे दिन अब भी इन्दुजी को याद हैं, जब न वैभव था, न सुख । फ़ाकाकशी के दिन गुजारने पड़ते थे । अध्यापिका बनने के पहले लोगों के कपड़ों की सिलाई कर भी गुजारा किया, परिवार की और सामाजिक कार्य में लगे पति की आवश्यकताओं में कभी अभाव की अनुभूति नहीं होने दी । वे राखी के उस दिन को आज भी नहीं भुला पातीं जब पति ग्रामीण दौरे पर थे और त्यौहार मनाने के लिये कुछ भी नहीं था ।

सुखाड़ियाजी राजनीति के आकाश में छाते चले गये । राजनीति के कुशल खिलाड़ी और सफल प्रशासक के साथ-साथ मानवीय गुणों से सम्पन्न उनका व्यक्तित्व निखरता चला गया । यश के अनेक शिखरों को पार करते हुए वे कीर्ति के विस्तृत आयामों तक सुरभि बिखेरते रहे । एक व्यस्त राजनेता के पारिवारिक दायित्व को इन्दुजी ने जिस तरह सहेजा, उसे वे लोग भली-भाँति जानते हैं जिन्होंने उन दिनों उन्हें नज़दीक से देखा है । ऐसी पारस्परिक समझ और सूझ बहुत कम दम्पतियों में मिलती है । पति के विचारों और भावनाओं के अनुकूल इन्होंने बिना उनके कहे, स्वयं को व्यवस्थित किया । सुखाड़ियाजी देश और समाज के बनते चले गये, इन्दुजी उन्हें पारिवारिक दायित्व की निश्चितता देती गईं । ऐसा आदर्श दाम्पत्य, ऐसा मणिकांचन योग बहुत विरल है । वे पति की छाया बनकर चलती रहीं, दो देहों में एक ही आत्म-तत्व विचरण करता रहा ।

अब तो सब कहानी बन गयी है । सत्रह वर्षों तक सुखाड़ियाजी का मुख्यमंत्रित्व, दक्षिण के तीन प्रदेशों का राज्यपाल, सांसद का अल्पकालीन जीवन — सब अतीत बन गया है । सुखाड़ियाजी की उपलब्धियों और सफलताओं को बिना इन्दुजी के मौन, त्याग और सहज समर्पण को जाने बिना समझा ही नहीं जा सकता । स्वभाव से धर्मपरायण इन्दुजी ने कभी तीर्थ-यात्रा नहीं की । सारा जीवन पति के चरणों में समर्पित कर समस्त तीर्थों का पुण्यलाभ प्राप्त कर लिया । विनोद में जब कभी सुखाड़ियाजी ने हरिद्वार-बद्रीनाथ की यात्रा की बात की तो यही कहा कि "मैंने सब तीर्थ कर लिये हैं, सब पवित्र नदियाँ नहा ली हैं" । पार्थिव देह त्यागने के 4-5 दिन पूर्व नई दिल्ली में उन्होंने इन्दुजी से कहा — चलो 700-800 की नई साड़ी खरीदेंगे । तुम्हें बढ़िया साड़ी पहने देखे बहुत समय हो गया है । कैसा पूर्वाभास था यह ? कौनसी आकांक्षा प्रेरित कर रही थी— इसके लिये । इन्दुजी बताती हैं कि बीकानेर पंचायतराज सम्मेलन में जाने का विशेष उत्साह इसलिये था कि राजस्थान के जिस दरिद्रनारायण की सेवा में उन्होंने अपना जीवन खपा दिया, उससे मिलने का इतना बड़ा संयोग फिर कब मिलेगा ? वे सर्दी की ठिठुरती रात में एक केम्प से दूसरे केम्प तक जा कर अपने लोगों की सुख-सुविधा की बात पूछते रहे । कौन जानता था कि ऐसा जननायक अब दो-चार दिन का ही मेहमान है ?

इन्दुजी भावुक भी हैं, व्यवहारिक भी । रात-दिन कर उन्होंने सुखाड़ियाजी के समाधि-स्थल को समतल आधार दे दिया है । वे अपने कक्ष में बैठे-बैठे ही उस बल्ब को टिमटिमाता देखती रहती हैं, जिसके नीचे उनके जीवन का सर्वस्व चिरनिद्रा में लीन है । अपना समय वे उसी दरिद्रनारायण की सेवा को अर्पित करने के लिये संकल्पित हैं, जिसके लिये उनके देवता-पति ने अपना जीवन होम दिया । इसी ग्रामीणजन को उन्होंने अपनी पूजा, अर्चना, समर्पित करदी है । अपना सारा दुःख इन्हीं को माला की मणियाँ समझकर व्यतीत कर देने के लिये वे संकल्पित हैं ।

कमरे का वातावरण बहुत बोझिल हो गया है । आँखें बार-बार नम हो आती हैं । मैं पूछता हूँ — "आपकी कोई 'विल', कोई अंतिम आकांक्षा ?" एक क्षण मौन, स्तब्ध सन्नाटा । फिर सहज होकर दिया गया उत्तर, "मेरी पार्थिव देह के फूल हरिद्वार में विसर्जित नहीं किये जायें । उन्हीं की समाधि पर, उनके चरणों की दिशा में एक गड्डा खोद कर उसमें डाल दिये जायें । मैं, उनके चरणों में अर्पित रहूँ यही आकांक्षा है — यही मेरी मुक्ति है ।" और फिर वे शून्य में देखने लगती हैं ।

अब और कुछ पूछना, जानना, मेरे साहस की बात नहीं रहती । इस अग्निधर्मा, पुष्प-कोमला, दृढ़चित्त, संवेदनशील, व्यावहारिक, महिमामयी नारी को मन ही मन प्रणाम करता हुआ विदा लेता हूँ । एक वाक्य बार-बार अब मुझे कुरेदता है — "मैं सिर्फ यह कहने आई हूँ कि यदि फाँसी पर भी झूलना पड़े तो झूल जाना, लेकिन पथ से विचलित मत होना ।" —एक साक्षात्कार

युग-पुरुष सुखाड़िया

इतिहास लिख रहा है, जिसकी गौरव-गाथा।
लोरी दे मुला चुकी, जिसको धरती माता।।
ऐसा युग-पुरुष न जाने, फिर कब आएगा!
जो रोते हुए आंसुओं में, मुस्काएगा।।

है आज नहीं वैसा मानव, वैसा शासक।
है आज न वैसा दीन-दुखी का अभिभावक।।
बस, इसीलिए तो उसकी यादें आती हैं।
उसकी गौरव-गरिमा में ज्योति नहाती है।।

यों तो कितने ही आए, आकर चले गए।
कितनों से ही विश्वास मिले, पर छले गए।।
पर उसकी बात और ही थी, सब कहते हैं।
उसका व्यक्तित्व और ही था, सब कहते हैं।।

उसके जैसा इंसान धरा पर आज नहीं।
अब शब्द बोलते, पर उसकी आवाज नहीं।।
अब रंगरूप में राजनीति बदकार हुई।
अब चोर, भ्रष्ट नेताओं की भरमार हुई।।

वह कंकर से शिवशंकर बन विषपायी था।
आराध्य न बनकर, जनमत का अनुयायी था।।
वह खून-पसीने की श्रम-कथा सुनाता था।
धरती-विकास के गीत कृषक संग गाता था।।

मेघराज मुकुल
भूतपूर्व उपसचिव, शिक्षा
राजस्थान सरकार
5, विवेकानन्द मार्ग, जयपुर

दुश्मन भी जिसकी मैत्री के इच्छुक रहते ।
यह मानव है कि देवता है, अक्सर कहते ।।
देवों को होती जलन कि ऐसा मानव क्यों ।
ज़हरीली राजनीति में भरा सुधासव क्यों ।।

तूफ़ानों से टकराकर, जो आगे चलता ।
जो हर विरोध की जड़ता में धड़कन भरता ।।
जो राजनीति में कुशल, किन्तु संकीर्ण न था ।
जो हर विपत्ति को सहकर, हुआ विदीर्ण न था ।।

जो धूर्त जनों के वश में रहता कभी नहीं ।
जो चुग़लखोर बातों में बहता कभी नहीं ।।
जिसकी वाणी विश्वासों की वाहक बनती ।
जिसकी भृकुटी जुल्मों के चेहरों पर तनती ।।

मुस्कान अमिट से जो जन-मन को वश में करता ।
जो दुःख के क्षण में सुख की आशाएं भरता ।।
जो बदला लेकर कभी नहीं खुश होता था ।
जो भावुकता के क्षण में अक्सर रोता था ।।

ओछा वचन जिसके शब्द-कोश में नहीं मिला ।
जिसकी भाषा में, कांटा, बन कर फूल खिला ।।
जो दूरदर्शिता आँखों में भर कर चलता ।
जो गहन अंधेरों में दीपक बन कर जलता ।।

जो था महान, पर दुर्बल भी था कहीं-कहीं ।
अक्सर पहचान न पाता दिल का अर्थ सही ।।
जो प्यार-प्रीत के स्वर में अक्सर खो जाता ।
पर मलिन अंधेरों के अर्थों को धो जाता ।।

जिसकी पहचान न कर पाई थी कुटिल नीति ।
जिसकी गरिमा को छू न सकी प्रतिशोध रीति ।।
शतरंजी चालें जिसको मात न दे पाईं ।
थी कूटनीति बदकार, मगर क्या ले पाईं !

जिसका विशाल था हृदय, जलधि सा मर्यादित ।
चमचे घेरे रहते, पर वे भी स्तब्ध-चकित ।।
जो कभी न भड़का, अपने ही घरवालों मे ।
अफसर, मित्रों, दामादों, साली-सालों से ।।

सबकी सुनता, मन की करता, संतुलित रहा ।
सर्वोच्च शक्ति ने भी उसको क्या-क्या न कहा ।।
या तो प्रताप था, जो अकबर से रहा अड़ा ।
या था मुखाड़िया, जो दिल्ली से नहीं डरा ।।

जो राजनीति में सतत सिद्ध होकर रहता ।
पर राजनीति को अंतिम ध्येय नहीं कहता ।।
जो पूंजीपति से हाथ मिला, मुसका देता ।
पर भ्रष्ट चक्र की ढीली धुरी घुमा देता ।।

हर क्षण दरिद्रनारायण का जो संबल था ।
हर शोषण के भविष्य का घोर अमंगल था ।।
जिसका धीरज, धरती सा, धर्म निभाता था ।
जो हर संकट को हंसकर गले लगाता था ।।

जन्मा था कठिन परिस्थिति में पर उज्ज्वल था ।
विद्रोही बन समाज का निर्मल दर्पण था ।।
डट कर चुनौतियों से मुक़ाबला करता था ।
परिणामों से आगे, कर्मों को वरता था ।।

इतिहास लिख रहा है, जिसकी गौरव-गाथा ।
लोरी दे सुला चुकी, जिसको धरती माता ।।
ऐसा युग-पुरुष न जाने फिर कब आएगा ।
जो जन-जन की आत्मा में घुल रम जाएगा ।।

जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम

□

राही शहाबी

गुम तेरी याद में, यूं हर तेरा दीवाना है,
आँख में आँसू है–लब पर तेरा अफसाना है,
जा तो अब भी वही है–वही पैमाना है,
फिर भी सुनसान सा, वीराना सा मयखाना है,

उफ तेरे बाद यह मयखाने की उजड़ी हुई शाम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

खूबियां तुझमें थीं ऐसी कि नहीं जिनका जवाब,
तेरे चेहरे पे बनावट का न था कोई नकाब,
वह मिली तुझको बुलन्दी कि नहीं जिसका हिसाब,
तू वतन में रहा यूं – जैसे गुलिस्तां में गुलाब,

तूने भर-भर के मोहब्बत के दिये जाम पे जाम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

जो भी इन्सान तुझे रंज दिया करता था,
उस पे तू और भी अहसान किया करता था,
खोट दिल में न कभी तेरे रहा करता था,
हद है गैरों से भी तू हंस के मिला करता था,

तेरे दुश्मन भी बने तेरी शराफत के गुलाम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

बनके इस दुनिया में तू फूलों की डाली आया,
शान लेकर तू जमाने में निराली आया,
तेरे दर पर जो कोई बनके सवाली आया,
तेरे दर से न कभी लौट के खाली आया,

दिल किसी का भी दुखाना तू समझता था हराम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

नाम "मोहन" था तेरा–दिल भी था मोहन जैसा,
देखने वालों की नजरों में-समा जाता था,
मुस्कुराता हुआ खिलता हुआ चेहरा तेरा,
बात करने में वो लहजा तेरा मीठा-मीठा,

और तेरा प्यार में डूबा हुआ अन्दाजे कलाम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

अब भी फिरती है निगाहों में वो सूरत तेरी,
हंस के हर एक से मिलने की वो आदत तेरी,
आज हर आँख में हर दिल में है इज्जत तेरी,
आज लोगों के दिलों पर है हुकूमत तेरी,

जगमगायेगा जमाने में हमेशा तेरा नाम,
जाने वाले तेरी खिदमत में मोहब्बत का सलाम।

●

"सुखाड़ियो महान हो"

अजयदान बारहठ
मलावा, सिरोही

प्रदीप दिव्य देस रो, अजोड़ आज नी रियो ।
प्रकास पुंज छोड़ ने, सिधार सर्ग में गियो ।।
मिली सु जोत ज्योत में, महा उजास मान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 1 ।।

स्वदेस-चारु ताल रो, सरोज हो सुहावणो ।
भर्यो सुगन्ध सूं भली, मलिन्द चित्र चावणो ।।
गयो पसार वासना, प्रसून गंधवान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 2 ।।

सजाय प्रान्त आपरो, उद्यान ज्यूं सुहावणो ।
शरीर छोड़ पींजड़ो, उड्यो पंखेरु पावणो ।।
विशाल राजथान रो, विदग्ध बागवान हो ।
स्वदेस में महामनो, सुखाड़ियो महास हो ।। 3 ।।

लगाम थाम हाथ में, घणाज वर्ष राज री ।
जडों जमा स्वराज री, निभाई लाज ताज री ।।
बधार नाम ना, गयो-करे महा प्रयाण हो ।
स्वदेस में महामनो, सुखाड़ियो महान हो ।। 4 ।।

सुहाग इन्दु इन्दुरे, सुभाल-व्योम रो रुल्यो ।
सिधार देव-लोक में, त्रिलोकि नाथ में मिल्यो ।।
करे गयो सु चाँदणो, बडो कला निधान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 5 ।।

भलो हि राजपाल होय, आप दूर रेवतो ।
प्रभु गिणे प्रदेस ने, प्रदीप-धूप खेवतो ।।
प्रतिनिधि-प्रसिद्ध-कूटनीति रो निधान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 6 ।।

घणीज पूछ केन्द्र में, रही हमेश जेहरी ।
दिलेर नी दब्यो कठे, रह्यो रहे ज्युं केहरि ।।
रियो पछाड तो रिपू, अदम्य ओजवान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 7 ।।

जवार, लाल बहादुर, इन्दिरा बखाणियो ।
विधायकोंर साँसदों, प्रजाजनों प्रमाणियो ।।
महंत संत मानियो, करे गयो कल्याण हो ।
स्वदेस में महामनो, सुखाड़ियो महान हो ।। 8 ।।

जिसो स्वरूप फूट रो, निहालतो सु लागतो ।
इसोज राष्ट्र-प्रेम रो, रियो प्रतीक जागतो ।।
गयो सुजाण त्याग प्राण, पंथ जो निवाण हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 9 ।।

ढल्यो नखत्र तेज पुंज, राजनीति व्योम रो ।
गयो गुमे, अमूल्य लाल, एक मात भोम रो ।।
हिये हमेश दीन हीन रे, विराजमान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 10।।

अधेड़ उम्र में गयो, वणी घणी विडम्बना ।
न चैन चित्त ने पड़े, करंत मित्र झंखना ।।
अलापता विलाप में, घणोज शीलवान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 11 ।।

प्रदेस में विकास रो, प्रकास जो निहालता ।
इणीज है प्रबुद्ध रे, प्रताप री विशालता ।।
प्रवीर देश भक्ति रो, पवित्र कीर्तिमान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 12 ।।

गयो कराल काल छीन, कोहिनूर देस रो ।
रियो न ओर-छोर, सिन्धु उमड़्यो कलेस रो ।।
जठे कठे बि जावतो, स्व प्रान्त रो गुमान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 13 ।।

मनुष्य रे सरूप में, महान् देव लागतो ।
स्वदेस री भलाइ में, रियो सदैव भागतो ।।
महारथी, महागुणी, घणोज भाग्यवान हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 14 ।।

फिराय दाम नाम री, अठे सनेहि आप रे ।
वधी व्यथा वियोग री, न धीर हीवडो धरे ।।
प्रवीण कूटनीति रो, करे गयो प्रयाण हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 15 ।।

पिछाण शत्रु मित्र ने, प्रभाव पूर नाखतो ।
हृदे विशाल राखने, सही सबंध राखतो ।।
महान बुद्धिमान हो न कीणि में अजाण हो ।
स्वदेस में महामनो, सुखाड़ियो महान हो ।। 16 ।।

प्रसून काव्य अंजलि, श्रद्धेय ! हेत सूं घणा ।
"अजय" चढाय आपने, नराच छन्द में वणा ।।
गिणे पुहुप हार, कण्ठ धारजो, सुजाण हो ।
सपूत मेद पाट रो, सुखाड़ियो महान हो ।। 17 ।।

सुधार जो प्रदेस रो, सुखाड़ियो करे गयो ।
भंडार राजथान रो, महान जो भरे गयो ।।
न चित्र अल्प अक्षरों, विरो चित्रित वे सके ।
गलो भरीज जावतो, गई सु लेखनी रुके ।। 18 ।।

सुखाड़ियो प्रदेश ने, सदैव याद आवसी ।
कथा चरित्र सोंमले, प्रमोद लोक पावसी ।।
शरीर छोड़ने गयो, सु नामना विशेस है ।
इणी स्वदेस भक्त रो, ऋणी घणो प्रदेस है ।। 19 ।।

गौरव गाथा स्वीकार करो

आचार्य चन्द्रमौलि
कवितार्किकचक्रवर्ती
आनन्द भवन, रानी बाजार, बीकानेर

युगाधार युगनिर्माता का,
युग युग तक होवे, अभिनन्दन ।
सर्व स्वराष्ट्र की नवचेतनता–
के प्रतीक का नववन्दन ॥ 1 ॥

सार्वभौमभूमा समान हो,
युगपुरुष रूप में आये थे ।
जननी जन्मभूमि गौरवहित,
अमरपुत्रसम छाये थे ॥ 2 ॥

वदनस्मिति-आभा आभासित,
था, भास्वर जगती का प्राङ्गण ।
ऊर्मिल कीर्तिलतालिङ्गित,
लावण्यपूर्ण था गगनाङ्गन ॥ 3 ॥

ध्रुव शासन के श्रमशीकर से,
भारतभू पग-पग सिञ्चित थी ।
स्थलपद्मों की आभावलि से,
आमूलचूल अभिसिञ्जित थी ॥ 4 ॥

महासभा के सन्देशों के–
–वाहक, शाश्वत सायक थे ।
–दुर्भेदलक्ष्य के संधायक,
जागरणशील जननायक थे ॥ 5 ॥

अभिमानभूमि, आराध्यरूप,
नवराजस्थानक निर्माता ।
मादकस्वर नभ में गूँज रहे,
थे, साम्यमन्त्र के उद्गाता ॥ 6 ॥

तुम थे स्वतन्त्रता सेनानी,
भीतर बाहर सम्मान रहा ।
चलते पगचिह्नों पर निर्भय,
मानवता का अभिमान रहा ॥ 7 ॥

जिस लोक में हो, हे अमितगते !
हे कीर्तिशेष ! उपहार बरो ।
गणधर ! गणतन्त्र समर्पित यह,
गौरव गाथा स्वीकार करो ॥ 8 ॥

०

जिनके सुकृत का है प्रकाश, राजस्थान विकास

रंजन 'अज्ञात'
मनोहरपुर, जयपुर

जिनकी मधुर-स्मृतियों का चिर अक्षय स्नेह चिराग ।
राजस्थान राज्य की जनता का है उर अनुराग ।।

इसी प्रान्त की वीर भूमि पर जो मेवाड़ विशाल ।
हुआ जन्म अद्‌भुत विभूति का जो है मोहनलाल ।।

हुए जहाँ राणा प्रताप सम प्रणपति वीर महान् ।
मीराँ जैसी भक्त प्रवर कवियत्री प्रतिभावान ।।

भामाशाह सम दानवीर, सलुम्बा सम सरदार ।
जिनकी गौरव गाथा गाती अब तक भी तलवार ।।

स्वतन्त्रता के बाद हुआ जो पहला आम चुनाव ।
महामहिम ने विजयी होकर पाया जन सद्‌भाव ।।

विजयश्री ने प्रतिभा को पहचान डाला हार ।
मंत्री मुख्य प्रान्त के बनकर वहन किया पद भार ।।

अदम्य साहस, दूरदर्शिता, जनहितकारी भाव ।
कुशल प्रशासन की प्रतिभा थी, था गम्भीर स्वभाव ।।

कूटनीति चाणक्य आप थे; राजनीति आचार्य ।
जिनके समय प्रशंसनीय थे सभी प्रशासन कार्य ।।

राजनीति में आये यद्यपि थे अगणित तूफान ।
पर न तनिक भी हिला सके थे सुदृढ़ आप चट्टान ।।

विद्वानों के संरक्षक थे देते उनको स्थान ।
इसीलिए शिक्षा का इनके समय हुआ उत्थान ।।

भारतीय संस्कृति के पोषक, राष्ट्र प्रगति था ध्येय ।
आयुर्वेद और संस्कृत उन्नति का जिनको श्रेय ।।

पृथक् विभाग बनाकर इनका करवाया सम्मान ।
अग्रगण्य समझा जाता है इससे राजस्थान ।।

दलितवर्ग के शुभचिन्तक थे, देखे गड़ी लुहार ।
उनकी आन-बान को सुनकर बही अश्रु की धार ।।

लिखा पत्र पण्डित नेहरू को, समझाया कर जोड़ ।
पञ्चशील के परम पुजारी पहुँचे तब चित्तौड़ ।।

शीश झुकाया पण्डितजी ने, कहा – सुनो सरदार ।
अब न प्रवासी रहे, मानली हमने तुमसे हार ।।

राज्य कर्मचारी जन का भी रक्खा हरदम ध्यान ।
महंगाई भत्ते को माना हट तज केन्द्र समान ।।

पिछड़े हुए वर्ग का जिनने किया सदा कल्याण ।
उनकी उन्नति हेतु दिलाये कई बार अनुदान ।।

लगभग सत्रह वर्ष निरन्तर पद पर हो आसीन ।
राजस्थान राज्य की सेवा की होकर तल्लीन ।।

जिनके सुकृत का प्रकाश है राजस्थान विकास ।
आनेवाली सन्तति को बतलायेगा इतिहास ।।

०

कैसे अद्भुत जादूगर हो बैठे जनता के प्राणों में

निरंजननाथ आचार्य
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा
पंचवटी, उदयपुर

तुम झंझाओं में अडिग रहे, मुस्काये तुम तूफानों में।
कैसे अद्भुत जादूगर हो, बैठे जनता के प्राणों में ।।

जन ब्रज पर भूस्वामी बरसे, तब तुम मोहन तैयार रहे।
जिसका न धनीधोरी कोई, तुम उसके पहरेदार रहे ।।

मानव होते भी जिसको, मानवता का अधिकार न था।
जीवित था पर ज़ीने का, जिसका कोई आधार न था ।।

जो युग-युग से पीड़ित था, शोषित था उसे जगाया।
पशुओं से बदतर हालत थी, तुमने उसे उठाया ।।

अब समता का महामन्त्र पढ़, बड़ी शान से जीता।
तुमने दी उसके हाथों में, स्वतंत्रता की गीता ।।

अब वह जीवन के संगर में, सीना तान खड़ा है।
लोकतंत्र की रक्षा हित, बनकर फौलाद अड़ा है ।।
निकल रही उसके अन्तर से, शुभाशीष की भाषा।
तुम पर निर्भर है उसकी, आशा और अभिलाषा ।।

जो जन आकांक्षा के प्रतीक लेकर यह उन्नत काल जियो।
जनद्रोही राष्ट्रद्रोहियों को बनकर तुम जीवित काल जियो ।।

जो पीड़ित हैं उत्पीड़ित हैं, बनकर तुम उनकी ढाल जियो।
कोटि-कोटि जन की आशा, युग-युग तुम मोहनलाल जियो ।।

नवजीवन बरसाने वाला प्यारा जलधर कहाँ खो गया ?

□

श्यामसुन्दर चूलेट
प्राचार्य, राजकीय संस्कृत कॉलेज
कालाडेरा, जयपुर

युग-युग से संतप्त मरुस्थल की धरती चीत्कार कर रही,
नव जीवन बरसाने वाला प्यारा जलधर कहाँ खो गया ?
नई योजना, कुशल प्रशासन, दृढ़ संकल्पों की स्याही से,
जिसने मरु भू के कण-कण पर नवयुग का इतिहास लिखा है।
नव विकास कार्यों का शाश्वत, इस प्रदेश में जाल बिछाकर,
दीन हीन चेहरों के पतझर, पर जिसने मधुमास लिखा है ।।

बड़े-बड़े संघर्षों की, चट्टानों से टकरा करके भी,
मधुर हास बरसाने वाला, गतिमय निर्झर कहाँ खो गया ?
जिसकी मुस्कानों के आगे पत्थर भी पानी सा पिघला,
जिसके मधुर स्नेह के संमुख दुश्मन भी प्रिय मीत बन गया ।
गली सड़ी रूढ़ियाँ तोड़कर, सामाजिक चेतना जगाने,
जो भी नारा दिया राज्य में, वह प्रदेश का गीत बन गया ।।

दो दशकों तक सत्ता सुख पाकर भी जिसमें ज्वार न आया ।
शक्ति, धीर, गंभीर, विपुल गरिमा का सागर कहाँ खो गया ?
संस्कृत, संस्कृति का उन्नायक, दलित वर्ग का प्रबल सहायक,
जो सुखाड़िया जनता के सुख के हित अड़ा – लड़ा जीवन भर ।
गाँधी के पंचायती राज के सपने को साकार कर दिया,
गुँजित सदा रहेंगे जिसके राजनीति में शासन के स्वर ।।

जिसने जनता के कष्टों को आत्मसात् कर सुख सुविधा की,
जान्हवी प्रवाहित कर दी वह, विषपायी शंकर कहाँ खो गया ?
युग-युग से संतप्त मरुस्थल की धरती चीत्कार कर रही,
नव जीवन बरसाने वाला, प्यारा जलधर कहाँ खो गया ?

सुखाड़ियाजी को समर्पित

पाँच उदास कविताएँ

□

भगवतीलाल व्यास
प्राध्यापक
लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
डबोक, उदयपुर

1. अगरबत्ती
जल कर राख हो गई है
मगर जय केतु की तरह तनी है
अब भी एक सींक
समय के गन्धदान में ।
इस चर्चा के क्या माने कि
अगरबत्ती की लम्बाई कितनी थी
और वह किन पदार्थों से बनी थी ?
महत्त्वपूर्ण है वह सुवास
जो वायुमण्डल में अब भी व्याप्त है
यह व्याप्ति कई दुर्गन्धों के लिए
तब भी भारी थी
अब भी भारी है ।

2. आँखें नम हैं उन
वन पाँखियों की
जिनसे आकाश छिना है
सम्पूर्ण आकाश !
पिंजरे के पाँखियों के लिए
आकाश कमरे की छत से
कभी बड़ा नहीं होता
उन्हें कैसे समझाएँ कि
हर समन्दर घड़ा नहीं होता !

3. एक चिरन्तन स्मिति-वलय
जब टूटता है
कितनी ही उदास ऋतुओं का
जन्म होता है
ऐसा ही हुआ है इस बार
ठीक ऐसा ही ।
गैरिक वसन पहने
घूम रहा है बातास
वक्त से पहले जर्द हो गया है
एक और अमलतास ।

4. अब क्या करोगे
जानकर कि यह प्रवाह
कौनसी गुफा में बन्द था
विराट अभिव्यक्ति का यह
कौनसा छन्द था ?
अफसोस यह है कि
वेदना के पाँव नहीं होते
और वन्दना मूक होती है
आखिर सर्जक से भी
कहीं न कहीं चूक होती है ।

5. यह सही है
यात्राएँ फिर शुरू होंगी
पाल फिर तनेंगे
डांड पर कसी हुई
मुट्ठियों के बावजूद
अनिश्चित है
अन्धकार और आशंका का क्षण
अथाह जलराशि के विस्तार में !
क्या तब तुम अपने
प्रकाश-गृह का कोई
वातायन नहीं खोल दोगे ?

○

श्री सुखाड़िया प्रशस्तिदशकम्

□

पं० राधाकृष्ण शास्त्री
धर्मशास्त्र विभागाध्यक्षः,
महाराज-संस्कृत कॉलेज, जयपुर

जयत्वदः संस्कृत–संस्कृतिप्रियं, बुधप्रियं सद्‌गुणगौरवप्रियम् ।
राष्ट्रप्रियं राष्ट्रसमुन्नतिप्रियं, सुखाड़िया नाम, जनप्रियं प्रियम् ।।१।।
त्यागाभयोदार्ययुतंमनस्विनं, सौजन्यसौरस्य-विशेषशोभिनम् ।
सुखाड़िया मोहनलाल मुत्तमं, श्रद्धासुमैरद्य समर्चयामितम् ।।२।।
राजस्थली–राज्ययशस्विनं परं, समस्तदेशेगुणकर्मविश्रुतम् ।
दिवङ्गतं तं नयपण्डितं वयं, अद्यस्मरामो वरमुख्यमन्त्रिणम् ।।३।।
सौरस्यनीतेर्गुणमण्डितं नवं, सुखाड़िया–मानस–पङ्कजंश्रिता ।
नित्यं विभातिस्म सुराज्यलक्ष्मी–र्योग्यंपदं योग्यजने चकास्ति ।।४।।
प्रीति-प्रसादसदनंवदनं त्वदीयं, सेवारसेन विमलं हृदयं विलोक्य ।
दीनोपकारकरणं करणंमनोज्ञ–मादर्शतामुपगतोऽथ सतां चकास्ति ।।५।।
विद्वन् ! तव प्रथितकार्यकलापसिद्धिं, चातुर्यरीतिनवनीतिविशालबुद्धिम् ।
राज्योन्नतौ विरचितोपचितिंसमृद्धिं, पश्यन् प्रसीदतितमां नहि को गुणज्ञः ।।६।।
सुखाड़िया शरीरेनवग्रहाणांनित्यनिवासः–

आसीद्विवस्वानथयत्प्रतापे, चकास्तिचित्तेकिल चारुचन्द्रः ।
महीसुतो यस्य पराक्रम-क्रमे, विराजतेयद्वचनेहि सौम्यः ।।७।।
आसीद् गुरुर्यन्मतिसद्‌विवेके, विभाव्यते सौख्यकलासु शुक्रः ।
कोपेऽर्कजः सर्वनभश्चराणां–रूपाय, तस्मैमम श्रद्धयाञ्जलिः ।।८।।

सार्थकत्वं गुणैर्नाम्निकथमित्यत्रदर्शितम्–

जनान् मोहयतिस्म लोके गुणगणैर्मोहनइवासौ ।
तथा लालयतिस्म "मोहनलाल" इत्यभिधीयताम् ।।
पुण्यपुञ्जवशात् सुखानामालिमथयातिस्म नाम्ना ।
सुखयतिस्मबुधान्सदेति सुखाड़िया सुविचार्यताम् ।।९।।
स्वराज्यं सुराज्यं भवेदत्रदेशे, प्रयत्नः समस्तैर्जनैः संविधेयः ।
सुखं प्राप्नुयुः सर्वएवात्रलोकाः, पुनस्तादृशं ज्योतिरत्रैवभूयात् ।।१०।।

स्वनाम धन्यः सुखाड़िया

मदनकुमार शास्त्री
द्रव्यगुण विभागाध्यक्षः
राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय
उदयपुर

द्विषतामप्यनुनेता, नेता सुहृदाञ्च लोकमर्मज्ञः ।
सत्सूनुर्मरुभूमे रुदार कीर्तिः सुखाड़िया धन्यः ।।

यत्सौजन्ययशः समस्तभुवनेऽभिव्याप्य संवर्द्धते ।
राजस्थानमिदं चकास्ति सकलं यस्य प्रसादादहो ।।
मुख्यत्वे किल यस्य राज्य मखिलंलोके प्रतिष्ठां गतम् ।
स्वर्यातोऽपिस जीवतीह यशसा धन्यः सुखाढ्योभुवि ।।

राज्येरोगसमूहदर्पदलनं वैधागमं प्रोन्नयन् ।
आयुर्वेदविभागचालनपरं मन्त्रालयं भावयन् ।।
नाना–भेषज–कल्पनाकुशलिनो वैद्यांश्च संवर्द्धयन् ।
स्वर्यातोऽपिस जीवतीह यशसा धन्यः सुखाढ्योभुवि ।।

वैद्याम्नाय विशेषबोधनिपुणं निर्देशकं स्थापयन् ।
शिक्षान्वेषणसक्षणांश्च भिषजः कामं प्रतिष्ठापयन् ।।
राजस्थान निवासि वैद्य निवहैरुद्गीतकीर्तिः सदा ।
स्वर्यातोऽपिस जीवतीह यशसा धन्यः सुखाढ्योभुवि ।।

कांग्रेस–इत्याख्य महासभायाः ।
सन्नायक श्चाप्यतुलप्रभावः ।।
दिवंप्रयातोऽपि चिराय लोके ।
सुखाड़ियाऽसौ यशसा हि जीवति ।।

Glorious Tributes to Sukhadiaji

Distinguished Servant of the State

Shri Mohan Lal Sukhadia was a senior Congressmen He was the Chief Minister of Rajasthan for a long period. He distinguished himself in the service of State and of the Country. He was the Architect of Modern Rajasthan.

Neelam Sanjiva Reddy
President, Republic of India

Creditable Progress

Rajasthan has progressed tremendously in last few years. The Credit goes to Shri Mohan Lal Sukhadia

Lal Bahadur Shastri
Prime Minister, Government of India

Contribution to Progress

The long record of service of Shri Mohan Lal Sukhadia is an open testimony to his patriotic fervour and reformative zeal, under his dynamic leadership the people of Rajasthan have indeed made significant contribution towards national progress.

B. D. Jatti
Vice-President, Republic of India

Intimately associated name

Shri Sukhadia's name is intimately associated within the State as well as outside with the rapid progress which Rajasthan had made in all directions within the last few years.

Dr. Sampurnanand
Governor, Rajasthan

Political Sagacity

Shri Mohan Lal Sukhadia, Chief Minister of Rajasthan has given ample evidence of political sagacity and administrative ability.

V. P. Charian
Governor, Maharastra

Architect of Modern Rajasthan

Shri Mohan Lal Sukhadia was the architect of Modern Rajasthan. Shri Sukhadia was one of the ablest administrators and a true man of masses.

Veerendra Patil
Minister of Shipping & Transport
Government of India

Veteran Freedom Fighter

Shri Sukhadia was one of veteran freedom fighters of the Country. He had dedicated his life for the welfare of people of his State. He was able administrator and statesman of varied experience.

B. D. Sharma
Governor, Madhya Pradesh

Leading Statesman

Shri Sukhadia was a leading statesman who served the nation with distinction. The nation has lost a true patriot.

Pranab Mukherjee
Finance Minister, Government of India

Able Administrator

Shri Sukhadia was a statesman, an able administrator, an old politician and builder of Modern Rajasthan.

S. B. Chavan
Chief Minister, Government of Maharashtra

○

A Seasoned Statesman

Shri Mohan Lal Sukhadia was a seasoned statesman whose services to the Country will always be remembered.

P. Shiv Shanker
Minister of Commerce
Government of India

○

Towering Personality

Sukhadiaji was a towering personality with deep understanding of the problems.

Rao Birendra Singh
Minister of Agriculture
Government of India

○

Positive Contributions to the State

Shri Sukhadia's services to the nation and specially to his native state can never be forgotten. He made positive contributions to the state's people concerned.

Sheikh Mohd. Abdullah
Chief Minister
Government of Jammu & Kashmir

○

भावी आशाओं में से एक

श्री मोहनलाल सुखाड़िया हमारे देश की भावी आशाओं में से एक हैं।

पं० जवाहरलाल नेहरू
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

○

सराहनीय बहुमुखी विकास

मुख्यमन्त्री सुखाड़ियाजी के नेतृत्व में राजस्थान में बहुमुखी विकास तथा पंचायतराज सफल हुआ, वह अत्यन्त सराहनीय है।

के० कामराज
अध्यक्ष, अ०भा० कांग्रेस कमेटी

उत्कृष्ट देशभक्त

सुखाड़ियाजी का सारा जीवन राजस्थान के पुनर्निर्माण में लगा अतः उन्हें नये राजस्थान का निर्माता कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी। वे एक उत्कृष्ट देशभक्त और कुशल राजनीतिज्ञ थे।

जगजीवनराम
उप-प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

○

चोटी के जननायक

श्री सुखाड़िया हमारे देश के चोटी के जननायकों में से एक हैं। उन्होंने राजस्थान को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए जो महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है वह अनेक युगों तक याद की जाती रहेगी।

सरदार स्वर्ण सिंह
शिक्षामन्त्री, भारत सरकार

○

अविस्मरणीय सेवा

श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने राजस्थान के निर्माण और विकास के लिए जो कुछ किया उसे वहाँ की जनता कभी नहीं भूलेगी।

भक्तदर्शन
शिक्षा राज्यमन्त्री, भारत सरकार

○

निरन्तर विकासमान

सुखाड़ियाजी ने अथक परिश्रम, अदम्य उत्साह, अटूट लगन एवं तत्परता से राजस्थान के विकास के लिए जो मूल्यवान सेवायें कीं, वे राजस्थान के आधुनिक इतिहास का महत्त्वपूर्ण अंग बन गयी हैं और राजस्थान रूढ़िगत सामन्तवादी व्यवस्था से निकलकर प्रगतिशील जनतंत्रीय सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की ओर अग्रसर होकर निरन्तर विकास की ओर बढ़ा है। वास्तव में, सुखाड़ियाजी सच्चे अर्थ में आधुनिक राजस्थान के निर्माता हैं।

बरकतुल्ला खां
मुख्यमन्त्री, राजस्थान सरकार

○

जनसेवी नेता

राजस्थान के नवनिर्माण एवं विकास की दिशा में सुखाड़ियाजी के प्रेरणास्पद तथा सतत प्रयत्नों से जो सफलताएँ मिली हैं वे अत्यन्त उत्साहवर्धक और अनुकरणीय हैं। उन जैसे कर्मठ और जनसेवी नेता के जीवन से लोग प्रेरणा लें।

चन्द्रभानु गुप्त
मुख्यमन्त्री, उत्तर प्रदेश सरकार

राजस्थान में प्रथम बार

श्री सुखाड़िया की उत्साहपूर्ण प्रेरणा के कारण ही कृषि, सिंचाई तथा उद्योग के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की योजनाएँ राजस्थान में प्रथम बार क्रियान्वित हुई।

पी० सी० मेनन
मुख्यमन्त्री, पश्चिमी बंगाल सरकार

○

अभूतपूर्व अकाल की स्थिति में भी सफलता

राजस्थान तथा राज्य के कांग्रेस संगठन का यह सद्-भाग्य है कि उनको श्री सुखाड़िया जैसे निष्ठावान जागरूक एवं परिश्रमी व्यक्ति का नेतृत्व प्राप्त हुआ। उनके नेतृत्व में राजस्थान ने बड़े ठोस ढंग से औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र में बहुमुखी प्रगति की। राजस्थान के कुछ जिलों में विद्यमान अभूतपूर्व अकाल स्थिति का उन्होंने जिस शीघ्रता और सफलतापूर्वक सामना किया वह निःसंदेह उनके बड़े सराहनीय प्रयत्नों का ही परिणाम है।

हितेन्द्र देसाई
मुख्यमन्त्री, गुजरात सरकार

○

संस्कृत के संपोषक

मुझे याद है, जब भी हम लोग हमारे प्रान्त में संस्कृत के विकास के बारे में शासन से सुविधाएँ प्रदान किये जाने हेतु हमारे मुख्यमन्त्री सुखाड़ियाजी से प्रत्यक्ष रूप से बात करते हैं या संस्कृत के प्रश्न किसी रूप में भी उनके समक्ष पहुँचते हैं तो वे उन सबका बड़ी सहानुभूति और प्रेम से विचार कर उनके समाधान को मूर्त रूप देते हैं।

हरिभाऊ उपाध्याय
शिक्षा मन्त्री, राजस्थान सरकार

○

कुशाग्र बुद्धि राजनीति

सुखाड़ियाजी न केवल एक कुशल और सफल प्रशासक ही थे, वरन एक कुशाग्र बुद्धि राजनीतिज्ञ और उत्तम संगठक थे। उनकी शिष्टता और विनम्रता अनुकरणीय है।

मा० आदित्येन्द्र
वित्तमन्त्री, राजस्थान सरकार

○

जनता को समर्पित

श्री सुखाड़िया देश के महान् लोगों में थे। उनका पूरा जीवन जनता के लिये था। वर्तमान समय में उन जैसे लोगों की बड़ी आवश्यकता है।

हेमवतीनन्दन बहुगुणा
संसद सदस्य

उत्थान में अपूर्व योग

श्री सुखाड़िया का राजस्थान के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान रहा है। यदि उनको राजस्थान का निर्माता कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हरिकिशनलाल भगत
संसदीय मंत्री, भारत सरकार

○

दया और करुणा की अपूर्व मूर्ति

श्री मोहनलाल सुखाड़िया आधुनिक राजस्थान के निर्माता के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। उनमें विशिष्ट राजनीतिक कौशल के साथ-साथ विशाल रचनात्मक दृष्टि और गम्भीर से गम्भीर समस्या का समाधान करने की विचित्र क्षमता थी। दया और करुणा की वे सजीव मूर्ति थे। जो भी उनके पास गया कभी निराश और खाली हाथ नहीं लौटा। संस्कृत और भारतीय संस्कृति में उनकी बहुत आस्था थी। राजस्थान में संस्कृत शिक्षा निदेशालय और प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की उनके द्वारा की गयी स्थापना इसके जीवन्त प्रमाण हैं।

शीला कौल
राज्यमंत्री, शिक्षा एवं संस्कृति, भारत सरकार

○

महत्त्वपूर्ण योगदान

राजस्थान के विकास में श्री सुखाड़ियाजी का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

प्रकाशचन्द सेठी
गृहमंत्री, भारत सरकार

○

सुखाड़ियाजी का विशेष स्थान

श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख भूमिका निभाई। राजस्थान के निर्माण में सुखाड़ियाजी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। उनकी प्रशासनिक योग्यता एवं संगठनात्मक प्रतिभा विलक्षण थी। जनता उन्हें बहुत प्यार करती थी और वे जन-जन के नेता थे। राजस्थान की राजनीति में सुखाड़ियाजी का एक विशेष स्थान रहा है। इनके आदर्श एवं सिद्धान्त हमारे लिये बहुत महत्त्वपूर्ण हैं जिससे समाज का सही मार्गदर्शन हो सकेगा।

आरिफ मोहम्मद
उपमंत्री, सूचना और प्रसारण, भारत सरकार

○

जनमानस में पैठ

श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने देश एवं प्रांत की उन्नति के लिये सराहनीय प्रयास किये। उन्होंने प्रांत की संस्कृति, सद्भाव एवं गरिमा को बनाये रखने में अपूर्व योगदान दिया। सुखाड़ियाजी राजस्थान के जनमानस में सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

धर्मवीर
उपमंत्री, श्रम एवं पुनर्वास, भारत सरकार

राजस्थान के पिता

श्री सुखाड़िया वास्तव में एक महान् राजनीतिज्ञ, समाजसेवी तथा सच्चे देशभक्त थे। राजस्थान की द्रुत प्रगति में जितना योगदान श्री सुखाड़िया का रहा है उसके लिये उन्हें "राजस्थान के पिता" कहना उचित होगा। देश, राजस्थान और समाज के लिये श्री सुखाड़िया ने जिस प्रकार तन-मन-धन से कार्य किया है उसके लिये उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा।

पी० ए० संगमा
उपमंत्री, वाणिज्य, भारत सरकार

सुखाड़िया के सपनों का राजस्थान

आज का राजस्थान श्री सुखाड़िया के सपनों का राजस्थान है। उन्हें आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। जितने दीर्घ समय तक पूरे राजस्थान को वे एक सूत्र में बाँधे रहे और राजस्थान की दिन दूनी रात चौगुनी जो उन्नति कराते रहे, इसके लिए श्री सुखाड़िया का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। राजस्थान के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता रहेगा। राजस्थान ने सदैव राष्ट्र के वीर सपूतों को जन्म दिया है। उसी शृंखला की एक कड़ी श्री सुखाड़िया भी थे। वे बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, समाजसुधारक, कुशल प्रशासक और उदारमना व्यक्तित्व के स्वामी थे। जो भी उनसे एक बार मिला है, उसके ऊपर उन्होंने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी है।

ब्रजमोहन मोहन्ती
उपमंत्री, निर्माण और आवास, भारत सरकार

He Assured Political Stability

The very Prolonged year's of service which Shri Sukhadia rendered to the State of Rajasthan are a reflection of his political sagacity and administrative ability. The political stability and administrative continuity assured by Shri Sukhadia for the State, was instrumental in the State achieving an unprecedented expansion of social and public utility services.

The People of rajasthan would always remember him for his multiplicity of services rendered by him in the advancement of the State.

Air Chief Marshal O. P. Mehra
Governor, Rajasthan

समर्पित प्रयास

सुखाड़ियाजी राजस्थान के चप्पे-चप्पे से परिचित थे और राजस्थान की जनता का उनके प्रति अपार स्नेह था। वे दुर्गम स्थानों में निवास करने वाले लोगों की समस्याओं के समाधान के लिये हर संभव प्रयास करते रहे। यह उनके समर्पित प्रयासों का फल है कि राजस्थान ने इतनी तेज गति से प्रगति की।

मोतीलाल बोरा
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश सरकार

व्यक्ति नहीं एक संस्था

श्री मोहनलाल सुखाड़िया कोई व्यक्ति नहीं अपितु स्वयंमेव एक संस्था थे। उनमें त्याग, बलिदान और अनुराग का अप्रतिमेय समन्वय था। श्री सुखाड़ियाजी के सम्पर्क में जो कोई भी व्यक्ति आया, कुन्दन बन गया और उन्हीं का हो गया। श्री सुखाड़िया आकर्षक और चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे। राजस्थान के कण-कण में व्याप्त श्री सुखाड़िया के लिये वही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है कि हम सब संकल्पिक एवं संगठित होकर राजस्थान के बहुमुखी विकास के लिए सार्थक प्रयत्न करें।

पूनमचन्द विश्नोई
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा

अविस्मरणीय सेवा

राजस्थान की प्रगति, एकता, मजबूती तथा जनता जर्नादन के हित में अर्पित सुखाड़ियाजी की सेवाएँ अविस्मरणीय रहेंगी।

प्रबोध रावल
गृहमंत्री, महाराष्ट्र सरकार

मानवता की सेवा

सुखाड़िया साहब राजनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल व्यक्ति व प्रबुद्ध एवं प्रवीण निर्णायक के रूप में तो ख्यातिप्राप्त थे ही साथ ही जातिगत भेदभावों व संकीर्णता से भी ऊपर उठे हुए महान् व्यक्ति थे।

सुखाड़िया साहब का मत था कि संकीर्ण विचार ही देश को गुलामी के रास्ते पर ले जाते हैं व देश के जनतंत्र के लिए चुनौतियाँ पैदा करते हैं। देश के सांस्कृतिक और कौटुम्बिक परिवेश में सभी धर्म/संप्रदाय के लोगों को अपनी बात कहने का अधिकार है और उन्होंने इस परम्परा को कायम रखने पर बल दिया। आपने जातिधर्म और साम्प्रदायिकता के भेदभावों से ऊपर उठकर मानवता की सेवा में विश्वास किया।

अहमदबख्श सिंधी
विधि एवं न्यायमन्त्री, राजस्थान सरकार

उत्पीड़न एवं शोषण के शत्रु

सुखाड़ियाजी का प्रेरक व्यक्तित्व आज हमारे बीच नहीं है, परन्तु राजस्थान की धरती का कोना-कोना उनके कृतित्व की एक ऐसी कहानी कह रहा है जिसमें सामन्तवाद की पृष्ठभूमि में तेजी से पनपता समाजवाद आल्हादित हो उठा है। राजस्थान की विकास यात्रा का एक ऐसा पथिक जिसे अपने पथ पर विरासत में गरीबी का गहरा गर्त, अशिक्षा के घटाटोप अंधेरे में भटकता उत्पीड़न एवं शोषण से कराहता नवजीवन मिला। सुखाड़ियाजी आधुनिक राजस्थान के निर्माता तो थे ही — इससे भी बढ़कर वे जन-जन के प्रिय थे। उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में रहकर प्रियता ही अर्जित नहीं की बल्कि उन्होंने सही अर्थों में आम लोगों के मनों पर राज किया।

प्रद्युम्न सिंह

राज्यमंत्री, स्वायत्तशासन, राजस्थान सरकार

○

उत्कृष्ट प्रशासक

श्री सुखाड़िया आधुनिक राजस्थान के अग्रणी निर्माता के रूप में चिरस्मरणीय रहेंगे। वे जहाँ सर्वोच्च कोटि के जनसेवक थे वहाँ भारी सूझ-बूझ के दूरदर्शी राजनीतिज्ञ एवं उत्कृष्ट प्रशासक भी थे। राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर 17 वर्ष की लम्बी अवधि तक रह कर सुखाड़िया साहब द्वारा प्रदेश के चहुँमुखी विकास हेतु किये गये अथक प्रयास के लिये राजस्थान की जनता सदैव उनकी आभारी रहेगी।

कमला

उपमंत्री, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, राजस्थान सरकार

○

आदर्शवान प्रतिभाशाली व्यक्ति

आधुनिक राजस्थान के निर्माता श्री मोहनलाल सुखाड़िया एक आदर्शवान प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। वे सदैव हँसमुख रहते थे। उनके मस्तिष्क में कभी भी किसी के प्रति विद्वेष की भावनायें नहीं रहीं, न ही उनके दिल में क्षेत्रीय भावनायें थीं। वे सदैव सम्पूर्ण राजस्थान का हित चाहते थे और राजस्थान को हर प्रकार से उन्नत बनाने हेतु उन्होंने बड़े-बड़े बांध, बिजलीघर, सड़कें आदि बनवाई। वे चाहते थे कि राजस्थान की जनता समृद्धिशाली बने तथा सुखी रहे।

हरिशंकर सिद्धांत शास्त्री

विधायक, राजस्थान विधान सभा

प्रमुख कांग्रेसमैन

पंचायतराज का विकेन्द्रीकरण के माध्यम से प्रशासन में ग्रामीणों को भागीदार बनाकर उनमें मनोबल बढ़ा कर ही गाँवों का विकास संभव हो सकता है। सुखाड़ियाजी का यह मत था कि नई प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली को मजबूत करने के लिये पंचायतराज का विकेन्द्रीकरण करना नितान्त आवश्यक है। सुखाड़ियाजी ने ऐसा निर्णय लेकर अपने को एक अच्छे सुविचारित राजनेता के रूप में स्थापित कर लिया था।

सुखाड़ियाजी की इसी पंचायतराज स्थापना को राष्ट्र-व्यापी महत्त्व देने के लिए ही प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू पंचायतराज का उद्घाटन करने के लिये राजस्थान में पधारे थे। पं० नेहरू के शब्दों में श्री सुखाड़िया पंचायत-राज के प्रमुख कांग्रेसमैन सिद्ध हुये थे।

वैद्य भंरूलाल भारद्वाज

अध्यक्ष, जयपुर देहात जिला कांग्रेस कमेटी

○

ईमानदार व्यक्ति का परिचय

श्री मोहनलाल सुखाड़िया, जैसा कि सभी जानते हैं, एक कुशल प्रशासक, अग्रणी राजनेता, दूरदर्शी एवं गरीबों के रहनुमा थे। आज भी जब उनकी बातें याद आती हैं तो मन भर उठता है। मैं उनके सम्पर्क में काफी पहले से था परन्तु मेरा उनसे निकट का सम्पर्क, उनके मंत्रिमण्डल में मेरे सम्मिलित होने के पश्चात् और भी बढ़ गया। उनमें यह बड़ी विशेषता थी कि वह कर्त्तव्यनिष्ठ व ईमानदार व्यक्ति को शीघ्र पहचान लेते थे तथा विकट से विकट परिस्थिति में भी उसका मार्ग-दर्शन तथा सहयोग करते, चाहे वह किसी पार्टी, धर्म, जाति का हो; कठिन परिस्थिति में भी हँसते रहना उनका चिरपरिचित स्वभाव था।

अमीनुद्दीन अहमदखान

नवाब लुहारू

○

राजस्थान के पर्याय

भारत में सबसे पहले लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का शंखनाद फूँकने वाले श्री सुखाड़िया पंचायतराज के माध्यम से राज्य की सर्वतोन्मुखी उन्नति के प्रयास में लगे रहे। राज्य के विकास में युगों तक याद की जाने वाली उपलब्धियों के कारण श्री सुखाड़िया राजस्थान के पर्याय बन गये हैं।

रामकिशोर व्यास

अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (इ)

सुलझे विचारक

यद्यपि मोहनलालजी सुखाड़िया की राष्ट्र सेवाएं बहुमुखी हैं, किन्तु उनकी सबसे बड़ी सेवा राजस्थान को समृद्ध और आत्म-निर्भर बनाना है। उनको आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे न केवल एक कुशल प्रशासक एवं सुलझे हुये विचारों वाले राजनीतिज्ञ थे, अपितु देश की व्यापक समस्याओं के प्रति सदैव जागरूक थे। उनको स्वतंत्रता-संग्राम और देश के विकास में योगदान के लिये सदैव स्मरण रखा जायेगा।

बलराम जाखड़
अध्यक्ष, लोकसभा

o

आधुनिक राजस्थान के प्रमुख निर्माता

सुखाड़ियाजी वास्तव में आधुनिक राजस्थान के एक प्रमुख निर्माता कहे जा सकते हैं। मेरा उनसे 30 वर्ष तक निजी सम्पर्क रहा, जब वे मुख्यमंत्री थे और अंत में जब सांसद रहे।

डॉ. कर्णसिंह
अध्यक्ष, विराट हिन्दू समाज

समाज सेवी

पण्डित जवाहरलाल नेहरू एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी के निकट सहयोगियों में श्री मोहनलाल सुखाड़िया अग्रगण्य रहे हैं। श्री सुखाड़िया जहाँ अपनी प्रशासनिक क्षमता के कारण प्रशंसा के पात्र रहे हैं, वहीं उनकी समाज-सेवी गतिविधियों ने राजस्थान और बाद में देश के अन्य भागों को लाभ पहुँचाया है।

अनन्तप्रसाद शर्मा
संचार मंत्री, भारत सरकार

o

प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी

श्री सुखाड़िया प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे। संगठन और प्रशासन के विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने देशवासियों की जो सेवा अपने जीवन में की वह भुलाई नहीं जा सकती। मुख्यमंत्री के रूप में राजस्थान प्रदेश के लिए उनके द्वारा किये गये कार्य सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

कमलापति त्रिपाठी
कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इ)

Shri Mohan Lal Sukhadia has evoked considerable admiration and respect from a galaxy of resplendent luminaries of the contemporary period as well as of the present time by virtue of his amiable disposition and noble deeds for the well being of the people of Rajasthan and the country at large.

We have not changed, altered the designations, portfolios and positions held by him in order to keep their dignity intact.